मेवाड़ की कहावतें

लक्ष्मीलाल जोशी

सेवानिवृत्त कमिश्नर, भारतीय प्रशासनिक सेवा
भूतपूर्व डाइरेक्टर शिक्षा विभाग, मेवाड़ राज्य
भूतपूर्व अध्यक्ष, राजस्थान लोक सेवा आयोग
तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान



प्रकाशक



कृष्णा ब्रदर्स
महात्मा गांधी मार्ग, अजमेर

प्रकाशक :

जयकृष्ण अग्रवाल

कृष्णा ब्रदर्स

कचहरी रोड, अजमेर ।

मूल्य : चालीस रुपया

मुद्रक :

एच. सी. कपूर

टाइम्स प्रिंटिंग प्रेस,

ब्रह्मपुरी, अजमेर

प्रस्तावना

'मेवाड़ की कहावतें'' भाग १ के नाम से प्रथम बार जो पुस्तक ''हिन्दी विद्यापीठ उदयपुर'' द्वारा मई 1946 में प्रकाशित कराई गई थी उसकी प्रतियाँ बहुत जल्दी समाप्त हो गईं। उसकी प्रस्तावना में दूसरा भाग शीघ्र ही प्रस्तुत करने का विचार मैंने प्रकट किया था; परन्तु अवकाश न मिलने के कारण वर्तमान संग्रह पूर्ण कर प्रकाशन के लिये तैयार करने में बहुत विलम्ब हो गया है।

वर्तमान संग्रह में पहला भाग पूरी तरह समाविष्ट कर लिया गया है और उस संग्रह की कहावतों से दुगुनी से भी अधिक कहावतें और जोड़ी जाकर सबका एकीकरण कर दिया गया है। सम्माननीय भाई मोतीलाल जी छापरवाल सांगानेर (भीलवाड़ा) वालों ने इस कार्य के लिये अपना अकारादि क्रम से तैयार किया हुआ संग्रह मुझे उपयोग करने के लिये प्रदान कर दिया और अन्य कहावतों के भी अर्थ स्पष्ट करने में मुझे बहुमूल्य सहायता दी है। साथ ही शाहपुरा (भीलवाड़ा) के प्रसिद्ध विद्वान् डा. मदनमोहन जी जावलिया प्राध्यापक राजकीय महाविद्यालय ने भी अपने कहावत संग्रह का उपयोग करने की सुविधा मुझे प्रदान की है। इन दोनों लोक साहित्य प्रेमी विद्वानों का मैं हृदय से आभारी हूँ।

सवेतन सेवा से विश्राम प्राप्त कर लेने पर भी सार्वजनिक शिक्षण के कई कार्यों में व्यस्त रहने के कारण इस संग्रह को छपाने के लिये तैयार करने का कार्य मुझे एक दुर्गम पहाड़ जैसा लग रहा था; परन्तु मेरे स्नेही सम्बन्धी पं. शिवकुमार जी शर्मा, वरिष्ठ अध्यापक, हिन्दी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, फतहनगर ने अथक परिश्रम कर यह कार्य भी मेरे लिये सुगम कर दिया। इसके लिये मैं उनका सर्वदा कृतज्ञ रहूँगा।

भाषाशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान् स्वर्गीय डा. वासुदेव शरण अग्रवाल द्वारा जो भूमिका 1946 में लिखी गई थी उसका महत्व इतना समय बीत जाने पर भी अक्षुण्ण है। इसलिये उसे ज्यों की त्यों प्रस्तुत की जा रही है। इसमें कहावत साहित्य के गुणों का इतना विशद विवेचन है कि अपनी मूल प्रस्तावना के संक्षिप्त विवेचन को इस संस्करण में छपवाना अनावश्यक समझता हूँ।

गत वर्ष तक की संगृहीत कहावतों का वर्गीकरण करने के बाद भी संग्रह-कार्य चलता ही रहा है। फलस्वरूप 97 कहावतें परिशिष्ट के रूप में जोड़ी गई हैं। और भी अनेक कहावतें मेवाड़ प्रदेश में प्रचलित हैं जो मेरी जानकारी में नहीं आई हैं। जिन सज्जनों और बहिनों को इनके अतिरिक्त कहावतें विदित हों उन्हें यदि मुझे लिख भेजने की कृपा करेंगे तो इस पुस्तक के भावी संस्करण में जोड़ी जा सकेंगी।

लक्ष्मीलाल जोशी

शंकर सदन
आदिनाथ मार्ग
जयपुर—4

कार्तिक शुक्ला 10 वि.सं. 2035

भूमिका

लोकोक्तियां मानवी ज्ञान के चोखे और चुभते हुये सूत्र हैं। अनन्त काल तक धातुओं को तपाकर सूर्यरश्मियाँ नाना प्रकार के रत्नों का निर्माण करती हैं जिनका आलोक सदा छिटकता रहता है उसी प्रकार लोकोक्तियां मानवीज्ञान के घनीभूत रत्न हैं जिन्हें बुद्धि और अनुभव की किरणों से सदा फूटने वाली ज्योति प्राप्त होती है। लोकोक्तियां प्रकृति के स्फुलिंगी (रेडियो-एक्टिव) तत्त्वों की भांति अपनी प्रखर किरणें चारों ओर फैलाती रहती हैं। उनसे मनुष्य को व्यावहारिक जीवन की गुत्थियों या उलझनों को सुलझाने में बहुत बड़ी सहायता मिलती है। लोकोक्ति का आश्रय पाकर मनुष्य की तर्कबुद्धि शताब्दियों के संचित ज्ञान से आश्वस्त सी बन जाती है और उसे अंधेरे में उजाला दिखाई पड़ने लगता है; वह अपना कर्तव्य निश्चित करने में तुरन्त समर्थ बन जाती है।

लोकोक्ति-साहित्य प्रकृति के ज्ञान की भांति सार्वभौम है। न उसका कोई कर्ता है न उसका देश काल से उतना घनिष्ठ सम्बन्ध है जितना अन्य साधारण साहित्य का होता है। सदा बहने वाले वायु और सूर्य प्रकाश के समान लोकोक्तियां मानव मात्र की संपत्ति हैं और उनके रस का सोता सबके लिये खुला रहता है।

लोकोक्तियों का रस भंडार अक्षय्य है। हजारों बार कही सुनी जाने पर भी लोकोक्ति का जब अवसर पर व्यवहार किया जाता है तब उसमें से सदा एक-सा साहित्यिक ओज और आनन्द उत्पन्न होता है।

लोकोक्ति साहित्य संसार के नीति साहित्य (विज्डम लिटरेचर) का प्रमुख अंग है। मिश्र आदि प्राचीन संस्कृतियों में भी इस प्रकार के बुद्धिमूलक साहित्य का अच्छा विकास हुआ था। विद्वानों का विचार है कि बाइबिल में जो Proverbs नामक प्रकरण है एवं जिसमें व्यवहारसाधक ज्ञान के अत्यन्त प्रदीप्त और परिमार्जित सूत्र पाये जाते हैं उस पर मिश्र बेबिलन आदि के बुद्धि-मूलक नीति साहित्य (Wisdom Literature) का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। बाइबिल के इस अंश का जो महत्त्व पहले कभी नहीं प्रकट हुआ था वह अब तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन करने पर ज्ञात हो रहा है।

भारतवर्ष में भी इस प्रकार के नीतिमूलक साहित्य की परम्परा बहुत प्राचीन काल से पाई जाती है। उपनिषद् युग के अन्त में बुद्धिपूर्वक सोचने की प्रवृत्ति का बहुत विकास हुआ जिसकी झलक बौद्ध साहित्य में भरपूर मात्रा में विद्यमान है। वही समय सूत्र शैली के विकास का भी युग था। लोकोक्तियां

और नीति साहित्य का अत्यधिक मंथन इसी काल में सर्वप्रथम प्राप्त होता है। कामन्दक ने लिखा है कि आचार्य विष्णुगुप्त ने प्रखर बुद्धि के प्रताप से अर्थ-शास्त्र के महासमुद्र से नीतिशास्त्र रूपी अमृत का मन्थन किया। आचार्य चाणक्य बुद्धि के पुजारी थे। उन्होंने स्वयं मुद्राराक्षस नाटक के आरम्भ में बुद्धि की प्रशंसा करते हुए कहा है कि कार्य साधने के लिये अकेली बुद्धि ही सैकड़ों सेनाओं से बढ़ कर है—

एका केवलमर्थसाधनविधौ सेनाशतेभ्योऽधिका।
नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मा गान्मम॥

वस्तुतः चाणक्य द्वारा प्रदर्शित नीति का मार्ग बुद्धि का मार्ग है। चाणक्य की श्लोकात्मक नीति के अतिरिक्त उनका रचा हुआ चाणक्य-सूत्र नामक एक प्राचीन ग्रन्थ आज भी उपलब्ध है जिसे कौटिल्य के व्यावहारिक नीति ज्ञान का मथा हुआ मक्खन ही कहना चाहिए। इसके ५०१ सूत्रों में अनेक सूत्र लोकोक्ति शैली के हैं, जैसे—

(१) बिना तपाए हुए लोहे से लोहा नहीं जुड़ता (नातप्तलोहं लोहेन संधत्ते)

(२) बाघ भूखा होने पर भी घास नहीं खाता (न क्षुधार्थोऽपि सिंहस्तृणञ्चरति)

(३) कलाल के हाथ में दूध का भी मान नहीं होता (शौण्डहस्तगं पयोऽप्यवमन्येत)।

(४) लोहे से लोहा कटता है। (आयसैरायसं छेद्यम्)

(५) उधार के हजार से नकद की कौड़ी भली (श्वः सहस्राद्द्य काकिनी श्रेयसी)। इसी कहावत का चाणक्य सूत्र में एक रूपान्तर यह है—

श्वो मयूरादद्य कपोतो वरः (४/५९) कल के मोर से आज का कबूतर अच्छा है।

ये दो सूत्र उस युग के प्रतिनिधि हैं जब परोक्ष की बनिस्बत प्रत्यक्ष जीवन के प्रति जनता को अधिक सचेत किया जा रहा था। ये दो नियम नगद धर्म की आधार शिला बताते हैं। वात्स्यायन के काम सूत्र में जो इन्हें लोकायत दर्शन से सम्बन्धित कहा गया है उसमें बहुत बड़ी सचाई है। वहां 'श्व सहस्राद्द्य काकिनी श्रेयसी' का रूप इस प्रकार है—

वरं सांशयिकान्निष्काद् असांशयिकः
कार्षापण इति लोकायतिकाः।

निष्क सोने का सिक्का था और कार्षापण चांदी का। सूत्र का भाव यह है कि खटके वाले निष्क से बिना खटके का कार्षापण अच्छा है। निष्क और कार्षापण ईस्वी पांचवीं शताब्दी पूर्व में प्रचलित थे। अतएव इस कहावत की आयु लगभग उतनी प्राचीन तो अवश्य होनी चाहिए। उधार मोर से नगद

का कबूतर अच्छा है, इसी भाव का कायाकल्प हिन्दी की 'नौ नगद न तेरह उधार' कहावत में आज भी मौजूद है।

प्राचीन पाली, प्राकृत और संस्कृत ग्रन्थों में भारतवर्ष के बुद्धिपरायण साहित्य की बहुमूल्य सामग्री पाई जाती है। उसका व्यवस्थित अध्ययन और उसके क्रमिक विकास का अनुशीलन बहुत ही रोचक हो सकता है। सर मानियर विलियम्स ने अपने संस्कृतकोश की भूमिका में ठीक ही लिखा है कि अपने नीतिशास्त्र की चतुरता में भारतवासी संसार में अद्वितीय रहे हैं* महाभारतादि ग्रन्थों में व्यावहारिक बुद्धि से संबंधित नीतिशास्त्र की सामग्री का अतुल भंडार है। उसकी परम्परा सस्कृत से प्रान्तीय भाषाओं में होती हुई हमारे समय तक अटूट चली आई है।

इस नीतिशास्त्र का बहुत ही महत्वपूर्ण अंश संस्कृत न्यायों के रूप में प्रचलित था। काकतालीय, अजाकृपाणीय, अरण्यरोदन, अन्धदर्पण, आदि सैंकड़ों न्यायों के रूप में सस्कृत की चुस्त कहावतें ही पाई जाती हैं। लौकिक न्यायांजलि ग्रन्थ के तीन भागों में जैकब नामक विद्वान् ने अपने पचास वर्षों के अध्ययन के फलस्वरूप इन प्राचीन न्यायों पर बहुत ही सुन्दर सामग्री का संकलन किया था परन्तु वैज्ञानिक दृष्टि से संस्कृत और प्राकृत लोकोक्तियों का काल क्रमानुसार संकलन और सम्पादन अभी होना बाकी है। हिन्दी एवं अन्य प्रान्तीय भाषाओं में प्राचीन न्याय और लोकोक्तियों का उत्तराधिकार बहुत अंशों में यथावत् चला आया है। राजशेखर का 'हत्थकंकणं किं दप्पणेण पेक्खिअदि' (कर्पूर मंजरी १।१८) हिन्दी में 'हाथ कंगन को आरसी क्या', इस सुन्दर और चुस्त रूप में जीवित है। इसी प्रकार और भी न जाने कितना लोकोक्ति साहित्य प्राचीन काल की विचार पटुता को लिये हुए अर्वाचीन कहावतों में घुल-मिलकर बचा हुआ है। परन्तु साहित्य के अन्य अंगों की भांति लोकोक्ति साहित्य का भी विस्तार और विकास होता है। हिन्दी भाषा में समय और परिस्थितियों के फेर से हजारों नई लोकोक्तियां बन गई हैं। विशेष कर जानपदी भाषा में तो कहावतों का अभी तक बहुत महत्वपूर्ण स्थान बना है। यद्यपि हिन्दी भाषा की कहावतों के कुछ संग्रह और कोश इधर प्रकाशित हुए हैं, विशेष कर फैलन ने हिन्दी कहावतों का एक बहुत ही परिश्रम-साध्य संग्रह तैयार किया था, फिर भी इस दिशा में अभी बहुत कुछ कार्य होना बाकी है। मराठी, काश्मीरी, पंजाबी, पश्तो, बंगला, उड़िया, तामिल

*In some subjects too, especially in poetical descriptions of nature and domestic affection. Indian works do not suffer by a comparison with the best specimens of Greece and Rome, while in the wisdom, depth, and shrewdness of their moral apothegms they are unrivalled, p. xxi.

आदि भाषाओं में भी लोकोक्तियों के अपने-अपने संग्रह प्रकाशित हुए हैं, परन्तु वैज्ञानिक रीति से इस विषय पर अभी तक किसी भाषा में बृहत् अध्ययन का आयोजन नहीं किया गया।

कम से कम हिन्दी के लिये तो यह बात सच है कि लोकोक्तियों के एक सर्वांगपूर्ण अध्ययन तक पहुँचने से पहिले प्रादेशिक एवं जनपदीय बोलियों में प्रचलित कहावतों के सुन्दर संग्रह तैयार हो जाने चाहिए। जानपदी बोलियों के अध्ययन में जिन साहित्य सेवियों को रुचि है वे अपने एकाकी प्रयत्न से भी इस दिशा में बहुत कुछ सफल कार्य कर सकते हैं। दो वर्ष हुए हमने अपनी चिरगांव की यात्रा में वहीं के उत्साही कार्यकर्त्ता श्री हरगोविन्दजी के पास बुन्देलखण्डी कहावतों का एक हस्तलिखित संग्रह देखा था जिसमें लगभग दो हजार कहावतें थीं। इसकी निम्नलिखित कहावत पर बुन्देलखण्डी भाषा की कितनी सुन्दर छाप है—

अक्कल बिन पूत कठँगर से।
बुद्धी बिन बिटिया डैंगुर सी॥

कठँगर = किवाड़ों के पीछे का आगल या बेंड़ा।
डैंगुर = उजरऊ या ईतरी गाय के गले में डाला जाने वाला डंडा।

कठँगर और डैंगुर की उपमाएँ जनपदीय वातावरण के अत्यन्त सन्निकट है और ठेठ साहित्य की दृष्टि से उनमें कितना अधिक रस भरा है! बुंदेली की तरह अवधी, भोजपुरी, बाँगड़ू, मेरठ की कोरवी और पहाड़ी आदि बोलियों की कहावतों पर भी कार्य होने की आवश्यकता है। इनकी सम्मिलित सामग्री के आधार पर ही हिन्दी लोकोक्तियों का विशद तुलनात्मक संग्रह किसी समय तैयार किया जा सकेगा।

यह बात भी जानने योग्य है कि कहावतों का जितना गहरा-सम्बन्ध बोलियों से रहता है उतना साहित्य की भाषा से नहीं। कहावतों को लोक में बोल चाल की ठेठ भाषा की सच्ची पुत्रियां कहा जा सकता है। उनके सर्वांग-पूर्ण संग्रह के लिये घरों और गाँवों में फैली हुई अपनी भाषा की बोलियों को निरन्तर छानने की आवश्यकता पड़ेगी। विशेषतः स्त्रियों की घरेलू बोल चाल की कहावतों में उनके निजी परिमित जगत् में पनपने वाली भावनाओं की

A Dictionary of Kashmiri Proverbs and Sayings by Rev. J. H. Knowles (1885/explained and illustrated from the rich and interesting folk love of the Valler. Fallon's **Dictionary of Hindustani Proverbs** : Including many Marwari, Punjabi, Bhojapuri & Trihuti Proverbs, Sayings. Emblems, Aphorisms, Maxims and Similes (1886)

सच्ची झांकी मिल सकती है। मथुरा में एक पंजाबी वृद्धा की बोली को कुछ समय तक छानने पर मैं निम्नलिखित सुन्दर कहावतें प्राप्त कर सका था—

१. **सिरौं गंजी ते कंघियां दा जोड़ा।**

(इसी भाव की बनारसी कहावत उन्हीं बहिन ने सुनाई थी—ग्रांखौ एकौ नाई कजरौठा नौठे।)

२. **पाई पीसी चंगी। कुड़ी खड़ाई मंदी।**

(किसी का पावली भर ग्रनाज पीस देना सुगम है पर लड़की को खिलाना टेढ़ा काम है।)

३ **घर पतली बाहर संगनी ते मेलो मेरा नाम।**

(घर वालों को पतली छाछ ग्रौर बाहर वालों को गाढ़ी देकर ग्रपने को बड़ी मेल-जोल वाली समझती है।)

४. **सुथनी दिया साका तैनूं हलवा मांडा।**
घघरी दिया साका तैनूं दुआ दिनां दा फाका॥

(सुथने के सगे सम्बन्धियों ग्रर्थात् पीहर वालों को हलवा मांडा देना ग्रौर घघरी के सगे ग्रर्थात् ससुराल वालों को दो दिन का फाका कराना)।

५. **खसम न पूछे बातड़ी ते फिट्ट सुहागिन नाम।**

६. **जिन्ना न्हाती उन्नाई पुन्न रौ वे नाईया हौर न मुन्न।**

(जितना नहा चुकी उतना ही पुन्न हो गया। रह भई नाई ग्रौर न मूँड)

७. **अग्गे नइ सीमान, नी जडाऊ छल्ला।**
टप चढी समान की करे महल्ला॥

(पहले से ही चीज बस्त नहीं है, ग्रब कूद कर ग्रासमान पर चढ गई, महल्ले वाले क्या कर लेंगे ग्रर्थात् पूरी निर्लज्जता धारण करली)

८. **उज्जड़ियां भरजाईयां वली जिनां दे जेट।**

(जिनके जेठ रखवाले हों वे भौजाइयां उजड़ी जानिए)

९. **सुत्ते पुत्तर दा मुंह चुम्मियां।**
न मां दे सर हसान न प्यौ दे सर हसान॥

(सोते लड़के के चूमने या प्यार प्रकट करने से न मां पर ग्रहसान न बाप पर)

१०. **सेली पाई पिन्ननी, ना मंगनी ना घिन्ननी।**

(भिख मंगिन (पिन्ननी) को सहेली बनाने से न कुछ लेना, न देना। (घिन्नना-ग्रहण करना) ग्रर्थात् भाजी बायने का व्यवहार न चल सकेगा।) यह उक्ति धन्नी पोठोहार की है।

११. **बाज तेल ना जलन मसालाँ। बाज प्रेम ना हाँई।**

(बिना [बाज] तेल के मशाल नहीं जलती, बिना प्रेम के ग्राह नहीं निकलती)

१२. मरगे सांई देलोक ना हिरख ना मसोस।

(उनके मरने का किसी को सुख-दु:ख नहीं)

१३. जून फिट्ट के बाँदर और मनुष फिट्ट के जाँजी।

(आदमी अपनी जून खोकर बंदर के रूप में जन्म लेता है, मनुष्य बिगड़ कर बराती बन जाता है। बरातियों को तीन दिन जो मस्ती चढ़ती है उस पर बड़ी चुटीली मार है)

१४. गुरु जिना दे टप्पने ते चेले जान शड़प्प।

(जो गुरू कूदना जानते हैं, उनके चेले मुंडक मारना जानते हैं। हिन्दी में, गुरू गुड़ ही रहे चेला शक्कर हो गये।)

१५. ओच्छे जट्ट कटोरी लब्भी पानी पी-पी आफरियां।

(ओछे जाट को कटोरी मिल गई तो पानी पी-पीकर अफर गया)

इसी प्रकार अपनी स्त्री के मुख से ठेठ मेरठ की बोली की करीब साठ कहावतें दो-तीन वर्ष के भीतर मैं लिख सका था जो अन्य किसी प्रकार प्राप्त न हो सकती थीं। इन उक्तियों के द्वारा नागरिक जीवन से दूर गाँव के मनोभावों तक हम जा पहुँचते हैं—

१ पैरी ओढ़ी धन दिपै। लीपा पोता घर खिलै।

२. धियों की माँ रानी। बुढ्यांत भरेगी पानी॥

(बेटियों की मां रानी होती है, जवानी में बेटियां उसका कामकर जायगी, पर बुढापे में उसे अपने हाथ से काम करना पड़ेगा)

३ खाले-खाले बउअल ना। पहरले-पहरले धीयल ना।

(सास के प्रति उक्ति-जब तक बहुएं नहीं आती खालो, जब तक बेटियां नहीं होतीं पहनने का शौक करलो)

४. काम काज कूं थर–थर कांपै खाने कू मरदानी।

५. लगी हल्द, हुई बल्द।

(पतली कुंवारी लड़की भी ब्याह होने पर पनप जाती है)

६. कदी ना कदी तो भैंस फसर कू चली। सो सूखाई पड़ गई।

(फसर-फलने के लिये; संस्कृत, उपसर)

७. पूड़ी ना पापड़ी। पटाक बहु आ पड़ी।

(चट पट ब्याह हो जाना)

८. आग पै कू वारी। खसम निगोड़े के माथे से मारी।

९. सुसरे कू पड़ी भाजर की। बहु की बिंदी काजर की।

१०. हाथ चूरी न सिर लट्टूरी। आई मेरी सुहाग-भाग की पूरी।

(शृंगार विहीन फूहड़ बहू पर व्यंग्य उक्ति)

११. पूत लड़ाया ज्वारी। धी लड़ाई क्वारी।

(अधिक प्यार से दोनों बिगड़ते हैं)

१२. जिसके सास ना ऊ करा बड़ी ।
जिसके नन्दना ऊ दितार बड़ी ॥

(करा=सेवा करने वाली; दितार=देने लेने वाली)

१३. घायल कराहवे ना, सेका कराहवे ।

१४. कै इजरियाई बढ़ले ।
कै घघरियाई बढ़ले ॥

इजरिया=इजार पहनने वाली अर्थात् कुंवारी)

घघरिया=घाघर पहनने वाली, ब्याही हुई। यह उक्ति छोटी उमर और बड़ी उमर की शादी पर है। या तो छोटी का ब्याह करके लड़की को बढ़ने दो फिर पति से मिले, या बड़ी उमर में शादी करके उसे शीघ्र पति से मिलने दो।

१५. कमाऊ आवें डरते। निखट्टू आवें लड़ते।

१६. गूदडिया मरकोले मारे हुरमत मरै जड़ाई।

गरीब आदमी मरकोला (बहुत मोटी किस्म का कपड़ा) पहनकर चैन करता है, पर रईस शान में पतला कपड़ा पहनकर जाड़ा खाता है। मरकोली एक प्रकार का कपड़ा जो पहले बनता था। जिसका नाम १७ वीं—१८ वीं शती के भारतीय वस्त्र व्यवसाय में आया है। (दे० डा० राधाकमल मुकर्जी कृत एकनामिक हिस्ट्री, १६००-१८००) यह शब्द साहित्य में न बचकर एक कहावत में पड़ा रह गया है।

१७. मरे बाबा कीं पस्सों सी आँख।

(जो मर गया हो उसकी बड़ाई के पुल बांधना। पस्सों सी आँख, यह उपमा बहुत पुरानी है, एक सहस्र वर्ष पूर्व के भारतीय साहित्य में यह उपमा आ चुकी थी। राज शेखर ने कर्पूर मंजरी में णअणाइँ पसइ सरिसाइँ (नयने प्रसृतिसदृशे, २। ३८) उपभान का प्रयोग किया है।

इस प्रकार की न जाने कितनी सामग्री जनपदीय अध्ययन की शैली से एकत्र की जा सकेगी। इस सामग्री का रूप शिष्ट साहित्य के अनुकूल न भी हो तो भी अपने विशाल जीवन के कुछ अन्तरंग पहलुओं को समझने में इससे अवश्य सहायता मिल सकती है। लोक जीवन का सर्वाङ्गपूर्ण अध्ययन ही अर्वाचीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अन्तर्गत आता है।

राजस्थान हिन्दी क्षेत्र के अन्तर्गत एक विस्तृत भू प्रदेश है जिसमें मेवाड़ी, मारवाड़ी, हाड़ोती और ढूंढाड़ी बोलियों के रूप में विपुल जनपदीय साहित्य विद्यमान है। क्रमशः इस साहित्य की कहावतें, मुहावरे, धातुपाठ, पेशेवर शब्द, कहानी, लोक गीत आदि का संकलन करना राजस्थानी भाषा के प्रेमियों का कर्तव्य है। यह हर्ष की बात है कि हिन्दी विद्यापीठ उदयपुर ने इस ओर पग बढ़ाया है। श्रीयुत लक्ष्मीलालजी जोशी ने प्रस्तुत संग्रह में मेवाड़ की

लगभग १००० कहावतों का संग्रह करके एक आवश्यक अंग की पूर्ति की है। कहावतों का विभाग इस प्रकार है—

(अ) नीतिपरक
(आ) मानव प्रकृति सम्बन्धी
(इ) अन्योक्तियां
(ई) जाति सम्बन्धी
(उ) इतिहास सम्बन्धी
(ऊ) ऋतु सम्बन्धी
(ए) विविध
(ऐ) हास्य व्यंग

कहावतों के इस प्रकार के विषय विभाग के सम्बन्ध में मतभेद भी हो सकता है। ज्यों-ज्यों वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उपलब्ध सामग्री की परीक्षा की जायगी विषय विभाजन की प्रणाली भी स्पष्ट होती जायगी। परन्तु प्रथम उद्देश्य तो एक बार सामग्री का संगृहीत हो जाना है। भाषाशास्त्र की दृष्टि से प्रत्येक कहावत का अध्ययन भी आवश्यक है। कहावत संख्या ८६।२३३, १३५।६७ और १४२।११९* में जान शब्द बरात के लिये प्रयुक्त हैं। यह राजस्थानी भाषा का चालू शब्द जान पड़ता है। मूल में यह शब्द संस्कृत यज्ञ के अपभ्रंश जण्ण से निकला है—

यज्ञ—जण्ण—जन्न—जान। पंजाबी में भी जन्न बरात को कहते हैं। हिन्दी का जनवासा शब्द भी 'जण्ण वासक' से बना है। विवाह एक यज्ञ समझा जाता था, इसी से यज्ञ शब्द बरात के अर्थ में भी प्रचलित हो गया।

इसी प्रकार, पोठ्यो=प्रोष्ठ, (२०७।२३०); धेह (९२।६=दह, ह्रद); भोई (१३९।९६)=भोगिक, हांथी की सेवा के लिये नियुक्त परिचारक (आईने अकबरी में अबुलफजल ने इसका वर्णन किया है।) भागे=टूटना सं० भग्न (१२४।२९२); फिया (७५।१२७)=तिल्ली, सं० प्लीहा। नंगजण्यां ए नानकी, तरे तरे की वानगी कहावत का नानकी (=मां) शब्द बड़ा विलक्षण है। ऋग्वेद में केवल एक बार इस शब्द का प्रयोग हुआ है

उपल प्रक्षिणी नना (ऋ० ९।११२।३) अर्थात् मां चक्की पीसने वाली है। उसके बाद कुषाण काल की शक मुद्राओं पर नना देवी का नाम आया है। हिन्दी के नाना नानी शब्दों में भी नना का ही सम्बन्ध ज्ञात होता है।

मेवाड़ी बोली में मां के लिये नानकी शब्द प्राचीन ऋग्वेदीय अर्थ का स्मरण दिलाता है। इसमें कई सन्देह नहीं कि बोलियों में सुरक्षित अनेक

*पहला अंक पृष्ठ और दूसरा कहावत की संख्या बताता है।

शब्दों की परम्परा वैदिक भाषा तक पहुंचेगी। इसी प्रकार के दो शब्द मेरठ की देहाती बोली में जीवित मिले जो श्रौत सूत्रों में प्रयुक्त हैं—अर्थ दोनों जगह वही है, पर संस्कृत साहित्य में उनके प्रयुक्त होने का अवसर नहीं आया। एक शब्द है ईंडरी (वैदिक ईंड्)=मूँज की बनी हुई घड़ा टेकने की गेंडुरी। दूसरा शब्द है जून (वैदिकयून)=मूँज की मोटी रस्सी। हो सकता है हिन्दी की दूसरी बोलियों में भी उनकी परम्परा बच गई हो। बैल के लिये पोठ्यो शब्द भी सं० प्रोष्ठ का सूचक है जो राजस्थानी भाषा में बच गया है। हिन्दी की अन्य बोलियों में वह अप्रयुक्त है। यह भी वैदिक युग का शब्द है प्रोष्ठपद अर्थात् प्रोष्ठ के पैर के आकार वाला यह एक नक्षत्र का मशहूर नाम था।

'थारे भावे नागलो मारे भावे कतीर' (२९।२८४) का कतीर शब्द प्राचीन ग्रीक Kassiteros और संस्कृत कस्तीर से सम्बन्धित है। तुम्हें सीसा अच्छा लगता है हमें रांगा—अपनी अपनी रुचि है।

इस प्रकार के अन्य अनेक शब्दों की जो कहावतों में नगीनों की तरह जड़े रह गए हैं धात्री जनपदी बोलियां हैं। उनके स्वरूप का उद्धार करना साहित्यिक कर्तव्य है। इस संग्रह की कहावतों में अनेक शब्द ठेठ राजस्थानी भाषा के भी है जैसे लांटी, पगरखी (१९८।३४), कसरो (१९१।७), टेटा (१८८।३), मांटी (१३४।१५९) आदि। हमारी सम्मति में ऐसे सब शब्दों का एक कोष इस प्रकार की पुस्तकों के अन्त में होना आवश्यक है, इससे पुस्तक की वैज्ञानिक उपादेयता बढ़ती है। लोकोक्तियों का अर्थ निर्देश करने के विषय में इस बात का सदा स्मरण रखना चाहिए कि भावार्थ से पहले शब्दार्थ अवश्य स्पष्ट करके लिखा जाय। प्रायः ऐसा देखा जाता है कि भावार्थ शीघ्र ध्यान में आने से शब्दार्थ का स्पष्टीकरण छूट जाता है। यथा रोटी खावे मक्की की अर बढ़ाई मारे कांसा की (१२१।९०) उक्ति में कांसे की बड़ाई मारने का भावार्थ है लम्बी चौड़ी तारीफ करना, पर शब्दार्थ है कांसे के बर्तनों में परोसे हुए श्रेष्ठ सुन्दर (या राजकीय) भोजन की प्रशंसा करना। लोकोक्ति १४५।२२ का शब्दार्थ अस्पष्ट है। लोकोक्ति १३२।१४९ में भींजा पाहुना क्यों भंगी बराबर है यह स्पष्ट होना चाहिए। अथवा १९१।६ में कवि और चित्रकार को भी पांच नरक के द्वारों में गिनने का क्या हेतु है यह जानने की इच्छा रहती है। शायद चित्रकार और कवि सुन्दर स्त्रियों की ओर राजाओं का मन भड़काने में सहायक होते थे, इसीलिये निन्दा के भागी हुए। लोकोक्ति १८६।२ में नगर सेठ की ऐतिहासिक घटना की अपेक्षा व्यंग्य अर्थ अधिक प्रबल जान पड़ता है और यह ऋण लेकर मौज करने वाले किसी नादिहन्द की उक्ति जैसी लगती है। अर्थ की दृष्टि से निम्न लोकोक्ति विशेष ध्यान देने योग्य है—

आसोजां का तावड़ा में जोगी वेग्या जाट ।

बामण वेग्या सेवड़ा, ज्यों बाण्या वेग्या भाट ।।

(१८८।२)

पुस्तक का अर्थ—'अश्विन मास में धूप तेज पड़ती है। उसमें फिरने से जाट जोगी, ब्राह्मण सेवक और महाजन भाट जैसे हो जाते हैं। यह अर्थ ठीक नहीं है।

यह उक्ति बहुत ही चोखी है और हमारे जीवन की तीन विशेष घटनाओं पर इसमें चुटीली मार है। इसका पूरा अर्थ इस प्रकार खुलता है—

आश्विन मास की धूप में जाट जोगी हो जाता है, ब्राह्मण जैनी बन जाता है, और महाजन भाट बन जाता है।

(१) कुआर की करारी धूप में कहा जाता है कि कस्तूरिया हिरन भी काले पड़ जाते हैं। उस मास में जाट जब खेत में हल चलाता है और कातिक की बुआई के लिये खेत तैयार करता है उसकी वह मेहनत योगी के पंचाग्नि तापने से कम नहीं कही जा सकती।

(२) ब्राह्मण सेवड़ा बन जाता है। 'सेवड़ा' शब्द का अर्थ सेवक नहीं है। सेवड़ा संस्कृत 'श्वेतपट' अर्थात् श्वेताम्बर का अपभ्रंश रूप है। जायसी के पद्मावत में भी यह शब्द प्रयुक्त हुआ है—

सेवरा खेवरा, बानपर, सिध, साधक, अवधूत ।

आसन मारे बैठ सब जारि आतमाभूत ।।

(हिन्दी शब्द सागर पृ० ३६३८)

कुआर महीने के पितृ पक्ष में निमंत्रणभोजी ब्राह्मण जैनियों की तरह प्राय: एक ही बार दिन में भोजन कर लेता है, रात में नहीं खाता। श्राद्ध में जीमने वाले भोजनभट्टों पर किसी ने कहावत में क्या अच्छा कूट किया है। इसी संग्रह की लोकोक्ति सं० (१२९।१०) 'बामण स्वामी सेवड़ा जात जात ने मारे' में भी 'सेवड़ा का यही अर्थ है, 'सेवक' नहीं।

(३) कुआर में बनिया भाट बन जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि असौजी फसल की पैदावार से अपने देन लेन की उघाइ करते हुए महाजन को भाट की तरह किसान-आसामियों के लिये माठे शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है।

प्रस्तुत संग्रह में एकत्र सामग्री बहुत रोचक है। कुछ कहावतों में पूरा साहित्य का रस आता है, जैसे 'सोड़ी जी वाला सिंगार करे (१८७।६) अथवा 'लखारा की लोड़ी अर डूँगर जाय पोढी' (१६३।१०७)। कितनी ही उक्तियाँ भाषा की दृष्टि से अत्यन्त सुन्दर और गठे हुए सूत्रों की तरह हैं, जैसे 'बीज के झमके मोती पोयले तो पोयले' (१६३।१०८) 'चरणामृत का गटका, मिटे चोरासी का भटका' (१८३।१५) बामण को धन सबोड़ा में, धाकड़ को

धन लपोड़ा में (१७७।५१) आदि। कुछ कहावतें ऐसी हैं जिनमें ठेठ राजस्थानी जीवन या मनोभावों की छाप है, जैसे सरदाँरा की जान में........अन्न आसमान में (१८३।७८), रजपूत का दूजा अर छाळी का तीजा ने जगा नी (३८३।७६), भोळी माँका डावा बेटा अर डावी माँका भोळा बेटा (१८१।६७), घोड़ा की जात परात अर रजपूत की जात जमीं (१७०।१८) आदि।

प्राय: सब बोली और भाषाओं की कहावतों में इस प्रकार के स्थानीय और प्रादेशिक भाव अवश्य पाए जायेंगे। उनके अस्तित्व से लोकोक्तियों के साथ भूमि का निकट सम्बन्ध सिद्ध होता है। जो भूमि सर्व भूतों की धात्री हैं, जहाँ भाषा के नाना रूप जन्म लेते और पनपते रहते हैं, वही भूमि युग-युगान्तरों में लोकोक्तियों को जन्म देकर उनका पालन और संवर्धन करती है। मनुष्य की अन्य सब वस्तुओं की भांति लोकोक्तियाँ भी भूत और भविष्य के साथ अटूट सम्बन्ध रखती हैं और विकास के अविचाली नियमों के अनुसार लोक की मानस भूमि में जन्म, वृद्धि और ह्रास को प्राप्त होती रहती है। उनके विकास का अध्ययन बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्द्धक हो सकता है।

वासुदेव शरण अग्रवाल

अनुक्रम

॥ श्रीः ॥

नीति (१)

१. अक्कल बड़ी के भैंस ।

भैंस बड़ी होती है किन्तु वास्तव में बुद्धि ही सबसे अधिक उपयोगी है, क्योंकि उससे सब कार्य सिद्ध हो सकते हैं ।

२ अक्कल बखूणाँ मानवी, धन काळाँ के होय ।

किसी मनुष्य में बुद्धि कैसी है सो बताओ । धन तो ऐसे वैसे आदमी के भी हो जाता है । 'धन कालाँ सूँ जाय' भी कहा जाता है, अर्थात् पैसा तो समय पाकर नष्ट भी हो जाता है ।

३. अक्कलमंद ने इशारो ई घणो ।

बुद्धिमान आदमी इशारे से ही सामने वाले का इरादा भाँप लेता है । उसे जबान से कहने की आवश्यकता नहीं । 'परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः' ।

४. अक्कल हिया में ऊपजे, दीधा लागे डाम ।

दिये हुए तो डाम लगते हैं । बुद्धि तो स्वयं के हृदय (मस्तिष्क-अन्तर) में ही उत्पन्न होती है । (डाम–किसी गर्म की हुई वस्तु से चमड़ी को जलाने का दाग) ।

५. अणजाण की आँगणे मौत ।

अनजान व्यक्ति को अज्ञात स्थान में सदा ही भय रहता है ।

६. अण माँग्याँ मोती मिले माँगी मिले न भीख ।

संतोष में ही सार है । न माँगने वाले को मोती मिल जाते हैं अर्थात् बहुमूल्य वस्तु बिना माँगे ही मिल जाती है जबकि माँगने वाले को भीख भी नहीं मिलती ।

७. अणहोणी होवे नहीं होणी होय सो होय।

भवितव्यता पर विश्वास कर शान्त रहो। 'न यद्भावि न तद्भावि भावि चेन्न तदन्यथा। इति चिन्ता विषघ्नोऽयं अगद: किं न पीयते।

८. अणी चूक्याँ बीसाँ सौ।

अवसर चूकने पर सिद्धि दो हजार कोस दूर हो जाती है।

९. अतरा ज्यूँ सतरा।

बड़े काम में थोड़े अधिक भार की परवाह नहीं की जाती।

१०. अदभण्यो घर काँ ने खावे।

अधूरा पढ़ा लिखा व्यक्ति घर वालों को कष्ट देता है। जैसे—'अल्प विद्या भयंकरी' और 'A little knowledge is a dangerous thing.'

११. अन्धेर नगरी अनबूझ राजा।
टके सेर भाजी टके सेर खाजा॥

अबोध राजा के राज्य में बहुधा गुण का आदर या अवगुण का अनादर नहीं किया जाता है।

१२. अन्न जींरा पुन्न।

अन्नदान के समान पुण्य नहीं है।

१३. अपणी करणी पार उतरणी।

स्वयं के परिश्रम से ही कार्य ठीक तरह से पूरा होता है।

१४. अबखी में आड़ो आवे ज्योई सगो है।

आपत्ति काल में सहायता करने वाले को ही सच्चा सम्बन्धी मानना चाहिये।

१५. अब पछताये होत क्या चिड़िया चुग गई खेत।

काम बिगड़ जाने के बाद पहले बुद्धि न आने का पछतावा करना व्यर्थ है।

१६. आई लछमी ने पाछी नी फेरणी।

आये हुए धन को वापस नहीं लौटाना चाहिये। 'Do not refuse a good offer.'

१७. आओ, बैठो, पीओ पाणी।
तीन बात तो मोल न आणी॥

इन तीनों का मोल नहीं लगता, अर्थात् अपने घर आये का शक्ति के अनुसार स्वागत करना चाहिये।

१८. आखी रात पीस्यो ने ढाँकणी में साँवरचो।

सारी रात आटा पीसा और ढक्कन में भरा। 'नौ दिन चले अढाई कोस की तरह जहाँ मूर्खता वश परिश्रम बहुत किया जाता है किन्तु लाभ नहीं के बराबर होता है वहाँ यह कहावत कही जाती है।

१९. आगतां की देवल्याँ, धीरां का नींवाण ।

जल्दबाज आदमी मारा जाता है और उसका स्मारक ही बनाना पड़ता है । धैर्यपूर्वक काम करने वाला कुए, बावड़ी (वापी) तालाब आदि बनाकर जाता है ।

२०. आगले घर जावे जद पाछलो याद आवे ।

वर्तमान परिस्थिति से असन्तोष होता है परन्तु उससे भी अधिक कष्ट पड़ता है तब पहली परिस्थिति को भी गनीमत समझ उसका स्मरण किया जाता है ।

२१. आगेई तो साँड अर् फेर चोराँ लीदी ।

पहले ही तेज चलने वाला ऊंट है, फिर उसे चोर ले गये तो वे उसे और भी तेजी से भगायेंगे । 'करेला और नीम चढ़ा' की तरह दो समान गुण वाली विशेषतायें मिलने पर यह कहावत कही जाती है ।

२२ आगे जगाँ देख र् पाछलो पग उठावणो ।

'पिछलो पाँव उठाइये देखि आगली ठौर'—भविष्य के आसार अपने हित में दिखाई दें तभी वर्तमान की स्थिति को त्याग कर कोई नया काम आरम्भ करना उचित है ।

२३. आगे दीदो पाछे पड़े ।

पहले कुछ दिया होगा या कोई त्याग किया होगा तो उसका प्रतिफल आपका पीछा करके भी आपको मिलेगा ।

२४. आज है जो राज है ।

भविष्य के भरोसे न रहकर वर्तमान में विश्वास करना हितकर है । वर्तमान सत्ताधारी की ही सत्ता स्वीकार करनी पड़ती है ।

२५ आज बीज, तो काल तीज ।

चिन्ता मत करो या फूलो मत । आज की परिस्थितियां कल नहीं रहेंगी ।

२६ आज म्हारे तो काल थारे ।

विपत्ति सब पर पड़ती है । आज मुझ पर तो कल तुम पर ।

२७ आटा में लूण जतरोक झूँठ तो खटावे ।

कई (या अधिक) सत्य बातों के साथ थोड़ा सा झूँठ सहन किया जा सकता है अधिक नहीं । जैसे—सारी रोटी नमक की नहीं बन सकती ।

२८. आटो साटो जींरो ब्याज न बाँटो ।

वस्तुओं के अदल-बदल करने में कोई खर्च नहीं लगता । जैसे—Exchange is no robbery.

२९. आत्मा सो परमात्मा ।

आत्मा ईश्वर का ही रूप है ।

३०. **आतमघाती महापापी ।**

आत्महत्या करना घोर पाप है ।

३१. **आप आपकी लुगाई को नाम सब जाणे ।**

अपनी आन्तरिक परिस्थिति सबको मालूम होती है ।

३२. **आप आपका भाग को सब खावे ।**

कोई किसी का प्रतिपालक नहीं है । किसी को सहारा देकर गुमान नहीं करना चाहिये । सबको अपने-अपने भाग्यानुसार मिल जाता है ।

३३. **आपको कायदो आपके हाथ ।**

व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा का जिम्मेदार स्वयं ही होता है । उसका बढ़ना या गिरना उसके स्वयं के कार्यों पर निर्भर होता है ।

३४. **आपको जीव सबने बालो ।**

अपना जीव सबको प्रिय होता है ।

३५. **आपणो ओसरो आपाँई दे'वाँ ।**

अपना काम खुद अपने को ही करना होगा । 'ओसरा'—'अवसर' हिस्से के काम के लिए निर्धारित समय ।

३६. **आपणो घर, अर् हँग-हँगऽर् भर ।**
परायो घर, थूँकबा को'ई डर ।।

अपने घर में व्यक्ति को किसी प्रकार का संकोच या भय नहीं होता । वह सुख से रहता है। पराये घर में उसको किसी जगह थूँकने में भी डर रहता है।

३७. **आपणो पेट तो कुत्तो भी भर लेवे ।**

जो दूसरों के काम नहीं आता उसके लिए यह उपदेश है । 'काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुंक्ते' ।

३८. **आप भला तो जग भला ।**

स्वयं में भलापन है तो उसके लिए सभी भले हो जाते हैं ।

३९. **आप मरयाँ जग परलै ।**

हमारे मरने के बाद संसार में प्रलय ही समझना चाहिये क्योंकि बाद में हम किसी परिस्थिति का उपयोग नहीं कर सकते ।

४०. **आम खाबाऊँ काम है कन रूँख गणबाऊँ ।**

व्यर्थ की बातों में न उलझते हुए काम की बात पर ध्यान देना चाहिये । आम खाने के पहले आम के पेड़ों की गिनती करना अनावश्यक है ।

४१. **आम फले परवार सूँ, मुवा फले पत खोय ।**
वाँको पाणी जो पीवे, मत कठासूँ होय ।।

आम अपने पत्तों सहित फलता है, किन्तु महुवे जब फलते हैं तो उनके पत्ते झड़ जाते हैं । फिर इन महुओं का पानी (शराब) पीने वालों को सद्-बुद्धि कैसे उपज सकती है ।

४२. आया तो लाख का, नीं आया तो सवा लाख का ।

जो हमारे यहाँ घमण्ड के मारे नहीं आवे, हमें भी उसकी परवाह नहीं करनी चाहिये । आवे तो हम उसका आदर करने को तैयार हैं ।

४३. आला जतरे बाला ।

जो वस्तु गीली रहने तक ही अच्छी लगे और सूखने पर खराब हो जाय, उसके लिये यह कहावत प्रचलित है ।

४४. आवध सूँ ओसाण बड़ो ।

शस्त्र पास में होते हुए भी मौका आने पर ठीक तरह उसका प्रयोग नहीं कर सके तो शस्त्र व्यर्थ है । मौके पर सावधानी शस्त्र से भी अधिक काम आती है ।

४५ आवे जो गावे, भावे सो खावे ।

जो गीत याद हो उसे गाना चाहिये और रुचि के अनुसार ही भोजन भी करना उचित है ।

४६. आँख्याँ देखी परसराम कदै न झूँठी होय ।

आँखों देखी बात (घटना) को कोई झूँठी नहीं कह सकता ।

४७. आँख्याँ मींची र् जग अँधारो ।

'आप मरे, जग प्रलय' या सम्मीलने नयनोर्नहि किञ्चिदस्ति !

४८. आँगणे सूबा को अर् झूँठ बोलबा को कई थाग ।

झूँठ बोलने वाले के कोई सीमा नहीं होती जैसे जमीन पर सोने वाले के कोई सँकड़ाई (तंगी) नहीं होती । 'मुखमस्तीति वक्तव्यं दशहस्ताहरीतकी ।'

४९. आँधा आगे रोबो अर् आपणी आँख्याँ खोबो ।

जो सहृदय नहीं होता उसके सामने अपनी दुःख गाथा गाने से कोई लाभ नहीं होता ।

५०. आँधा के तो दो आँख्याँ चावे ।

किसी अभावग्रस्त को उसकी प्राथमिक आवश्यकता की पूर्ति ही पर्याप्त संतुष्टि का कारण होती है ।

५१. आँधा को हाथ काँधा पर ।

अँधे को तो कँधे पर हाथ रखने देकर साथ साथ चलाना ही पड़ता है ।

५२. आँधाँ में काणो राजा ।

अधिक अवगुण वालों में कम अवगुण वाला श्रेष्ठ समझा जाता है । जैसे-'निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते ।' 'फूले ढूँढा माँहि धतूरो, जंगल माँहि बंबूल । ज्यूँ आँधा में काणो राजा, कलजुग करे कबूल ।'

५३ आँधा सूँ अन्याई की दी सो काँधे लेर काढणो पड़्यो ।

अँधे से यारी की तो उल्टा उसे कँधे पर बिठा कर निकालना पड़ा

(क्योंकि वह स्वयं भाग नहीं सकता)। किसी बेहूदे व्यक्ति से फँस जाने पर किसी तरह बात को पार लगाना ही पड़ता है।

५४. आँधी पीसे कुत्ता खाय।

कमाने वाले यदि अपनी वस्तु की रक्षा नहीं करते हैं तो उसे अयोग्य व्यक्ति नष्ट कर देते हैं।

५५. आँधा कूकड़ा अर् सुल्या धान।
जस्या नाई उत्याई जजमान॥

जिस प्रकार अन्धे मुर्गे को यदि सुला हुआ धान मिले तो भी उसे खाकर संतोष करना पड़ता है इसी प्रकार खराब नाई को ग्रामीण या कंजूस यजमान मिले तो भी उसकी सेवा करनी पड़ती है। अयोग्य व्यक्ति को अधिक धन या आदर नहीं मिल सकता, यथा योग्य ही मिलता है।

५६. इज्जत सूँ रे वे तो मनख, नीतर ढाँढो।

प्रतिष्ठापूर्वक न जीना पशुता है।

५७ इश्क न देखे जात-कुजात,
नींद न देखे टूटी खाट,
तरस्यो न देखे धोबी को घाट॥

प्रेम जात-पाँत के बन्धन को तोड़ देता है। शारीरिक स्तर पर केवल इतना ही अर्थ है कि कामातुर व्यक्ति अन्धा हो जाता है—'कामातुराणां न भयं न लज्जा, क्षुधातुराणां न रुचिर्नवेला' नींद जोर से आ रही हो तो टूटी खाट पर भी अच्छी आ जाती है और प्यासा आदमी धोबी के घाट पर गन्दा पानी भी पी लेता है।

५८. ई बोली में रस अर् ई बोली में बस।

वाणी में मधुरता और कटुता होने पर उसका अलग-अलग प्रभाव हो जाता है। मधुर वाणी से प्रीति का आनन्द और कटु वाणी से वैर का विष उत्पन्न होता है।

५९. उतरचा सहेणा मरतक नाम।

अधिकार रहित हो जाने पर व्यक्ति मुर्दे के समान प्रभावहीन हो जाता है।

६०. उदली के लारां डायजो।

पति के होते हुए दूसरे से विवाह करने वाली स्त्री के साथ दहेज देकर हानि उठाना मूर्खता है। वह स्वयं चली जाती है, यही हानि पर्याप्त है।

६१. उधारो देणो ने बैर बढ़ावणो।

किसी को उधार देने से बाद में वसूली के समय बैर होने की आशंका रहती है।

६२ उपासरा में काँगसी को कई काम।

जैन उपासरा में साधु के लम्बे बाल नहीं होते और न कोई स्त्री ही

रहती है अतः वहाँ कँघी मिलने की आशा नहीं की जा सकती। किसी वस्तु की उसके लिए अनुपयुक्त और असम्भावित स्थान पर माँग करने पर यह कहावत कही जाती है। कहीं-कहीं 'उपासरा' के स्थान पर 'रामद्वारा' भी कहते हैं।

६३. ऊगता ने सब पूजे।

उदीयमान व्यक्ति का सब आदर करते हैं।

६४. ऊजड़ खेड़ा फिर बसे, निरधनिया धन होय।

समय सबका फिरता है। ऊजड़ गाँव और निर्धन व्यक्ति फिर आबाद व समृद्ध हो जाते हैं।

६५. ऊजड़ गाँव में कुम्हार महता।

बड़े आदमियों के अभाव में छोटे भी बड़ाई पा जाते हैं। जैसे—'निरस्त-पादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते।'

६६. ऊजल धोया ने फटक निचोया।
कठे थाँका घर है, ओ जगत का दिवाळ्या।

कपड़ों को धो निचोकर साफ दिखाने से क्या लाभ? दुनियाभर का दिखावा रखने वाले महाशय आपके कहीं रहने का घर भी या नहीं? दिखाने के लिये साफ रहने से क्या होता है। घर में भी तो कुछ होना चाहिये।

६७. ऊपरली टूटी न संधे।

दैवगति से होने वाले नाश को या मृत्यु को कोई नहीं रोक सकता है।

६८. ऊँची दुकान अर् फीका पकवान।

फीके पकवान ऊँची दुकान पर सजाये जाते हैं ताकि बिक्री हो जाय। किसी की वास्तविकता का स्तर चमक दमक और दिखावे के अनुरूप नहीं होता और पोल खुलती है तब यह कहावत कही जाती है। जैसे—'नाम मोटा और दर्शन खोटा।'

६९. ऊँनाला को दानक्यो कई खोऽर् कमावे।

प्रचण्ड गर्मी में प्रायः कोई भी मजदूर जी तोड़ परिश्रम नहीं करता है। वैसे ही प्रतिकूल परिस्थिति में कोई भी व्यक्ति अपना अहित करके दूसरे को लाभ पहुँचाने की चिन्ता नहीं करता।

७०. एक आँख में आँख नीं, एक पूत में पूत नीं।

केवल एक आँख और एक ही पुत्र होने से सदा भय बना रहता है क्योंकि केवल एक होने से उसके नष्ट हो जाने पर भारी अनर्थ हो जाता है।

७१. एक घर तो डाकण ई टाले।

एक घर तो डायन भी छोड़ देती है। अर्थात् एक न एक निजी सम्बन्ध वाले की रक्षा तो सभी करते हैं। जो इतना भी नहीं करना चाहता उसे समझाने के लिए यह कहावत प्रचलित है।

७२. एक नन्नो सो रोग टाले ।

'हाँ' कहने पर जहाँ कई इल्लतें पैदा होती हों वहाँ 'ना' कहने पर सभी दूर हो जाती हैं ।

७३. एक पंथ दो काज ।

जब एक ही उद्योग से कार्य सधते हैं तब यह कहावत कही जाती है । जैसे—'To kill two birds with one stone'.

७४. एक साल को सीजारो सौ बरस की चतारणी ।

कोई किसान खेती करने में एक साल के लिये भी पाँतीदार हो जाता है तो इस बात को हमेशा याद रखता है । इसलिए उसके साथ अच्छा बर्ताव करना चाहिये । अर्थात् किसी भी व्यवसाय में पाँतीदारों को ईमानदारी और हमदर्दी का बर्ताव निभाना चाहिये ।

७५. एक सूँ दो भला ।

किसी भी काम में अकेले की अपेक्षा दो का साथ हमेशा लाभदायक होता है ।

७६ एक हाथ सूँ ताली न बाजे ।

दो के बीच किसी भी झगड़े की जबाबदारी दोनों में से किसी एक पर नहीं बल्कि दोनों पर हुआ करती है । झगड़ा तभी होगा जब दोनों उसके लिये सक्रिय होंगे ।

७७. एँडा के मूँड़े पकड़्यो जावे जो चोर ।

मकान की दीवार में लगाये गये सैंध (खड्डा) के बिलकुल पास जो पकड़ा जाता हैं उसे ही चोर माना जाता है । अर्थात् अपराध जैसी घटना के समय जो ठीक घटनास्थल पर पकड़ा जाता है उसे अपराधी मानना स्वाभाविक है अतः ऐसे समय में दूर रहना ही अच्छा ।

७८. अंत लोभी महा दुखी ।

अत्यन्त लोभी सदा ही दुःखी रहता है ।

७९. अंधारी रात ने तल काला ।

दोनों काले हैं । दो बुरे योग मिलने पर काम कठिनाई से होता है ।

८०. कण-कण जोड़्याँ मण जुड़े ।

किसी वस्तु के संग्रह के लिए उसके एक कण की भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये । कहा भी जाता है कि 'बूँद-बूँद से घट भरे टपकत रीतो होय' और 'Each drop fills the pitcher.

८१. कतरीक रात, कतरोक सपनो ।

सुख-दुःख के लिए आकुल-व्याकुल नहीं होना चाहिये, क्योंकि ये दोनों ही क्षणिक हुआ करते हैं ।

८२. कतवारणी की सुधरे, बतवारणी की बगड़े ।

सूत कातने वाली औरत समृद्धि पा जाती है । केवल बातें करने वाली की दशा बिगड़ती है । धन्धा छोटा भी हो तो केवल बातें बनाने से अच्छा है ।

८३. कदी घी घणां अर् कदी मूठी चणां ।

जीवन के सभी दिन समान नहीं होते । कभी सुख-समृद्धि तो कभी दुःख-दारिद्रय, दोनों ही प्रकार की परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं । कभी खूब माल मिलता है तो कभी चने चबाकर भी पेट पालना पड़ सकता है ।

८४. कदी न घोड़ा हींसिया, कदे न खाँच्या तंग ।
कदी न राँड्या रण चढ्या, कदे न बाजो बंब ।।

कायरों के यहाँ न तो घोड़े हिनहिनाते हैं न उनके तंग कसे जाते हैं और न कायर युद्ध में ही जाते हैं, इसीलिये उनके यहाँ रण-भेरी भी नहीं बजती ।

८५. कपड़ा को दाग तो धुप जावे पण कालजा को न धुपे ।

कपड़े का दाग धुलकर साफ हो सकता है किन्तु कलुषित हृदय को निर्मल करना आसान नहीं होता ।

८६. कपूत बेटो अर् खोटो पइसो वगत पड्याँ काम आवे ।

वक्त (कठिनाई पड़ने) पर कुपुत्र और खोटा सिक्का भी काम दे जाते हैं ।

८७. करताऊँ न करे जींको गुरु भूँठो ।

अपने साथ दुष्टता करने वाले के साथ दुष्टता ही करनी चाहिये वरना यही मानना पड़ेगा कि उसके गुरु ने सही उपदेश नहीं दिया ।

८८. कर देख, करा देख ।

किसी कठिन काम को दूसरों से करवाते समय या तो उनके परिश्रम पर संशय मत करो या उसको स्वयं कर लो ।

८९ करड़ी कुँली तो आपकी होई जो होई ।

अपनी वस्तु चाहे अच्छी हो या बुरी, अपने को अप्रिय नहीं लगनी चाहिये । वह जैसी है वैसी रहेगी, बदल तो नहीं सकती ।

९०. करम की ढोलकी बाजी ।

चोर ढोलक की चोरी कर कपास के खेत में घुस गये । कपास के डोडों से ढोलक बज गई । मालिक की आँख खुल गयी और चोर पकड़े गये । भाग्य विपरीत होने पर गोपनीय कार्य भी प्रगट हो जाता है ।

९१. करम फूट्यो रे केसवा, गूँदी रे लाग्या लेसवा ।

गूँदी जैसे छोटे फल वाले पेड़ पर भी लिसोड़े लग जाते हैं तब कैसे काम चल सकता है । भाग्य विपरीत होने पर अनहोनी बात भी घटित हो जाती है ।

९२. करम ई राँड्यो तो कई करे बापड़ो पाँड्यो ।

किसी व्यक्ति का भाग्य ही प्रबल न हो तो ज्योतिषी आदि क्या कर सकते हैं ।

९३ क' री सो भ' री।

'जैसी करनी वैसी भरनी।' अपने कर्मों का फल कोई दूसरा थोड़े ही भोगेगा। वह तो स्वयं को भोगना पड़ेगा।

९४. करेगा पाप सो खावेगा धाप।
करेगा धरम सो फोड़ेगा करम॥

जो पाप करेगा उन्हें पूरा खाने को मिलेगा। जो धर्म करेंगे वे अपनी किस्मत को रोएँगे। संसार में धर्म की अपेक्षा कुछ समय के लिये अधर्म से अधिक कमाई हो सकती है।

९५ करे सेवा सो पावे मेवा।

जो सेवा करता है उसका फल उसे मिलता है।

९६. करोत, कुराड़ो, कपटी नर, मिल्याँ ने बिछड़ावे।
सुई, सवागी, चतुर नर, बिछड़्याँ ने मिलावे॥

किरोत और कुल्हाड़े की तरह कपटी मनुष्य मिले हुए मनुष्यों में फूट डालता है। सुई और सुहागे की तरह चतुर व्यक्ति लड़ने वालों में मेल स्थापित करता है।

९७. कवी, चतारो, पारधी, नृप वैश्या अर भट्ट।
याँ से कपट न कीजिये, याँ रा रच्या कपट्ट॥

कवि, चित्रकार, शिकारी, राजा, वैश्या और कथा भट्ट, इनसे कभी कपट नहीं करना चाहिये अर्थात् इनके साथ कपट करने वाले की खैर नहीं क्योंकि कपट करने की विधि में ये स्वयं इतने पटु होते हैं कि मानो कपट ही इनका रचा हुआ हो।

९८. काँरगेटचा का सूँण (शकुन) लो, मारो मत।

गिरगिट को मारना नहीं चाहिये। सही दिशा में उसके पास होकर निकलना शुभ होता है। इसी प्रकार किसी की अवहेलना न कर उसका उपयोग करना बुद्धिमानी है।

९९. काकड़ी का चोर ने मुक्याँ की मार।

जैसा अपराध हो, दण्ड भी वैसा ही देना उचित है।

१००. काको कियाँ काकड़ी कुण देवे।

खुशामद करते ही कोई आदमी स्वार्थ त्यागने को तैयार नहीं हो सकता।

१०१. काणां ने काणों नीं कीजे, कीजे वालो सेण।
हलवे-हलवे पूछजे थाँरा कासूँ फूटा नेण॥

काने को काना नहीं कहना चाहिये, बल्कि उसे मित्र कहकर सम्बोधन करना चाहिये तथा धीरे-धीरे (जैसे कुशलता पूछी जा रही हो) उसे पूछना चाहिये कि आपकी आँख किस तरह चली गई। सदा मृदु आचरण से काम निकालना चाहिये।

१०२. काती की उधार भँवाया नचावो।

कार्तिक महीने में बोहरे (उधार देने वाले) को उसका रुपया वापस तभी मिलता है जब जमाना ठीक हो जाय वरना वह इस तरह डूबता है जैसे भुँवाई (एक प्रकार का लोक नृत्य) नचाने में रुपया व्यर्थ जाता है।

१०३. काते ज्यांको सूत अर् जाया ज्यांको पूत।

सूत उसी का होगा जिसने काता होगा और पुत्र उसी का कहलायगा जिसने उसको जन्म दिया होगा। दूसरे की किसी वस्तु को अपनी बताने से वह अपनी नहीं हो सकती।

१०४. कान की लोल अर् पेट की झोल बढावो जतरी बढे।

कान के नीचे के भाग और पेट की झोल (तोंद) जितनी बढ़ायेंगे उतनी ही बढ़ जायगी। किसी बात को बहस का विषय बनाने से कोई नतीजा नहीं निकलता।

१०५. कान फड़ावो तो लादूवास जावो।

कान चिरवाने के लिए लादूवास (मेवाड़ के कनफड़े गुसाइयों के गुरु का स्थान) जाना पड़ता है। जो कार्य जिस जगह का होता है वह वहीं ठीक तरह सम्पन्न हो सकता है।

१०६. काम सरचा दुख बीसरचा बैरी होग्या बेद।

बीमारी मिट जाने पर वैद्य फीस माँगता है तो दुश्मन की तरह लगता है।

१०७. काम सारो तो डीलाँ पधारो।

कार्य सिद्ध करना हो तो स्वयं जाकर उसे करना चाहिए। दूसरों के भरोसे रहने से सफलता नहीं मिल सकती।

१०८. काया राख धरम।

शरीर की रक्षा करने के उपरान्त ही धर्म करना उचित है। जैसे—'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्', 'भूखे होय न भजन गोपाला'।

१०९. काल कणी देख्यो है।

कल का दिन (भविष्य) किसने देखा है?

११०. काळ कणी ने आड़ो आवे है।

मौत किसी की सहायता नहीं करती, वह सबको खाती है।

१११. काळ के ओखद कोयने।

औषधि रोग के लिये होती है, मृत्यु के लिए नहीं।

११२. काळ के ताल नी लागे।

मृत्यु को कोई नहीं रोक सकता।

११३. काल को पड़बो अर् बाप को मरबो।

मुसीबत पर मुसीबत का आना बड़ा कष्टदायक होता है। जैसे—अकाल के बरस में पिता का मर जाना।

११४. काळ शिकार ।

शिकार का होना शिकारी पर नहीं बल्कि जानवर की मृत्यु बदी होने पर निर्भर है ।

११५. काळां की लाराँ धोळो रेवे, वण नीं तो लख्खण तो लेवे ।

काले के साथ सफेद बैल रहता है तो उसका रंग-रूप नहीं किन्तु गुण और स्वभाव तो ले ही लेता है । संगति का असर हुए बिना नहीं रहता ।

११६. काला तल चाब्या है जो बे' बे' र् देणा पड़ेगा ।

अगले जन्म का देना बाकी है तो वह पशु की तरह भार ढो-ढो कर उतारना पड़ेगा ।

११७. काळी चीज खावा सूँ पेट थोड़े ई काळो वे' वे ।

खाने-पीने की वस्तु का रंग नहीं, गुण ही देखना चाहिये । रंग तो वापस निकल जाता है या पेट में जाकर बदल जाता है ।

११८. काळीह्वे तो भले ई ह्वो (हो) कुल कालो नीं वेणो चावे ।

किसी लड़की का रंग-रूप उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना उसका कुल-गौरव । सम्बन्ध स्थापित करने के लिये उज्ज्वल कुल की लड़की सदा ही श्रेष्ठ होती है ।

११९. काँकड़ को गोटचो गाँव में माजनो पाड़े ।

जंगल में रहने वाले (असभ्य या जंगली) से मित्रता करने पर जब कभी गाँव में उसके साथ आने-जाने का काम पड़ता है तो उसके असभ्यतापूर्ण व्यवहार के कारण अपनी प्रतिष्ठा की हानि होती है ।

१२०. काँकड़ बाण्या फारगती अर् गाम में ज्यूँ का ज्यूँ ।

अनपढ कर्जदार व्यक्ति जंगल में तो बनिये से (उसको डरा कर) यह लिखवा लेता है कि अब मेरा तुझ पर कोई कर्ज नहीं पर, वास्तव में चालाक बनिया इस प्रकार लिखता है कि जंगल में कर्जा माफ है और गाँव में ज्यों का त्यों है ।

१२१. काँकड़ में खाँखरो अर् गाँव में चमार बोदा ई वे बो करे ।

कमजोर वर्ग के लोग आसानी से झुक जाते हैं । जंगल में ढाक के पेड़ को कोई भी काट डालता है ।

१२२. काँच, कटोरा, नेण-जल, मोती अर मन्न ।
अतरा फाटचाँ ना सँधे, पेली राख जतन्न ।

काँच का प्याला, नेत्रों के आँसू, मोती और मन अहतियात से बरते जाने चाहिये । किसी का दिल दुखाकर रुलाने या दिल टूट जावे जैसा व्यवहार नहीं करने की सावधानी पहले ही बरतनी चाहिये । बाद में प्रतीकार करने पर पहले जैसी स्थिति वापस नहीं हो सकती ।

१२३. काँधे कसी जोंके उधार कसी ।

नित्य खेत खोदने वाले मजदूर को तो नकद मजदूरी मिलनी चाहिए । दूसरे दिन न जाने मजदूरी करने कहाँ जाना पड़े ।

१२४ कीच का रपटचा अर् पुलिस का कूटचा की कुण सुणे ।

कीचड़ में फिसल जाने पर किससे शिकायत की जावे और रक्षा करने वाली पुलिस ही पीट देवे तो शिकायत किसके पास करे ।

१२५. कीड़ी सँचै तीतर खाय, पापी को धन परलै जाय ।

चींटियों का इकट्ठा किया हुआ अन्न तीतर खाते हैं और पापी का धन दूसरे ले जाते हैं । यह कहावत कंजूस व्यक्तियों के लिए है, जो न खाता है न खर्च करता है । कहा है—"खाय न खर्चे सूम धन, चोर सबै ले जाय ।
पीछे मधु मक्षिका हाथ मले पछताय ।"

१२६. कीदा सो काम अर् भज्या सो राम ।

काम संपूर्ण करके ही छोड़ना चाहिये । राम-भजन में भी नियमित रहना आवश्यक है । भविष्य के भरोसे अधूरा नहीं छोड़ना चाहिये ।

१२७. कुण देणो दे' र् मरया, अर् कुण लेणो ले' र् मरया ।

लेना-देना किसी का भी जीवन पर्यन्त पूरा नहीं होता ।

१२८. कुलड़ी में गुड़ नीं फोड़नी आवे ।

कुल्लड़ में भरे सख्त गुड़ को बाहर निकाले बिना नहीं फोड़ा जा सकता । हल्का कार्य तो गुप्त रीति से हो जाता है किन्तु बड़ा कार्य गुप्त रीति से नहीं हो सकता ।

१२९. कुळथाँ ऊपर तेल ।

कुळथों को खाने के लिये तेल ही मिलना चाहिये । ऐसे हल्के दर्जे के धान्य के लिए घी क्यों बिगाड़ा जाय ।

१३०. कुँवारी के छत्तीस वर ।

जब तक विवाह नहीं हो जाता लड़की किसी एक की नहीं मानी जा सकती । लड़का मरो चाहे सगाई छूटो, उसका सम्बन्ध अन्यत्र स्थापित किया जा सकता है ।

१३१. कूड़ा ऊँ कूड़ा न मले पण मनख ऊँ मनख सौ बार मिले ।

दो कुए समानता होने पर भी अचल होने के कारण एक दूसरे से नहीं मिल सकते परन्तु मनुष्यों को तो एक दूसरे से काम होने से अनेक बार मिलना पड़ता है ।

१३२. केणो सोरो अर् करणो दोरो ।

उपदेश देना सरल है किन्तु उस पर चलना कठिन । जैसे—'परोपदेशे पांडित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम्' और 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे । जे आचरहिं ते नर न घनेरे ।'

१३३. के तो मसावे रोगी अर् के मसावे भोगी ।

रोगी और भोगी को पराधीन होना पड़ता है और अनिच्छा होते हुए भी पैसा लगाना पड़ता है ।

१३४. के वे तो माँ मारी जाय, नीं केवे तो बाप कुत्तो खाय ।

कहता है तो माँ मारी जाती है और नहीं कहता है तो बाप कुत्ते का माँस खाता है । एक घर में माँस पकाया गया किन्तु अचानक उसे कुत्ता खा गया । घर की स्त्री ने पति के डर से एक कुत्ते को मारकर उसका माँस पका डाला । इसे किसी तरह लड़के ने देख लिया । अब जब सब लोग खाने के लिए बैठे तो लड़के के सामने उपर्युक्त समस्या खड़ी हुई । धर्म संकट में कर्त्तव्य का निश्चय करना कठिन होता है ।

१३५. के तो रोके पाणी, ने के रोके दाणी ।

मनुष्य को या तो नदी-नाले के वेग से बहने के डर के कारण रुकना पड़ता है या कहीं कर (जकात) देना पड़ता हो वहाँ रुकना पड़ता है । इन दोनों की अवहेलना कर आगे नहीं चला जा सकता ।

१३६. कोढ़ में पाँव वे'गी ।

एक दुःख के साथ दूसरे दुःख आते ही हैं । जैसे Misfortunes come in trains. और 'छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति ।'

१३७. कोयलाँ की दलाली में काळा हाथ ।

खराब धंधा करने से लाभ की अपेक्षा हानि और कष्ट अधिक सहना पड़ता है ।

१३८. कोयला खा' ई जीं को कालो मूंडो ।

जैसा काम करेंगे वैसा प्रगट होकर रहेगा । कुकर्मी की अपकीर्ति होकर रहती है ।

१३९. को संगत में साधू बिगड़े, संगत बिगड़े भाँड ।
मेले खेले छोरा बिगड़े, राती जगे राँड ।

साधु कुसंग से, भाँड दूसरों से अधिक लाग लपेट रखने से, बच्चे मेले में जाते रहने से व स्त्री रात्रि जागरण के कार्यक्रम (भजन-गीत) में भाग लेते रहने से बिगड़ते हैं । रातीजगा देवताओं के निमित्त किया हुआ एक जागरण होता है इसमें स्त्री को रात्रि में दूसरे घर जाने की स्वतन्त्रता रहती है ।

१४०. खटाव का बटाव है ।

माल बेचने की जल्दी न करने से अच्छा भाव आने पर उसके अच्छे दाम मिल सकते हैं ।

१४१. खलक को हलक नीं पकड़णी आवे ।

दुनिया का गला नहीं पकड़ सकते अर्थात् जनचर्चा पर रोक नहीं लगाई जा सकती ।

१४२. खा' ई गटका सो से' ई झटका ।

जो मीठा खायगा (अर्थात् सुख-साधन का उपभोग करेगा) उसे मीठा खिलाने वाले (अर्थात् सुख-सुविधा देने वाले) के लिए लड़ाई झगड़ा भी मोल लेना पड़ेगा और उसमें कोई मुसीबत आ पड़ी तो उसे भी सहन करना पड़ेगा ।

१४४. खा बा ने मलेगा तो बलीथा ने भेजेगा ।

मेरे ससुराल वालों को खाने को ही न मिले तो ठीक है, वरना इन्धन बटोरने के लिए मुझे भेजेंगे । छोटी कठिनाई के डर से बड़ा दुःख भोगने की इच्छा करना मूर्खता है ।

१४५. खाड़ ख'नी जींके कूड़ो त्यार है ।

'खाड़ खने जो और को ताको कूप तयार ।'

१४६. खायाँ नीं खुटे ।

धान खाने से खतम नहीं हुआ करता है । धन व अन्य सामग्री दुरुपयोग से नष्ट हुई मानी जाती है, सही उपयोग से नहीं ।

१४७. खावे जीं की बजावे ।

जिसका खाना उसकी बजाना । 'गोड़ो पेट ने नुँवे' की तरह जो पालता है उसकी सेवा या हित में तत्पर रहना होता है ।

१४८ खुशामद को ताजा रुजगार ।

चापलूसी करने से आमद अच्छी होती रहती है ।

१४९. खूँटा की छूटी आजावे पण मूँडा की छूटी नीं आवे ।

खूँट से छूटा हुआ जानवर भटक जाने पर भी वापस लौट सकता है किन्तु मुँह से निकली हुई बात वापस नहीं लौटाई जा सकती । इसलिए सम्हल कर बोलना चाहिए ।

१५०. खून के बदले फाँसी ।

यथा योग्य दण्ड मिलने पर यह कहावत कही जाती है ।

१५१. खेल खिलाड्याँ का अर् घोड़ा असवाराँ का ।

खेल खिलाड़ी ही खेल सकते हैं और घोड़ों को उसके सवार ही काबू में कर सकते हैं । अर्थात् हर एक काम हर एक के बस का नहीं हुआ करता ।

१५२. खोटा को सरीगत कोई कोयने ।

बुरा काम करने वाले को जब उसका फल भोगना पड़ेगा तब उसका साथ कोई नहीं देगा ।

१५३. खोटी बगत में तन को कपड़ो ई बेरी हो जावे ।

जब विपत्ति आती है तो निकटतम सम्बन्धी भी शत्रु की तरह आचरण करने लगते हैं ।

१५४. खोटो खाणो ने खरो कमाणो ।

अच्छा खाने के लिए कमाई-धंधे में बरती जाने वाली ईमानदारी को नहीं त्यागना चाहिए ।

१५५ गरीब का बेळू राम ।

निर्धन व्यक्तियों का रक्षक ईश्वर ही है ।

१५६. गरीब की हाय कदी न निरफल जाय ।

गरीब को नहीं सताना चाहिए उसकी दुराशीष से अवश्य ही हानि होती है ।

१५७. गरीब की हाय अर् कूड़ा की छाँय माँयने की माँयने रे वे ।

कुए की छाया जैसे अन्दर ही रहती है वैसे गरीब की वेदना उसके हृदय में ही रहती है । उसे प्रगट करने में भी वह डरता है ।

१५८. गरीब की हाँडी अर् तालावर की डेगची ।

गरीब की हाँडी उतना ही काम देती है जितना धनवान के लिए धातु-निर्मित डेगची (पतीली) ।

१५९. गाड़ी को पेड़ो अर् मर्द की जुबान फरता ई रेवे ।

गाड़ी का पहिया फिरता रहता है वैसे ही मर्द आदमी अपनी बात बदलता ही रहता है । जैसी परिस्थिति होती है वैसी ही बात कर देने में संकोच नहीं करता ।

१६०. गाड़ी लीक जो गाड़े लीक ।

जिस रास्ते छोटी गाड़ी निकल जाती है उस रास्ते बड़ी गाड़ी भी निकल जाती है । जहाँ कार्य थोड़े परिमाण में आरम्भ हो जाता है तो एक परम्परा पनप जाने से वैसे ही बड़ा कार्य भी सम्पन्न हो जाता है ।

१६१. गाठी बाँधे पागड़ो, खेंच कटावे नख ।

सँकड़ी पेरे मोचड़ी, अण चींत्या ई दुख ।।

पगड़ी को बहुत खींचकर बाँधना, नाखूनों को अधिक दबा कर काटना और तंग जूती पहनना—इनसे सहज ही दु:ख प्राप्त होता है ।

१६२. गाय की गुवाली अर् जोगी की फेरी कुँण राखे ।

थोड़े पैसों के लिए उगाही बाकी रखना कोई पसंद नहीं करता ।

१६३. गाळ्याँ अर् घी की नाळ्याँ ।

समधी को गीतों में गाई हुई गालियाँ घी खिलाने जैसी प्रसन्नता देती हैं । अर्थात् प्रेम की घनिष्ठता होने से जो गालियाँ दी जाती हैं वे बड़ी प्यारी लगती हैं ।

१६४. गाळ्याऊँ कई गूमड़ा थोड़े ई वे' वे ।

किसी के द्वारा अपशब्द कहे जाने पर एकाएक आवेश में नहीं आ जाना चाहिये । उनको सहन कर लेना चाहिए क्योंकि उनसे कोई नुकसान नहीं होता । उनसे कोई फोड़े फुंसी थोड़े ही होते हैं ।

१६५. गावणो-रोवणो तो परवार को ।

खुशी और रंज के मौके तो परिवार वालों के साथ होने पर ही अच्छे लगते हैं ।

१६६. गाँठ में होवे नाणो तो बींद परणीजे काणो ।

पास में पैसा होने से काना व्यक्ति भी विवाह कर सकता है । धन से अवगुण ढँक जाते हैं और सभी कार्य हो सकते हैं ।

१६७. गांव की छत गोरमा सूँ ही नजर आवे ।

गाँव की दशा उसके बाहर के भाग से ही दीख जाती है । बाह्य अवस्था से आन्तरिक दशा का सहज ही आभास हो जाता है ।

१६८. गांव गया सूता जागे ।

विदेश गये व्यक्ति के लिए वापस ठीक समय पर आने का निश्चय नहीं रहता ।

१६९. गाँव बलाई सूँ काम हो जावे तो सेणा सूँ कई काम ।

किसी अदने-से व्यक्ति से ही यदि कोई काम पार पड़ जाता है तो बड़े आदमी की खुशामद क्यों की जाये ।

१७०. गाँव पट्टे जीने कुँण नटे ।

गाँव के मालिक को गाँव वाले किसी चीज के लिए इन्कार नहीं कर सकते ।

१७१. गांव लार गण्डक लादे है ।

प्रत्येक गाँव में कुत्ते होते ही हैं । थोड़े बहुत बदमाश लोग लगभग सभी जगह मिलते हैं ।

१७२. गिरस्थी का चारूँ पल्ला कीच में ।

गृहस्थ कितनी ही तरह से उलझा रहता है । अतः उसे सब तरह खयाल रखकर काम करना पड़ता है ।

१७३. गुड़ पे तो रामजी को' ई मन चाले ।

मीठी चीज तो भगवान को भी प्रिय होती है, फिर मनुष्य को तो होगी ही ।

१७४. गुरु कीजे जाण, पाणी पीजे छाण ।

गुरु बनाने से पहले उसको ठीक तरह परख लेना चाहिये । पानी पीने से पहले उसको भलीभाँति छान लेना चाहिए ।

१७५. गेला को घर राम राम में' ई जावे ।

अन्य गाँवों से आने जाने के आम रास्ते पर घर बनाकर नहीं रहना चाहिये । ऐसे घर पर आने जाने वालों की मान मनुहार का खर्चा सदा ही बना रहता है और आर्थिक भार से उन्नति नहीं हो सकती ।

१७६. गेली के सिर बेवड़ो, मरकट के गल हार ।

पगली स्त्री को मिट्टी का घड़ा पानी भर लाने के लिए नहीं देना चाहिए । बन्दर के गले में हार पहनाने से क्या लाभ ? किसी भी काम में पात्र और कुपात्र का ध्यान नहीं रखने से नुकसान ही होता है ।

१७७. गेले गेले चाले तो कांटो नीं भागे ।

नेक-नीयत से किये गये काम में विघ्न-बाधा की संभावना नहीं होती ।

१७८. गोड़ो पेट ने नमे ।

घुटना पेट के लिए झुकता है क्योंकि पेट उसे पालता है ।

१७९. गोबर रा चाँक्या फाल्या रा उगड़े ।

दागने के पहले गोबर के निशान किये जाते हैं । गोबर के निशान बनाने की चिन्ता नहीं किन्तु दु:ख इस बात का है कि वे निशान दागने के लिए बनाये गये हैं ।

१८०. गंडक को गुरु लाकड़ी ।

कुत्ता डंडे से ही काबू में आता है । "डाटे ही पे नवनीच" ।

१८१. गंडक बटको भरे जींके पाछो बटको थोड़े ई भरणी आवे ।

नीच आदमी के साथ नीचता का व्यवहार करना बड़ों के लिए सम्भव नहीं होता ।

१८२. गंडक छानी गल्याँ नीं ।

कुत्तों से अनजानी कोई गली नहीं होती । दुष्ट आदमी सब दावपेच जानता है ।

१८३. घड़ी रो हाकम जनम रो वास बगाड़ देवे ।

थोड़े समय के लिए बना हाकिम परम्परा से चलते आये घर को उजाड़ देता है इसलिये सत्ता वाले व्यक्ति से बैर करना उचित नहीं है ।

१८४. घणाँ को देवाळ थोड़ा ऊँ राजी नीं रे'वे ।

दिवालिया आदमी अधिक कर्जा करता है फिर उसको थोड़ा थोड़ा चुकारा करते रहना जँचता ही नहीं । उसे तो ज्यादा तकलीफ भुगतकर सारे कर्जे की इकट्ठी सफाई करने में काफी नुकसान उठाना पड़ता है ।

१८५. घण खाऊ की बावड़ जावे पण मन्द कमाऊ की नीं बावड़े ।

अधिक खर्चा करने वाला तो फिर भी पनप सकता है किंतु जो अच्छी कमाई नहीं कर पाता वह तरक्की नहीं कर सकता ।

१८६. घणां ढाँढा अर् घणाँ डाँडा खोटा ।

अधिक मवेशी रखना और अधिक कच्चे मकान होना कष्टदायक है । कच्चे मकानों पर केलु डांडे बदलते सम्हालते रहने में और मवेशियों की सम्हाल करने में खर्चा और परिश्रम अधिक उठाना पड़ता है ।

१८७. घणाँ तेरू की राँड व्हे ।

तैरने में ज्यादा कुशल और शौक रखने वाले की स्त्री को विधवा होना पड़ता है क्योंकि वह कहीं न कहीं पानी में डूबकर मर जाता है ।

१८८. घणाँ बेटा की माँ घणी रो'ई टूका टूका ने ।

अधिक पुत्र होंगे तो एक दूसरे के भरोसे अपनी माँ को उसके बुढ़ापे में

कोई भी रोटी नहीं देगा।

१८९. घणाँ भायाँ की बेन अलूणी रे'वे।

बहुत भाइयों की बहन उपेक्षित रह जाती है क्योंकि प्रत्येक भाई यह सोचने लगता है कि उसके यहाँ से नहीं तो दूसरे भाई के यहाँ से उसे कुछ न कुछ मिल गया होगा। बहुतों की आशा रखने की अपेक्षा किसी एक व्यक्ति का आश्रय लेना ही उचित है।

१९०. घणाँ मामा को भाणेज भूखो रे जावे।

बहुतों के भरोसे रहने पर कोई नहीं पूछता है। (वही भाव है जो ऊपर वाली बहन से सम्बन्धित कहावत में है)।

१९१. घणी जाण जठे घणी हाण।

अधिक जानने वालों को अधिक हानि उठानी पड़ती है। Where ignorance is bliss it is tolly to be wise. और अधिक जान पहचान रखने वालों को अधिक खर्चा करना पड़ता है।

१९२. घणो खाऊँ ऽऽन अवेली जाऊँ।

न तो अधिक खाऊंगी और न ही बेवक्त शौच के लिए बाहर जाऊंगी जिससे हानि उठानी पड़े। बिना सोचे समझे कोई कार्य करने से हानि होती है। वास्तव में यह स्त्री का असमय बाहर जाकर वापस आने पर बनाया हुआ बहाना है।

१९३. घणो बुआर टूटबा को अर् मोटी आंख फूटबा की।

ज्यादा ही घनिष्ठ व्यवहार रखने से किसी दिन लड़ाई हो जाती है। ज्यादा बड़ी आँख फूटने की अधिक आशंका रहती है।

१९४. घणो हुँशियार बत्तो खाबड़े पड़े।

ज्यादा होशियारी बघारने वाला आदमी कहीं खड्डे में ही पड़ता है।

१९५. घर आयो अर् माँ जायो बराबर।

अतिथि का सत्कार सगे भाई की तरह करना चाहिए।

१९६. घर आयो बेरी पामणो।

घर पर आये शत्रु का भी मेहमान की तरह सत्कार करना चाहिए।

१९७. घर का जोगी जोगड़ा अर् बाहर गाँव का सिद्ध।

अपने गाँव का अच्छा योगी भी नहीं पुजाता। दूसरे गाँव का साधारण जोगी भी सिद्ध मान लिया जाता है। 'अतिपरिचयादवज्ञा' Familiarity breeds contempt.'

१९८. घर का पूत कुँवारा खेले अर् पाड़ोसी ने फेरा।

घर के लड़के तो कुँवारे खेलते हैं और पड़ोसी का विवाह कराया जा रहा है। 'Charity begins at home', पहले घर की आवश्यकताओं की पूर्ति होना आवश्यक है।

१९९. घर के आंगण गंडक नीं पाळज्ये।

घर के आंगन में कुत्ते को नहीं पालना चाहिए क्योंकि वह चारों ओर गन्दगी फैला देता है।

२००. घर के आँगण बोरड़ी नीं लगाज्ये।

घर के आंगन में बेर का पौधा नहीं लगाना चाहिए क्योंकि इससे आते और जाते समय कपड़े फट जाते हैं। इसके काँटे पैरों में लग जाते हैं, तथा फल भी मूल्यवान नहीं होते हैं।

२०१. घर केवे मने उगाड़ देख अर् ब्याव केवे मने माँड देख।

घर को बिखेर कर नया बनाने में काम बहुत बढ़ जाता है, वैसे ही विवाह कार्य में भी अनेक प्रबन्ध करने पड़ते हैं।

२०२. घर को तो घर कटे अर् पामणों बेराजी।

घर में काफी नुकसान होने पर भी मेहमान प्रसन्न नहीं हो तो ऐसा काम नहीं करना चाहिए।

२०३. घर को नाणों' ई खोटो व्है तो परखबा वाळो कई करे।

घर का पैसा ही ठीक नहीं है तो परखने वाले क्या कर सकते हैं। स्वयं का दोष होने पर दूसरों को उनकी सत्यवादिता के लिए बुरा नहीं कहना चाहिए।

२०४. घर जाय ने झाँझर बाजे।

घर में हानि होने के समय थाली बजाना अनुचित है। यह कोई बुद्धिमानी की बात नहीं होगी कि घर में एक तरफ़ तो नुकसान हो रहा हो और दूसरी तरफ हम खुशियाँ मनावें।

२०५. घर बाल ऽर् तीरथ नीं करणी आवे।

पुण्य कार्य घर की हैसियत के अनुसार ही करना चाहिए।

२०६. घर भेदू बना चोरी नीं व्हे वे।

घर में कौनसी चीज कहाँ रखी है, यह भेद बताने वाला मिले बिना चोर सफलता पूर्वक चोरी नहीं कर सकता।

२०७. घर में हाण जगत में हाँसो।
देखे लोग तमासो॥

ऐसी मूर्खता क्यों की जाये जिससे एक ओर तो घर में नुकसान हो और दूसरी ओर लोग खिल्ली उड़ायें। बहुधा कपूत बेटे की करनी पर घर में तो हानि होती ही है किन्तु बाहर भी लोग हँसते हैं।

२०८. घर सारू पामणो है, पामणा सारू घर कोयने।

घर के लिए मेहमान है, मेहमान के लिए घर नहीं। मेहमान के स्वागत में हैसियत के अनुसार ही खर्च होना चाहिए।

२०९. घरे आया को पामणो ।

मेहमान के रूप में उसी का स्वागत होना चाहिए जो घर पर आता है। चलते रास्ते मिलने वालों की मेहमानदारी नहीं हुआ करती।

२१०. घाँस अर् बदमाश सब गाँवाँ में लादे ।

घाँस (एक बड़ा पत्थर जिसको दीवाली के दूसरे दिन बैलों द्वारा गाँव के चारों ओर घसीटे जाने की प्रथा है) और बदमाश सभी गाँवों में मिलते हैं।

२११. घी खादो तो कुलड़ो तो कठे ई नीं ग्यो।

घी खा गये तो उसका बरतन तो है, फिर से तोल कर जाँच की जा सकती है। किसी तरह क्षतिपूर्ति की युक्ति निकालने से व्यर्थ की लड़ाई मिट सकती है।

२१२. घी खाँड चटाबा वाळा की बात सब सुणे।

मीठा व अन्य स्वादु भोजन कराने वाले का प्रभाव सब पर होता है।

२१३. घी गुल मीठो, आगलो जनम कींने दीठो।

इसी जन्म में मौज उड़ा लो, अगला जन्म किसने देखा है। 'Eat drink and be merry.' 'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत् ।'

२१४. घोकन्त विद्या खोदन्त पाणी ।

विद्या रटने पर आती है और पानी खोदने पर मिलता है। अर्थात् दोनों परिश्रम से ही प्राप्त होते हैं।

२१५. चक्कू, चकमक, तीर तणी । दाम थोड़ो अर् गरज घणी ।

चाकू, चकमक और तीरकमान थोड़े मूल्य के हैं किन्तु बड़े काम के होते हैं। इस कारण इन्हें सदा साथ में रखना चाहिए। (चकमक से आग पैदा की जाती है।)

२१६. चढ़े जो पड़े।

जो चढ़ेगा ही नहीं वह गिरेगा क्या ? जैसे—'It is better to have loved and lost, than never to have loved at all.'

२१७. चलती को नाम गाड़ी ।

कार्य होता रहता है तब तक ठीक है। गाड़ी चलती रहती है तब तक ही उसका नाम गाड़ी रहता है, वरना नाम बिगड़कर दूसरा खराब नाम मिल जाता है।

२१८. चाकरी की भाखरी ।

सेवा करेगा उसको बाटी खाने को मिलेगी। 'करेगा सेवा सो पावेगा मेवा ।'

२१९ चाम चुगल उवाँग्यां चाले ।

चमड़ा और चुगलखोर घी तेल मिलने पर ही ठीक ठीक चलते हैं।

२२०. चोमासा का रपट्या अर् काळ का बटल्या ने कोई खोटो न केवे ।

अकाल में अखाद्य वस्तु खाकर भ्रष्ट होने वाले और वर्षा ऋतु में फिसलकर गिर जाने वाले को कोई बुरा नहीं कहता ।

२२१. चोमासा का रूँख ने लगावे जठे ई लाग जावे ।

परिस्थिति अनुकूल होने पर स्थान-परिवर्तन होने से कोई अन्तर नहीं पड़ता ।

२२२. चोर के माथे छिन्दी ।

चोर के सिर पर तो फटी पगड़ी ही रहती है । चोरी का माल स्थायी नहीं रहता, इस कारण चोर गरीब के गरीब ही रहते हैं ।

२२३. चोर के छाती होवे, पग न होवे ।

चोर हिम्मत कर चोरी करने चला जाता है पर मालिक जग कर ललकार देवे तो भग जाता है ।

२२४. चोराँ कुत्ती मिल गया, पहरा किसका देय ।

रक्षक के भक्षक से मिलीभगत हो जाने पर रखवाली कौन कर सकता है ।

२१५. चोराँ के कई ताळो होवे ।

कोई अपनी किसी वस्तु को ताले में बन्द करके यह समझ ले कि अब उसकी चोरी नहीं हो सकती तो यह नादानी होगी क्योंकि पक्के चोर ताले को कुछ भी बाधा नहीं मानते । वे या तो उसे तोड़ देंगे, खोल लेंगे या ताले समेत सन्दूक उठाकर ले चले जायेंगे ।

२१६. चोरी को धन मोरी में ।

चोरी से प्राप्त धन व्यर्थ के खर्चे में उड़ा दिया जाता है । 'Ill got ill spent.' 'अन्यायोपार्जितं वित्तं दश वर्षाणि तिष्ठति ।'

२१७. छड़ी बाजे छम छम, विद्या आवे घम घम ।

कुछ लोगों के विचार से वे बालक विद्या जल्दी प्राप्त कर सकते हैं जिन्हें पीटा जाता है । जैसे—'Spare the rod and spoil the child.'

२१८. छाछ अर् बेटी माँगवा की कई लाज ।

छाछ और बेटी (अपने पुत्र के विवाह के लिए) दोनों को आवश्यकता पड़ने पर माँगने से नहीं शर्माना चाहिए ।

२१९. छाछ, छाँवली, छोकरा, अर् छँदगाळी नार ।
चारों छ-छा तब मिले जब तूठे करतार ।।

ईश्वर की दया दृष्टि होने पर ही छाछ (अर्थात् घी-दूध का साधन) छाया (मकान), छोकरा (पुत्र) और सुन्दर शृंगारप्रिय स्त्री—इन सबका संयोग मिलता है ।

२२०. छाती साँटे बाटी।

सीना आगे बढ़ाकर कठिन खतरे के लिए तैयार रहने वालों को ही खाने के लिए बाटी मिलती है। साहसी व्यक्ति ही अपने साहसिक कार्यों के परिणाम स्वरूप इच्छित वस्तु प्राप्त करने में सफल होते हैं।

२२१. छाया तो छींतरी की ई आछी।

सुख: यदि थोड़ा भी मिले तो ले लेना चाहिए। छाया चिथड़े की भी हो तो बुरी नहीं।

२२२. छोटे कुवे घणो खुवावे।

छोटा ग्रास लेने पर अधिक खाया जा सकता है। थोड़ा-थोड़ा मुनाफा लेने से अधिक लाभ होता है। जैसे—'Small profit quick returns.'

२२३. छोरा, कुत्ता, बाँदरा, याँकी उलटी रीत।
डरता रीज्यो परसरामजी, ओछी पाळे प्रीत॥

लड़के, कुत्ते और बन्दर, इन तीनों में गम्भीरता नहीं होती। ये शीघ्र ही पलट भी जाते हैं। इनसे डरते रहना चाहिए।

२२४. छोरा-छोरयाँ घर बसे तो बाबो बूढी क्यूँ लावे।

अबोध बालकों से गृहस्थी चल जाती हो तो बाबा अधिक उम्र वाली स्त्री से पुनर्विवाह क्यों करे? कम उम्र वाले व्यक्तियों में अनुभव और बुद्धि की परिपक्वता का अभाव होता है। वे गृहस्थ जीवन का भार भलीभाँति वहन नहीं कर सकते।

२२५. ज्याँ का काम ज्याँने छाजे, और करे तो डींगा बाजे।

जो काम जिसका होता है, उसी को शोभा देता है, दूसरा उसको करता है तो कष्ट उठाता है। एक बार एक कुम्हार के घर में चोर घुसे तो कुत्ते के बजाय गधा रेंकने लगा। मालिक की नींद में बाधा पड़ी। उसने गधे को खूब पीटा और वापस सो गया। चोर चोरी कर गये। इस तरह गधा कुत्ते का काम करने पर पीटा गया।

२२६. ज्याँ का ज्यो एक अर् बचे पड़े तो छेक।

जो जिसका निकट सम्बन्धी होता है उसकी उससे स्थायी लड़ाई नहीं हो सकती। ऐसी दशा में किसी अन्य व्यक्ति को बीच में पड़कर बुरा नहीं बनना चाहिये।

२२७. ज्याँ का पड़्या सभाव, क जासी जीव सूँ।
नीम न मीठा होय, क सींचो घीव सूँ॥

जिसकी जैसी आदत पड़ जाती है, वैसी ही जीवन पर्यन्त रहती है। नीम की जड़ में घी सींचने पर भी वह मीठा नहीं हो सकता।

२२८. ज्याँ का मनड़ा वश नहीं, ज्याँ का धुप्या न पाप ।
जैसे बादी बळद का मिटचा न फरबा लार ।।

जिनका मन वश में नहीं है और जिनका हृदय पापों को धोकर शुद्ध नहीं हो चुका है वे दुष्कर्म करने की शक्ति न रहने पर भी मन से उनके साथ चिपके रहते हैं, जैसे नपुंसक किया हुआ बैल गायों के पीछे-पीछे फिरता है ।

२२९. जठा का मरचा जठे'ई ब'ळी ।

जो जहाँ का होता है उसको वहीं की सुविधा-असुविधा में निर्वाह करना पड़ता है ।

२३०. जठे खेरो प'ड़ी माँख्या आ'ई ।

जहाँ मीठे के कण गिरेंगे वहाँ मक्खियाँ आयेंगी ही । अर्थात् स्वार्थ या हित की पूर्ति की भनक पड़ते ही लोगों का एकत्रित होना स्वाभाविक है ।

२३१. जठे जावे उठे ई पइसा का दो अधेला ।

सभी जगह एक पैसे के दो अधेले ही होते हैं । जबकि दूसरी जगह जाने से कोई लाभ नहीं हो तो प्रयत्न करना व्यर्थ है ।

२३२. जतरा मूंडा, उतरी बाताँ ।

सबके अपने विचार अलग-अलग हुआ करते हैं । 'मुंडे-मुंडे मतिर्भिन्ना ।

२३३. जतरी लाँबी रजाई होवे उतराई पाँव पसारणा ।

'ते ते पाँव पसारिये, जेती लम्बी सौड़ ।' सामर्थ्य और क्षमता के अनुसार ही किसी प्रकार का भार वहन किया जा सकता है ।

२३४. जबरो मारे अर् रोबा नीं देवे ।

प्रबल व्यक्ति अत्याचार करके उसको प्रगट भी नहीं करने देता ।

२३५. जम को बुलावो आज्यो, पण राज को आओ मती ।

सरकारी कचहरी में (जरिए वारंट) जाने की अपेक्षा मर जाना ज्यादा अच्छा होता है ।

२३६. जमीन जोरू जोर की, जोर हटचाँ ओर की ।

जमीन-जायदाद और स्त्री तभी तक अपने अधीन रहा करते हैं जब तक ताकत होती है । हमारे निर्बल होने की सूरत में इनके किसी भी समय दूसरों के हाथों में चले जाने की आशंका बनी रहती है ।

२३७. जरण, मरण अर् परण न रुके ।

जन्म (स्त्री का प्रसव), मृत्यु और विवाह के निश्चित समय टल नहीं सकते ।

२३८. जल में खोड़, करम में कीड़ा ।

किसी का भाग्य ही जब दोषयुक्त है तो उसको पदार्थ भी दोषयुक्त ही मिलते हैं ।

२३९. **जश्या मूँडा वश्या ई शीरा वेग्या।**

जैसा खाने वालों का मुँह था वैसा ही हलवा भी बन गया। अयोग्य व्यक्तियों को बढ़िया माल नहीं मिलता।

२४०. **जश्यो खावे धान, उश्यो आवे ज्ञान।**

जैसा भोजन किया जाएगा (जैसे—सात्विक, तामसिक आदि) वैसी ही बुद्धि हो जायगी। जैसे—'यादृशं भक्ष्यते अन्नं तादृशी जायते मतिः।'

२४१. **जश्यो देश उश्यो भेष।**

देश-काल और परिस्थिति के अनुकूल वेश भूषा और व्यवहार उचित होता है। जैसे—'When in Rome, do as Romans do.'

२४२. **जश्यो बायरो बाजे उश्यो तुवाव देणो।**

अनाज से भूसा अलग करने के लिए तिपाया (एक प्रकार का ऊँचा स्टूल) उस ओर लगाना चाहिए जिस ओर उसके ऊपर चढ़कर अनाज की धार देने के लिए हवा का रख अनुकूल पड़ता हो। अर्थात् अपने हित के लिए अवसरवादिता का आचरण करना बुद्धिमानी है।

२४३ **जश्यो ललाड़ देखे उश्यो तलक काढे।**

जैसा ललाट हो वैसा ही तिलक करना चाहिए। योग्यता के अनुसार ही सम्मान देना उचित है।

२४४. **जागती तो डोकरी भी न मसावे।**

गफलत नहीं रखने वाले को कोई नहीं ठग सकता। जगती हुई यदि बुढ़िया भी है तो भी उसके घर में चोर चोरी नहीं कर सकता।

२४५. **जाणे सो ताणे।**

बात को वही खींचता है (आगे बढ़ाता है) जो जानता है।

२४६. **जात की बेटी अर् खाना की माटी में कई खोट वे' वे।**

भूमि खोदकर नीचे से निकाली हुई मिट्टी जैसे शुद्ध होती है वैसे ही विवाह के लिए अपनी ही जाति की कन्या को शुद्ध मानना चाहिए।

२४७. **जीवणाँ जतरे सीवणाँ।**

मनुष्य जब तक जीवित रहता है तब तक जीवन सम्बन्धी कार्य करने ही पड़ते हैं।

२४८. **जींके चूल्हे ब'णी जो खा'ई।**

अपने-अपने चूल्हे पर अपनी-अपनी हैसियत के अनुसार जो भोजन बनता है वही खाना होता है। अभिप्राय यह है कि दूसरे की अच्छी वस्तु भी हो तो वह अपने उपयोग के लिए नहीं होती।

२४९. **जींको ठाकर मारकण्यो वीं को लोग जुजार।**
सोर अगन का जोर सूँ सीसो फोड़े सार॥

जो नेता जोरदार होता है उसके लोग भी वीर होते हैं। जिस तरह सीसे की गोली बारूद के जोर से लोहे को बेध देती है।

२५०. **जुबान सूँ तो छोरा छोरी'ई परण जावे।**

सगाई विवाह तक जबानी तय होने से ही हो जाते हैं। दस्तूर आदि की आवश्यकता सत्यवादियों के लिए नहीं होती। इसमें वचन पर अटल रहने का महत्त्व दिखाया है।

२५१. **जे सांई सँवळा हो तो अँवळा हो अनेक।**

"राम भये जेहि दाहिने सबै दाहिने ताहि।" 'ज्याँ को राखे साइयाँ मारि सके न कोय। बाल न बाँका कर सके जो जग बैरी होय।"

२५२. **जो धन जातो जाणजे, आधो दीजे बाँट।**

यह विदित हो जाय कि सारा ही धन जाने वाला है तो बाँट देना चाहिए। कहा है—"सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्धम् त्यजति पण्डित:।"

२५३. **जो न माने बड़ा की सीख ले ठीकरो माँगे भीख।**

बड़ों की शिक्षा न मानने वालों की दुर्दशा ही होती है।

२५४. **झगड़ा झूँठा अर् कब्जा सच्चा।**

कब्जे के मुकाबले में दूसरे उजरात कम ही माने जाते हैं। 'Possession is nine poients out of ten' (in law).

२५५. **झगड़ो झगड़ात्याऊँ महँगो।**

लड़ने वालों की जिद्द से झगड़ा छोटा हो तो भी बड़ा हो जाता है।

२५६. **झूँठ कतरोक पगाँ चाले।**

मिथ्या बात ज्यादा देर तक नहीं चलती।

२५७. **झूँठ बोलबा के अर् भेळा सूबा के कठे बणे।**

निकट के सम्बन्ध वाले (जैसे पति, मित्र या भाई) या किसी स्नेही से झूंठ बोलने से बात छिप नहीं सकती और सम्बन्ध या प्रेम टूट जाने की आशंका रहती है।

२५८. **टका की हाँडी भी बजाय ने लेवे है।**

वस्तु कितनी ही साधारण व कम कीमत वाली हो, परख कर ही ली जाती है।

२५९. **टको टको छाछ अर् कुणको कुणको रास।**

'बूँद-बूँद ते घट भरे, टपकत रीतो होय' दाने-दाने से अनाज का ढेर भी जुड़ जाता या समाप्त हो जाता है। किसी वस्तु के संग्रह के लिए एक-एक कण का भी महत्व होता है।

२६०. **टसक की टारड़ी अर् गारा में'ई गच।**

अकड़ कर इधर उधर देखने से लोग कभी कीचड़ में फँस जाते हैं।

इसलिए चलते समय रास्ते का ध्यान रखना चाहिए। टारड़ी छोटी घोड़ी को कहते हैं।

२६१. **टेटी को अर् बेटी को पइसो घणों बटे।**

बकरी और बेटी बेची जाय (विवाह के लिए) तो काफी रुपया मिलता है।

२६२. **टोटो तो टूट पड़े अर् धायो सू पड़े।**

घाटा (टोटा) तो एकदम आ जाता है। लाभ तो धीमे-धीमे आता है। मानों चलते-चलते सो जाता है।

२६३. **टोटो नफो तो बेन भाई है।**

व्यापारिक कार्य में कभी टोटा, कभी नफा होता ही रहता है।

२६४. **ठगायाँ सूँ ठाकर बाजे।**

जानबूझकर अपने आपको लुटाने अर्थात् दूसरों को लाभ पहुँचाने पर ही लोग साथ-साथ फिरते हैं और इसी कारण उदार व्यक्ति ठाकुर कहलाते हैं।

२६५. **ठाकर सूँ तो गाँव उतरयो अर् भाँडाँ माँग्यो भोग।**
तेली सूँ खळ, ऊतरी भई बळीता जोग॥

जिस तरह तेली के यहाँ से खल निकलने पर सूखकर ईंधन के योग्य हो जाती है उसी तरह सुरक्षित स्थान से किसी वस्तु के निकलने पर उसकी कद्र घट जाती है। एक जागीरदार के अधिकार से गांव हटा लिया गया। दूसरा अधिकारी आने के पहले भाँड नकली जागीरदार बनकर लगान वसूल करने आ गए।

२६६. **ठिकाणा सूँ ठाकर बाजे।**

ठिकाणे से ही ठाकुर कहलाते हैं। पुरुष का मूल्य उसके स्थान से ही आँका जाता है। (जैसे—'स्थान भ्रष्टा न शोभन्ते दन्ता, केशा, नखा, नरा'

२६७. **डाकण छाना कस्या चेला।**

डायन अपने सभी शिष्यों को जानती है। विशेषज्ञ सभी जानते हैं।

२६८. **डावों हाथ हिलाऊँ, घर बैठी पीयर पाऊँ।**

अधिक परिश्रम करने पर स्त्री को पीहर और सुसराल दोनों का लाभ एक ही स्थान पर मिल सकता है।

२६९. **डाँस, मकोड़ी, मूरख नर, तीनों लाग मरन्त।**

बड़ा मच्छर और मकोड़ा (हटाये जाने पर भी बार-बार वापस आकर) चिपक कर काटते हैं और जिसको काटते हैं उसके द्वारा मारे जाते हैं उसी प्रकार मूर्ख आदमी जिद पकड़ कर नहीं छोड़ने पर मारा जाता है।

२७०. **डाँड सबने पदणो प'ड़ी।**

खेल में हार जीत होती ही रहती है। हारने वाले को पिदना ही होता है सो सबके ही भाग्य में है।

२७१. डूँगर दूराऊँ ई ज आछा लागे।

पहाड़ दूर से अच्छे लगते हैं जैसे 'दूर के ढोल सुहावने।' कुछ चीजें दूर ही से भली लगती हैं, पास जाने पर तो उनकी वास्तविक बुराइयाँ खुल जाती हैं।

२७२. ऊडू बाँपर दो बाँस।

डूबने के बाद यदि और भी दो बाँस (चौबीस फिट) पानी फिर तो कोई अन्तर नहीं पड़ता। जैसे—'यथा हि मलिनैर्वस्त्रैर्यत्रोपविश्यते।
तथा चलित वृत्तस्तु वृत्त शेषं न रक्षति॥'

२७३ ढळती वळती छाया है।

जिस तरह छाया चढ़ती उतरती रहती है उसी तरह किसी के सभी दिन सदा ही एक समान नहीं रहते। सुख-दुःख आते ही रहते हैं।

२७४. ढाड़ भेळो घजराड़।

ढाड़ (हाहाकार) के साथ घजराड़ (हल्की आवाज) चल सकती है। वह उसमें समा जाती है। जैसे—'सर्वे पदाः हस्ति पदे निमग्नाः।

२७५. ढांक्यो तो धरम अर् उगाड़्यो तो पाप।

जब तक पाप उघड़कर प्रगट न हो जाय तब तक पापी भी धर्मात्मा का जामा पहने रहता है।

२७६. तरवार बाजी आछी पण दाँताकची खोटी।

शस्त्र लेकर लड़ने में किसी बात का फैसला तो हो जाता है, जबानी तकरार से तो झगड़े का अन्त ही नहीं होता। इसलिए वाक् युद्ध बुरा है।

२७७. ताळो और घर को रुखाळो।

ताला घर का रखवाला होता है।

२७८. ताँत बाजी अर् राग पछाणी।

ताँत बजते ही राग पहचान ली जाती है। समझदार व्यक्ति बात छिड़ते ही उसका भावार्थ समझ लेते हैं। जैसे—'खत का मजमून भाँप लेते हैं लिफाफा देखकर।' 'परेंगितज्ञानफला हि बुद्धयः।'

२७९. तिरिया तेरा (तेरह) अर् मरद अठारा (अठारह)।

तेरह वर्ष की लड़की वयस्क मानी जाती है परन्तु लड़का अठारह वर्ष का होने पर ही जवान माना जाता है।

२८०. तिलक की वेळाँ ललाड़ पाछो नीं करणो।

तिलक के समय ललाट को पीछे नहीं करना चाहिए। जहाँ कुछ लाभ मिले वहाँ से पीछे नहीं हटना चाहिए।

२८१. तुरत दान महा पुण्य ।

जो देने की वस्तु तुरन्त दे दी जाती है उसका पुण्य उस दान से अधिक है जिसको दिया नहीं जाता वरन् देने का वादा मात्र किया जाता है ।

२८२. तेल देखो तेल की धार देखो ।

किसी वस्तु या व्यक्ति की परीक्षा लेने में शीघ्रता नहीं करनी चाहिये । उसकी सभी प्रकार से जाँच करनी चाहिए । पड़े हुए तेल की धार दिये बिना उसमें जो गाद होती है उसका पता नहीं लग सकता ।

२८३. थरता राख्याँ थर आवे ।

दूध को उबालकर कुछ देर तक बिना हिलाये पड़ा रखने पर ही उस पर मलाई की परत जमती है । इसी प्रकार धीरज से ही कार्य में सफलता मिलती है ।

२८४. थारा भाये नाँगलो अर् मारा भाये कतीर ।

तू तो इसे जेवर समझती है पर मैं इसे निकृष्ट धातु से अधिक महत्त्व नहीं देता । पराई वस्तु चाहे कैसी भी हो, अपने लिए किसी काम की नहीं होती ।

२८५. थोथो चणो बाजे घणो ।

सुला हुआ चणा हल्का होने से किसी बरतन व बोरे में भरने व खाली करने पर बहुत बजने लगता है । अयोग्य और कमजोर व्यक्ति बड़बड़ाया करता है । जैसे—'Much cry little wool.'

२८६ दगा किसी का सगा नहीं कर देखो रे भाई ।

धोखा देने वाले को अन्त में पछताना पड़ता है ।

२८७. दगाबाज दूणों नुँवें, चीता, चोर, कमान ।।
अधर नूँत है ढींकली, काढ लेत है प्राण ।।

ढेंकुली नीचे झुकने पर पानी निकाल लेती है उसी प्रकार चीता, चोर, कमान और धोखेबाज व्यक्ति भी अधिक विनम्र होकर कष्ट देते हैं । उनकी विनम्रता आडम्बर मात्र होती है । गो० तुलसीदासजी ने भी इसकी पुष्टि की है—'नवनि नीच के अति दुखदाई । जिमि अंकुश धनु उरग बिलाई ।।'

२८८. दया धरम को मूल है ।

'दया धरम को मूल है, पाप मूल अभिमान ।
तुलसी दया न छाँडिये जब लगि घट में प्राण ।।'

२८९. दशा करे जसी दुश्मन नीं करे ।

जब ग्रह दशा उल्टी होती है तब अपने आप बुरा हो जाता है ।

२९०. दाई छानों पेट नीं ।

प्रसव काल में पास रहने वाली दाई स्त्री के पेट का सारा हाल जानती

है, उससे कुछ भी छुपा नहीं रहता। इसी प्रकार जीवन का अंतरंग व्यक्ति जो सुख दु:ख में हर समय साथ रहता है उससे अच्छाइयाँ या बुराइयाँ कुछ भी छुपाई नहीं जा सकतीं। वह सारा भेद जानता है।

२९१. **दानगी तो भंगी की कर लेणीं, इमें कई लाज।**

मजदूरी से गुजारा करना है तो यह नहीं देखना चाहिए कि जिसके यहाँ मजदूरी करने जाना है, वह कौन है ? राजा हरिश्चन्द्र ने तो डोम के यहाँ भी नौकरी की थी।

२९२. **दाता वचे सूम भलो जो वेळाँ उत्तर देय।**

ऐसा दाता किस काम का, जो न तो देता है और न मना ही करता है, बल्कि भीख लेने वाले को लटकाये रखता है। ऐसे दाता से तो कंजूस ठीक होता है जो तुरन्त मना तो कर देता है।

२९३. **दाणा-दाणा पर लिख्यो खाबा वाला को नाम।**

अपने-अपने भाग्य के अनुसार ही सबको भोजन प्राप्त होता है। अचानक ही अनपेक्षित स्थान पर भोजन मिलने पर ऐसा कहा जाता है।

२९४. **दाँतेड़ो बेचवाऊँ दालीदर थोड़ीऽऽ जावे।**

दाँतेड़ो (घास या झाड़ी काटने का एक औजार (बेचने से दरिद्रता दूर नहीं होती। अर्थात् छोटी-सी वस्तु को बेचकर कोई अपने आर्थिक संकट को दूर करने की कामना करता है तो वह वस्तु भी बिक जाती है और संकट ज्यों का त्यों रह जाता है।

२९५. **दी दूधाँ का पामणा अर् छाछ सूँ ई अबावणा।**

दही दूध आदि से ऊँचे स्तर पर जिनकी खातिरदारी की जानी चाहिए ऐसे मेहमानों को छाछ तक नहीं दी जा सके तब उक्त कहावत कही जाती है।

२९५. **दुकानदारी नरमाई की अर् हाकमी गरमाई की।**

व्यापार में ग्राहक से मृदु व्यवहार करने में ही लाभ है किन्तु हुकूमत तो इससे विपरीत बर्ताव माँगती है।

२९६. **दुकान बगड़ी जुड़ी हताई, राँड बगड़ी हली मिठाई।**

दुकान पर फालतू आदमियों की बैठक जुड़ जाने से ग्राहक अन्य ग्राहकों की भीड़ समझकर दूसरी दुकान पर जाकर खरीददारी कर लेते हैं जिससे दुकानदार की कमाई जाती रहती है। इसी प्रकार घर की स्त्री को जब मिठाई का शौक लग जाता है तो वह बदचलन हो जाती है।

२९७. **दुधारू गाय की लात खूँणी पड़े।**

'लात खाय पुचकारिये, होय दुधारू धेनु।' हर समय लाभ पहुँचाने वाले व्यक्ति से कोई नुकसान भी हो जाये तो उसे सहन करना पड़ता है।

२९८ **दुविधा में दोई गया, माया मिली न राम।**

साँसारिक कामों द्वारा अर्थ-संचय करना चाहिए या रामभजन में ही

सारा समय लगाना चाहिए, यह जल्दी निश्चित न कर पाने से व्यक्ति दोनों कामों से वंचित रह जाता है। अतः अपना मार्ग जल्दी निश्चित कर लेना चाहिए।

२९९. **दूखे जींके दूखणो अर् पाके जींके पीड़।**

दर्दी ही दर्द की व्यथा को अनुभव कर सकता है। दूसरे को अनुभव नहीं होता।

३००. **दूजवर की गोरड़ी अर् मोत्याँ पर ली मोरड़ी।**

अधिक अवस्था वाले पुरुष के दूसरा विवाह करने पर वह उस स्त्री को अधिक प्यार और हिफाजत से रखता है, जैसे—'वृद्धस्य तरुणी भार्या प्राणेभ्योऽपि गरीयसी।'

३०१. **दूध अर् दूवणो दो ई रह जावे।**

'साँप भी मर जावे और लकड़ी भी न टूटे' की तरह दोनों तरफ के लाभ अभीष्ट होना चाहिए।

३०२. **दूध अर् पूत कुँण बेचे।**

ये दोनों चीजें बेचने की नहीं मानी जाती।

३०३. **दूबळा ने दो अषाढ़।**

जब पहले से ही गरीबी और गर्मी की अधिकता हो और ऊपर से दो आषाढ़ महीने हो जायँ जिससे वर्षा में देर पड़ जाय और नई फसल भी जल्दी हाथ न आ सके तब दुर्बल (निर्धन) व्यक्ति दोहरे दुःख से घबरा उठता है।

३०४. **दूबळा बेटा ने कणगती को भार।**

दुर्बल बेटे के लिए करधनी (कमर में पहनने का पतला गहना) भी भार स्वरूप ही होती है। कमजोर और असहाय के लिए हल्की सी विपत्ति का बोझ भी असह्य हो उठता है।

३०५ **दूर का ढोल सुहावणा।**

अन्दर से ठोस गुण न रखने वाला व्यक्ति दूर से ही अच्छा लगता है। अधिक निकट होने पर ढोल ज्यादा जोर से बजने के कारण कर्ण-कटु हो जाता है। वैसे ही मूर्ख भी अप्रिय लगता है।

३०६. **दूर को मिलबो कागद सूँ।**

दूरस्थ मित्रों या सम्बन्धियों का मिलन तो पत्र-व्यवहार से ही सम्भव है।

३०७. **देखा देखी साधे जोग, छीजे काया वदे रोग।**

देखादेखी योग-साधना करने पर शरीर दुर्बल और रोग ग्रस्त होने लगता है इसलिए बिना समझे देखादेखी कोई काम नहीं करना चाहिए।

३०८. **देखे बाप के सो करे आप के।**

स्त्रियाँ प्रायः जैसा पीहर में देखती हैं वैसा ही ससुराल में भी करने लगती हैं।

३०९. देणा लेणा ऊँ तो चांद-सूरज ही उऋण कोय ने ।

देना-लेना तो सबके लगा रहता है । अतः कर्जदार को कभी निराश नहीं होना चाहिए तो लेनदार को अभिमान नहीं करना चाहिए ।

३१०. देणों भलो न बाप को बेटी भली न एक ।
चलबो भलो न कोस को, परभू राखे टेक ।।

कर्जा बुरा होता है, चाहे वह पिता के द्वारा किया हुआ ही क्यों न हो, बेटी का होना भी ठीक नहीं, चाहे वह एक ही क्यों न हो और विवश होकर पैदल चलना भी बुरा होता है चाहे एक कोस ही क्यों न चलना पड़े । इनसे तो ईश्वर ही बचावे ।

३११. दे रे पांड्या आशीष, मूँ कई दूँ, मारी आत्मा दे'ई ।

किसी का उपकार करने पर उसके बदले मौखिक आशीष की याचना का कोई महत्त्व नहीं होता (यदि सच्चे मन से भला किया हुआ है तो स्वतः फलीभूत होगा) ।

३१२. देश की चोरी अर्, परदेश की भीख ।

अपनी जान पहचान वालों के क्षेत्र में हल्के दर्जे के कार्य चोरी-छिपे ही करने पड़ते हैं । परदेश में तो मजबूरी आ पड़ने पर भीख माँगने जैसा काम भी खुल्लमखुला किया जा सकता है ।

३१३. दो ई खोई रे जोगड़ा मुद्रा ने आदेश ।

परिणाम बिना सोचे किसी काम को कर लेने पर जब कोई व्यक्ति उसे निभा नहीं सकता और पुरानी स्थिति को भी खो देता है तब यह कहावत कही जाती है । नाथ संप्रदाय के जोगी कानों के बीच में कुण्डल पहनते हैं उन्हें 'मुद्रा' और नमस्कार को 'आदेश' कहते हैं ।

३१४. दो तो गारा का ई खोटा ।

एक आदमी से लड़कर जीता जा सकता है किन्तु दो तो कमजोर होने पर भी एक को दबा लेते हैं । "बहूनां अल्पसाराणां समवायो दुरत्ययः" ।

३१५. दो ल'ड़ी तो एक प'ड़ी ।

दो की लड़ाई में किसी एक की तो हार होगी ही ।

३१६. धणी राज सो सुख साज, बेटा राज सो खेटाँ राज ।

स्त्री को पति के आधिपत्य में जितना अधिकार व सुख होता है उतना पुत्र के आधिपत्य में नहीं ।

३१७. धन खेती धिक् चाकरी, धन-धन है बोपार ।

खेती और व्यापार धन्य धन्धे हैं । नौकरी (जिसमें गुलामी करना स्वाभाविक है) को धिक्कार है ।

३१८. धन जावे जीं को धरम जावे ।

जिसका धन चोरी जाता है वह निर्दोष व्यक्तियों पर भी शक करता है जिससे उसके धर्म की साख भी जाने लगती है ।

३१९ धन तो धण्याँ का, गुवाल का हाथ में लाकड़ी ।

गाय भैंस तो मालिक की होती है, ग्वाले की नहीं । अर्थात् रक्षक या सेवक माल का मालिक नहीं हो सकता ।

३२०. धरती धन सीरोळा ।

पृथ्वी और धन सार्वजनिक होते हैं किसी एक के पास नहीं ठहर सकते ।

३२१. धरम हारयाऊँ धन नीं आवे ।

अधर्म से युक्त साधनों से धन नहीं हुआ करता ।

३२२. धान जीं के धन अर् धान जींके धूळ ।

अन्न का संग्रह जिसके पास है वह धनवान है । अधिक पैदावार होने पर वही धान मिट्टी के भाव भी हो जाता है ।

३२३. धामधूम धरती सहे, बाढ़ सहे बनराय ।
कटुवचन साधू सहे, ओराऊँ सह्यो न जाय ।।

पृथ्वी बड़ी सहनशील है, इस पर दंगे फसाद, धाम धूम होते ही रहते हैं । जंगल पानी की बाढ को सहन कर खड़े रहते हैं । कड़वे बोल साधु प्रकृति के लोग ही सहन कर सकते हैं, साधारण व्यक्ति नहीं ।

३२४. धीर सो गम्भीर ।

धैर्यवान व्यक्ति गम्भीर भी हुआ करते हैं ।

३२५. धोवती में सब नागा ।

नैतिक या आर्थिक दशा प्रायः सबकी बिगड़ी हुई है चाहे ऊपर से कितना ही ढोंग किया जाय ।

३२६. न्यारा घराँ का न्यारा बारणा ।

भाइयों में परस्पर हिस्से बँटवारे हो जाने पर या किसी से अलगाव हो जाने पर एक दूसरे के घरेलू जीवन में दखल न देना ही उचित होता है ।

३२७. न्याव अर् भाटो ज्यूँ बैठावे ज्यूँ ई बैठ जावे ।

जिस प्रकार किसी दीवाल में पत्थर को जिस तरह जमा दिया जाये वैसे ही जम जाता है उसी प्रकार तर्क और युक्ति को घुमा-फिरा कर इंसाफ को भी चतुर और चालाक व्यक्ति अपने हक में कायम कर लेते हैं ।

३२८. न्हाया ज्यो ई गंगा ।

जहाँ अपना कार्य बन जाय वही सबसे उत्तम है ।

३२९. नकटो साऊ पण बात कटो खोटो ।

चलती बात को बीच में से काटने वाला नकटे से भी बुरा होता है ।

३३०. नदी नाव संजोग ।

संसार में व्यक्तियों के समागम इत्तफाक से होते हैं और अस्थायी रहते हैं ।

३३१. नवरी रहे न नाते जाय ।

निकम्मा नहीं रहने से कुचेष्टाएँ नहीं सूझतीं । जैसे कोई स्त्री जब तक

काम में लगी रहती है, उसे फुरसत ही नहीं मिलती तब तक दूसरा पति करने का विचार ही नहीं होता।

३३२. नष्ट देव की भ्रष्ट पूजा।

जैसा देवता होता है वैसी ही पूजा भी हुआ करती है। व्यक्ति को उसके व्यक्तित्व और गुणों के अनुरूप ही मान-अपमान दिया जाता है।

३३३. नागी पे जगत को मन चाले।

आकर्षक वस्तु को खुली नहीं रखनी चाहिए। कालिदास ने भी कहा है "ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः"

३३४. नादान की दोश्ती जीव को जंजाल।

नादान (अबोध) से मित्रता करने पर उसकी नासमझी और भूलों के कारण आये दिन संकट पैदा होता रहता है।

३३५. नादान दोश्त-ऊँ दानो दुश्मन साऊ।

अबोध और मूर्ख मित्र की अपेक्षा वयोवृद्ध और अनुभवी शत्रु अच्छा है।
'पंडितोऽपि वरं शत्रुर्न मूर्खो हितकारकः।
वानरेण हतो राजा चोर पण्डित रक्षितः'।

३३६. नामी चोर मारयो जाय, नामी साहूकार कमा खाय।

प्रसिद्ध चोर निर्दोष होने पर भी आशंका का शिकार होकर मारा जाता है और प्रसिद्ध साहूकार चोरी करने पर भी आशंका का शिकार न होने के कारण धन कमाता रहता है।

३३७. निकली होठाँ, बँधगी पोटाँ।

मुँह से बात निकल जाने पर लोग उसकी गाँठें बाँधकर ले जाते हैं अर्थात् उसका प्रचार रुकता नहीं। इसलिए कोई बात बिना सोचे समझे नहीं कहनी चाहिए।

३३८. निरोग्याँ को वेद कई करे।

निरोग व्यक्ति को वैद्य की आवश्यकता नहीं। 'नीरु रूजस्य किमौषधैः'।

३३९. नीत साई बरगत।

जैसी नीयत होती है वैसी सफलता मिलती है।

३४०. नुँई बात नौ दन की खेंचाताणी तेरा दन की।

नई बात नौ दिन चलकर ठंडी पड़ जाती है ज्यादा चलाओ तो तेरह दिन में तो समाप्त हो ही जाती है इसलिये इसकी परवाह नहीं करना चाहिए।

३४१. नौकरी की जड़ भाटा पे।

नौकर को मालिक चाहे जब निकाल सकता है। उसके स्थायी रहने का कोई भरोसा नहीं।

३४२. नौ नकद तेरा उधार।

बाद में मिलने वाली अनिश्चित वस्तु से जो हमारे हाथ में है उसका

मूल्य अधिक है। 'A bird in the hand is worth two in the bush.' 'वरमद्य कपोता श्वो मयूरात्' कहे गये हैं।

३४३. **पइसो भींत में गेलो कर देवे।**

धन दीवाल में रास्ता कर देता है। 'Money makes the mare go.' और 'द्रव्येण सर्वे वशाः।' (कहीं २ 'भींत' के स्थान पर 'पानी' भी कहा जाता है।)

३४४ **पक्खाँ खेती पक्खाँ न्याव पक्खाँ ह्वै बूढाँ रा ब्याव।**

पक्ष वाले की ही खेती अच्छी होती है क्योंकि उसको समय पर काम व निगरानी करने में मदद मिल जाती है। पक्षपात वाले को ही मनचाहा न्याय मिलता है और यदि पक्ष प्रबल होता है तो बूढा भी नया विवाह कर सकता है।

३४५. **पगरखी में पग कटावे।**

अपने ही जूतों में अपना ही पैर कटाना उचित नहीं। जहाँ प्रत्यक्ष लाभ नहीं होता हो वहाँ भीतर ही भीतर हानि उठाना मूर्खता है।

३४६. **पछोपा का बेटा-बेटी यूँ ई दुख पावे।**

माता-पिता की प्रौढ अवस्था में उत्पन्न संतान को उनका संरक्षण बहुत कम बरसों तक ही मिल पाता है जिससे वे जीवन भर दुःख उठाते रहते हैं।

३४७. **पड़दे लक्ष्मी बसे।**

बाहरी आवरण ठीक दिखने से लोग ऐसे व्यक्तियों को धन व प्रतिष्ठा-सम्पन्न मान लिया करते हैं।

३४८. **पत बणी राखो खत माँडवा में क' ई है।**

पेठ नहीं हो तो दस्तावेज लिख देने पर भी लोग विश्वास नहीं किया करते।

३४९. **परबात को भूल्यो साँजे घरे आ जावे तो भूल्या में भूल्यो नीं वाजे।**

सुबह का भूला शाम को घर आ जाय तो भूला हुआ नहीं कहलाता। काम थोड़ा बिगड़ने पर ही सम्भल जाय तो उसकी गिनती बिगड़े में नहीं है।

३५०. **पराई आस, सदाई निराश।**

दूसरों की वस्तुओं की आशा रखने से अन्त में सदा निराशा होती है।

३५१. **पराधीन सपने सुख नाहीं।**

गो० तुलसीदास जी की उक्ति है कि दूसरों की अधीनता में सुख नहीं मिलता। 'सर्वं परवशं दुःखम्, सर्वमात्मवशं सुखम्।'

३५२. **परायो देख पड़ोसी रो, अर् घर रो देख जेठाणी रो।**

अपने घर की और पड़ोसियों की दशा देखकर हमें भी अपनी दशा सुधारनी चाहिए।

३५३. पाकी बोरड़ी नीचे भूखाँ मरेगा ।

अकर्मण्य व्यक्ति पके हुए बेर के वृक्ष के नीचे भी भूखों ही मरते हैं। जैसे—'नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।'

३५४. पाणी उतरयाँ पछे क' ई है ।

प्रतिष्ठा भंग हो जाने पर सर्व सुख व्यर्थ हैं।

३५५. पातर बिना कुपातर ।

लोटा गिलास आदि कोई बरतन पास न हो तो ऐसे अयोग्य आदमी को दूसरों का मुँह ताकना पड़ता है ।

३५६. पाप को भाँडो फूटयाँ बना न रे' वे ।

पाप का भण्डाफोड़ अवश्य ही हो जाता है ।

३६७. पामणा आया तनका, अर् घर में नीं अन का कणका ।
बारे जाऊँ तो लागे जेज, ऊबा खेजड़ा पड़े न वेज (छेद) ।

बहुत ही निकट के मेहमान अपने घर आये किन्तु घर में अन्न का एक दाना भी नहीं है । जो लेने के लिए बाहर जाऊंगी तो बहुत देर हो जायगी । खड़े-खड़े तो पेड़ में भी छेद नहीं किया जा सकता तब जल्दबाजी में कोई काम नहीं हो सकता ।

३५८. पामणाऊँ घर नीं बसे ।

मेहमानों के आधार पर गृहस्थी नहीं जमती । उसके लिए तो स्त्रियाँ, बाल बच्चे आदि सभी चाहिए ।

३५९. पाँचाँ की लकड़ी अर् एक को भारी ।

पांच लकड़ियाँ एक एक आदमी अलग २ आसानी से उठा लेते हैं। पाँचों को एक के सिर पर रखने से भार हो जाता है । "division of labour" व सहयोग की महिमा बताने के लिए यह कहा जाता है ।

३६०. पाँचाँ पूँचो भारी ।

पाँच अंगुलियाँ काम करने वाली होने से पहुँचे में बड़ा बल होता है अर्थात् संगठित रहने से शक्ति बढ़ती है ।

३६१. पीठ पर मार देणीं पर पेट पर नीं मारणीं ।

शारीरिक दण्ड से उतनी हानि नहीं होती जितनी रोजगार छीन लेने से ।

३६२. पीहर के भरोसे घाघरो नीं बाळणो ।

अपने लहँगे को इसलिए नहीं जला देना चाहिए कि पीहर से नया मिलने-वाला है । 'गागर कैसे फोड़िये, उनयो देखि पयोद ।'

३६३. पुण्य की जड़ पाताल में ।

पुण्य का फल अक्षय होता है । गहरी जड़वाला वृक्ष सूखता नहीं ।

३६४. पूत का पग पालणे दीखे ।

होनहार बालक का भविष्य उसके बचपन में ही प्रगट हो जाता है जैसे— 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात ।'

३६५ पूत सपूत धन काहे को संचै ।
पूत कपूत धन काहे को संचै ॥

पुत्र सपूत होगा तो धन स्वयं कमा लेगा और कपूत होगा तो पिता के छोड़ हुए संचित धन को भी नष्ट कर देगा । इसलिए संतान के लिए धन छोड़ जाना अनावश्यक है ।

३६६. पूताँ धन आयो रे' वे ।

जिसके कई पुत्र होंगे तो उनमें से कोई न कोई तो धन कमाने वाला निकलेगा । अतः बेटे की तुलना में धन के लिए चिन्तित नहीं रहना चाहिए ।

३६७. पेट करावे वेठ ।

पेट भरने के लिए कठिन कार्य भी करने पड़ते हैं । 'वेठ' बेगार को कहते हैं जिसमें बहुत अधिक काम कराने की एवज में मामूली चना चबैना खाने के लिए दिया जाता है ।

३६८. पेट-पेट आगरणी थोड़े' ई वे' वे ।

बार-बार गर्भ रहने पर आगरणी (प्रथम गर्भाधान होने पर एक प्रकार की प्रसन्नता सूचक रस्म) नहीं होती । एक ही तरह की प्रसन्नता का अवसर बार-बार मिलता है तो उसका महत्त्व घट जाता है ।

३६९. पेल जाया अर् पेल बाया की होड़ नी वे' वे ।

ऋतु के अनुसार पहल कर के (अगेती) बोई हुई फसल जल्दी पक जाती है और घर आ जाती है । इसी तरह सबसे पहली सन्तान जीवित रहती है तो वह पिता के वृद्ध होने के पहले ही होशियार होकर उसे चिन्तामुक्त कर देती है और सेवा करने में समर्थ होती है ।

३७०. पेल माँगणी, फूल सूँघणी ।

पहले माँगने वाला फूल में से सुगन्ध की तरह सर्वोत्कृष्ट वस्तु प्राप्त कर लेता है ।

३७१. पेली लिख, पछे दे, भूल पड़याँ नामा सूँ ले ।

यह लेन देन का कायदा है कि लेते-देते अपना हिसाब तुरन्त लिखते रहना चाहिए जिससे भूलचूक होने पर भी नुकसान की सम्भावना नहीं रहती क्योंकि खाता-बही आदि की दुबारा जाँच की जा सकती है ।

३७२. पेलो सुख निरोगी काया ।

शरीर का नीरोग रहना सबसे पहला सुख माना गया है । यह सुख न हो तो अन्य सुखों का उपभोग भी नहीं हो सकता । "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" ।

३७३. पंचाँ में परमेश्वर बसे है।

पाँच मनुष्यों का निर्णय न्याय संगत ही हुआ करता है इसलिए ऐसा कहा जाता है।

३७४. फरत हरत की छाँवळी है।

जिस तरह छाया चलायमान है, उसी तरह किसी के दिन समान नहीं रहते।

३७५. फरे जो चरे अर् बँध्यो भूखाँ मरे।

एक ही स्थान में एक ही व्यक्ति से नाता जोड़ने से हानि उठानी पड़ती है। इसलिए सदा स्वतन्त्र रहना चाहिए और उद्यम करना चाहिए।

३७६. फाटा कपड़ाऊँ अर् बूडा बापऊँ लाज्याँ नीं मरणो।

फटे वस्त्रों से और बूढ़े बाप से नहीं शर्माना चाहिए।

३७७. फाटा के थेगळो जगत देवे पण पेट के थेगळो नीं लागे।

फटे कपड़े को पैबन्द लगाकर सभी सुधार लेते हैं परन्तु पेट को भरने के लिए तो अन्न खाना ही पड़ता है। अभिप्राय यह है कि फटे कपड़ों से तो रहा जा सकता है लेकिन खाली पेट नहीं रहा जा सकता।

३७८. फाटा ने सींवणों अर् रूस्या ने मनावणों।

फटे वस्त्र को सीना और रूठे व्यक्ति को मना लेना उचित है।

३७९. फूट को माल टके सेर बके।

टूटे फूटे बर्तन या वस्तुएँ बहुत सस्ते मोल बिका करती हैं, इसी प्रकार आपस में फूट पड़ने पर बँटवारा हो जाने के कारण भी जमीन जायदाद का मूल्य व परिवार का महत्त्व घट जाता है।

३८०. फूट में सबको डाव लागे।

घर में फूट होने पर दूसरों को बहकाने और अनुचित लाभ उठाने का मौका आसानी से मिल जाता है।

३८१. फूटी खट जावे पण जोजरी नीं खटे।

मटकी के छेद हो जाने पर उसके लाख लगाकर मरम्मत की जा सकती है लेकिन यदि उसके तेड़ (तड़क) आई हुई है तो वह किसी काम की नहीं रहती। यहाँ फूटी और जोजरी के लक्ष्यार्थ हो सकते हैं:—फूटी—एक विशिष्ट दोष युक्त; जोजरी-सामान्यत: थोड़े-थोड़े सभी तरह के दोषों से युक्त।

३८२. ब्याव ने अर् बेरी ने साँकड़ो लेवे जतरोई आछो।

विवाह के कार्य का व उसकी अवधि का विस्तार करने से खर्चा अधिक होता है और कार्य भार बढ़ता है। शत्रु को भी शीघ्र ही बिना कोई मौका दिए समाप्त करना आवश्यक है।

३८३. बगत चली जावे पण बात रे जावे ।

समय निकल जाता है किन्तु उसमें बीती हुई भली-बुरी बातें सदा याद रहती हैं अतः हमेशाँ नेकी का बर्ताव करना उचित है ।

३८४. बगड़्या तेवन कदे ईं न सुधरे ।

पकवान बनाते समय कोई त्रुटि रह जाने से जब बिगड़ जाता है तो उसे लाख प्रयत्न करके भी नहीं सुधारा जा सकता ।

३८५. बजार का भाव तो सूरज की किरणा मूँ निकले ।

बाजार भाव दिन-दिन सूर्योदय के साथ-साथ बदलते रहते है ।

३८६. बाजार की छींक अर् राँड को रोवणो कदी न मिटे ।

बाजार में मिर्ची वगैरह के कारख छींकें आती रहना स्वाभाविक होता है वैसे ही स्त्रियों का छोटी मोटी बातों पर रो देना स्वाभाविक है ।

३८७. बड़ सेयाँ बड़ होत हैं ।

बड़ों की सेवा करने पर सेवक भी बड़े हो जाते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं । जैसा कि कहा है—"याद्दशैः सन्निविशते याद्दशांश्चोप सेवते ।
याद्दगिच्छेच्च भवितुं ताद्दग् भवति पूरुषः ।"

३८८. बड़ो बोल की ने ई न छाजे ।

अहंकारपूर्ण वचन किसी को भी शोभा नहीं देता ।

३८९. बना बेटी जमाई को मान नीं ।

बेटी न रहे तो जँवाई का सुसराल में आदर नहीं होता ।

३९०. बना लुगाई घर भूताँवास ।

स्त्री के बिना घर में सूनापन छाया रहता है जैसे—श्मशान हो । "न गृहम् गृहमित्याहु र्गृहिणी गृहमुच्यते ।"

३९१. बळद ने बेटी जठे देवे जठे ई जा'ई ।

बैल और बेटी को स्वामी या पिता की इच्छा के अनुसार जहाँ वह बेचता है या ब्याहता है वहाँ जाना ही पड़ता है ।

३९२. बळी रोटी खावाऊँ पेट काळो थोड़े ई पड़े ।

जली हुई रोटी खाने से पेट में कोई नुकसान नहीं हुआ करता अतः डरना नहीं चाहिए ।

३९३. बहम को भूत, मन की डाकण ।

भूत और डाकरण वास्तव में कुछ नहीं होते ये तो बहम करने से व मन में भावना करने से पनपे हुए अन्धविश्वास से प्रतीत होते हैं ।

३९४. बात ने अर् भाटा ने ज्यूँ बेठावे ज्यूँ ई बैठे ।

('बात' की जगह 'न्याव' भी कहा जाता है । व्याख्या 'न' अक्षर वाले क्रम में दी गई है)

३९५. बारा मीनाँ के गेले जावणो पण छ मीनाँ के नीं जावणो ।

छः महीने के रास्ते न जाकर बारह माह के रास्ते से जाना श्रेष्ठ है । इसमें समय भले ही दुगुना लगता है किन्तु रास्ता निष्कंटक होने से सुविधा रहती है ।

३९६. बारे चोर चोरी करे, घर में बोले साँच ।

चोर बाहर चोरी करके कभी नहीं कहेगा कि उसने क्या किया लेकिन घर के लोगों के सम्मुख तो सत्य ही बोलेगा, अभिप्राय यह है कि घर के लोगों से कुछ भी गोपनीय नहीं रखा जाता ।

३९७. बालक पाळ्याँ का है, नाळ्याँ का नीं है ।

बालकों की सुन्दरता को निरख निरखकर प्रसन्न होने से काम नहीं चलता वरन् उनका लालन-पालन करने के उत्तरदायित्व को निभाना जरूर होता है ।

३९८. बाळा ठाकर सेवजे. ढुळती लीजे छाँय ।

नूतन अवस्था वाले स्वामी की (वयोवृद्ध स्वामी की अपेक्षा) सेवा करने में लाभ है लेकिन सुबह की छाया की अपेक्षा अपराह्न की छाया का आश्रय लाभदायक होता है क्योंकि वह बढ़ती रहती है जबकि छाया घटते-घटते दोपहर तक नाम मात्र की रह जाती है । नूतन अवस्था वाले स्वामी से लम्बे समय तक लाभ मिलता रहता है लेकिन वृद्ध स्वामी तो मरने वाला होता है, उससे कितने समय तक लाभ मिलेगा ?

३९९. बावन बार ठगावे जद बावन वीर कुवावे ।

छोटी-छोटी बातों में ठगाये जाने और छोटी-छोटी चोरियों पर ध्यान न देने पर ही (ऐसी विशाल हृदयता बरतने से) ठाकुर कहलाया जाता है ।

४००. बावे जस्यो लूणें ।

जैसा बीज बोया जाता है वैसी ही उसकी पैदावार हाथ आती है । जैसे— 'To sow wind and to reap whirl wind.' और 'रोपे पेड़ बबूल का आम कहाँ से होय ।'

४०१. बासी रहे न कुत्ता खावे ।

किसी वस्तु को पूरी तौर से काम में लेना चाहिए अन्यथा शेष रहने पर उसके अयोग्य व्यक्तियों के हाथ पड़ने का भय रहता है ।

४०२ बाँट चूँट र् खाणो, बैकुंठाँ में जाणो ।

भोज्य पदार्थ सदा बाँटकर खाना चाहिए, इससे स्वर्ग की प्राप्ति होती है ।

४०३. बिना पइसा रह जाणो पर् बिना कायदे न रे णो ।

दरिद्रता उतनी बुरी नहीं जितनी आबरू खो देना ।

४०४. बिना बुलायाँ भाँजगड़ न करणो ।

दूसरों के झगड़ों में बिना बुलाये मध्यस्थता नहीं करनी चाहिए ।

४०५. **बींछू, वानर, व्याल, विष, गर्दभ गंडक, गोल।**
ये अलगा ही राखणाँ, यो उपदेश अमोल॥

बिच्छू, बन्दर, सर्प, जहर, गदहा, कुत्ता और दरोगे को दूर ही रखना उचित है।

४०६. **बेटचाँ का खाया घर अर् चिड़्याँ का चुग्या खेत उपरले पाने नीं आवे।**

अधिक बेटियाँ होने पर उनके दहेज, मायरे, आना गौना आदि रस्मों में घर की संपत्ति जाया होती रहने से वह घर आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा ही रहता है। खेत में भी यदि चिड़ियाँ फसल खाने लगती है तो कुछ भी हाथ नहीं आता।

४०७. **बेटचाँ जावे जो घर ई रीतो अर् पेट ई रीतो।**

घर में बेटियाँ अधिक होती हैं तो उनके विवाह आदि खर्च के कारण घर खाली हो जाता है और वे पराये घर चली जाती हैं जबकि बेटा होता तो उससे खानदान चलता है अतः पेट भी खाली ही समझना चाहिए अर्थात् नि:सन्तान होने जैसी स्थिति हो जाती है।

४०८. **बेटी आप जाई होवे, बाप जाई नीं होवे।**

बेटी अपना भाग्य लेकर आती है, पिता का भाग्य अच्छा या बुरा होने का उस पर अधिक असर नहीं होता।

४०९. **बेटी बाप की अर् मुलक बादशाह को।**

बेटी को ब्याहने से पूर्व उस पर पिता का अधिकार होता है वह जहाँ उसे देता (ब्याहता) है वहीं उसे जाना होता है। इसी तरह देश पर अधिकार बादशाह का होता है, वह जिसे गाँव या इलाका देना चाहे, दे सकता है।

४१०. **बेटो राजा को भी रे जावे पण बेटी डाकण की भी न रेवे।**

कोई लड़का बड़े और सम्पत्तिशाली आदमियों का होते हुए भी कुँवारा रह सकता है किन्तु लड़की तो चाहे किसी डायन जैसी माँ की भी हो वह कुँवारी नहीं रहती। उसे कोई न कोई वर मिल ही जाता है।

४११. **बेटो वे'ई जींके बू आ'ई अर् पइसो वे'ई जींके ब्याज आ'ई।**

बेटा होने पर पुत्रवधू आयगी ही और पैसा होने पर ब्याज भी कमाया ही जा सकता है। दोनों के न होने पर तो कुछ नहीं हो सकता।

४१२. **बेठ्याँ वचे बेगार भली।**

खाली बैठे रहने से तो मुफ्त में दूसरों का काम कर देना ही उत्तम है।

४१३. **बेठणो छायाँ को चावे केर'ई हो,**
रेणो भायाँ में चावे बेर'ई हो,
चालणो सड़क को चावे फेर'ई हो,

पेरणो घाघरा को चावे टेर'ई हो
खाणो माँ का हाथऊँ चावे जेर'ई हो ॥

केर के पत्ते नहीं होते पर टहनियों की छाया भी धूप में बैठने से तो बेहतर है। भाई बन्धुओं से लड़ाई होते हुए भी उनके बीच में रहना अच्छा है। चक्कर खाकर जाना पड़े तो भी सड़क कच्चे रास्ते से अच्छी होती है। अच्छी सिलाई न होने पर भी घाघरे का पहनावा अच्छा कहा गया है। मां के द्वारा खिलाया जाने वाला भोजन बहुत महत्त्व रखता है चाहे वह जहर ही क्यों न हो।

४१४. **बोल बोल्या धन पराया ।**

किसी वस्तु को बोली पर लगा देने के बाद वह दूसरों (ग्राहक) की हो जाती है फिर उस पर अपना अधिकार नहीं रहता।

४१५. **बोले जींका बूँमला बके, नीं बोले जीं की जवार' ई पड़ी रेवे ।**

बोल बोलकर प्रचार करने वाला व्यापारी अपने बूँमले (एक प्रकार का निकृष्ट धान) को भी बेच देता है और जो चुपचाप रहता है उसकी जवार भी पड़ी रह जाती है। वस्तुओं के विक्रय में विज्ञापन और प्रचार का बहुत महत्व होता है।

४१६. **बोले जीं की चाले ।**

जो बोलने में तेज होता है उसकी बात चल जाती है।

४१७. **बँधी पाल नीं तोड़णी ।**

जमे हुए काम को नहीं बिगाड़ना चाहिए। जहाँ एकता हो वहाँ फूट नहीं डालनी चाहिए।

४१८. **बँधी मुट्ठी लाख की खुल्याँ पछे खाख की ।**

कोई बात जब तक गुप्त रहती है, तभी तक उसका भरम बना रहता है, भेद खुल जाने पर उसका कोई महत्व नहीं रहता।

४१९ **भगती, रजपूती कीं काई बाप की कोय ने ।**

भक्ति और वीरता पर किसी का बपौती एकाधिकार नहीं हुआ करता। इनका जाति पाँति या और किसी प्रकार के भेदभाव से कोई सम्बन्ध नहीं होता।

४२०. **भगवान का लाम्बा हाथ ।**

ईश्वर सर्व समर्थ है।

४२१. **भजन अर् भोजन तो एकान्त को ।**

भजन और भोजन एकान्त में करने से इनमें बाधा नहीं पड़ती।

४२२. **भण्यो तो केई छूटे अर् बळद वेई छूटे ।**

जिस तरह बैल चड़स या हल चल चुकने पर ही छूट सकता है उसी तरह बुद्धिमान व्यक्ति अपनी उचित राय देने पर ही उऋण हो सकता है।

४२३. **भण्याँ के चार आँख।**

पढ़े लिखे व्यक्ति को साधारण आदमी की अपेक्षा आगे पीछे की बात अधिक दिखाई देती है (सूझती है)।

४२४. **भणिया माँगे भीख, अणभणिया घोड़े चढ़े।**

बिना भाग्य के विद्या भी फलवती नहीं होती, विद्वान को भी भीख माँग कर गुजारा करने के लिए विवश होना पड़ता है जबकि भाग्यवान होने से अनपढ़ व्यक्ति भी घोड़े की सवारी करता है अर्थात् वैभव सम्पन्न हो जाता है।

४२५. **भरम भारी, टपारो खाली।**

घर में कुछ नहीं होने पर भी बाह्य दिखावे से भरम बना रह जाता है और सम्पन्नता का आभास होता है।

४२६. **भला कर भला, सौदा कर नफा।**

भलाई के बदले में भलाई मिलना और सौदा करने पर मुनाफा होना स्वाभाविक होता है।

४२७. **भला मनख ने रेकारो ई गाळ।**

प्रतिष्ठित और सज्जन व्यक्ति को 'तू' 'रे' इत्यादि ओछे सम्बोधन ही इतना दुःख पहुँचा देते हैं जितना किसी दूसरे को गाली देने से पहुँचता है।

४२८. **भली कहे जो भलो आदमी, बुरी कहे जो बाँदो।**
एक डोळी नींपजे खरबूजो अर् काँदो॥

जिस तरह एक ही क्यारी में भिन्न-भिन्न गुण तासीर वाले फल खरबूजा और प्याज पैदा होते हैं उसी तरह साथ साथ रहते हुए भी भला व्यक्ति सदैव भलाई की और बुरा छल कपट की ही बातें करते हैं।

४२९. **भलो मनख तो भाटो फेंके, ले निरधन को नाम।**

निर्धनता एक प्रकार से अभिशाप है। दोषारोपण निर्धन पर ही किया जाता है चाहे दोष 'भले मनख' अर्थात् भला दिखने वाले दुष्ट और चालाक धनसम्पन्न व्यक्ति का हो।

४३०. **भागवानाँ के भूत कमावे।**

भाग्यवान (धनवान) व्यक्ति के परिश्रम न करने पर भी धनवृद्धि होती रहती है (क्योंकि पैसे से पैसा बढ़ता है)।

४३१. **भात छोड़जे पण साथ नीं छोड़ज्ये।**

विवाह के प्रीतिभोज को छोड़ना पड़े तो छोड़ देना चाहिए किन्तु एक दूसरे के साथ को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

४३२. **भाव सारु भगती।**

भक्ति भाव-प्रधान होती है अगर भावना नहीं हो तो केवल दिखावे के लिए भक्ति करना निरर्थक है।

४३३. भायाँ जस्यो सेण नीं अर् भायाँ जस्यो दुश्मन नीं ।

भाइयों में परस्पर जैसा प्रगाढ़ प्रेम हुआ करता है वैसा और किसी में नहीं हुआ करता, किन्तु बैर पैदा हो जाने पर भाइयों के समान खतरनाक दुश्मनी भी और किसी में नहीं पाई जाती ।

४३४. भींज्या ने निचोवणा पड़े ।

जो काम आरम्भ किया है उसे तो पार पटकना ही होगा ।

४३५. भींत साई माँडणाँ ।

दीवाल जितनी साफ होगी, चित्र उसी स्तर के उतारे जा सकेंगे । व्यक्ति के पद और स्तर के अनुसार ही उसको सम्मान दिया जाता है ।

४३६. भींताँ के भी कान वे' वे ।

गुप्त बात कहते समय बहुत सतर्क रहना चाहिए, यहाँ तक कि कमरे की दीवाल तक भी आवाज न पहुँचे इतना धीरे बोलना चाहिए ।

४३७. भूख सह्यो ढाँढो अर् दुख सह्यो मनख ।

भूखा रह रह कर कमजोर हो जाने वाले मवेशी को फिर से मजबूत नहीं बनाया जा सकता । इसी तरह निरन्तर विपत्तियाँ उठाते रहने वाला मनुष्य भी हताश हो जाया करता है ।

४३८. भूल चूक लेणी-देणी ।

यह व्यापार के कायदे की कहावत है । सौदा हो जाने पर भी हिसाब मिलाने से कोई भूल चूक जाहिर हो तो उसका लेन देन कर लेना साहूकारी तरीका माना जाता है ।

४३९. भेळा की भागीरथी ।

जिस प्रकार गंगा में सभी खुले तौर से स्नान-लाभ करते हैं, किसी के लिए कोई प्रतिबन्ध नहीं होता, उसी प्रकार कोई वस्तु सामलाती होती है तो उसका अधिकाधिक उपयोग और लाभ लेने की सबकी नीयत रहती है । सामलाती वस्तु की कोई चिन्ता नहीं करता ।

४४०. भेळा की तो होळी ई खोटी ।

सामलाती वस्तु प्रायः झगड़े की जड़ हुआ करती है चाहे वह होली (जिसे जलाया जाता है) ही क्यों न हो । कोई उपयोगी और रचनात्मक कार्य की तो बात ही दूर रही, विनाशात्मक और अनुपयोगी काम भी शामिल में नहीं करना चाहिए ।

४४१. भोम सपूताँ बावड़े, बाँस कपूताँ जाय ।

सुपुत्र खोई हुई जागीर को पुनः प्राप्त कर लेता है तो कुपुत्र जागीर की तो बात ही दूर रही, पूरे वंश का ही नाश कर देता है ।

४४२. भोळा को भीडू राम (भगवान) ।

भोले भाले व्यक्ति की सहायता तो ईश्वर ही करता है ।

४४३. भोळो सेण दुश्मन की गरज पाळे ।

मूर्ख हितैषी मूर्खतावश हितकर की जगह अहितकर कार्य कर देता है। इस प्रकार वह हितैषी होते हुए भी शत्रु हो जाता हैं। "पण्डितोऽपि वरं शत्रुर्न मूर्खो हितकारक:" ।

४४४. मत हीणाँ मुसद्दियाँ, थाँ सूँ पड़े न काम।
काम पड्याँ बे काम का, बेकामाँ निकाम ।।

ईश्वर करे कभी बुद्धि हीन मुसद्दी व्यक्तियों से काम न पड़े क्योंकि ये काम पड़ने पर काम नहीं देते। और जब ये पद पर नहीं होते हैं तब तो निकम्मे होते ही हैं।

४४५. मनखाँ का भाग ने कुँण उघाड़ देख्यो ।

पहले से इसका पता नहीं लगाया जा सकता कि किसी की वर्तमान स्थिति आगे जाकर कैसी हो जायगी। 'स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवो न जानाति कुतो मनुष्यः।'

४४६. मनखाँ माया अर् रूखाँ छाया ।

जब तक कोई वृक्ष लगा रहता हैं तभी तक उसकी छाया भी बनी रहती है। इसी तरह घर में पुरुषार्थी व्यक्ति के बने रहने तक श्री सम्पन्नता भी टिकी रहती है और उसके मरने के साथ ही वह भी लुप्त हो जाती है।

४४७. मन चंगा तो कठौती में गंगा ।

मन की पवित्रता और निर्मलता गंगा के तीर्थ-स्नान की तरह फलदायक होती है। कठौती लकड़ी की बनी हुई चौड़ी परात (जो आटा गूँथने के काम आती है) को कहते हैं। पवित्र मन वाले के लिए उसमें पानी भर कर नहाना ही गंगा स्नान है। मन की पवित्रता का महत्व तीर्थ स्नान से भी अधिक माना गया है।

४४८. मन मतंग माने नहीं जबलग खता न खाय ।
ज्यूँ विधवा गोरड़ी गरभ रियाँ पछताय ।।

जब तक दुष्कर्मों के फलस्वरूप विपत्ति नहीं आ जाती तब तक मन रूपी मस्त हाथी अपनी करतूतों से बाज नहीं आता। जैसे कोई व्यभिचारिणी विधवा गर्भ रह जाने पर ही अपने कुकर्मों पर पश्चात्ताप करने लगती है, पहले नहीं।

४४९. मन मान्याँ की बात है ।

बुरी वस्तु भी किसी को रुच जाती है तो उसे वही अच्छी लगती है। सूरदास ने कहा है, ऊधो मन माने की बात। दाख छोंहरा छाँडि अमृत फल विषकीरा विष खात।'

४५०. मन है सो देव है ।

मन में दिव्य शक्ति होती है। वेद में भी इसकी प्रशंसा है 'यज्जाग्रतो दूर मुदैति दैवं। यदुसुप्तस्य तथैवेति।'

४५१. मरचा अर् तीन दिन ।

मरने पर लोगों को उसे भूलते देर नहीं लगती ।

४५३. मरचा ने कई मारणों ।

जो पहले से संतप्त या मृततुल्य हो उस पर किसी प्रकार का प्रहार नहीं करना चाहिए ।

४५३. मरचा ज्यो तो राणी जी का' ई ग्या ।

मर जाने वाले तो चाहे राजा-राणी के कितने ही प्रिय सन्तान ही क्यों न हो, वापस नहीं लौट सकते । 'जो पहुँचा है उस तट तक वह नहीं लौटकर आता ।'

४५४. मरचाँ वनाँ सरग नीं दीखे ।

मरने के बाद ही स्वर्ग का सुख भोगा जा सकता है । अर्थात् संघर्षों में जूँझने पर ही अभ्युत्थान सम्भव है ।

४५५. मर्द की गर्द में रे' बो आछो ।

वैभव सम्पन्न कायर की अपेक्षा (चाहे धूल में पड़ा रहना पड़े तो भी) मर्द (अर्थात् वीर) के आश्रय में रहना श्रेष्ठ है ।

४५६. मरबा के कई गाड़ा जुते ।

मृत्यु को आने के लिए तैयारी नहीं करनी पड़ती अर्थात् किसी भी व्यक्ति की मृत्यु कभी भी हो सकती है ।

४५७ म' री नीं तो दुख तो दे' खी ।

मरेगी नहीं तो दुःख तो देखेगी अर्थात् अधिक नहीं तो थोड़ी हानि तो होगी ही ।

४५८. महादेव छाना मंतर नीं ।

भगवान शंकर सभी मंत्रों के ज्ञाता हैं उनसे कोई मंत्र छुपा नहीं होता । इसी तरह जो घुटे घुटाये व्यक्ति होते हैं उनसे किसी भी प्रकार की चाल-बाजियाँ गुप्त नहीं रखी जा सकतीं । वे छुपाये जाने पर भी असलियत को भाँप लेते हैं ।

४५९. मान भला के पान ।

पान इलायची आदि से आवभगत करने की अपेक्षा सच्चे हृदय से किया गया सम्मान अधिक प्रभावी होता है ।

४६०. माया थारा तीन नाम । परश्यो, परशू अर् परशराम ।

दुनियादारी में लोग प्रायः व्यक्ति की आर्थिक अवस्था के अनुसार ही उसे सम्मान देते हैं । परशराम नाम के व्यक्ति को तीन तरीकों से पुकारने का उदाहरण यही बताने के लिए दिया गया है ।

४६१. माया तो माणीं भली अर् सींच्या भला नेवाँण ।

धन को सुखोपभोग के लिए खर्च करते रहना ठीक है । जिस तरह कुए

के पानी को सिंचाई के लिए काम में लेने पर वह फिर आ जायगा, नहीं तो भरा रहने पर उसमें वृद्धि तो होने से रही, वह बेकार जायगा। धन सम्पत्ति का भी वैसा ही हाल होता है।

४६२. **मायाँ मरदाँ की, लेणों लूँठाँ को, सीम सबळाँ की, घर लुगायाँ को।**

धन और ऐश्वर्य का भोग मर्द (वीर) सफलतापूर्वक कर सकते हैं, उधारी की वसूली समर्थ और शक्ति सम्पन्न व्यक्ति ही कर सकते हैं, जागीर की पूरी सरहद बलवान ठाकुर ही कायम रख सकते हैं और घर-गृहस्थी को सुयोजित और व्यवस्थित रखने का काम गृहिणियों से ही सम्भव है।

४६३. **माँ का पेट सूँ कोई सीख र् नीं आवे।**

ज्ञानार्जन अनुभव और अध्ययन से हुआ करता है, जन्म से ही नहीं।

४६४. **माँ को माटी के वो चावे बाप के वो, बात एक है पण बोली को फरक है।**

जब एक ही बात को कहने के लिए सभ्य शब्द मिलते हों तो असभ्य शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

४६५ **माँग्या बना माँ ई नीं परुसे।**

संसार में सभी वस्तुएँ आवश्यकता प्रगट करने पर ही मिलती हैं। माँ से भी रोटी माँगने पर ही मिला करती है।

४६६. **माँगबो अर् मरबो बराबर।**

माँगना मरने के समान दुख-दायक है क्योंकि इसमें मानहानि भी हो तो सहन करनी पड़ती है। नैषधकार ने कहा है, 'त्यजन्त्यसून् शर्म च मानिनो वरं, त्यजन्ति न त्वेक मया चितव्रतम्।' और भी, 'रहिमन वे नर मर चुके जे कहुँ माँगन जाहिं।'

४६७. **माँगबा को पेशो अर् इज्जत हत्तक को दावो।**

भीख माँगने का पेशा किया है तो मानापमान का विचार छोड़ना ही पड़ेगा।

४६८. **माँ सिवाय गाळ न, दूणा सिवाय ब्याज न।**

किसी की अधिक से अधिक बेइज्जती करने वाली गाली उसकी माता को लक्ष्य करके दी जाने वाली होती है और अधिक से अधिक ब्याज मूल रकम के बराबर होता है।

४६९. **माँगी हुण्डी मोल बराबर, धामी हुण्डी धूल बराबर।**

हुण्डी का मूल्य उसकी माँग के अनुसार है। लेने वाला हुण्डी न लेना चाहे तो हुण्डी की कोई कद्र नहीं।

४७०. माटी देख मालणो, घर देख चालणो ।

स्त्री को शिक्षा देने के लिए कहा गया है कि उसको पति की माली हैसियत के अनुसार ही भोगों की इच्छा करनी चाहिए और घर की आर्थिक अवस्था के अनुसार ही खर्चा करना चाहिए ।

४७१. माँ बाप चंगा, बेटा-बेटी बंगा ।

कभी कभी अच्छे माता पिता की संतान भी मूर्ख निकल जाया करती है।

४७२. माँ सारू डीकरी अर् घर सारू ठीकरी ।

जैसी माँ होगी वैसी ही उसकी बेटी होगी । जैसा घर होगा वैसे ही उसमें बरतन-भाँडे मिलेंगे ।

४७३. मूँजी के ई पूँजी जुड़े ।

बिना कंजूसी किये धनसंग्रह नहीं होता ।

४७४. मूँडा की छूटी अर् हाथ की बाई बराबर ।

मुँह से छूटा वचन और हाथ से फेंका अस्त्र वापस नहीं लौटा करते ।

४७५. मूँडा की माँगी मौत नीं आवे ।

माँगने से भगवान मौत नहीं देते ।

४७६. मूँडो देख्याँ की प्रीत है ।

दुनियादारी में प्रीति-व्यवहार तभी तक निभाया जाता है जब तक किसी का आमने-सामने साथ रहता है। दूर हो जाने पर कोई याद भी नहीं करता। 'Out of sight, out of mind.'

४७७. मूँडा परवाणे थाप ।

हल्की या ज़ोर से थप्पड़ लगाने के पहले मुँह की हालत तो कम से कम देखनी ही चाहिए। अर्थात् सहन करने की शारीरिक क्षमता को ध्यान में रखते हुए ही यथायोग्य दण्ड देना चाहिए ।

४७८. मेल अर् मक्कर दूजाँ ऊँ ई ज उतरे ।

अपने शरीर का मेल और अपनी अकड़ स्वयं से नहीं वरन् दूसरों से ही उतर सकते हैं ।

४६९ मोटा घराँ बेटी दी दी, मलबा को ई साँसो ।

अपने से बड़े घर में बेटी ब्याहने से उसका पीहर आना तो दूर रहा, हमारा वहाँ जाकर उससे मिलना भी दुश्वार हो जाता है ।

४८०. मोड्या, खोड़्या, खोड़ला, चुगल, अन्याई, चोर ।
अतरा राज में बापरे, करे राज में घोर ॥

एबी, बदमाश, चुगलखोर, अन्यायी और चोर व्यक्ति राजकाज में अधिकार पा जाते हैं तो राज्य में बड़ा अत्याचार होता है ।

४८१. मोल बचे जगात भारी ।

ऐसा सौदा नहीं करना चाहिए जिसमें वस्तु के मोल से भी उसका टेक्स अधिक चुकाना पड़े।

४८२. **मोत, माँदगी मुकदमो, माँडो अर् मकान।**
पाँचों मम्मा है बुरा, साय करे भगवान॥

मृत्य, बीमारी, मुकदमा, विवाह और मकान बनवाना ये पाँचों काम बुरे हैं इनसे भगवान ही रक्षा करे।

४८३. **मोत, मुकदमा, माँदगी अर् मंदा रुजगार।**
ये चारों मम्मा तब मिले जब रूठे करतार॥

ईश्वर की कोप दृष्टि होने पर ही मृत्यु मुकदमा, बीमारी और मन्दे रोजगार का एक साथ सामना करना पड़ता है।

४८४. **राख पत, रखा पत।**

दूसरों का आदर करने पर हमारा भी आदर होता है।

४८५. **राखी तो न जाणे अर् रुवाणीं जाणे।**

प्रेम से बहन-बेटी (या ऐसे ही किसी व्यक्ति) को अपने यहाँ बहुत समय तक रखो जिसकी तो कोई सराहना नहीं करता पर यदि एक दो बार भी किसी छोटे-मोटे कलह के कारण वह रो दे तो पास पड़ौस वाले यही जानेंगे कि उसके साथ सदा ही कटु व्यवहार किया जाता है।

४८६. **राज अर् मसाण तो खेयाँ का है।**

राज से और श्मशान के भूत-प्रेतों से उनकी निरन्तर सेवा करने पर ही लाभ मिल सकता है।

४८७. **राज की नौकरी, एक पग घोड़ा पे अर् दूजो खोड़ा पे।**

सरकार की नौकरी में इज्जत भी मिलती है और कोई चूक हो जाय तो जेल (खोड़ा) भी तैयार है।

४८८ **राज के अगोकड़े अर् मन्दर के पछोकड़े नीं रेणो।**

राजमहल के सामने और मन्दिर के पीछे नहीं रहना चाहिए। महल के सामने रहने से हम राजा की आँखों में आते हैं और मन्दिर के पीछे रहने से उसकी छाया पड़ती है जो अशुभ समझी जाती है।

४८९. **राज के कान वे वे आँख्याँ नीं वे वे।**

सरकार (अदालत) स्वयं नहीं देखती, शहादत पर फैसला देती है। प्राचीन ग्रीस निवासी न्याय की देवी का चित्र तराजू लिए हुए अन्धी देवी का बनाते थे।

४९०. **राजा कींका गोठिया, जोगी कींका मित्र।**
वैश्या कींकी अस्त्री, ये तीनों ई कुमित्र॥

राजा और योगी किसी के मित्र नहीं हो सकते, इसी तरह वैश्या भी

किसी की पत्नी नहीं हुआ करती। इन तीनों से मित्रता करने का प्रयत्न व्यर्थ है 'राजा मित्रं केन दृष्टं श्रुतं वा' 'गणिकाभिश्च का प्रीति:'

४९१. राजा के आवे देश, पण बाँदी के नीळ गुळी को घाघरो ने वो को वोई वेश।

राजा नया देश जीतता है तब साम्राज्य विस्तार के कारण उसका वैभव और सम्मान द्विगुणित हो जाता है किन्तु बाँदी (चेरी, सेविका) की स्थिति तो वैसी ही रहा करती है। वह तो वे ही गहरे रंग के पुराने कपड़े पहने रहती है।

४९२. राजा को दान, परजा को सम्मान।

राजा जिसको दान देता है, प्रजा उसको योग्य मानकर उसका आदर करती है।

४९३. राजा माने ज्यो राणी अर् धरती माने ज्यो पाणी।

राजा जिस स्त्री को चाहता है वही रानी की तरह आदर पाती है और धरती पर पैदावार बढ़ाने के लिए जिस तरह का पानी अनुकूल होता है उसी का उपयोग और महत्व बढ़ता है।

४९४. राजा, जोगी, अगन, जल, याँ की उल्टी रीत।

राजा, जोगी, अग्नि, गहरा या बहता हुआ पानी—इनसे अधिक लगाव नहीं रखना चाहिए प्रतिकूल होने पर या असावधानी हो जाने पर इनसे जीवन को खतरा पैदा हो सकता है।

४९५. राड़ को काळो मूँडो।

जिस तरह किसी अपकारी का काला मुँह करके उसे निकाला जाता है उसी तरह लड़ाई-झगड़े का भी सदैव बहिष्कार ही किया जाना चाहिए।

४९६. राड़ साँतर बाड़ भली।

नित्य के झगड़े की अपेक्षा सदा के लिए अलग हो जाना अच्छा है।

४९७. रामजी के घरे देर है पण अन्धेर कोयने।

भगवान अच्छे कर्मों का अच्छा और बुरे का बुरा फल देता ही है, इसमें देर हो सकती है किन्तु कर्मों के अनुसार फल मिले ही नहीं इस प्रकार का अन्धेर नहीं हो सकता।

४९८ रावळो तेल ने खोळाँ में ई झेल।

सरकार से कुछ भी लागत या पुरस्कार मिलता है तो हर हालत में लेना चाहिए वरना मिलना बंद हो जायगा। (बरतन न हो और तेल दिया जा रहा हो तो झोली में ही ले लो। छोड़ो मत।)

४९९ रिया काम तो रावण का ई रेग्या।

किसी काम को भविष्य के लिए अधूरा छोड़ देने पर वह फिर कभी पूरा

नहीं होता है इसलिए कहा गया है कि रावण जैसे महाबली के भी अधूरे काम पूरे नहीं होते।

५००. रीती राड़ में राछ भोटा क्यूँ करणा।

व्यर्थ की लड़ाई में शस्त्रों को भोटे करने के सिवाय कोई परिणाम नहीं निकलता। इसलिए व्यर्थ लड़ाई नहीं लड़नी चाहिए।

५०१. रीतो हाथ मूँडा सामो नीं जावे।

हाथ में कुछ खाद्य वस्तु होगी तभी उसे मुँह तक ले जाया जायगा। कोई मूर्ख भी व्यर्थ कार्य नहीं करता।

५०२ रीस में रसाण ह्वे जावे।

क्रोध में कोई काम उल्टा बिगड़ जाया करता है और अपराध हो जाने की सम्भावना रहती है।

५०३. रूप का रोया अर् करम का खोया।

वह व्यक्ति किस काम का जो दीखने में रूपवान और सुन्दर तो होता है लेकिन गुण कर्म-विहीन होने से समाज के लिए उपयोगी नहीं होता।

५०४. रोटी पाणी में सबको सीर।

अन्न और जल में तो सबको पाँती देनी ही चाहिए।

५०५. रोयाँ राज अर् माँग्याँ माल तो कुण देवे।

राज्य भुजबल से मिला करता है, रोने-गिड़गिड़ाने से नहीं। इसी तरह माँगने से कोई धनमाल नहीं दिया करता है, उसके लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है।

५०६. रोवता ने जगत राखे।

रोते हुए अर्थात् संतप्त व्यक्ति को सभी सांत्वना और सहानुभूति दिया करते हैं

५०७ लक्ष्मी तो हरती फरतीईज रेवे।

लक्ष्मी चंचल होती है, सदा एक ही व्यक्ति के पास नहीं टिकती।

५०८. लाख जावे तो जावा दो, साख नीं जाणीं छावे।

लाख रुपये की हानि भी हो जाय तो उतना बुरा नहीं जितना पैठ उठ जाना बुरा है।

५०९. लागे जींको नाम ओखद।

सध जाय अर्थात् रोगी जिससे अच्छा हो जाय, दवा उसी को कहा जाता है।

५१०. लागे तो तीर, नीं तो तुक्को ई सही।

बुद्धिमान को अपनी युक्ति का प्रयोग करना इसलिए नहीं छोड़ देना चाहिए कि वह कारगर न हो। प्रयत्न से कुछ न कुछ तो लाभ होगा ही।

५११. लागे तो सेल, चूके तो डाँडो।

भाले का प्रहार सही हुआ तो घाव होगा ही यदि थोड़ा चूक गया तो भी

डंडे की चोट जैसा असर तो होगा ही ऐसा सोचते हुए प्रहार अर्थात् प्रयत्न बराबर करते रहना चाहिए।

५१२. लाठी जींकी भैंस।

किसी वस्तु पर अपना अधिकार करने में बलवान को ही सफलता मिल जाया करती है।—'Might is right.'

५१३. लाडा के मूँडे तो लाळ ई नीं, तो जान्या कई करे।

जो व्यक्ति अपने किसी कार्य के लिए जब तक स्वयं ही चेष्टा नहीं करता तब तक दूसरे लोग उसमें कोई मदद नहीं किया करते। दूल्हा दुल्हन की इच्छा ही न करे तो भला बराती उसकी क्या मदद कर सकते हैं।

५१४. लुगाई को माँटी मोट्यार अर् मोट्यार को माँटी रुजगार।

स्त्री का मालिक पति होता है पर पति का मालिक उसका रोजगार (कमाई देने वाला काम) होता है अर्थात् स्त्री स्वामी पर निर्भर रहती है तो उस स्वामी को भी रोजगार पर ही निर्भर रहना पड़ता है।

५१५ लुगाई ने डुबोई हाँसी अर् मदद ने डुबोई खाँसी।

हर समय हँसने वाली स्त्री की प्रतिष्ठा जाती रहती है। इसी तरह हर समय खाँसी आने पर रोग बढ़ कर जीवन से हाथ धोना पड़ सकता है।

५१६. लेणाँ एक अर् देणाँ दो।

व्यर्थ के प्रपञ्चों से बचने के अर्थ में यह कहावत कही जाती है। (अर्थात् किसी बात से क्या लेना-देना)। किसी काम से लाभ की अपेक्षा हानि अधिक हो तो उससे बचने के अर्थ में भी इसी तरह कहा जाता है।

५१७. लेणायत लगतो बुरो, सगो बुरो परदेश।
मंत्री कोलक्खण बुरो, ईश्वर राखे टेक॥

लेनदार पास में ही रहता हो, सम्बन्धी परदेश में बसता हो और राज्य का मंत्री कुलक्षणों वाला हो तो बहुत बुरा होता है जिससे ईश्वर ही रक्षा करे।

५१८. लोभ के थोभ नीं।

लोभ की कोई सीमा नहीं होती। जितना बढ़ाओ उतना ही बढ़ता है।

५१९. लोभ गळो कटावे।

लालच के कारण कभी कभी आदमी बेमौत मारा जाता है (बरबाद हो जाता है)।

५२०. लोह की कोठी में घाळ देवे तोई मौत नीं टळे।

मौत से बचने के लिए कड़े सुरक्षा प्रबन्ध (लोहे की मजबूत कोठी) करने पर भी बचाव नहीं हो सकता। सबकी मृत्यु अवश्यम्भावी है।

५२१. वणताँ तो देर लागे पण वगड़ताँ देर नीं लागे।

विनाश कार्य बहुत शीघ्र और आसानी से हो सकते हैं किन्तु निर्माण में

बहुत देर और परिश्रम लगता है। अतः निर्माण के महत्व को समझते हुए किसी का विनाश करने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए।

५२२. **वार बड़ो के तेंवार।**

त्यौहार की अपेक्षा कोई शुभ दिन अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

५२३. **वेती गंगा में हाथ धोवे।**

बिना परिश्रम किये लाभ मिलने पर यह कहावत कही जाती है।

५२४. **शक्ति लारे भक्ति है।**

शरीर की शक्ति के अनुसार ही साधना-उपासना करना उचित है।

५२५. **शिकारी तो शिकार खेले ने वेंडा लाराँ लाराँ फरे।**

(शिकारी शिकार में, उल्लू बेगार में)।

चालाक और होशियार आदमी तो अपना मतलब सीधा करने में लगे रहते हैं और नासमझ व्यक्ति उनके साथ अपना समय यों ही बर्बाद करते हैं।

५२६. **सगो कीजे जाण, पाणी पीजे छाण।**

सगाई सम्बन्ध कायम करने के पहले सामने वाले के परिवार को ठीक तरह परख लेना चाहिए और पानी को छानकर पीना चाहिए।

५२७. **सगो सगा की जड़।**

रिश्तेदार एक दूसरे के गहरे सहायक व पोषक होते हैं।

५२८. **सत पर साँई खड़ा।**

सच्चे आदमी की सहायता और रक्षा ईश्वर करता है।

५२९. **सपूत की कमाई में सबको ई सीर।**

सपूत कमाता है और सारे परिवार का उससे पालन होता है।

५३०. **सपूत तो सौ पीढ़ी कोई नेड़ो।**

सपूत को दूर के रिश्तेदार भी अपना निकट सम्बन्धी मानकर चलते हैं।

५३१. **सपूत रा सौ अर् कपूत रा कोई नीं।**

सपूत की सहायता के लिए कई लोग तैयार रहते हैं लेकिन कपूत के लिए एक भी नहीं। भले आदमी की सभी सहायता करते हैं।

५३२. **सबका पीळी नीप्या घर है।**

प्राय: सभी लोगों की आर्थिक स्थिति साधारण सी है। जिस प्रकार किसी उत्सव के समय घर को पीली मिट्टी से नींप कर चमकाया जाता है उसी प्रकार रहन सहन की सम्पन्नता को ऊँची बताने के लिए तड़क भड़क और दिखावे की रचना की जाती है बाकी भीतर ही भीतर सबका एक सा हाल होता है।

५३३. **सबर में सार।**

संतोष करने में सदा ही लाभ और सुख मिलता है।

५३४. सब स्वारथ का सगा है ।

स्वार्थ के कारण ही परस्पर सम्बन्धी बनने लगते हैं, यह दुनियादारी का तकाजा है । "सर्वः स्वार्थं समीहते" ।

५३५. सभाग्याँ की जीभ अर् अभाग्याँ का पग ।

भाग्यवान व्यक्ति का काम जबानी आदेश देने से ही होने लगता है उसे स्वयं श्रम नहीं करना पड़ता और जो अभागा होता है उसको उसी भाग्यवान के लिए दौड़ते रहना पड़ता है ।

५३६. सम्यो निकल जा' ई अर् बात रे जा' ई ।

दूसरों को दुःख पहुँचाने वाला काम करने की बजाय भलाई और परोपकार का ध्यान रखना चाहिए क्योंकि ऐसे कामों की हमेशा याद बनी रहती है ।

५३७. समझदार की मौत ।

दुःख और पश्चात्ताप बुद्धिमान को ही हुआ करता है, बिगड़े काम के लिए जिम्मेदार भी उसी को माना जाता है और उलाहना या ताड़ना भी उसी को सहन करनी होती है । मूर्ख किसी भी प्रकार से चिन्तित नहीं रहता । उसके मुकाबले में समझदार अधिक कष्ट उठाता है ।

५३८ समता में सार है अर् ममता में मार है ।

ममत्व के कारण दुःख उठाना पड़ता है, शान्त रहने में ही लाभ है । अपने पराये का भेद न रखने वाले को दुःख और क्लेश व्याप्त नहीं होते ।

५३९. सस्तो रोवे बार-बार, महँगो रोवे एक बार ।

सस्ती वस्तु मजबूत और टिकाऊ न होने से बार बार खरीदनी पड़ती है जिससे जो खर्चा होता है वह मजबूत और टिकाऊ का महँगा मोल देने से भी अधिक हो जाता है ।

५४०. साजी सूरां ने लेखा पूरा ।

बनिया यदि अकड़ से (जैसे शूरवीरता दिखाता हो) झगड़ा करने लगता है तो उसका लेन देन ही नष्ट हो जाता है । ज्यादा हठ और लड़ाई से व्यापार को धक्का पहुँचता है ।

५४१. साँच ने आँच नहीं ।

सच्चे व्यक्ति को कोई नुकसान या व्याधि नहीं होती ।

५४२. साँचो धन परतीत धन, पूण धन है सोनो ।
आधो धन जवाहरात को, झूंठो धन लेणो ॥

पेठ जमी रहना ही सच्चा धन है, सोना उससे पौन है, जवाहरात उससे आधा है क्योंकि उसकी कीमत अनिश्चित होती है और उधारी का लेना तो झूंठे धन में गिना जायगा क्योंकि उसके वसूल होने का कोई भरोसा नहीं ।

५४३. साँझ का मरचा ने कठा ताँई रोवे ।

सूर्यास्त के समय कोई मर जाता है तो घर वाले आखिर सारी रात तो

रोना पीटना जारी नहीं रख सकते। वे सुबह होते होते रोना-धोना आरम्भ करते हैं तब तक सान्त्वना देने वाले और अन्तिम संस्कार सम्पन्न करने वाले भी एकत्र हो ही जाते हैं। लम्बे समय तक कष्ट उठाना पड़े, ऐसे किसी काम में उलझना कौन चाहेगा।

५४४. साँठा दे नीं तो गुड़ की भेली दीजे,
नीं तो रावळे ई ज रीज्ये।

इसमें घूंसखोरों द्वारा दी हुई धमकी दर्शाई है, 'साँठे दो, नहीं तो गुड़ देना पड़ेगा, यदि यह भी नहीं, तो हवालात में रहना पड़ेगा', जब थोड़ा देने से ही छुटकारा होता है तो आगे की मुसीबन क्यों मोल ली जाये ?

५४५. साँप नीरचाँ रींगटो पीटवाऊँ कई ह्वे वे।

समय निकल जाने पर होशियारी बरतने से कोई लाभ नहीं होता। साँप के निकल जाने पर उसकी लकीर पीटने से वह मरने से तो रहा।

५४६. साँसा जतरे आसा।

बीमार साँस लेता रहता है तब तक उसके अच्छे होने की आशा बनी रहती है।

५४७. सीर, सगाई, दोस्ती मन मल्याँ की बात।

खेती में पाँतीदार किसान को रखना, लड़के लड़की की सगाई करना व मित्रता करना, मन को पूरी तसल्ली मिलने पर ही सम्भव है।

५४८. सुई चोरे जीं को फाळ्यो जावे।

कोई सुई जैसी तुच्छ वस्तु की भी चोरी करता है तो उसका फालिया चला जाता है अर्थात् चोरी बुरा काम है इसलिए चोरी की वस्तु से कई गुना अधिक नुकसान भोगना पड़ता है। कहा है—'महाजन चोरे मुट्ठी मुट्ठी अल्ला भर ले ऊँट।'

५४९ सुख तो सनेती को ई आछो।

सुख तनिक भी हो, तो उसे नहीं त्यागना चाहिए। मुर्दे को सुख दुःख का भान नहीं होता लेकिन उसकी अर्थी यदि कोमल है तो वह भी एक प्रकार का सुख ही है। यहाँ तक कहकर सुख के महत्त्व को प्रगट किया है।

५५०. सुःख दुख का तो जोड़ा है।

सुख दुःख एक दूसरे के साथ साथ आते ही रहते हैं, किसी की दशा एक सी नहीं रहती।

५५१. सुख में सरीगत सभी, दुख में कोई कोयने।

सुख में सब भागीदार बन जाते हैं पर दुःख में कोई भी साथ नहीं देता।

५५२. सुण्या सूतक अर् देख्या गरेण।

जन्म-मृत्यु सम्बन्धी अशौच लागू तब होगा जब उसके समाचार प्राप्त होंगे। इसी तरह सूर्य-चन्द्र ग्रहण से लगने वाला अशौच भी उन्हीं के लिए माना जायगा जो उसे देख सकते हैं या उसकी छाया में आते हैं।

५५३. सुणनी सबकी, करणी मन की ।

तरह तरह की राय देने वालों की बात की उपेक्षा न कर उसे सतोष के साथ सुन तो अवश्य लेना चाहिए किन्तु उसी बात को अमल में लाना चाहिए जिसके लिए अपना मन साक्षी दे ।

५५४. सूताँ बैठा खावे तो समदर को'ई छे आजावे ।

आलस्य के कारण कोई परिश्रम न करते हुए संचित द्रव्य को खर्च करे तो उसका अन्त हुए बिना नहीं रहता, चाहे समुद्र जैसा अपार संचय क्यों न हो ।

५५५. सूताँ सूताँ ई सरंग चाटे ।

सोये सोये आकाश नहीं चाटा जा सकता, अर्थात् बड़े कार्य के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है ।

५५६. सूतो अर् मरचो बराबर ।

नींद में सोया हुआ आदमी मरे हुए के समान बेखबर होता है ।

५५७. सूँप्याँ ने तो साँप ई नीं खावे ।

सौंपी हुई वस्तु को साँप भी नहीं खाते । अमानत में खयानत कोई नहीं किया करते ।

५५८. सूम, डूम, भूखो, सन्यासी ।
सूतो कुत्तो अर् पनघट पे दासी ।।

(याँ ने नीं छेड़णां)

सूम, ढोली, भूखा प्राणी, संन्यासी, सोया हुआ कुत्ता और पनघट पर गई हुई दासी को नहीं छेड़ना चाहिए ।

५५९. सेंदो आवे पामणो अर् हल्यो आवे चोर ।

जो व्यक्ति पूर्व परिचित होता है वही मेहमान के रूप में घर पर आता है, अपरिचित नहीं । इसी तरह जो पहले से जिन स्थानों पर चोरी करता आ रहा है वही चोर उन स्थानों पर बार बार चोरी करता रहता है, दूसरा नहीं ।

५६०. सैल सुमरणां जंगी घोड़ा । शौक घणा पण राखे थोड़ा ।

भाला, माला और बड़े घोड़े का शौक तो बहुतों को होता है किन्तु इनको ठीक तरह रखना बहुत कम लोग जानते हैं ।

५६२. सोना की कटारी ह्वे तो कँई पेट में मारे ।

सोने की कटारी होने पर भी पेट में नहीं मारी जाती । मूल्यवान अथवा अत्यन्त प्रिय वस्तु या व्यक्ति यदि दुखदायी है तो उस दुःख को स्वीकार नहीं किया जा सकता । जैसे—वा सोने को जारिये, जा सों टूटे कान ।'

५६३. सोना बचे घड़ाई मूँगी ।

ऐसा गहना किस काम का जिसकी घड़ाई उसके मूल्य से भी अधिक हो । (यह एक प्रकार से अन्योक्ति है ।)

५६४. सोनो अर् सुगन्ध ।

जब दो-दो गुण एक साथ पाये जाते हैं तब यह कहावत कही जाती है ।

५६५. सौ की विनती अर् एक को टोसो ।

कभी-कभी सौ-सौ मनुष्यों की प्रार्थना और माँग भी किसी एक व्यक्ति के द्वारा आड़ लगा देने पर अस्वीकृत हो जाती है ।

५६६. सौ दवा अर् एक हवा ।

शुद्ध वायु का सेवन सौ औषधियों के बराबर है ।

५६७. सौ बरस को सलावट अर् पाँच बरस को घर-धणी ।

सौ वर्ष के अनुभवी सिलावट (कारीगर) को भी मकान मालिक की इच्छा के अनुसार ही काम करना पड़ता है ।

५६८. सौ मर जाज्यो पण सौ को पाळबा वालो मरो मती ।

सैकड़ों को पालने वाले का जीवन उपयोगी और महत्त्वपूर्ण होता है अतः ऐसी कामना की गई है कि सौ व्यक्ति मर जावें पर उनको पालने वाला नहीं मरे । वह जिएगा तो अन्य सैकड़ों का भरण-पोषण करेगा ।

५६९. सौ सुल्टी अर् एक उल्टी ।

सौ बातें पक्ष में होने पर भी कभी-कभी किसी एक विरोधी बात के कारण ही काम में बाधा पैदा हो जाती है । अर्थात् विरोध तो एक अकेले का भी बुरा होता है ।

५७०. सौ सूणां नै एक काळ खा जावे ।

अच्छी बरसात होने के और खूब पैदावार होने के जितने भी शकुन उभरते हैं, दिखाई देते हैं, यदि दुर्भिक्ष पड़ने का योग होता है तो उसके सामने दब जाते हैं ।

५७१ संतोषी सदा सुखी ।

संतोषी सदा सुख से रहता है ।

'सतोषामृततृप्तानां यत् सुखं शान्तचेतसाम् ।
तत्कथं धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम् ।'

५७२. हाकम तो गारा को ई खोटो ।

अफसर तो मिट्टी का बना हुआ हो तो भी बुरा । उसका भी हुक्म मानना ही पड़ता है ।

५७३. हाकम परो जावे पण हुकम नीं जावे ।

सरकारी हुक्म व्यक्ति विशेष का नहीं होता, वरन् अदालत का होता है । इस कारण हाकिम के चले जाने पर भी वह कायम रहता है ।

५७४. हाजिर में हुज्जत नीं, गैर की तलाश नीं ।

जो वस्तु अपने पास है उसको देने-लेने में आनाकानी की कोई बात नहीं लेकिन दूसरों के यहाँ से तलाश करने और लाकर देने में विवशता है । यह लेन-देन सम्बन्धी स्पष्ट नीति है ।

५७५. हाड़ का कँई लाड़ ।

हड्डियों मे क्या प्यार करना। अर्थात् शारीरिक रूप रंग से प्रभावित हो उसे प्यार करना या उसके मोह में उलझे रहना, यह कोई बुद्धिमानी का काम नहीं है क्योंकि शरीर तो नाशवान होता है ।

५७६. हाड़ वे'ई तो मांस घणो ई आ'ई ।

किसी बीमारी के कारण दुर्बल होकर मात्र अस्थिपंजर रह जाने की स्थिति में भी दुर्बल होने का दुःख होने की बजाय जीवित रह जाने की खुशी होनी चाहिए, क्योंकि दुर्बलता तो फिर भी मिट सकती है; किन्तु जीवन चला जाने पर तो कुछ भी नहीं हो सकता ।

५७७. हाथाँ की खाज हाथाऊँ ईंज भागे ।

अपना काम अपने से ही हो सकता है। दूसरों पर छोड़ देने से जब वह पूरा या सफल नहीं होता तब यह कहावत कही जाती है ।

५७८. हाथ कीदा कामड़ा कींनों दीजे दोष ।

अपने ही हाथ के कार्य से हमें कष्ट झेलना पड़े तो दूसरे को दोष कैसे दिया जा सकता है। जैसे—जयचन्द ने पृथ्वीराज को नष्ट करने के लिए मोहम्मद गोरी को बुलाया और गोरी ने पृथ्वीराज के बाद जयचन्द को भी नष्ट कर दिया तो इसमें जयचन्द के सिवाय किसी अन्य का क्या दोष ? इस प्रचलित कहावत का पूर्व भाग इस प्रकार है : बैरी लायो पामणा कर कुटम्ब पर रोष" परन्तु यह भाग अप्रचलित है ।

५७९. हाथाँ की दी, माथे आई ।

स्वयं के किये हुए कार्य का उत्तरदायित्व स्वयं को ही भुगत ना पड़ता है।

५८०. हाळी ने हल-फाळयाँ की अर् गाँगली ने खुंगाळयाँ की ।

खेती करने के लिए रक्खे हुए मजदूर (हाली) को अपने औजारों की और किसी स्त्री (गाँगली) को अपनी हाँसली (गले में पहनने का एक प्रकार का आभूषण) की चिन्ता रहती है, अर्थात् सबको अपनी-अपनी आवश्यकताओं का सदा ही ध्यान रहा करता है ।

५८१. हिम्मत कीमत होय ।

हिम्मत करने वाले की सब जगह प्रतिष्ठा है
'हिम्मत कीमत होय, बिन हिम्मत कीमत नहीं ।
करे न आदर कोय, रद कागद ज्यूँ राजिया ।'

५८२. हिसाब तो बाप-बेटा में ई ह्वे वे ।

लेन-देन सम्बन्धी हिसाब करना कोई बात नहीं है। इससे किसी को नाराज नहीं होना चाहिए। हिसाब तो बाप-बेटों के बीच में भी रक्खा जाना वाजिब है ।

५८३. हिसाब पाई-पाई को अर् बख्शीश लाख की ।

खुशी से इनाम-इकरार या उपहार के तौर पर कोई किसी को चाहे

लाखों रुपया दे दे तो उसका कोई विचार नहीं; किन्तु जब खर्चा कर हिसाब देने के लिए रुपया दिया जाये तो एक-एक पाई का हिसाब बताना नीति-संगत है।

५८४. हूँस कमावे अर् चिन्ता खावे।

उमंग और उत्साह से कमाई होती है और बैठे-बैठे चिन्ता करने से तो कोई लाभ नहीं होता, बल्कि कमाया हुआ भी नष्ट होता है।

५८५. हो'ई नर तो क'री घर।

जमीन जायदाद की अपेक्षा घर के लोगों की चिन्ता करना और उनका खयाल रखना चाहिए क्योंकि वे सही सलामत रहेंगे तो जायदाद नहीं होगी तो भी बना लेंगे।

५८६. होवे रोकड़ा तो परणे डोकरा।

पास में पैसा (धन) हो तो बुड्ढे भी शादी कर सकते हैं अर्थात् पैसे से सब कुछ संभव हो जाता है।

---

(२) मानव प्रकृति

१. अगड़धत्ता, अर् सास-बुवाँ का एक ही मता ।

जब कोई दो व्यक्ति लोगों को दिखाने के लिए तो लड़ाई करते हैं लेकिन वास्तव में एक ही मत के होते हैं तब यह कहावत कही जाती है ।

२. आई मलबा, बैठगी दळबा ।

थोड़ी देर के लिए मिलने जुलने की दृष्टि से आने पर जब किसी को लिहाज के मारे किसी कठिन कार्य (जैसे—घट्टी में दलिया) में फँस जाना पड़ता है तब यह कहावत कही जाती है ।

३. आओ मारा सँपटपाट, मूँ थने चाटूँ, थूँ मनें चाट ।

जब दो अयोग्य व्यक्ति आपस में एक दूसरे की प्रशंसा करते हैं तब यह कहावत कही जाती है । जैसे—'उष्ट्राणां हि विवाहेषु गीतं गायन्ति गर्दभाः ।' अर्थात् ऊँटों के विवाह में गधे गीत गाते हैं । इसको अंग्रेजी में 'Mutul admiration society' कायम करना कहते हैं ।

४. आड़त मीठो आपणों, जिण घर माया पूत ।
सावण छाछ न घालती, वा जेठ परूसे दूध ।।

गरज बावली होती है । जिस सम्पन्न घर वाले को आवश्यकता होने पर छाछ (जैसी तुच्छ वस्तु) श्रावण मास में भी नहीं मिलती थी उसी घर वाले की गरज पड़ने पर जेठ मास में भी (जबकि दूध की इफरात नहीं हुआ करती) छाछ तो क्या भरपूर दूध तक मिल जाया करता है ।

५. आड़ी माँडी झोली, न छोड़्या डूम कोळी ।

जिसने निर्लज्जतापूर्वक माँग खाने का पेशा ही अपना लिया है वह तो ढोली, कोली, भंगी आदि नीची समझी जाने वाली जातियों से भी माँग खाने में नहीं चूकता है ।

६. आगे नाथ न पीछे पगां ।

सर्वथा उच्छृंखला है । न तो नाक में नाथ पड़ी हुई है और न पीछे से रस्सा बँधा हुआ है ।

७ **आतमघाती महा पापी ।**

स्वयं की हत्या करने वाले को महान पापी बताया गया है ।

८. **आप आप की जात में सब ठाकर ।**

अपनी-अपनी जाति में सब बराबरी का सम्मान पाने के अधिकारी होते हैं ।

९. **आप ही पोवे अर् आप ही उथेले ।**

दूसरों की जानकारी या सहायता की उपेक्षा करते हुए जब कोई काम या समस्या स्वयं ही पैदा करता है और उसे पूरा करने या उसका समाधान करने में लगा रहता है तो उसके लिए यह कहावत कही जाती है ।

१० **आपकी नींद सोवे अर् आपकी नींद जागे ।**

जो व्यक्ति किसी की अधीनता या किसी भी प्रकार के प्रपञ्च में न उलझकर स्वाधीन स्वभाव वाला होता है उसे यह सुख प्राप्त होता है कि वह सदा नियमित और निश्चित जीवन व्यतीत करता है ।

११. **आपको डब्बो अर् दूजाँ की डब्बी ।**

प्राय: अपनी वस्तु को दूसरों की वस्तु से श्रेष्ठ बताना मनुष्य का स्वभाव होता है ।

१२. **आपणी गरज गदेड़ा ने बाप के वे ।**

गरज होने पर महत्त्वहीन व्यक्तियों की भी प्रशंसा करनी पड़ती है ।

१३. **आबूजी के गेले पाबूजी का गीत गावे ।**

कोई-कोई लोग असंगत और असम्बद्ध कामों के आदी हो जाते हैं जैसे आबूजी के रास्ते पाबूजी के गीत गाना ।

१४. **आसमान पे बिजली चमके अर् गदेड़ी लात बावे ।**

आकाश में बिजली चमकती है और गदही लात उछालती है । बिजली से उसको कोई नुकसान होने की सम्भावना नहीं होती फिर भी वह डरती है, इसी तरह कोई-कोई व्यक्ति अज्ञान के कारण स्वार्थ हानि की सम्भावना से अकारण ही भयभीत होते रहते हैं ।

१५. **आँधो मारे अडंगा, ने राम पादरी पाड़े ।**

अन्धे देख-भाल नहीं सकते फिर भी झूँठ-मूठ बातें बनाया करते हैं । कभी-कभी 'अन्धे के हाथ बटेर' की तरह कोई बात सही हो जाती है इसलिए यह कहावत कही जाती है ।

१६. **आँधो ऊठे, ने घर काँ ने कूटे ।**

अन्धा गुस्से में आकर उठता है और घर वालों को ही पीटता है कमजोर या अयोग्य व्यक्ति अपने घर वालों को ही कष्ट देता है । जैसे—Bad dogs worry sheep.'

१७. आँगली पकड़ताँ पूँचो ई आण पकड़्यो ।

अंगुली पकड़ने का अवसर दिया तो कलाई को ही पकड़ लिया। जब किसी को थोड़ी सी सुविधा देने पर वह पूरा ही अधिकार जमाने लगता है तब यह कहावत कही जाती है।

१८. उछळ माल मियाँ का ।

सबसे अच्छी वस्तु अपने स्वयं के लिए होनी चाहिए।

१९. उतावला सो बावळा ।

जल्दबाज पागल की तरह काम बिगाड़ देते हैं। 'Haste makes waste.'

२०. उदलबा वाली वळीडे साँप बतावे ।

अपने पति से असन्तुष्ट कोई स्त्री जब किसी पुरुष के साथ चली जाना चाहती है तो पति को चकमा देने का कोई बहाना बना लिया करती है। छत में साँप होना बताकर पति का ध्यान उधर कर देती है और स्वयं खिसक जाती है।

२१. ऊकर खावे अर् गाँव ने मूँडे ।

खुद की मुआफी की जागीर का ही मालिक है और दम भरता है सारे गाँव वालों का गुरु बनने का।

२२. ऊदळी ने देश रळियावणो ।

अपने पति को छोड़ भागने वाली स्त्री को सारा ही देश सुन्दर दीखता है क्योंकि वह एक घर में कठिनाई होने पर दूसरे में जा सकती है।

२३. ऊँघता ने बिछावणो लादग्यो ।

नींद से ऊँघने वाले व्यक्ति को बिछौना मिल जाना एक प्रकार से मन की इच्छित अनुकूल परिस्थिति का द्योतक है। परिस्थितिवश इच्छित और आवश्यक वस्तु का अनायास ही संयोग मिल जाने पर यह कहावत कही जाती है।

२४ एक गाय दूवे जतरे सात घराँ फरे ।

जिस व्यक्ति की घर घर में फिरने की आदत पड़ जाती है उसके लिए ऐसा कहा जाता है कि एक गाय दुहने में जितना थोड़ा समय लगता है उतने में ही वह सात-सात घरों में फिर जाता है।

२५. एँठे हाथ गंडक नीं मारे ।

कंजूस व्यक्ति झूँठे हाथ से कुत्ते को नहीं मारता है। शायद हाथ पर लगे भोजन के कुछ कण गिर जांय और उन्हें कुत्ता खाले तो नुकसान हो जाय। किसी को किसी भी सूरत में कुछ न दिया जाय ऐसी भावना रखने वाले के लिए यह कहावत प्रचलित है।

२६. **ओराँ का धन ऊपरे मोड्या करे मलाण।**

बदमाश लोग बहुधा पराये धन पर गुलछर्रे उड़ाया करते हैं।

२७. **ओराँ को सुगन बिगाड़वाने खुद की नाक कटावे।**

नीच प्रकृति के लोग दूसरों का शकुन बिगाड़ने के लिए खुद की नाक तक कटवा डालने हैं और शुभ कार्य के समय सामने आ जाते हैं क्योंकि नकटे आदमी का अपशकुन माना जाता है। अभिप्राय: यह है कि दुष्ट व्यक्ति अपना अहित करके भी दूसरों का बुरा करने के लिए सन्नद्ध रहते हैं। जैसे—
Cut one nose to spite one's face.'

२८. **कण खावे अर् कूकस साँचे।**

कई लोगों का स्वभाव होता है कि वे सारहीन वस्तुओं या बातों को अधिक महत्व देते हैं और सारवान् पदार्थ की उपेक्षा करते हैं, जैसे अनाज को खाते हैं और तुसों (कूकसे) को मूल्यवान समझकर संचित करते रहते हैं।

२९. **कड़वी बोली मायड़ी, मीठा बोल्या लोग।**

जो आत्मीयता रखते हैं वे अहित से बचाने के लिए माँ की तरह कटु-कठोर वचन भी कह दिया करते हैं और जो खुशामदी होते हैं वे मीठी मीठी बातें किया करते हैं जिससे कोई व्यक्ति असलियत से अंधेरे में रहकर अनिष्ट का शिकार हो जाता है।

३०. **कमजोर, गुस्सा बहुत।**

निर्बल व्यक्तियों को गुस्सा अधिक आया करता है।

३१. **करगसा राँड पीर गी, ढँकी गी ने उघाड़ी आई।**

क्लेशी और कठोर स्वभाव वाली स्त्री की सब जगह उपेक्षा होती है। पीहर जाने पर भी जब स्वभावत: वह वहाँ क्लेश पैदा कर देती है तो वहाँ से उसे साड़ी तक नहीं मिलती और उपेक्षित अवस्था में लौटना ही पड़ता है।

३२. **काई जाऊँ कन ढींकोला, वघेरा का चाँवल खाऊँ।**

किसी बात पर एक निश्चय न कर पेशोपेश में रहने वाला व्यक्ति सभी बातों से वंचित रह जाता है और पश्चाताप के सिवाय उसको कुछ भी हाथ नहीं लगता। कहा गया है कि काई, ढींकोला और वघेरा, इन तीन स्थानों में से कहाँ जाए यह निश्चय नहीं कर सकने वाला तीनों में से कहीं भी नहीं जा सकता।

३३. **किया ऊँ कुमार गधा पे नीं बैठे।**

साधारण तौर से कुम्हार गदहे पर बैठा करता है किन्तु किसी के कहने पर गदहें पर बैठने में वह भी संकोच करता है और अपनी बेइज्जती समझता है। इसी तरह कोई कोईव्यक्ति बिना कहे ही जो काम करते रहते हैं, कहने पर मना कर जाया करते हैं।

३४. की जे धीड़ी, सुण जे बऊड़ी ।

सास उपालम्भ देते रहने की आदी हुआ करती है और बहू को सुनते रहने का आदी होना पड़ता है ।

३५. कूड़े पड़वा वाली गेणाँ गाठाँ को ज्ञान नीं गणे ।

कुए में गिर कर आत्महत्या के लिए निकली हुई औरत अपने जेवर की चिन्ता नहीं करती । इसी तरह बरबादी का इरादा करने वाले आगे पीछे की नहीं सोचा करते ।

३६. कोई की चाले जीभ अर् कोई को जूतो ।

या

कोई को चाले मूँडो और कोई को हाथ ।

लड़ाई के समय कोई कोई व्यक्ति मुँह से अपशब्द आदि बोल २ कर सामने वाले को उत्तेजित करते रहते हैं और उनके जवाब में कोई ऐसे भी होते हैं जो एक दम मारपीट पर उतर आते हैं अतः ऐसे लोगों से सावधान रहने का संकेत दिया है कि उनके सामने ज्यादा जीभ नहीं चलानी चाहिए ।

३७. कोई जीम र् राजी व्है अर् कोई जीमा र् राजी व्है ।

कुछ लोग खाऊ प्रकृति के होते हैं, उनको खिलाते पिलाते रहो तो वे खुश रहा करते हैं। कुछ लोग खिलाने पिलाने की उदारता का यश-लाभ लेकर आनन्दित होते हैं ।

३८ कोई ने बेंगन बायड़ा अर् कोई ने पच ।
कोई न चढे आफरो अर् कोई ने मचामच ।।

किसी को बेंगन वायु करता है तो किसी को अपच । किसी को उससे आफरा (पेट में वायु भर कर फूल जाना) होता है तो किसी को मस्ती भी आती है । यह एक ही पदार्थ के साथ अपनी २ प्रकृति की भिन्नता का प्रतिफल है ।

३९. को ठोड़े खादी ने सुसरा जी वेद ।

यह एक प्रकार की निराली उलझन है कि किसी स्त्री के गुप्ताङ्ग पर किसी जानवर ने काट खाया हो और उपचार करने वाला वैद्य उसका श्वसुर ही हो तो इलाज कैसे कराया जाय । कभी २ संकोच या अन्य प्रकार की विवशता किसी सहज सुलभ उपाय में भी बाधक हो जाते हैं ।

४०. कोस्याँ पाछे डूमड़ी, भागी बारा कोस ।

कोई ढोलण लुट गयी और उसके बाद भी भय के मारे बारह कोस तक भागती ही रही जबकि और लूटे जाने जैसी कोई भी वस्तु उसके पास नहीं बची—इससे लक्ष्य किया गया है कि कमजोर हृदय वाले व्यक्ति का भय बड़ी मुश्किल से दूर होता है ।

४१. खरी केवण्यों तो माँ ने भी खोटो लागे ।

खरी बात साफ २ कहने वाला व्यक्ति लोगों को बहुत अप्रिय लगता है। किस हद तक अप्रिय लगता है जिसके लिए बताया है कि उसकी माँ भी उससे स्नेह नहीं रखती ।

४२ खा जावे ने खारड़ा कूट जावे ।

जो कृतघ्न होते हैं वे (खा भी जाते हैं) लाभ उठा लेते हैं और साथ ही बदनामी भी करते रहते हैं ।

४३. खाताँ पीताँ ई मूँडो दूखे ।

किसी को स्नेह या मानवता की भावना से लाभ पहुँचाने पर वह भी अगर बोझ जैसा लगने लगे तो यही कहा जाता है कि खाने के लिए पकवान मिल रहे हो पर खाते हुए ऐसे नखरे करता है जैसे मुँह दर्द कर रहा हो। यह एक प्रकार की उपेक्षावृत्ति और कृतघ्नता ही है ।

४४ खातो जाय अर् खप्पर फोड़तो जाय ।

बहुधा नीच और कृतघ्न व्यक्ति ऐसा ही करते हैं। आशायश और लाभ को बखूबी ग्रहण करते रहते हैं और उसके एवज में निन्दा और नुकसान का पुरस्कार देते रहते हैं ।

४५. खाद करे अपराध ।

खाने को अधिक मिलने पर व्यक्ति उद्दण्ड हो जाता है ।

४६. खायाँ पीयाँ सोरी अर् ऊँठ माँजताँ दोरी ।

बहुधा घर की स्त्रियों में यह स्वभाव पाया जाता है कि खाने पीने के लिए तो तत्पर रहती हैं पर उसके बाद झूँठे बर्तनों को साफ करने में कतराती हैं ।

४७. खायाँ बना रे जावे, कियाँ बना नीं रे वे ।

लोग भूखे रह जायेंगे लेकिन निन्दा किये बिना नहीं रहेंगे। अर्थात् निन्दा करना एक ऐसा शौक है जिसके लिए लोग खाना पीना भी भूल जाते हैं ।

४८ खावा में आगे अर् लड़वा में पाछे ।

खाऊ स्वभाव वाले खाने पीने और मौज करने में जितनी पहल करते हैं उतनी ही लड़ाई-संघर्ष के समय कायरता बरतते हैं ।

४९. खावे जठे ई ज ढोले ।

दुष्ट मनुष्य इतने नीच होते हैं कि अपने लिए उपकार करने वाले को ही बरबाद किया करते हैं ।

५०. गरज बड़ी बावली, सो गधा ने बाप करे ।

जब किसी से गरज होती है तो चाहे गदहा (अयोग्य) ही हो उसको भी बाप (पिता तुल्य आदरणीय) कहना पड़ता है ।

५१. गरबे मत ए गूजरी देख मट्टणो छाछ ।

हे गूजरी, छाछ (जैसी तुच्छ वस्तु) के भाँडे भरे होने से ही अपने को वैभवशाली मानने का घमण्ड मत कर। ओछे व्यक्तियों के स्वभाव का चित्रण है। तुलसी ने इसे यों बताया है—'जस थोरे धन खल बौराई।'

५२. गवरी चाली ओरॉं के ओरॉं के दो चार ।

कोई स्त्री सुन्दरता के मद में अपने पति को त्याग कर पर पुरुष के यहाँ जहाँ पहले से ही दो चार स्त्रियाँ हैं, चली जाती है। इस स्वभाव को सूक्तिकार ने इस तरह व्यक्त किया है कि—

'स्त्रियः कामित कामिन्यो लोकः पूजित पूजकः।

५३. गरीब के घर नीमड़ो लागो जो चाँदनी में ई ऊठ ऊठ छाँया बे ठे।

जिस प्रकार 'भीलणी ने बाट की (धातु का कटोरा) लादी जो पाणी पी-पी ने पेट फोड़े', उसी प्रकार यह कहावत भी प्रचलित है। अभिप्राय यह है कि सामर्थ्य की सीमा से अलभ्य वस्तु जब उपलब्ध हो जाती है तो उमंग की बाढ़ में उसका अनावश्यक उपयोग इस सीमा तक किया जाने लगता है कि लोगों को तो हँसी आए और स्वयं का भी नुकसान होने लगे।

५४. गाड़ी देख, पग भारी। (लाडी को पग भारी)

आशा/यश या सुविधा (जो पहले नहीं थी तो भी काम चल रहा था), जब उपलब्ध होने की पूरी सम्भावना होती है तो ऐसा महसूस होने लगता है कि उसके बिना काम चल ही नहीं सकता। जैसे पैदल चलने वाले को गाड़ी में बिठाये जाने का अवसर नजर आते ही उसके पैर पैदल चलने में भारी २ होने लगते हैं।

५५. गावणो अर् रोवणो सब जाणे।

गाना और रोना सीखने सिखाने की बातें नहीं हैं ये व्यक्ति की नैसर्गिक प्रवृत्तियाँ हैं। सुख दुःख की अभिव्यक्ति प्राणी मात्र करता है।

५६. गावता डूम को कई नीं बगड़े।

ढोली बहुत समय तक गाता रहे तो इससे उसको कुछ भी हानि नहीं होती। किसी बात का अभ्यास परिपक्व हो जाने पर उससे थकान, अरुचि या कष्ट नहीं होता।

५७. गुड़ खावे अर् गुलगुलाँ सूँ परहेज करे।

गुड़ खाने वाला गुड़ से बने गुलगुले (एक प्रकार के मीठे पकौड़े) से परहेज करे, इसमें कौन सी विशेषता है। लेकिन कई लोग ऐसे होते हैं जो अवगुण को मूलतः अंगीकार करके उससे प्रभावित क्रिया-व्यापार से बचने का दिखावा करते हैं, उनके लिए यह कहावत कही जाती है।

५८. गुरु बचे चेला वदे ।

बड़ों की अपेक्षा छोटे व्यक्ति जब अधिक तेज तर्रार पाये जाते हैं तब उनके लिए इस तरह कहा जाता है कि गुरु से भी चेले अधिक आगे बढ़ते हैं ।

५९ गेल्या ठाकर करे पुराणी बात ।

अयोग्य ठाकुर अपनी अयोग्यता को ढाँकने के लिए अपने पुरखाओं की प्रशस्ति किया करते हैं ।

६०. गेली अर् गाम पेली ।

मूर्ख और अयोग्य स्त्री अपने महत्त्व की भूखी होने से हर बात में गाँव की अन्य स्त्रियों में सबसे आगे रहा करती है ।

६१ गंगा गियाँ गंगादास अर् जमना गियाँ जमनादास ।

आदर्श और सिद्धान्तों को ताक में रखकर अपने स्वार्थ के लिए अवसरवादी आचरण करने वालों के लिए कहा है कि वे 'गंगा जाने पर गंगादास और जमना जाने पर जमनादास' बन जाते हैं ।

६२. घड़ी क तोळो अर् घड़ी क माशो ।

भावावेग से प्रभावित होकर क्षण २ में जिनका मिजाज बदलता रहता है उनको लक्ष्य किया गया है। जैसे—'क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टाः रुष्टा-तुष्टा क्षणे क्षणे ।'

६३. घर की खाँड करकरी लागे अर् गुल चोरी को मीठो ।

यह उनके लिए कहा है जिनको पराया माल प्यारा लगता है क्योंकि उससे घर में बचत तो होती ही है, खर्चा कुछ नहीं करना पड़ता । घर की शक्कर की अपेक्षा चोरी का गुड़ अधिक मीठा लगता है ।

६४. घर की माँ ने डाकण कुँणी केवे ।

अपनी वस्तु की बुराई कोई नहीं करता । अपने घर की माँ को कोई डायन नहीं कहता ।

६५. घर में गोभा अर् बारे शोभा ।

मनुष्य प्रायः घर में टोटा होते हुए भी बाहर अपनी शान दिखाने का प्रयत्न करता है, यह एक प्रकार की सामाजिक प्रतिष्ठा की भूख है ।

६६. घरे काम, कूड़े बिसराम ।

जी चुराने वाले आलसी व्यक्ति काम को किस तरह टालते हैं यह बताया है कि जब घर पर कोई काम होता है तो वे कुए पर काम बता कर वहाँ जाकर सो जाते हैं ।

६७. घाघरा में मावे न पोमचा में आवे ।

प्रायः स्त्रियों में घर की वैभव सम्पन्नता पर अहंकार होना एक सहज प्रवृत्ति के तौर पर पाया जाता है इसलिए कहा है कि वे अहंकार के मारे इतनी फूलती हैं कि उनका बदन उनके वस्त्रों में भी नहीं समाता ।

६८. घी में घी जगत परूसे ।

यह दुनियादारी से सम्बन्धित सच्चाई है कि जहाँ पहले से ही सम्पन्नता होती है वहाँ और भी भेंट उपहार भेजे जाते हैं। घी में घी परूसा जाता है।

६९ चमड़ी जाय पण दमड़ी नीं जावा दे ।

यह कहावत बहुत ही कंजूस व्यक्ति के लिए प्रसिद्ध है।

७०. चाल छाँवली मूँ आयो ।

खुद की परछाँई तो साथ ही चलती है लेकिन जो स्फूर्ति या तेजी बतानें का स्वाँग करते हैं वे इसी तरह बात बनाया करते हैं।

७१. चालती गाड़ी में फाचरो देणो ।

बिना कारण किसी के सुचारु कार्य में बाधा देने वालों के लिए कहा जाता है कि वे चलती गाड़ी में रुकावट देते हैं।

७२. चुपड़ी अर् दो दो ।

जब किसी की अधिक पूछ होती है और बहुत आवभगत की जाती हैं तब कहा जाता है कि उसको खूब घी से चुपड़ी हुई और एक नहीं दो-दो रोटियाँ साथ-साथ मिलने लगी हैं।

७३. चोटी की खाज अर् पीर की आस कदी नीं मटे ।

जिस तरह स्त्रियों के सर के बन्धे बालों में चोटी की जगह कभी न कभी खाज चलती ही है उसी तरह उनको पीहर जाने व वहाँ से कुछ न कुछ प्राप्त होने की आशा लगी ही रहती है।

७४. चोर की माँ छाने-छाने रोवे ।

जब चोर जेल में जाता है या फाँसी की सजा पाता है तब उसकी माँ छिपकर रोती है इसलिए कि कही चोर के साथ पुत्र का नाता होना लोगों को मालूम न हो जाय।

७५ चोर-चोर मासी जाया भाई ।

चोरों के (अर्थात् एक ही प्रकार के पेशेवर लोगों के) आपस में रिश्तेदारों जैसा प्रेम होता है।

७६. चोर ने केवे चोरी करज्ये अर् साऊकार ने केवे जागतो रीज्ये ।

प्रपन्ची और स्वार्थी लोग दोनों ओर मिले हुए रहते हैं और लोगों को उकसाया करते हैं। दो पक्षों में विरोध और लड़ाई बनाये रखने से उन्हें अपना मुद्दा पूरा करने में आसानी होती है। वे जैसे, चोर को चोरी करने और उसी समय साहूकार को जागते रहने को कहकर अपना उल्लू सीधा करने की ताक में रहते हैं।

७७. चोरी अर् सीना जोरी ।

बहुधा अपराधी भी बड़े दुष्ट स्वभाव के होते हैं कि अपराध स्वयं करतें

हैं और अकड़ कर दूसरों को डांट पिलाते हैं। उनके लिए यह कहावत कही जाती है।

७८. चोरी अन्याई की लाज है, फाटा गाबाँ की कोयने।

भले आदमियों को चोरी और व्यभिचार से लज्जा आती है, फटे वस्त्र पहनने (अर्थात् गरीबी हालत) से नहीं लजाना चाहिए। सच्चरित्र गरीब अपनी प्रशंसा में ऐसा कहता है।

७९. चंचल नार बाड़लो झाँको, घर को काम सूझे काँको।

चंचल स्वभाव वाली स्त्री बाहर के लोगों पर निगाहें डालने में ही रह जाती है (क्योंकि आदत से लाचार होती है), अतः उसे घर का काम सूझता ही नहीं।

८०. छाछ की छछवारी अर् हूँगा पाछे डूवणों।

छाछ माँगने जाने में झेंप आना स्वाभाविक है, बर्तन को पीठ पीछे छिपाकर जाती है, उस पर यह व्यंग किया जाता है।

८१ छोटे मूँडे मोटी बात।

छोटे आदमी को बढ़-बढ़ कर बातें करना शोभा नहीं देता।

८२. ज्याँका पड़्या सभाव, जासी जीव सूँ।

जैसी लत पड़ जाती है वैसी जीवन भर कायम रहती है। इसकी पूर्ति है "नीम न मीठा होय के सींचो घीव सूँ"।

८३. जठे मले तळ्यो गुळ्यो, उठे फरे रुळ्यो-रुळ्यो।

स्वादु (खाने पीने के स्वाद की लत वाले) लोग जहाँ तला हुआ माल मिलता है वहीं बने रहते हैं।

८४. जठे होवे भरी परात, उठे जागे सारी रात।

भरी हुई थाली देखकर स्वादु लोग रात भर जगे रह जाते हैं और तब तक काम करते या वहाँ बने रहते हैं जब तक थाली का माल उनको भोग लगाने के लिए न मिल जाय।

८५ जँवाई जस्यो जोरावर न अर् जँवाई जस्यो गरीब न।

जँवाई (दामाद) जिद्द पर उतर आता है तो किसी की नहीं मानता और जँवाई अगर प्रेम से प्रभावित होता है तो उसके जैसा भला और विनम्र कोई दूसरा नहीं होता।

८६. जस्या चूँक्या थान उस्या आया ज्ञान।

जैसे स्तनों का दुग्ध पान किया होगा अर्थात् जैसी माँ होगी वैसी ही बेटे की बुद्धि भी होगी।

८७. जस्या थारा खानदान उस्या थारा काम जाण।

खानदान का प्रभाव मनुष्य के व्यवहार और कामों पर पड़ता ही है यही बताने के लिए यह कहावत कही गई है।

८८. जस्याँ पीदो पाणी उसी आई वाणी ।

जिस जगह का पानी पिया जाता है (अर्थात् जैसे वातावरण में निवास होता है) वैसी ही बोली हो जाती है (अर्थात् व्यवहार और आचरण वैसा ही हो जाता है ।)

८९. जात ऊँ जात गंगाजी नीं जावे ।

मनुष्य के स्वभाव की कमजोरी है कि कोई भी सजाति लोग होते हैं वे प्रायः एक दूसरे का काट करते रहते हैं । इसलिए कहा जाता है कि जाति से जाति गंगायात्रा (परस्पर कल्याण कार्य) नहीं कर सकती ।

९०. जाब्ता बना खेत अर् साला बना सासरो आछो नीं लागे ।

बिना बाड़ किये खेत अच्छा नहीं लगता और बिना साले के सुसराल में भी नहीं सुहाता ।

९१. जाया ई गोरा नीं विया तो मनायाँ थोड़े ई वेई ।

जन्म से ही कोई गौर वर्ण वाला नहीं है तो बार-बार आग्रह करने पर वह रंग परिवर्तन थोड़े ही कर सकता है । जो गुण जन्म से ही नहीं है वह बाद में पैदा नहीं किया जा सकता ।

९२. जीवता तो जोया न, अर् मर्याँ पछे रोया न ।

जिससे कभी कोई सम्पर्क ही नहीं रखा गया हो और सदैव उपेक्षा की गई हो उसके लिए एक उलहना है कि जब तक जीवित रहा, उसकी ओर देखा तक नहीं और मरने के बाद उसके लिए रोए तक नहीं और अब उसको याद कर रहे हो ।

९३. जीवता साँटे मर्यो भी न देवे ।

घोर स्वार्थी के लिए कहा है कि वह जीवित (अर्थात् उपयोगी) की एवज में मृत (अर्थात् सर्वथा अनुपयोगी) को भी नहीं देता है ।

९४. जीवता तो हीड़ा न कीदा अर् मर्या पछे गगा जी घाले ।

जो अपने माँ-बाप की उनके जीते जी कोई आज्ञा नहीं मानता है और मरने के बाद उनकी अस्थियों को गंगा में प्रवेश करने के लिए ले जाता है इस दिखावे की पितृ-भक्ति के लिए उपालम्भ स्वरूप यह कहावत कही जाती है ।

९५. जीं थाळी में खावे वीं में ई छेद करे ।

अत्यन्त कृतघ्न व्यक्ति जिससे लाभ उठाता है उसी को हानि पहुँचाया करता है ।

९६. जीं रूँख पे बैठे वींने ईज काटे ।

जिसका आश्रय लेता है उसी को बरबाद करता है । मूर्खता की पराकाष्ठा है—'बैठे जा ही डार पै काटे सोई डार ।'

९७. जेठाणी गऊँ पीसे तो देराणी कांकरा ई पी'सी पण पी'सी ।

जेठाणी (जेठ की पत्नी) और देराणी (देवर की पत्नी) की ईर्ष्या

विख्यात है जिससे एक दूसरी को नीचा दिखाने के लिए वे गलत और सारहीन व मूर्खतापूर्ण काम भी करने लग जाती हैं। जैसे जेठाणी गेहूँ पीसती है तो देराणी गेहूँ न होने पर कंकर ही पीसेगी पर पीसेगी जरूर।

९८. झूँठ बोलवा वाळा अर् अखरोड़े सूबा वाळा के कँई सँकड़ाई कोयने।

जिस प्रकार बिना पलग-बिस्तर के कोरी जमीन पर सोने वाले के लिए कोई तंगी नहीं होती उसी प्रकार झूंठ बोलने वाले के झूंठ की भी कोई सीमा नहीं होती।

९९. टाबर पेट में ई लात मारे।

बच्चे नासमझ होते हैं उनकी नादानी व गलती क्षमा कर दी जानी चाहिए वे तो माँ के पेट में भी लात मारते हैं।

१००. टूटी बाड़ में सबकोई थाग लागे।

खेत की सीमाओं पर लगी हुई काँटों की बाड़ टूटी होगी तो उसमें कोई भी मवेशी आदि सहज ही घुस जायेंगे।

१०१. टूटी मारी टाटी जीमें खाऊँ घी अर् बाटी।

टूटी झोंपड़ी में ही रहना पड़े और कोई बन्धन न हो, अपने हाल में मस्त हों, खूब घी-बाटी खाने को मिले तो वह महलों से (जहां ओहदे-मर्यादा आदि के बंधन होते हैं) कहीं श्रेष्ठ है। यह स्वतंत्रता प्रिय व्यक्तियों की बात है।

१०२ ठाकर ऊँ काम जोंके चाकर ऊँ कई काम।

जब मालिक से काम निकल सकता है तब नौकर को खुश रखने की क्या जरूरत है।

१०३. डोकरी के किये खीर कुँण राँदे।

बुढिया के कहने पर उसके लिए खीर कोई नहीं पकाता। बुड्ढे हो जाने पर घरवाले उसकी कोई परवाह नहीं करते और उसके लिए खर्चा करना पसन्द नहीं करते।

१०४. तबलो ई बेंचूँ पण दगलो सीवाऽऊँ।

बढ़िया कपड़े पहनने का शौक लग जाने पर कहा गया है कि तबला (जीविका का साधन) बेच कर भी दगला (मोटा वस्त्र) सिलायेंगे।

१०५ तळे पड्याँ की ऊपर टाँग।

यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है। नीचे गिरने वाला अपनी टाँग ऊपर उठाये रहता है। नीची श्रेणी के लोग अपने को श्रेष्ठ बताने की कोशिश करते हैं।

१०६. तीन कोस को तीसरो अर् बारा कोस की बाटी नी छोड़े।

किसी की मृत्यु होने पर (तीन कोस) तीसरे दिन के भोज में ही शरीक होने चला जाता है और बाटी खाने के लिए १२ कोस तक धावा मारता है। ऐसा भोजनभट्ट है।

१०७. तीन पोवे अर् तेरा की भूख।

तेरह रोटी की भूख के लिए तीन रोटियाँ बनाने से क्या लाभ, लेकिन कुछ लोग ऐसा ही किया करते हैं आवश्यकताएँ बढ़ा लेते हैं जबकि उन्हें पूरी करने के साधन और सामर्थ्य नहीं के बराबर होते हैं।

१०८. तीन बुलाया अर् तेरा आया।

निठ्ठलों को क्या काम होता है, जहाँ तीन की आवश्यकता होती है वहाँ तेरह एकत्रित हो जाते हैं और व्यर्थ में भीड़ बना देते हैं।

१०९. तीन में न तेरा में, मरदंग बाजे डेरा में।

निकम्मे व्यक्तियों की कहीं कोई गिनती (पूछ) नहीं होती चाहे वे अपने डेरों में खूब ढोल बजाते रहें। अर्थात् अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनते रहें।

११०. तूँबी मेलवा दीदी जो आसण'ई जमा दी दो।

'अंगुली पकड़ने दी तो पहुँचा ही पकड़ लिया।' अर्थात् थोड़ी सी सुविधा देने पर कोई-कोई व्यक्ति ऐसे होते हैं जो पूरा ही अधिकार जमा लेते हैं।

१११. थाप दे ने मूँडो रातो राखणो।

सम्पन्नता और प्रसन्नता होने पर मुँह पर ही ललाई आती है लेकिन दिखावे के लिए अच्छी हैसियत का ढोंग करने वाले गरीब उतना ही कष्ट उठाते हैं जैसे कोई अपने ही गाल पर थप्पड़ लगाकर उसे लाल-लाल करता हो।

११२. थारी काण कन थारा धणी की काण।

नौकर का लिहाज उसके मालिक के बराबर नहीं रखा जाता है इसलिए उसे अपनी हैसियत के अनुसार ही आशा रखनी होती है।

११३. थारी छाछ मारा बेंगण, भला बघारचा मारी जामण।

तुम्हारी छाछ घटिया चीज़ है मेरे बैंगण बढ़िया हैं। मेरी माँ ने अच्छा बघार (छौंक) लगाकर बनाए हैं। अपनी वस्तु को बढ़िया कहकर डींग हाँकना शोभा नहीं देता।

११४. थारे मारे बणे नीं, थारा बना मारे सरे नीं।

कैसी अजीब बात है कि कभी-कभी किन्हीं दो व्यक्तियों के आपस में नहीं बनती फिर भी उनके काम एक दूसरे के बिना नहीं हो सकते, ऐसी स्थिति में यह कहावत कही जाती है।

११५. थूँ आई थारो काम सार, मूँ बैठी मारो दुख पसार।

तू तो तेरे काम को लेकर आई है और फुरसत में ही नहीं है और मैं मेरी लम्बी दुःख गाथा कहने लगी हूँ, भला दोनों में तालमेल कैसे हो सकता है। अर्थात् दुःख का रोना रोने वाले के पास सान्त्वना देने के लिए निठल्ला व्यक्ति ही बैठा रह सकता है।

११६. **थूँक र चाटणो।**

कोई बात कहकर या कोई वचन देकर उससे बदल जाने पर यह कहावत कही जाती है।

११७. **थूँक का पकवान करे।**

घृणास्पद तुच्छ वस्तु को रुचिकर और मधुर बनाने का प्रयत्न करने पर ऐसा कहा जाता है।

११८. **थूँ थारे अर् मूँ मारे।**

परस्पर सहयोग और सम्बन्ध से अलगाव होने पर जैसे कोई अकेला ही रहना पसन्द करता है तब ऐसा कहा जाता है।

११९. **थूँ न तो थारो भाई दूजो।**

किसी की गरज छोड़ कर उपेक्षा करते हुए तब ऐसा कहा जाता है जब जिससे गरज पड़ी है वह व्यक्ति बहुत ही खुशामद कराने लगता है या काम के लिए राजी ही नहीं होता।

१२०. **थोड़ो बोझ टाट बळे अर् छोटी मोटी आँख बले।**

सिर पर थोड़ा बोझ होने पर वह जमता नहीं। पति छोटी आयु का होता है तो उससे पत्नी नाराज रहती है और कुढा करती है।

१२१. **दर में आँगली थूँ घाल मूँ मंतर पढ़ूँ।**

चालाक व्यक्ति खतरे की जगह दूसरों को आगे करता है। कहा गया है कि 'साँप के बिल में अंगुली तू डाल और मैं तो जहर के असर से बचाने वाला मंत्र पढ़ूँगा।' जैसे—'To make a cat's paw of others (To pull the chestnuts from the five)'.

१२२. **दसाँ डावड़ो, बीसाँ बावळो, तीसाँ तीखो,**
चालीसाँ चोखो, पचासाँ पाको, साठाँ थाको,
सत्तर में सुळ्यो, अस्सी में लुळ्यो, नवाँ
नागो, सो में तो उठ भागो जो भागो ई भाग॥

आयु के अनुसार शारीरिक और मानसिक अवस्थाओं का अच्छा विश्लेषण किया गया है कि दस वर्ष की आयु वाला लड़कपन में, बीस वर्ष वाला जवानी के पागलपन में गिना जाता है। तीस को आयु वाला तेज, चालीस का ठीक-ठीक, पचास का प्रौढ़ (परिपक्व), साठ की आयु वाला एक प्रकार से थका हुआ, सत्तर की आयु में अशक्त, अस्सी में पीठ झुक जाने की स्थिति वाला, नब्बे की आयु में ऐसा हो जाता है जिसे कुछ भान ही नहीं रहता। जब सौ वर्ष की आयु होती है तो वह संसार से उठकर चला जाता है, ऐसी पूर्ण आयु में जो मर जाता है, उसे भाग्यवान ही समझना चाहिए क्योंकि उससे अधिक आयु असह्य कष्ट देने वाली होती है।

१२३. दाज्या पर डाम ।

पहले से ही संतप्त व्यक्ति को और संताप देना एक प्रकार से जले हुए को जलाने के समान होता है ।

१२४ दाजी ज्यो तो दाजी पण पूछवा वाला खादी ।

किसी प्रकार के दुःख या संताप से पीड़ित होने पर जब साँत्वना देने वाले उसके दुःख को बार २ दोहराते हैं तो वह सांत्वना उसके लिए और भी महँगी पड़ जाती है। दुःख की स्मृति बार-बार होती है और व्यथा बढ़ती रहती है, तब यह कहावत चरितार्थ होती है ।

१२५. दानक्या ने दानक्यो न सुहावे ।

एक ही जगह काम करने वाले मजदूर प्रायः एक दूसरे को नहीं चाहते ।

१२६. दिन अस्त अर मजूर मस्त ।

दिन भर की मजदूरी दिन अस्त होने पर जहाँ की तहाँ प्राप्त हो जाये तो खा पीकर सो जाने के सिवा मजदूरों को और क्या चाहिए, इसलिए यह कहा गया है ।

१२७. दिन करे तुर-तुर, दानक्यो करे घुर-घुर ।

ज्यों ज्यों दिन ढलने लगता है त्यों-त्यों मजदूर जल्दी छुट्टी हो जाने के लिए आतुर होने लगता है ।

१२८. दियो अर् बाटी, बहू आवे नाटी ।

पति में अगर गुण है (उसका व्यक्तित्व आकर्षक है) तो चाहे दिया-बत्ती (प्रकाश) नहीं हो तो भी बहुएँ घर में आ जाती हैं । अर्थात् व्यक्तित्व प्रभावशाली होने पर हर एक को आकर्षित करता ही है ।

१२९. दीवे बाट अर् बहू खाट ।

नई-नई वधू दीप-वेला होते ही अपने पति से अधिक प्रेम होने के कारण सेज पर पहुँच जाती है ।

१३०. दुनिया के दुख, काजीजी दूबला ।

सारी दुनिया के दुःखों को दूर करने की जिम्मेदारी काजी जी की थोड़े ही है यदि वे इसी कारण दुबले होते हैं तो यह उनकी नादानी है । अभिप्राय यह है कि जबरदस्ती अपनी ही मर्जी से कोई २ लोग ऐसा स्वाँग करते हैं जैसे सबका बोझ उन्हीं के सर पर हो ।

१३१. दुनिया सोवे, फक्कड़ पोवे ।

फक्कड़ों (त्यागियों) के कार्य रात में लोगों के सो जाने पर ही आरम्भ होते हैं । कहा है कि वे खाना भी तब बनाते हैं जब सब खा पीकर सो जाते हैं ।

१३२. दूखे पेट, बतावे माथो ।

मन में कसर किसी बात की हो और बहाना कुछ और बनाया जाय, इस

आदत को लक्ष्य कर कहा गया है कि दर्द तो पेट में है किन्तु सर में होने का बहाना किया जाता है।

१२३. **दूध को दाज्यो छाछ ने ई फूँक फूँक र् पीवे।**

दूध का जला छाछ को भी फूँक फूँक कर पीता है। एक बार खता खा जाने वाला मामूली बातों से भी आशंकित रहता है। जैसे—'Once bit twice shy.'

१२४. **दूबला चोर ने मनखी ई भसे।**

दुर्बल चोर को कुत्ते तो क्या, बिल्ली भी गुर्राती है अर्थात् कमजोर को मामूली व्यक्ति भी डराता है।

१२५. **देख तलाई बाप की कायर खावे गार।**

अपने बाप की तलाई कह कर कायर व्यक्ति स्वच्छ पानी के बजाय कीचड़ रह जाने पर भी पीना नहीं छोड़ते अर्थात् अन्य जगह से पानी लाने की हिम्मत नहीं करते। जैसे—'तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणाः क्षारं जलं कापुरुषाः पिबन्ति।'

१२६. **दो आँख्याँ की शरम।**

किसी पूज्य और प्रतिष्ठित व्यक्ति के सामने अनुचित कार्य करने में लज्जा आती है; पीठ पीछे चाहे कुछ भी किया जाय।

१२७ **दोड़्यो तो नीं जावे अर् फिया के माथे दे।**

बहाना बनाने की आदत को लक्ष्य किया है कि दौड़ने की शक्ति तो है नहीं और बताता है कि तिल्ली बढ़ने की बीमारी है, जैसे—'नाचूँ कैसे आँगन टेढा।'

१२८. **दो पोया ने हाथ धोया।**

एक अकेले आदमी के लिए ज्यादा से ज्यादा क्या काम होता है, सिर्फ यही कि दो रोटी बनाई और हाथ धोये। अकेले व्यक्ति को अनेक काम धन्धे की झंझट में परेशान होते देख बहुधा यह कहा जाता है।

१२९. **दोर जेठाण्याँ को ईसको, मारे घड़ायो तीस को।**

देवरानी-जेठानी से ईर्ष्या करते हुए कोई स्त्री कहती है कि मेरे तीस तोला सोने का जेवर घड़ाया है जबकि उनके यहाँ कुछ नहीं है अर्थात् वह उनसे बहुत बेहतर हालत में है।

१३० **दोर जेठाण्याँ ढोळे मेड़ी अर् मूँ ढोलूँ मारा ढाल्या ने।**

देवरानी और जेठानी की सम्पन्नता के कारण बहू का दैन्य-भाव बताती है। उनके पक्के दुमंजिले मकान हैं जिनकी वे ढुलाई (सफेदी) करती हैं। मैं अपने कच्चे छप्पर की ही पुताई करती हूँ।

१३१. **धाप्याँ ने भूखाँ की कई नगे।**

जिसका पेट भरा है उसको भूखे की व्यथा का अनुभव नहीं हो सकता।

अर्थात् सम्पन्न व्यक्ति अभावग्रस्त की दशा को अनुभव नहीं कर सकता। कहा है, 'जाके पाँव न फटी बिवाई, सो का जाने पीर पराई।'

१३२. नकटा को नाक कटे अर् सवा हाथ वदे।

निर्लज्ज व्यक्ति को जितना ही नीचा दिखाया जायगा वह कोई परवाह न करते हुए और भी निर्लज्जता और धृष्टता का आचरण करेगा।

१३३. नखे नीं कोड़ी अर् बाई फरे डोड़ी।

पास में तो कोड़ी भी नहीं होती है फिर भी कोई-कोई स्त्री इतनी अहंकारी होती है कि अकड़ अकड़ कर चलती है।

१३४ नटता नें जगत परूसे।

जो मना करता है और कहता है कि कुछ नहीं चाहिए उसको और भी अधिकाधिक परोसा जाता है। जिसको चाहना नहीं होती उसको बहुत मिलता है।

१३५. नाक कटार अजेपाळ धोके।

गर्ज पड़ने पर आदमी अपनी इज्जत का खयाल छोड़कर विरोधी के साथ भी नम्र बन जाता है।

१३६. नाम मोटा अर् दर्शन खोटा।

जिनकी तारीफ बहुत सुन रखी है उनको देखने से वास्तविक स्थिति उलटी ही जाहिर होती है जैसे, 'ऊँची दूकान फीका पकवान।'

१३७. नागी राँड घाघरा में ई नीं मावे।

निर्लज्ज स्त्री की अश्लीलता कपड़ों से भी नहीं ढकती।

१३८ नाचण को नचणाव तो उतर जावे पण डाकण को डकणास नीं जावे।

नाचने का शौक रखने वाली का शौक तो खतम हो सकता है पर डायन (दुष्टा) अपने कर्मों से बाज नहीं आती।

१३९. नाचूं कूंकर आँगणों बाँको।

बहाना बनाने की प्रवृत्ति को दर्शाया है कि नाचने की मर्जी नहीं होने पर आँगन के टेढ़े मेढ़े होने की शिकायत की जाती है, जैसे, 'A bad workman quarrels with his tools.'

१४०. नानी माँ सपने आजा' ई।

बहुत मुसीबत पड़ने पर नानी याद आ जाती है ऐसे कहकर किसी कार्य की कठिनता का आभास कराया जाता है।

१४१ पगाऊँ गाँठ देवे जो दाँताऊँ न खुले।

धूर्त आदमी के लिए किसी काम में गुन्थी (उलझन) डालना बहुत आसान होता है जिसको सुलझाना बहुत ही कठिन हो जाता है।

१४२ **परणे जो पग छोड़े ।**

बहुधा शादी होते ही लोग फैलफितूर (उच्छृंखलता) अधिक करने लग जाते हैं ।

१४३. **पर बळती दीखे, घर बळती न दीखे ।**

दूसरों के घरों में लगी आग दिखाई देती है, घर की आग नजर नहीं आती । इसमें आग से अभिप्राय कलह और फजीहत होने से है । जैसे—'खल: सर्षप मात्राणि पर छिद्राणि पश्यति । आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति ।' 'To see a mote in another's eye and not a been in one's own.'

१४४. **पराई थाली, घी घणों ।**

मनुष्य प्राय: दूसरों से ईर्ष्या करता है इसी कारण दूसरों का थोड़ा सा वैभव भी बहुत प्रतीत होता है ।

१४५. **पराई हाँसी गुड़ सूँ ई मीठी ।**

लोगों को दूसरों की हँसी (बेइज्जती) होती देख बहुत आनन्द मिलता है जैसे गुड़ से भी अधिक मीठी वस्तु का सेवन किया हो ।

१४६. **पराया खाटाऊँ तेवार करे ।**

कोई-कोई लोग दूसरों की वस्तु (कढी) से अपना (त्यौहार मना कर) काम निकाल कर प्रसन्न होते हैं उनके लिए यह कहावत कही जाती है ।

१४७. **पराये मूँडे तमोल चाबे ।**

अपना कठिन काम दूसरों से करवाने वालों के लिए यह कहा जाता है ।

१४८. **परायो देख आप दाजे ।**

कई लोग दूसरों की तरक्की देखकर खुद जलते हैं ।

१४९. **पाड़ोसण की बेटी जावे, माँ पड्याँ ई काँ ।**

जो मूर्ख होते हैं वे ऐसी जिद्द पर अड़ जाते हैं कि 'मेरे जीते जी पड़ौसी की बेटी को उसके सुसराल वाले कैसे ले जा सकते हैं ।'

१५०. **पुजारी पूजा करे, मन में राखे आँट ।**
महाप्रसाद घर में धरे, चरणामृत दे बांट ।।

पुजारी भगवान की पूजा करने में भी कपट नहीं छोड़ते वे महाप्रसाद तो घर में रख लेते हैं और चरणामृत को बाँट देते हैं ।

१५१. **पेट ई परायो वेग्यो ।**

जब अपनी ही संतान अपने से विपरीत हो जाती है तब ऐसा कहा जाता है ।

१५२. **पेट में खटाई तो हाँडी में ई खटा' ई ।**

जब किसी लड़की को सुसराल वाले न ले जावें तब माँ बाप प्राय: यही कहकर कि नौ महिने उसे पेट में रखा है तो उसका भरण पोषण करने में क्या कठिनाई है, उसको अपने यहाँ रहने देते हैं ।

१५३. पोमायो ढेड़ पलसे मरे ।

खुद की तारीफ से फूला हुआ चमार घर के निकट ही मर जायगा।

१५४. फरे फाँदे अर् घर के चाँदे ।

'नौ दिन चले अढाई कोस।' अकर्मण्य व्यक्ति घर से दूर नहीं जा सकता।

१५५. फरे फाँदे अर् जावे साँगरिये ।

बार-बार फिरते फिरते फिर उसी गाँव (साँगरिया) में ही लौट आते हैं अर्थात् असावधान रहने पर और सूझ बूझ न होने पर फिर उसी स्थिति में (जिससे दूर होना चाहते हैं) लौट आते हैं तब यह कहावत चरितार्थ होती है।

१५६. फूहड के किंवाड़ वे तो कुण जड़े ।

फूहड़ स्त्री के घर के किंवाड़ हों या न हों, कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि उसे बन्द कौन करेगा, वे तो रात को भी खुले ही रह जायेंगे।

१५७. फूहड़ को मेल फागण में उतरे ।

फूहड़ स्त्री सर्दी में कभी नहीं नहाती। उसका मेल फागुन में होली के आसपास ही जब सर्दी कम होने पर वह नहाती है तभी उतरता है।

१५८ फूहड़ चाले, नौ घर हाले ।

फूहड़ राँड बाहर निकलती है तो नौ घरों की खबर ले लेती है अर्थात् लड़ाई झगड़ा करा कर नौ घरों (सारे मोहल्ले) को हिला मारती है।

१५९. फोरा जो सोरा ।

जो थोड़ा सामान या थोड़ी जायदाद सम्पत्ति आदि रखता है वह ज्यादा आराम करता है।

१६० बऊ जोगा बड़ा कठे ।

सास बहाना बनाकर बहू को अपने अधिकार से वंचित रखना चाहती है। बड़े चाहे अच्छे बने हों, 'बहू के लायक थोड़े ही हैं' यह कहकर उसे नहीं खिलाती।

१६१. बणीं तो बणीं नींतर डाँगरे धणी ।

ग्वाला खुश रहता है तब तक गायों को चराने का काम करता है नाखुश होने पर गायों को छोड़कर लकड़ी फेंक कर चला जाता है। अभिप्राय यह है कि सेवक अप्रसन्न होने पर मालिक की नौकरी छोड़ जाता है तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।

१६२. बना पइसा परखे मोल जीं को नाम ई संगडफोल ।

जिसके पास में पैसा तो नहीं होता और एक अच्छे खरीददार की भाँति कीमतें (परख-परख कर) पूछता और जाँचता फिरता है वह मूर्ख ही होता है।

१६३. बल्या पर लूँण नाके ।

'जले पर नमक छिड़कना' दुःखी को और दुःखी करना बहुतेरों का स्वभाव होता है, जैसे—'Adding insult to ingury.'

१६४. **बल्याँ मरती बोवच्या पाई ।**

गुस्से के मारे रोटी को बिगाड़ दिया । जब एक जगह का क्रोध दूसरी जगह निकाला जाता है तब यह कहावत कही जाती है ।

१६५. **बळती में पूळो दे वे ।**

किसी के क्रोध को और भड़काना जैसे जलती हुई आग में घास फूस देना (जिससे व और भी तेज हो जाय) किसी किसी की आदत हुआ करती है ।

१६६. **बले तो रोड़ी ने कूटे परेण्डो ।**

जैसे—'दूखे तो पेट ने बतावे माथो', आग कूड़े के ढेर में लगे और पीने के पानी के स्थान पर प्रहार करे यह असंगत व्यवहार समस्या का समाधान करने वाला नहीं होता, किन्तु जो मूर्ख होते हैं वे ऐसा ही करते हैं ।

१६६. **बही जावे अर् मलार गावे ।**

मूर्खता की हद है कि नदी में बहती हुई भी गीत गाती है अर्थात् जमी हुई आदत पर परिस्थिति की गम्भीरता का भी असर नहीं होता ।

१६७. **बाई तो जाऊँ जाऊँ करे ई ही, ने बीरो लेवाने आग्यो ।**

लड़की अपने पीहर जाने के लिए उतावली हो ही रही थी कि उसका भाई ले जाने के लिए आ गया, तो जैसे ऊँघती को बिछौना मिल गया ।

१६८. **बाई बत्तीसाँ ने बीरो छत्तीसाँ ।**

बहन में यदि बत्तीस अवगुण हैं तो भाई में छत्तीस । अवगुणों में एक व्यक्ति किसी दूसरे से बढ़ा हुआ ही पाया जाता है तो यह कहा जाता है ।

१६९. **बात चाले बारा कोस अर् फाबो चाले अठारा कोस ।**

राह में चलते हुए यदि बातें की जाय (बारा कोस तक) तो अठारह कोस चलने पर भी थकावट नहीं मालुम होती ।

१७०. **बात तो राणा जी की ई करे ।**

देश के राजा की भी भली बुरी बात को कहे बिना लोग नहीं रहते ।

१७१. **बात में हूँकारो अर् फोज में नगारो ।**

बातें करते समय बीच-बीच में हाँ भरते रहने से कहने वालों के और युद्ध में नगारे बजते रहने से लड़ने वालों के दिल बढ़ते रहते हैं ।

१७२. **बारणे करे बेटा बेटा अर् घर में आवे लेटा-लेटा ।**

जब कोई केवल दिखावे का प्रेम कर किसी को वास्तव में दुःख देता है तब यह कहावत कही जाती है ।

१७३. **बालक देखे हियो अर् बूढो देखे कियो ।**

बच्चा उसी से लगाव रखता है और प्रसन्न रहता है जो उसको हृदय से प्यार करता है और बूढ़ा उससे प्रसन्न रहता है जो उसकी आज्ञा का आदर पूर्वक पालन करता है ।

१७४. **बालक बादशाह बरोबर ।**

बच्चा स्वेच्छाचारिता व परिवर्तनशीलता में बादशाह की तरह होता है।

१७५. **बाँदी है तो ई बादशाह की ।**

बड़े व्यक्ति के नौकरों में भी अपने स्वामी के बड़प्पन का प्रभाव रहता है जैसे दासी तो है किन्तु अरचूनी परचूनी की नहीं, बादशाह की है, इसमें भी एक प्रकार का गौरव है।

१७६. **बाँस पोला अर् मनख गोला की कँई नगे पड़े ।**

बाँस अन्दर से पोला होता है किन्तु दूर से देखने पर पोला नहीं दीखता वैसे ही बदमाश व्यक्ति की भी ऊपरी बनावट से पहचान नहीं हुआ करती ।

१७७ **बींद बींद का गावे अर् बींदणीं बींदणी का गावे ।**

अपनी-अपनी जगह पर अपनी-अपनी बातें सभी किया करते हैं। दुल्हे के घर पर उससे सम्बन्धित (बना के) गीत और दुल्हिन के यहाँ उसके (बनड़ी के) गीत गाये जाते हैं।

१७८. **बुवाँ छोड़चो छेवड़ो अर् बेटाँ छोड़ी कार ।**

जहाँ बहुएँ घूँघट निकालना छोड़ देती हैं वहाँ बेटे भी मर्यादा में नहीं रहते ।

१७९. **बूढाँ बूढाँ आँतरा, बूढाँ-बूढाँ फेर ।**

प्रत्येक बूढे के चरित्र में अन्तर हुआ करता है। सब बुड्ढे एक सरीखे नहीं होते ।

१८०. **बूढा बानी नीं चढे ।**

बूढ़े को दूसरे रंग में नही रंग सकते। वह परिपक्व बुद्धि वाला होता है अतः नहीं भरमाया जा सकता ।

१८१. **बेट्याँ का अर् रोड़चाँ का जोड़ा है जो ह्वे जावे मोटी ।**

जैसे रोड़ी प्रतिदिन का कचरा और गोबर डालते रहने से शीघ्र बड़ी हो जाती है वैसे ही बेटी भी जल्दी बड़ी हो जाती है ।

१८२. **बेट्याँ की माँ राणी, बूढारे भरे पाणी।**

अधिक बेटियों की माँ उनकी शादी न करने तक तो रानी की तरह रहती है क्योंकि सारा काम बेटियाँ कर दिया करती हैं किन्तु इधर तो वह वृद्ध होती है और उधर सभी बेटियाँ सुसराल चली जाती हैं तब उस आयु में जाकर उसे (कठोर परिश्रम) पानी भरना पड़ता है ।

१८३. **बेटी को लेखो लो तो जँवाई को जीव लीदाँ ई पूरो न पड़े।**

बेटी को जितना दिया जाता है उसका यदि हिसाब जँवाई से लिया जावे तो उसकी जान लेने पर भी पूरा नहीं होता।

१८४. **बेटी दे र् बेर बसावणों कुण सिखायो ।**

बेटी के सुसराल वालों से झगड़ा नहीं करना चाहिए ।

१८५. बेंडी राँड बनोळा लार, कपूत बेटो कूँ ता लार।

मूर्ख स्त्री गीत गाना नहीं जानती फिर भी दुल्हे की शोभा यात्रा में अन्य स्त्रियों के साथ फिरती रहती है और कुपुत्र बेटा भी इसी तरह खेतों के कूँतों के साथ फिरता रहता है, दोनों ही व्यर्थ में दूसरों के साथ फिरते रहते हैं, खुद का कोई काम नहीं करते और न ही दूसरों के लिए किसी काम आते हैं।

१८६. बेरी लायो पामणा कर कुटुम्ब पर रोष।
हाथाँ कीदा कामड़ा, कीने दीजे दोष।।

आपस की फूट में कुटुम्ब पर रोष कर दुश्मनों को मेहमान बनाकर भी ले आते हैं जिसका दुष्परिणाम स्वयं को भी भुगतना पड़ता है और दुश्मनों के द्वारा कुटुम्ब का नाश होने पर स्वयं भी नहीं बच सकते। यह तो अपने ही कर्मों का फल हैं, इसका दोष दूसरे को नहीं दिया जा सकता।

१८७. भट जी खावे काकड़ी, दूजाँ ने दे आखड़ी।

या

भट जी तो भट्टा खावे, दूजाँ ने ज्ञान बतावे।।

भट्ट जी स्वयँ तो बैंगन (या ककड़ी) खाते हैं और दूसरों को वह न खाने के लिए उपदेश देते हैं या शपथ दिलाते हैं। बहुधा लोग दूसरों को तो बड़ी-बड़ी बातें सिखाते हैं और स्वयं थोड़ी भी नहीं पालते।

१८८. भरी कचोली दाखाँ की, सासू मल गी लाखाँ की।

सास को यदि बहू के पीहर से अच्छा माल मिलता रहता है तो सास बहू से अच्छा वर्ताव करती रहती है।

१८९. भाई बन्द सब करे, बेटी न परणे।

भाई बन्धु लड़ाई हो जाने पर (घर भेदू होने से) किसी भी प्रकार का अनिष्ट घटित कर सकते हैं सिर्फ बेटी से विवाह नहीं करते (यही गनीमत है)।

१९०. भागता के अगाड़ी अर् मरता के पछाड़ी।

भगदड़ मचे तो स्वयं आगे भागने में पहल करो और मरने की नौबत आये तो सबसे पीछे रहो।

१९१. भाटो फेंक ने करम मांडे।

स्वयं ही मुसीबत पैदा करके उसमें उलझने और दुःखी होने की मूर्खता की आदत के लिए कहा जाता है कि पत्थर उछाल कर नीचे मस्तक करते हैं तो चोट खानी ही होगी, इसमें दूसरे का क्या दोष ?

१९२. भाटो मेल ने बाटी ल्यावे।

कुछ ऐसे चालक होते हैं कि बाटी के स्थान पर पत्थर (बाटी जैसा गोल-गोल) रख कर बाटी ले भागते हैं अर्थात् चकमा दे जाते हैं।

१९३. भायाँ भायाँ आँतरा, कोई हीरा कोई काँकरा।

एक ही माँ की कोख से पैदा होने पर भी भाइयों में उनके व्यक्तित्व की

दृष्टि से इतना अन्तर हुआ करता है कि कोई तो हीरे जैसा होता है और कोई कँकर जैसा।

१९४. भाँड वाला दाँत दिखा दी दा।

भाँड को कुछ नहीं मिलता है फिर भी वह हँसता है, इसी तरह किसी बात पर जान बूझ कर असमर्थता प्रगट करने वाले के झूँठे हास्य पर कहावत कही गई है।

१९५. भीलड़ी ने भुवाजी कियो तो चौके ई आण चढी।

ओछी जाति-स्वभाव वाले अर्थात् अयोग्य को थोड़ा सम्मान मिलते ही वे बहुत इतरा जाते हैं और सर पर ही चढ़ने लगते हैं।

१९६ भींज्या को कई भींजणो अर् कोस्या को कई कोसणों।

भीगे हुए को और भीगने की और लुटे हुए को और लुट जाने की चिन्ता नहीं रहती इसी तरह बात के बिगड़ने पर उसके और बिगड़ने के लिए चिन्तित होना छोड़ दिया जाता है।

१९७ भुवा मस देणो अर् भतीजी मस लेणों।

सामाजिक रस्म रिवाज में ऐसा ही होता है कि किसी बहाने दिया जाता है तो उसी से किसी रूप में लिया भी जाता है। भुवा को पीहर से भेंट उपहार दिये जाते हैं तो भुवा पीहर में ही अपनी भतीजी को (उससे भी अधिक) भेंट उपहार देती है, इस प्रकार लेना-देना बराबर हो जाता है।

१९८. भूखी बाई नूँतरो, मारे खाँख में बाजड़ो।

भूखी स्त्री को न्यौता मिलते ही इतनी उतावली होती है कि नीचे रखने के लिए पत्तल भी बगल में साथ ही लेती जाती है। अर्थात् भूख में भोजन की बहुत आतुरता हो जाती है।

१९९. भेळे सू अर कटारी बावणीं।

घोर विश्वासघात करने वालों के लिए बताया है कि वे जैसे शामिल सोने वाले घनिष्ट होकर कटारी चला देते हैं।

२००. मनख ने मनख को जायो, देश ई परायो।

सुनसान जगह में (जहाँ मनुष्य की औलाद तक देखने को न मिले, वहाँ) आदमी को नहीं सुहाता। विशेषकर परदेश में।

२०१. मरयाँ पछे मालवो दीखे।

मरने के बाद मालवा प्रदेश किधर है यह खबर होती है जो पहले होती तो आसानी से कमा खाते। अभिप्राय यह है कि खाने कमाने की उम्र और परिस्थिति नहीं रहती तब सूझ उपजती है जिससे क्या लाभ!

२०२ मरयाँ पेली मसाणा थरपे।

मरने के पूर्व ही किस श्मशान में दफनाया या जलाया जाय, यह निश्चय करना नासमझी है। ('कब्ल अज मर्ग बावेला' की तरह हैं)

२०३. मरचा बेटा की कचौला जसी आँख।

बहुधा लोग मरने के बाद उसकी तारीफ करते हैं, जिससे क्या लाभ ? पुत्र के मरने पर उसकी आँखों को सुन्दर और बड़ी बताने से कोई फायदा नहीं होता है।

२०४. मरचां हाण, जीवतां पछतावणों।

जिसका जीवन निरर्थक होता है उसके लिए कहा जाता है कि न तो उसके मरने से कोई हानि है और न जीने से कोई लाभ।

२०५. मर रे पूत पड़ोसी का।

दूसरों के प्रति दुर्भावना और अपने स्वार्थ की चिन्ता एक प्रकार की मानवी कमजोरी है। पुत्र मरे तो पड़ौसी का (अर्थात् दूसरों का) मरे हम और हमारा परिवार तो सदा सुखी रहे।

२०६. माथो काट सराणे मेले तो भी के वे के मारे चुभे।

कोई कोई ऐसे होते हैं कि उनके लिए किए गए भरपूर त्याग (माथा कटवाने तक का काम) और उपकार की एवज में यश मानना तो दूर रहा और भी दोषारोपण करते हैं। कटा हुआ मस्तक सिरहाने रखने पर भी कहते हैं कि यह तो चुभता है।

२०७. माथो मोटो सरदार को अर् पग मोटो गँवार को।

बड़े आदमी का सिर बड़ा होता है और गँवार के पैर बड़े हुआ करते हैं।

२०८. मान मत मान मूँ थारो महमान।

लोगों में जबरदस्ती धौंस जमाने की व दूसरे से सेवा करा लेने की आदत होती है।

२०९. मानें तो देव नीं तो भींत का लेव।

किसी को पूजना या महान समझना भावनाओं पर निर्भर होता है। श्रद्धा हो तो किसी मूर्ति को देवता माना जा सकता है, नहीं तो वह मिट्टी के ढेले के समान ही हो जाती है।

२१०. मानें तो लाख का नीं मानें तो सवा लाख का।

जैसे कहा जाता है कि 'दे जिसका भला, नहीं दे जिसका भला', वैसे ही यह उक्ति है कि कोई अपनी बात मान जाय तो बहुत ऊँचा और नहीं माने तो उसकी मर्जी। अपने मन में तो उसके लिए वैसी ही भावना रहेगी।

१११. मार आगे भूत भागे।

मारपीट से सब डरते हैं। किसी को भूत लग जाय तो मारपीट के भय से वह भी भाग जाता है।

२१२. मारे अर् रोवा नीं दे।

क्रूर व्यक्ति किसी दूसरे को यातना देकर भी उसके दर्द को बयान करने तक का मौका नहीं देते। पीटते हैं और रोने नहीं देते; यह स्वेच्छाचारी प्रबल व्यक्तियों के जुल्म की पराकाष्ठा है।

२१३. माँ माँटी कीदो, खोटो कीदो,
कर ने छोड़ दीदो और भी खोटो कीदो ।

विधवा का विवाह करना बुरा है किन्तु उसके उपरान्त उसे नये पति को छोड़ देना उससे भी बुरा है। बुरा काम आरम्भ करना तो बुरा है ही किन्तु उसको न निभा कर छोड़ देना और भी बुरा होता है। ऐसा करने वाले की दुर्गति हो जाती है।

२१४. माँ जण्याँ सात पूत, करम दीदा बाँट चूँट ।

एक ही मां के सभी (सातों) पुत्र एक जैसी तकदीर वाले नहीं हुआ करते। सबका भाग्य अलग अलग होता है।

२१५. माँजी मरघो अर् धाड़ भागी ।

मुखिया के मरने पर उसके कमजोर साथी भाग खड़े होते हैं।

२१६. माँटी की कमाई अर् घाघरा में गमाई ।

शौकीन स्त्री अपने पति की सारी कमाई अपने साज-शृंगार में ही पूरी कर दिया करती है।

२१७. माँटी मार सती होवे ।

दुष्ट व्यक्ति अपने दुष्कर्मों पर पर्दा डालने के लिए सत्कार्यों की रचना का ढोंग किया करते हैं। जैसे कुलटा स्त्री पहले तो अपने पति को मार देती है फिर बदनामी से बचने के लिए सती होने का ढोंग रचाती है।

२१८. माँ पापणीं तो ई आपणीं ।

मां पापिन होती है फिर भी वह माँ है अतः उसकी अवज्ञा नहीं की जानी चाहिए।

२१९. माँ भटचारण, बेटो फतह खाँ ।

छोटी हैसियत के लोगों की महत्वाकांक्षा देखिये कि वे अपने बेटे-बेटियों के नाम ऊँचे रख लेते हैं। कहा गया है कि माँ तो रसोइये की नौकरी करती है और बेटे का नाम रखा है—फतह खाँ (अर्थात् विजय करने वाला)।

२२०. माँयने ई पूळो अर् माँयने ई झाल ।

कभी-कभी लोक लाज के कारण अपनी व्यथा को मन के भीतर ही भीतर दबा कर रखना पड़ता है।

२२१. माँ सम पूत पिता सम घोड़ा घणाँ नहीं थोड़ा थोड़ा ।

माँ की प्रकृति का प्रभाव पुत्र पर अधिक नहीं तो थोड़ा ही होता है पर होता अवश्य है जैसे कि घोड़े का असर उसके बछेरे पर होता है।

२२२. माँसू ई गोरी जीं ने पील्या को रोग ।

अपने रूप पर गर्व करने वाली स्त्री के विचार हैं कि मुझसे अधिक गौर वर्ण वाली कोई नहीं है, अगर है तो उसे अवश्य ही पाण्डुरोग होगा जिससे

वह गोरी दिखाई देती होगी। जैसे तुलसी ने शूर्पणखा के रूपाडम्बर के लिए कहलाया है, 'नारि न मोहि नारि के रूपा।'

२२३. **मीठा के बस भूँठो खाय।**

मीठे के लिए लोग झूँठा भी खा जाते हैं, लालची आदमी अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान नहीं रखता।

२२४. **मीठो खाबो अर् मियों पेरबो कीं ने खोटो लागे।**

मीठा खाना और महिन कपड़ा पहनना सब कोई चाहते हैं।

२२५. **मूँगो कुँण कोदो रात को बासी।**

भूखा आदमी खाद्य वस्तुओं को मँहगे मोल भी खरीद लेता है। अर्थात् अधिक जरूरतमन्द लोगों के महंगे मोल खरीद कर लेने से ही महँगाई बढ़ती है।

२२६ **मूँज अर् गोली पराये बल आँवळे।**

मूँज की रस्सी दूसरों के द्वारा बल पटकने से ही मजबूत होती है। गोली (अर्थात् ठाकुर की दासी) भी ठाकुर के रौब रुतबे के कारण ही लोगों पर अकड़ जमाया करती है।

२२७. **मूँडाऊँ छूटे ज्योई धणी का भाग को।**

विचारहीन व्यक्ति के मुँह से अच्छे बोल निकल जायें तो सौभाग्य समझना चाहिए क्योंकि वह बहुत बेलगाम बोलने का आदी होता है अतः भले बोल मुश्किल से ही बोलता है।

२२८. **मूँडा में कुवो, माथा पे कड़कोल्यो।**

खिलाते जावें और खाने वाले के सिर पर चोट भी करते जावें, ऐसे स्वभाव वाले लोग भी होते हैं। वे जिसको सहायता देते हैं या भरण-पोषण करते हैं उसको जी दुखाने वाले ताने भी मारते रहते हैं।

२२९. **मूँडो देख तलक काडणो।**

सामने वाले के स्तर और उसकी हैसियत के अनुसार ही लोग उसका आदर-सम्मान किया करते हैं। जैसा मुँह होता है वैसा ही तिलक निकालते हैं।

२३०. **मूँत र् तोले।**

अत्यन्त कंजूस आदमी तुच्छ से तुच्छ और सारहीन वस्तुओं का भी हिसाब देखता है।

२३१. **मूँ ने मारो दाता दूजो आवे तो मारूँ लाताँ।**

मैं और मेरे दाता (पालन-पोषण करने वाले) ही अमुक लाभ के भागीदार होंगे, दूसरा आयेगा तो पीटूँगा। जो जिसको प्रिय होता है उसी का साहचर्य पसन्द होता है। जैसे—'We are the sweet selected few, let all the rest be damned.'

२३२. मूँ ने म्हारो मूँण्यो, दूजो आवे तो फोडूँ दूण्यों ।

मैं और मेरा बछड़ा दोनों ही दूध पीयेंगे, दूसरा आयेगा तो उसका बर्तन ही फोड़ दिया जायगा । (इसका भावार्थ ऊपर वाली कहावत के जैसा ही है ।)

२३३. मोटो पेरे घाघरो, गणती फरें कुवा ।
जान में जाणें न माँडा में पछाणें, वचे ई लाडा की भुवा ।

बड़ा लहँगा पहनकर व्यर्थ ही भोजन करने वालों के ग्रास गिनती फिरती है, उसे न तो कोई बरात में पहचानता है और न ही लड़की वाले के यहाँ उसे कोई जानता है फिर भी वह ऐसी बनती फिरती है जैसे दुल्हे की भुवा ही हो । जब किसी को कोई महत्त्व नहीं दिया तो भी वह हर बात में अपने को मुख्य मानकर आगे-आगे होता है, ऐसे व्यक्ति को इस कहावत में लक्ष्य किया गया है ।

२३४. मोड्या को बड़ तळ वासो ।

लड़ाक और बदमाश का डेरा बड़ (बड़ वृक्ष) के पेड़ की छाया में ही रहता है क्योंकि गाँव में कोई भी उसको अपने यहाँ ठहराना पसन्द नहीं करता ।

२३५. मोत बतावा सूँ ऊन आरी होवे ।

किसी को मौत का भय बताने पर वह बुखार चढ़ाना स्वीकार कर लेता है । बड़ी आफत को टालने के लिए छोटी आफत को लोग स्वीकार कर लेते हैं ।

२३६. मँगता आगे मँगतो माँगे जीं की अक्कल कम ।

भिखमंगे के आगे भीख माँगने वाला मूर्ख होता है । 'चले मियाँ जी माँगने बाहर खड़ा दरवेश ।'

२३७. मँगती और मिजाज ।

भीख माँगना और अभिमान करना दोनों एक साथ नहीं निभते ।

२३८. मन्द कमाऊ अर् मीठा जिमाऊ ।

कपूत काम कमाई तो बहुत कम करते हैं लेकिन खाने पीने में बड़े चट्टे होते हैं ।

२३९. वा जाँघ उघाडूँ तो या लाजे अर् वा उघाडूँ तो वा लाजे ।

अत्यन्त निकट सम्बन्ध वाले व्यक्ति के गोपनीय कर्मों को यदि प्रकाशित करना पड़े तो स्वयं को भी शर्मिन्दा होना पड़ता है ।

२४०. यो तो दूध वालो उफाण है ।

भावनाओं के आवेग का असर (क्रोध या जोश या मद) जो क्षणिक हुआ करता है उसके लिए ऐसा कहा जाता है ।

२४१. राई घटे न तल वदे ।

जब कोई दो पक्षों में एक जैसी विरोध-वृत्ति होती है तब कहा जाता है, (कि न तो कोई राई जितना कम न कोई तिल जितना अधिक है) ।

२४२. रागा जस्याइं परागा।

जब दोनों ही अयोग्य होते हैं तब यह कहावत कही जाती है।

२४३. राड़ में नीं रे वे जो सूरो।

लड़ाई एक प्रकार की पाशविक वृत्ति है अतः कहा है कि उससे दूर रहना (आवेश आने पर भी संयम रखना) सच्ची वीरता है।

२४४. राणीं का राणीं ने अर् काणीं का काणीं ने।

अपने-अपने बच्चे सबको अच्छे लगते हैं।

२४५. रात अंधारी अर् तल काळा।

दो दो मुसीबतें एक साथ आने का संयोग दुखदायी होता है। एक तो अंधेरी रात, दूसरे काले तिल (दोनों ही काले) होने पर उनकी सफाई कैसे की जा सकती है।

२४६. राम की जै अर् रावण की भी जै।

अच्छे बुरे सभी लोगों व घोर विरोधी दोनों ओर के पक्षों को प्रसन्न रखने वाले व्यक्तियों को लक्ष्य किया गया है। ऐसे लोग किसी को नाराज नहीं करते हैं। राम की भी जय बोलते हैं और अवसर पड़े तो रावण की भी।

२४७. रावळा घोड़ा ने बावळा असवार।

सरकारी घोड़ा और लापरवाह सवार दोनों एक जैसे मिले। सरकारी घोड़ा मर जाय तो सरकार में टोटा नहीं पड़ता और बेपरवाह सवार अपनी जान की चिन्ता ही नहीं करता। ऐसी सूरत में कोई काम मुश्किल से ही सुधर पाता है।

२४८. रावळो तेल बले अर् भण्डारी पेट कूटे।

जब मालिक की अपेक्षा नौकर अधिक कंजूस होता है तब कहावत कही जाती है। जैसे—तेल तो मालिक का जलता है और भण्डारी दुःखी होता है।

२४९. रांड्या को भीड़ू तो राम जी ई कोयने।

अयोग्य और साहस हीन व्यक्ति की सहायता तो भगवान भी नहीं करते। जैसे—'God helps those who help themselves.'

२५०. राँड्या ने राँड मली ज्यो काँधे लूं के माथे।

नामर्द व्यक्ति को स्त्री (पत्नी) मिल जाने पर वह उसको कंधे या सर से नीचे तक नहीं उतारता अर्थात् उसको बहुत ही सिर चढ़ाये रहता है।

२५१. राँड्यो भाई भायाँ में न अर् मालजादी बेण बेणाँ में न।

मर्दानिगी न रखने वाला भाई अपने भाई-बहनों की क्या रक्षा कर सकता है और कुलटा बहन अपने भाइयों को बदनाम ही कराती है। अतः नामर्द भाई और दुश्चरित्र बहन को भाई-बहनों की गिनती में न लेना ही बेहतर है।

२५२. रीझी ए राणी, लालरा के पाणी।

राणी होते हुए भी कोई भाजी के पानी से ही प्रसन्न हो जाती है तो यह

उसकी गरिमा के विरुद्ध होता है। जब बड़ा व्यक्ति तुच्छ वस्तु से ही प्रसन्न हो जाता है तब यह कहावत कही जाती है।

२५३ रोई, रोंकी तो ई सासरे तो थने को थने ई जाणों प'ड़ी।

सुसराल जाने वाली लड़की को कहा गया है कि वह चाहे कितनी ही रोए, सुसराल तो उसी को जाना पड़ेगा। अर्थात् चाहे मर्जी हो या न हो अपने लिए नियत काम तो अपने को ही करना पड़ेगा।

२५४. रोटचाँ सांटे मनख कई खोटो।

भोजन करने मात्र के बदले यदि कोई मनुष्य काम पर सुलभ होता हो तो उसकी मजदूरी महँगी नहीं पड़ती।

२५५. रोटी खावे घर की, बात करे दूजां की।

जैसे—'धान खावे धणी को अर् गीत गावे बीरा का' अर्थात् जिसकी खावे उसकी नहीं बजावे ऐसी प्रकृति के लोगों को लक्ष्य किया गया है।

२५६. रोवणी रांड अर् मुलकण्यों माटी क दे ई न्याल नीं करे।

बात बात में रोने वाली स्त्री और बात-बात में हँसने वाला पति से घर की स्थिति नहीं सुधर सकती।

२५७. रोवती ने राखी तो गळे ई आण पड़ी।

रोती हुई दुखिया को ढाढस बँधाया तो गले ही आ पड़ी, अर्थात् उसने सारा भार हम पर ही डाल दिया।

२५८. लाओ धान ऊरो गाळो, जीव जनावराँ को राम रुखाळो।

अंधाधुंध काम करने वालों के लिए कहा गया है जो धान को बिना साफ किये ही पीसने के लिए चक्की में डालने लगते हैं। उसमें धान के साथ कई जीवाणु (कीड़े) भी पिसने लगते हैं।

२५९. लागे तो भाभीजी पण दरफताँ बाईसा के वे।

रिश्ते में तो भाभी होती है किन्तु डर के कारण बाई सा कहना पड़ता है। अर्थात् कभी कभी डर के मारे भी किसी को विशेष सम्मान देना पड़ता है।

२६०. लाताँ का देव बाताऊँ नीं माने।

नीच आदमी बल-प्रयोग से ही वश में आता है समझाने से नहीं।

२६१. लाय लागे जदी कूड़ो खो दे।

किसी विपत्ति के लिए पहले से सावधान न रह कर एन मौके पर उसका समाधान खोजने वाले उस पर विजय प्राप्त करने में सफल नहीं होते। आग फैल जाने पर पानी के लिए कुआ खोदना नितान्त नासमझी है। 'प्रोद्दीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः।'

२६२. लुगायाँ का पेट में बात न खटावे ।

स्त्रियाँ प्रायः किसी गुप्त रखने लायक बात को गुप्त नहीं रख सकतीं । इसलिए कहा गया है कि उनके पेट में कोई बात नहीं टिकती ।

२६३. लोड़ी थूँई साँची अर् बड़ी थूँई साँची ।

दो सौत स्त्रियों की लड़ाई में दोनों को प्रसन्न रखने के लिए चतुर स्त्रियाँ ऐसे ही कहती हैं कि तुम दोनों सच्ची हो ।

२६४. लोड़े कू ज्योई बड़े कू ।

छोटा और बड़ा भाई दोनों ही ऐबी होते हैं तब यह कहा जाता है अर्थात् जैसा यह वैसा ही वह ।

२६५. शरीर बेच्यो, आत्मा थोड़े ई बेची ।

वेतन भोगी का यह तर्क है कि शरीर से चाहे जो मजदूरी ले ली जाए किन्तु अनैतिक काम मत कराओ । शरीर के साथ आत्मा नहीं बेची गई है ।

२६६. शंख और मूरख पराई फूँक सूँ बाजे ।

जैसे शंख दूसरों के द्वारा फूँक देने पर बजने लगता है वैसे ही मूर्ख व्यक्ति दूसरों के बहकावे में आकर काम बिगाड़ने की बात करने लगता है ।

२६७. सब आप आप की रोटी सेके ।

सब लोग प्रायः अपने अपने स्वार्थ साधन और हित चिन्तन में लगे रहते हैं । दूसरों की खैर खबर कोई नहीं लेता ।

२६८. सलाम करयाँ ई मियाँजी राजी न रे वे तो आपणो कई है ।

सलाम करने के सिवाय मियाँजी को खुश रखने के लिए हम कुछ नहीं कर सकते । यदि हमसे भी वे राजी नहीं रहते तो उनकी मर्जी अर्थात् किसी को इज्जत देने से भी वह प्रसन्न न रहे तो और क्या किया जा सकता है ?

३६९. सामो चोर कोटवाल ने डंडे ।

कभी कभी चोर भी अपनी सफाई बताने के लिए कोतवाल को धमकियाँ देता है । जब अपराधी भी सर उठाने लगता है तो यह कहावत कही जाती है ।

२७०. सावण का आँधा ने हरचो ई हरचो सूझे ।

सम्पत्ति में पले व्यक्ति को विपत्ति में भी सुख के सपने आते रहते हैं ।

२७१. सावण सूखा न भादवे हरचा ।

सम बुद्धि (प्रकृति) वाले न तो सुख में फूलते हैं और न ही दुःख में घबराते हैं (न तो सावन में सूखते हैं और न भादवे में हरे-भरे होते हैं) अर्थात् वे बारहों मास एक समान रहते हैं ।

२७२. सासरा में सासू को जायो न पीर में माँ को जायो ।

जो सर्वथा अकेली और असहाय होती है उसका कथन है कि न तो पीयर में उसका भाई है और न सुसराल में पति मौजूद है ।

२७३. सासू जतरे सासरो अर् माँ बिना कँई पीर ।

सुसराल में जँवाई की खातिरदारी उसकी सास होती है तभी तक अच्छी होती है और पीहर में लड़की को उसकी माँ होती है तभी तक लाड़ प्यार मिलता है ।

२७४. सासू न्हाई ऊँडे अर् बहू न्हाई कूँडे ।

सास तो बाहर जाकर गहरे पानी में नहाती है किन्तु जवान बहू लज्जा के कारण थोड़े पानी से घर पर ही नहाती है ।

२७५. साँप छछुन्दर वाळी गत ।

छछुन्दर साँप को पकड़ लेता है तब बड़ी उलझन हो जाती है। यदि वह उसे छोड़ देता है तो साँप उसे काट खाता है और नहीं छोड़ता है तो स्वयं छोटा होने के कारण उसको निगल भी नहीं सकता । ऐसी दुविधा पूर्ण परिस्थिति होने पर यह कहावत कहीं जाती है । जैसे—"To Catch a Jartar"

२७६. सुबे को भूल्यो साँझे घर आजावे तो भूल्यो नीं वाजे ।

ज्यादा हानि होने के पहले ही कोई सम्भल जाता है तो उसकी भूल दर गुजर हो जाती है ।

२७७. सूना गाँव में सात दिन रे' वे ।

निठल्ला व्यक्ति बिना किसी काम व्यर्थ ही जगह जगह रुका रह जाता है।

२७८. सूने कोट पलाणी नीं लागे ।

जब कोई लड़ने वाला ही न हो तब ललकारना और बहादुरी बताना व्यर्थ होता है ।

२७९. सोक चोखी अर् सोतायला खोटा ।

सौत से भी अधिक दुखदायी सौत के बेटे-बेटी हुआ करते हैं ।

२८०. सोक पर साळ ।

सपत्नी के हृदय में कसकती रहे ऐसी परिस्थिति खड़ी करना, यह सौतिया डाह के कारण होता है ।

२८१. सोक पर सिणगार ।

सौत आने पर पहले वाली पत्नी भी पति को रिझाने के लिए शृंगार करने लगती है जो पहले नहीं किया करती थी ।

२८२. सोड़ साणूँ पग पसारणा ।

'तेते पाँव पसारिये जेती लम्बी सौर ।' कोई भी कार्य या खर्चा करने के पहले अपनी सामर्थ्य का अनुमान कर लेना बुद्धिमानी है ।

२८३. संतोषी सौ बरस जीवे, क्रोधी बरस पचास ।
ताता की तो खबर नहीं जो घरे आयाँ की आस ।।

संतोषी व्यक्ति यदि सौ बरस जीता है तो क्रोधी केवल पचास बरस ही

जीता है। तेज स्वभाव वाले (Rash) व्यक्ति तो कहीं भी कभी भी मर सकते हैं। वे सही सलामत घर लौट आवें तो समझना कि वे जीवित हैं।

२८४ हथेली में राँद खवायो तो ई के वेके मनें दजा मारी।

हथेली में पकाकर खिलाने पर भी कहते हैं कि हमारा मुँह जलता है। कृतघ्न व्यक्ति के प्रति कितना ही कष्ट उठाकर कोई उपकार क्यों न किया जाय वे उल्टा अपयश देकर बदनाम करने से बाज नहीं आते।

२८५. हम चौड़ा, बाजार सँकड़ा।

अभिमानी व्यक्ति इतना फूलता है और अकड़ा करता है कि उसके लिए बाजार के रास्ते भी जैसे तंग पड़ते हैं।

२८६. हली बऊ गट्टकड़े, नत की नाडा जाय।

अपने प्रेमी से मिठाई खाने की आदी हो जाने से कोई कोई स्त्री नित्य ही मिट्टी खोदने का बहाना बनाकर घर से तालाब पर चली जाया करती है। आवश्यक काम होने का बहाना बनाकर अनुचित कार्य करने पर यह कहावत कहीं जाती है।

२८७. हाथ अर गळे अर् ऊभी बळे।

हाथ पैरों में तो जरूरी गहने भी नहीं है और खड़ी खड़ी ही उबल रही है। निर्धन को अधिक क्रोध शोभा नहीं देता।

२८८. हाथ सूखा अर् बाळक भूखा।

बच्चों को बार बार भूख लगती है अतः कहा गया है कि एक बार खाकर हाथ धोने पर हाथ सूखते ही फिर भोजन माँगने लगते हैं।

२८९. हिया में तो होल्यां ऊठे अर् आओ सगाजी आपां मलां।

किसी कारण से मनमुटाव होने पर समधी के प्रति मन में तो रोष और क्रोध छाया हुआ होता है किन्तु लोकलाज के कारण न चाहते हुए भी उससे गले मिलना पड़ता है। अर्थात् किसी भी व्यक्ति से झगड़ा होते हुए भी 'कहीं लोग बुरा न कहें' इस आशंका के कारण मन के रोष को दबाकर लोकाचार निभाना ही पड़ता है।

अन्योक्तिएं (3)

१. अन का दाज्या बन में अर् बन में लागी लाय ।

घर में अन्न खाने को नहीं मिलने से वन में गये तो वहाँ भी दावाग्नि लग गई । भाग्यहीन जहाँ जाता है वहीं विपत्ति तैयार मिलती है । "प्रायो गच्छति यत्र भाग्य रहितस्तत्रैव यान्त्यापदः" भर्तृहरि

२. अनघड़ हाली की ऊँळी चाल ।
तळै गांगड़ो अर् ऊपरे हाल ।।

गँवार आदमी सब काम उल्टे ही करता है । खराब खेतीहर मजदूर हल की हाल को भी सही नहीं लगा सकता ।

३. अरड़ भोपा ने उड़द बताबो ।

भविष्य बताने वाले भोपे को उड़द बताने से वह चिढ़ता है मानो उसकी भविष्यवाणी की सिद्धि बिगड़ जायगी ।

४. अहमदया की टोपी महमदया के माथे ।

जब इसकी कोई वस्तु उसको और उसकी कोई वस्तु इसको अर्थात् किन्हीं दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच उन्हीं की वस्तुओं का आदान-प्रदान किया जाता है, जिसमें अपनी गाँठ से कोई वस्तु नहीं देनी पड़ती, तब (ऐसी 'तूँबा पलटी' करने पर) यह कहावत कही जाती है ।

५. आई घाणी में मूँते ।

'घाणी में तेल तैयार हो जाने पर पेशाब कर देना'—यह कहावत तब कही जाती है कोई व्यक्ति किसी बने बनाये काम को सहसा बिगाड़ देता है ।

६. आई नदी दह को पाणी लेगी ।

जब नदी में नया पानी बहता हुआ आता है तब जिन खड्डों में पहले का पानी भरा होता है उनमें भी रेत भर जाती है । लाभ थोड़ा और हानि विशेष होने पर यह कहावत कही जाती है ।

७. आकाश ऊँ पड़्यो अर् खजूर में अटक्यो ।

ईश्वर ने कोई वस्तु डाली जो आकाश की अपरिमित दूरी पर तो कहीं नहीं अटकी लेकिन धरती के करीब पहुँच कर खजूर में (अर्थात् मामूली दूर पर) अटक गई । यह कहावत उस विडम्बना के लिए प्रचलित है जब भयंकर बाधाओं को आसानी से पार कर लेने पर भी दुर्भाग्यवश कार्य सिद्धि के एन मौके पर आने वाली छोटी सी बाधा उस कार्य को सिद्ध नहीं होने देती ।

८. आगती कुम्हारी काचा बेचे ।

जल्द बाजी से काम बिगड़ता है और नुकसान उठाना पड़ता है । जल्द बाज कुम्हार की स्त्री के हाँडे कच्चे रह जाते हैं (क्योंकि उन्हें अच्छी तरह पकने से पूर्व ही आग से निकाल लेती है ।)

९. आगती डूमड़ी दो दुवा बत्ता के वे ।

जल्द बाजी में उल्टा अधिक काम करना पड़ जाता है । (और वह बिगड़ जाता है) । जल्दबाज ढोलन को दो दोहे ज्यादा ही बोलने पड़ जाते हैं क्योंकि वह दो दो दोहे एक साथ बोलने लगती है ।

१०. आगेई तो गिलोय फेर नीम चढी ।

गिलोय की बेल नीम पर चढने से और अधिक कड़वी हो जाती है । अर्थात् खराब वस्तु या व्यक्ति को बुरी संगति मिलने से वह अधिक खराब हो जाता है ।

११. आधा में देवी देवता अर् आधा में खेतरपाल ।

जबरदस्त व्यक्ति अपने वाजिब हिस्से से बहुत ज्यादा ले लेता है । जितनी सामग्री से अन्य सभी देवी देवताओं के भोग लगता है उतनी से तो अकेले क्षेत्रपाल को ही भोग लगाना पड़ता है । जब किसी वस्तु का वितरण ऊटपटाँग तरीके से कर दिया जाता है तब यह कहावत कही जाती है ।

१२. आधे गांव होळी अर् आधे गाँव दिवाळी ।

कहीं मुसीबत आई हुई होती है तो कहीं प्रसन्नता की लहर ।

१३. आप आपको ऊँट है, कुँवाड़्याऊँ ना' थी ।

अपना काम बिगाड़ने का प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार है । अपने उँट की नाक में नाथ (पतली डोरी) डालने के लिए कोई गलत एवं हानिकारक औजार भी काम में लेता है तो ऐसा करने के लिए वह स्वतन्त्र होता है ।

१४. आपणो पाडो पराई भैंस चूँखे ।

जब अपना ही व्यक्ति दूसरों के साधनों का लाभ उठाकर हमें लाभ पहुँचाता है तब ऐसा कहा जाता है ।

१५. आम आम कर सेइया निकल गया बंबूल ।

आम का पेड़ समझ कर सींचा लेकिन वह तो बंबूल निकल गया अर्थात् जिसको सज्जन और उपयोगी समझ कर सेवा करते रहे वह तो दुष्ट निकला ।

१६. आंगळयाऊँ पूँचों प्यारो लागे ।

परिवार से ही व्यक्ति की शोभा है। बिना अंगुलियों के पौहँचा सुन्दर नहीं लगता ।

१७. आँटे आई मरे बिलाई ।

बिल्ली आफत में फँसने पर ही मारी जा सकती है। वैसे ही चालाक और धूर्त व्यक्ति तभी वश में हो सकता है जब सभी ओर से विपदग्रस्त हो ।

१८. आँधा के कई चावे, दो आँख्याँ ।

अँधे को दो आँखों से अधिक कुछ नहीं चाहिए। इसी तरह संतोषी व्यक्ति अपनी न्यूनतम खास जरूरत की पूर्ति से प्रसन्न हो जाता है ।

१९. आँधा परेवड़ा ने घट्टी को गाळो ई दीखे ।

अन्धा कबूतर चुगने के लिए कहीं जा नहीं सकता, घर में चक्की के इर्द गिर्द जो कण मिल जाते हैं उन्हें चुगने के लिए फिर फिर कर वहीं आता है। निरुद्यमी और निरुत्साही व्यक्ति किस प्रकार पराश्रित हो जाते हैं, यह बताया गया है।

२०. आँधा ने नूँतणों, दो ने जिमाणा ।

अन्धे व्यक्ति को निमन्त्रण देने पर एक की जगह दो (अर्थात् अन्धे के साथ आने वाले को भी भोजन कराना पड़ता है। किसी एक के साथ मजबूरी में व्यर्थ ही दूसरे की भी मदद करनी पड़ती है तब इस कहावत का प्रयोग करते हैं ।

२१. आँधी पछे मेह आवे ।

आँधी के बाद बरसात होती है। दुःख के बाद सुख आता है ।

२२. आँधी पीसे कुत्ता खाय ।

जिस तरह अन्धी स्त्री आटा पीसती जाती है और साथ-साथ कुत्ते खाते जाते हैं उसी तरह बेपरवाह आदमी कमाई कर लेता है तो भी वह व्यर्थ जाती है ।

२३. आँधी में भभूल्या की कई नँगे ।

आँधी में (भभूल्या अर्थात् चकराती हवा के साथ आसमान में बहुत ऊँचाई तक शिखा की तरह उठती हुई धूल) बवंडर अलग से दिखाई नहीं पड़ता। बहुत बड़ी विपत्ति में छोटी-छोटी तकलीफों की खबर ही नहीं रहती ।

२४. आँधो ऊँदरो घट्टी दोऊँळो फरे ।

अन्धा चूहा चक्की के इर्द-गिर्द ही फिरता रहता है। वहीं उसको कुछ दानें मिल जाते हैं। इसी तरह असमर्थ और असहाय व्यक्ति थोड़े (किन्तु निश्चित) लाभ से चिपका रहता है ।

२५. आँबा की भूख आमल्याऊँ न जावे ।

आम खाने के इच्छुक व्यक्ति को इमली खिलाने से कहीं संतोष हो सकता है। अच्छी वस्तु के उपभोग की कमी साधारण वस्तु से पूरी नहीं हो सकती ।

२६. **उछलती का डोका सोधे ।**

उछलती हुई गाय के थन पकड़ने से कोई लाभ नहीं होता । निराशाजनक स्थिति में सफलता के लिए प्रयत्न करने की नादानी को लक्ष्य किया गया है ।

२७. **उड़ता कागला के बेसवार लगावे ।**

कौश्रा जैसे चालाक ग्रौर तेज (ग्रौर फिर उड़ते हुए) जानवर के भी हल्दी लगा देवे, इतना चालाक है ।

२८. **ऊँचाया गंडक एहड़े न चढ़े ।**

उत्साही ग्रौर तेज व्यक्ति ही बड़ा काम कर सकते हैं। जिस कुत्ते को उठाकर ले जाना पड़े वह क्या जानवरों की शिकार में दौड़ सकेगा ।

२९. **ऊँट की खोड़ ऊँट न खावे ।**

ऊँट के स्वभाव की खराबी के कारण बहुधा उसी की टाँग टूट जाती है । स्वयं के स्वभाव की खराबी स्वयं के लिए ही दु:खदायी होती है ।

३०. **ऊँट की लाम्बी गरदन काटवाने थोड़े ई है ।**

किसी के पास ग्रधिक सम्पत्ति है तो वह लुटाने के लिए नहीं है ।

३१. **ऊँट को पग देख अर् छाळी को पग नीं तोड़णी आवे ।**

ऊँट के मुकाबले बकरी का पाँव बहुत ही छोटा होता है सिर्फ इसीलिए उसको तोड़ा नहीं जा सकता । दूसरों के मुकाबले ग्रपनी स्थिति साधारण सी है, सिर्फ इसीलिए उसको बरबाद नहीं किया जा सकता ।

३२. **ऊँट को पाद नीं तो जमीं को अर् नीं आकाश को ।**

जो व्यक्ति किसी भी व्यक्ति के लिए किसी काम का नहीं होता, उसको यह उपमा दी जाती है।

३३ **ऊँट ग्यो तो कई कामळो कोशे ।**

ऊँट खो जाने पर रेबारी (ऊँटों का चरवाहा) की कम्बल छीन लेने से क्या ऊँट की कीमत वसूल हो सकती है ? कम्बल के ग्रतिरिक्त ग्रौर उसके पास है ही क्या ? इस प्रकार की स्थिति में विवेक ग्रौर संतोष (सब्र) धारण कर लेना पड़ता है ।

३४. **ऊँट तो अरड़ावता ई लदे ।**

ऊँट ग्रावाज करते हैं, फिर भी लादे जाते हैं। (क्योंकि वे इसी काम के लिए होते हैं) । जो जिस उपयोग के लिए होते हैं उनसे वह काम उनके द्वारा प्रतिरोध किये जाने के बावजूद भी लेना ही होता है ।

३५. **ऊँट मरे तोई मारवाड़ सामो मूँडो ।**

ऊँट मरता है तो भी रेगिस्तानी जीव होने के कारण मारवाड़ की ग्रोर मुँह करता है। विदेश में विपत्ति पड़ने पर भी मातृ-भूमि को नहीं भुलाया जा सकता । जिसके प्रति मोह होता है उससे विमुख होना बहुत कठिन है ।

३६. ऊँदरी का जाया तो दरड़ा'ई खो'दी ।

वंश परम्परागत कुकर्मियों के लिए यह अन्योक्ति कही जाती है । चूहे के बच्चे तो बिल ही खोदेंगे ।

३७. ऊँदरी ने सूँठ को गाँठ्यो लादग्यो जो पंसारण बण बैठी ।

चूहिया को सौंठ का टुकड़ा मिल गया तो वह पंसारिन बन कर बैठ गई । छोटा व्यक्ति थोड़ी सिद्धि से ही बड़ा आडम्बर जमा लेता है ।

३८. ऊँदी दाँथली ऊँ घास न कटबो करे ।

कार्य की सही विधि नहीं अपनाने से कोई भी कार्य सिद्ध नहीं होता । उल्टी दँतारी (हँसिया) से घास नहीं काटा जा सकता ।

३९. एक म्यान में दो तरवाराँ नीं रे वे ।

विरुद्ध प्रकृति या स्वार्थ वाले कोई दो व्यक्ति एक साथ नहीं टिक सकते ।

४०. एक माछली सारोई तलाब गंदोल्यो ।

एक मछली मरकर सड़ती है तो सारा ही तालाब गंदा कर देती है । एक ही नालायक आदमी अपने सारे समाज को भ्रष्ट और बदनाम कर देता है ।

४१. एकली लकड़ी नहीं बले नहीं उजालो होय ।

कई सारी लकड़ियाँ एक साथ होने पर ही आग जलती रह सकती है, अकेली लकड़ी बराबर नहीं जलती रह सकती और उससे अग्नि या प्रकाश नहीं मिल सकते । इसमें अकेलेपन की असायावस्था और संगठन की शक्ति के महत्व को लक्ष्य किया गया है ।

४२. एकलो चणो भाड़ नीं फोड़े ।

एक चणा भाड़ को नहीं फोड़ सकता । अकेला व्यक्ति किसी महान कार्य को नहीं कर सकता ।

४३ एकलो भसे कन पातल चाटे ।

दूसरे कुत्तों को भोंकना और पत्तल चाटना, दोनों काम एक अकेले कुत्ते से नहीं हो सकते । विरोधियों को रोकना और कोई लाभ उठाना, दोनों काम एक साथ अकेले व्यक्ति से नहीं हो सकते ।

४४. एँस का टीपणा बक जावे तो गंगाजी न्हाया ।

पंचाङ्ग जिस वर्ष का होता है उसी वर्ष में यदि नहीं बिका तो बाद में रद्दी के भाव भी नहीं बिकता और बहुत नुकसान उठाना पड़ता है । इसलिए पंचाङ्ग उसी साल बिक जाने का बड़ा सौभाग्य माना है । एक ही बड़ा काम हो और वह यथा समय निपट जाय, इसके लिए यह अन्योक्ति प्रयोग में ली जाती है ।

४५. ओशगाली मनखी ऊँदराँ भेली सुवे ।

काम पड़ने पर बिल्ली भी चूहों के साथ सोती है । बड़ों का छोटों से काम पड़ता है तब वे बड़े नम्र हो जाते हैं । 'प्रयोजनापेक्षितया प्रभूणां प्रायश्चलं गौरवमाश्रितेषु । (कालिदास)

४६. कई क तो धो चीकणां, कई क कुराड़ा भोटा ।

जब किन्हीं दो (विरोधी) पक्षों में दोनों तरफ कुछ न कुछ अवगुण होता है तब यह कहा जाता है कि कुल्हाड़ा भोटा है तो लकड़ी भी चिकनी है। (कटने में देर लगना अवश्यम्भावी है)।

४७. कठे राजा भोज, कठे गाँगलो तेली ।

हैसियत में जमीन आसमान का अन्तर होने पर यह उपमा दी जाती है।

४८. कड़वी बेलड़ी के कड़वा ई फल लागे ।

जैसा कुटम्ब होता है वैसी ही संतान होती है। बेल ही कड़वे बीज की है तो फल कैसे मीठे हो सकते हैं !

४९. कदी क गाड़ो नाव में, कदी क नाव गाड़ा में ।

अवसर की बात है। काम हर एक का हर एक से आपस में पड़ता ही है। वर्षा अधिक होती है तो गाड़ी को नाव में रखकर नदी पार करना पड़ता है। नाव को भूमि पर लाने ले जाने के लिए गाड़ी में रखना पड़ता है।

५०. कबर साँकड़ी, मुर्दा घणाँ ।

जरूरत के अनुसार जगह न मिलने पर यह कहावत कही जाती है। (जबकि उम्मीदवारों की संख्या बेहद होती है)।

५१. कबूतर ने कूड़ोई कूड़ो दीखे ।

इसमें किसी एक ही आश्रय से हमेशा बँधे रहने की लाचारी को लक्ष्य किया है। कबूतर के लिए कुए की कोटर ही एक मात्र सुरक्षा-स्थान है अतः उसे कुआ ही दिखाई देता है।

५२. कर रे दरजी सींवणों, ई में ई मरणो अर् जीवणो ।

दरजी का सारा जीवन सीने-पिरोने में ही पूरा होता है। एक ही प्रकार के सांसारिक क्रिया-कलाप सबके जीवन से जुड़े हुए हैं, सबको करने पड़ते हैं; इस निराशा और लाचारी को लक्ष्य करते हुए बहुधा यह कहावत कही जाती है।

५३. कागला के सराप्याँ ढोर न मरे ।

स्वार्थी और हिंसक की बददुआ का कोई प्रभाव नहीं होता। कौए के शाप देने से मवेशी नहीं मरती।

५४. कागलो कोयल ने केवे क थूँ तो काळी है ।

जो स्वयं दोषी है वह दूसरों के दोष बतावे, ऐसी स्थिति के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है। कौए और कोयल का क्या मुकाबला, पर कौवा यदि कोयल को कहे कि तू तो काली है, तो कहाँ तक उचित है। अंग्रेजी में कहा जाता है—'Those who live in glass houses should not throw stones at others.'

५५. कागलो बारा बरस में बोल्यो तोई कुराँ कुराँ ।

दुष्ट आदमी लम्बे समय तक मौन रखकर भी मौन टूटने पर भौंडी बात ही बोलेगा ।

५६. काजळू कई आँख भारी वे वे ।

काजल का हल्का बोझ आँखों को भारी नहीं पड़ता । बहुत अधिक व्यय-भार में नगण्य सी वृद्धि हो जाने से कोई फर्क नहीं पड़ता ।

५७. काजी जी की कुत्ती मरी जदे हजार भेळा विया,
काजी जी मरचा जदे कोई न आया ।

अफसर ओहदे पर होता है तब तक सब उसकी खुशामद करते हैं । उसके पदच्युत होने (या मर जाने) पर कोई जा कर भी नहीं झाँकता ।

५८. काठ समाणो छोड़ो पड़े ।

जैसी लकड़ी होगी वैसा ही उसका छिलका भी उतरेगा । कम धन वाले से अधिक धन दान में मिलने की आशा करना व्यर्थ है ।

५९. काठ की हाँडी बार बार न चढे ।

'फेर न ह्वे हैं कपट सों ज्यो कीजे व्यापार । जैसे हाँडी काठ की चढे न दूजी बार ।' झूँठ-कपट पहली बार चल जाता है, दूसरी बार नहीं ।

६०. काणीं गाय की आखड़्या ई न्यारी ।

एबी आदमी के व्रत-नियम भी अण्ड-बण्ड और अनोखे ही होते हैं ।

६१. कात्यो पींदचो कपास वेग्यो ।

पींजी हुई रुई और काते हुए सूत की ऐसी दशा बिगड़ी कि वह फिर से कपास हो गया । किया कराया व्यर्थ होकर जब कोई काम उसकी पूर्व स्थिति में आ जाता है तब यह कहावत कही जाती है ।

६२. काळ में अधिक मास ।

दो विपत्तियों के एक साथ आने पर यह कहावत कही जाती है ।

६३. काँकड़ में मोर नाच्यो, कुण देख्यो ।

जंगल में मोर के नाचने का कोई महत्व नहीं होता क्योंकि वहाँ उसे कोई नहीं देखता । कोई भी महत्वपूर्ण और दर्शनीय कार्य उसके प्रशंसकों और दर्शकों के अभाव में करने से क्या लाभ !

६४. कीड़ी के वास्ते मूत को रेलो ई भारी पड़े ।

छोटे आदमी को दुःख पहुँचाने के लिए थोड़ी सी विपरीत परिस्थिति ही काफी होती है ।

६५. कीड़ी ने कण, हाथी ने मण ।

ईश्वर सबको यथा योग्य सामग्री देता है, चींटी को कण तो हाथी को एक मन ।

६६. **कीड़ी ने पंसेरी की मार।**

चींटी को पंसेरी की मार (चोट) मारना अर्थात् नितान्त कमजोर या असमर्थ को भारी प्रहार, सजा या नुकसान पहुँचाना।

६७. **कुम्हार फूटा हाँडा में ई ज खा'ई।**

कारीगर (बनाने वाला) अपने द्वारा बनाई गई सुन्दर वस्तुओं का उपयोग स्वयं नहीं करता। वह उन्हें अच्छे दाम के या ख्याति के लालच में सुरक्षित रखता है। बिगड़ी हुई वस्तुओं को अपने काम में लेता है।

६८. **कूकड़ा के तो बखेरा में ई लाभ।**

मुर्गे को तो अन्न के बिखर जाने में ही फायदा है जिससे कुछ दानें चुगने को मिलें। चालाक व्यक्ति दूसरों की फूट में ही लाभ उठाते हैं।

६९. **कैंकड़ा का जाया गार ई निंगलै।**

कैंकड़े का बच्चा तो मिट्टी ही खायगा। वंशानुगत (या परंपरागत) प्रवृत्तियों को लक्ष्य करके इस कहावत में बुरा आचरण करने वालों पर व्यंग्य किया गया है।

७०. **के तो हंसा मोती चुगे, के लंघण करे।**

मनस्वी व उत्तम व्यक्ति नीच कार्य नहीं कर सकता। हंस को (चुगने के लिए) मोती नहीं मिलेंगे तो वह भूखा ही रहेगा।

७१. **कोई की चियाँ भुँवे अर् कोई की मँगरचाँ भुँवे।**

सब में कोई न कोई कमजोरी होती ही है। मकान की खपरेल वाली छत में किसी-किसी के यहाँ छत के सिरे वाले हिस्से (मँगरी) से तो कहीं कहीं ढलकान (चियाँ) वाले हिस्से से बरसात में पानी टपकता है, मगर टपकता जरूर है।

७२. **कोरो रियो रे सीदड़ा सदा सोर के संग।**

तेल भरने के बरतन को सम्बोधन करके कहा गया है कि तुझ में बारूद भरने से तू कोरा का कोरा रह गया है। बारूद के बजाय तेल के साथ रहता तो उससे तर हो जाता। इसमें संगति के प्रभाव को लक्ष्य किया है।

७३. **कंडीर का फूल के तो महादेव जी के माथे चढे, के रोड़चाँ में ई ज पड़े।**

कनेर के फूलों की सुगन्धि अच्छी नहीं होती अतः आक धतूरे के फूलों की तरह महादेव जी को चढाये जाने के अतिरिक्त उनका कोई उपयोग नहीं होता और उन्हें कचरे में डाल दिया जाता है। कनेर के फूल की दो प्रकार की परिस्थितियों से मनुष्य के अहोभाग्य और दुर्भाग्य को लक्ष्य किया गया है।

७४. **कँरगेटचा वाळा रंग बदले।**

गिरगिट की तरह रंग बदलना, यह कहावत अवसरवादियों के लिए कही जाती है जो परिस्थिति के अनुसार अपना रंग-ढंग बदलते रहते हैं।

७५. खल गुल एक ही भाव।

जहाँ ऊपर का कोई अधिकारी देखने वाला नहीं होता वहाँ 'पोपाँबाई वालो राज' और 'अन्धेर नगरी अनबूझ राजा टके सेर भाजी, टके सेर खाजा' की तरह गुड़ और खल एक ही भाव बिकते हैं।

७६. खात तो खोड़लां के भी निपजे।

खेत में खाद देने पर तो पैदावार मूर्खों के भी हो जाती है।

७७. खालड़ा की देवी ने खारड़ा की पूजा।

चमड़े की (मूर्ति वाली) देवी की पूजा जूतों (खारड़ा) से ही करना ठीक है। जो जिसके योग्य हो उसको वैसा ही सत्कार मिलना चाहिए।

७८. खाँखरा के तो तीन का तीन पान।

ढाक के तो वर्षा ऋतु आने पर भी एक डंठल में तीन पत्ते ही लगते हैं। तीन से चार नहीं होते। इसी तरह मंद भागी अधिक परिश्रम करने पर भी उसी स्थिति में बने रहते हैं जिसमें पहले से होते हैं।

७९. खाँत कर तो खाटो राँद्यो जीमें पड़्या डबकोड़ा।

बड़े शौक के साथ कढी बनाई परन्तु उसमें गुठले पड़ गये। अच्छा काम करने का प्रयत्न करते हुए भी कोई न कोई गड़बड़ हो ही जाती है।

८०. खाँदयो खाँद देवे, लारे थोड़े ई बळे।

मृतक को अर्थी पर उठाकर ले जाने वाला (खाँदिया) उसे श्मशान तक पहुँचा देगा लेकिन उसके साथ जलेगा नहीं। कोई दुखी दर्दी अगर यह उम्मीद करे कि उसका दु:ख कोई अपने ऊपर उठा लेगा तो उसे सोचना चाहिए कि मामूली सहायता तो कोई भी कर देगा लेकिन ऐसी उम्मीद पूरी नहीं होगी।

८१. खेत की निंपज तो बाड़ ई के देवे।

अच्छी मजबूत बाड़ को देखकर सहज ही अनुमान हो जाता है कि फसल कीमती व अच्छी है (तभी उसकी हिफाजत को जरूरी समझा गया है)।

८२. खेर अर् धोकड़ो आलोई बळे, सूखोई बळे।

कुछ वृक्ष (खेर, धोकड़ा) ऐसे होते हैं जिनकी हरी (गीली) लकड़ियाँ भी वैसी ही अच्छी तरह जलती हैं, जैसी सूखने पर। कुछ व्यक्ति भी ऐसे होते हैं जो अच्छी-बुरी दशाओं में भी एक समान उपयोगी होते हैं।

८३. खेरो पड़्याँ माखी आवे।

मीठे का कण पड़ा होगा तभी उस पर मक्खी आकर बैठेगी, अन्यथा नहीं। दुष्ट व्यक्ति को भी मौका मिलेगा तभी वह नुकसान करेगा, अन्यथा नहीं।

८४. गदेड़ा की गूणती में नो मण को बाँदो नीं।

गदहे पर लादे गये माल में ९ मन का फर्क नहीं हो सकता। थोड़ी वस्तु में बड़ा अन्तर नहीं चलता।

८५. गदेड़ी गंगाजी जावा सूँ उऋण नीं वे वे ।

गदही गंगा-स्नान करने से पवित्र नहीं हो सकती है । जैसे 'सूरदास खल कारी कामरी चढत न दूजो रंग ।' दुष्ट लोगों की प्रकृति किसी प्रकार भी नहीं बदल सकती ।

८६. गल्लो गंज ज्योत सवाई, ज्ञान गण्यो ऽर् खुरपो कड़ाई ।

हलवाई थोड़ी-थोड़ी मिठाई बेचता है जिससे ढेर सारे पैसे आ जाते हैं तो उसका मन बढ़ता है और दुकान पर अच्छी रोशनी सजाता है; लेकिन अन्त में जब हिसाब मिलाता है तो आय-व्यय बराबर होकर केवल खुरपा कड़ाई बच रहते हैं । इस कहावत में उमंग ही उमंग में घाटे के धन्धे पर व्यंग्य किया गया है ।

८७. गबाड़े वाळी केरड़ी अर् उऋण हुयो गवाल ।

बछड़ों को उनके मालिकों के बाड़े में दाखिल कर देने पर ग्वाले का बोझ (एक प्रकार से) उतर जाता है । किसी धरोहर को उसके मालिक को सुपर्द करने पर ही निश्चिन्त हो सकते हैं ।

८८. गाड़ी के पाडी बाँध दी दी ।

गाड़ी चलेगी तो पाड़ी को भी साथ-साथ चलना पड़ेगा । इससे पाड़ी को घेरने वाला (हाँकने वाला) अलग से नहीं चाहियेगा । इस उदाहरण से ऐसी चतुराई को लक्ष्य किया है जिससे स्वयं के महनत न करने पर भी काम बराबर हो जाय ।

८९. गाड़ी तो उवाँगी ई चाले ।

गाड़ी के पहियों में तेल की चिकनाई देने पर ही वह ठीक तरह चलती है इसी प्रकार महनत करने वाले को ताकत की खुराक या काम बनाने वाले को कमीशन रिश्वत आदि देने पर काम सुधर सकता है ।

९०. गाय के भैंस कई लागे ।

गाय और भैंस के भला क्या सम्बन्ध हो सकता है । जब किसी के साथ कोई सम्बन्ध स्थापित करने की परिस्थितियाँ अनुकूल न होते हुए भी सम्बन्ध होना जाहिर किया जाता है तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

९१. गाय दुई ने गंडकाँ ने पा ई ।

मनुष्य कभी-कभी क्रोध, आवेश या दुर्भावना के कारण काम कर देता है जिसमें दूसरों के साथ-साथ उसका स्वयं का भी नुकसान होता है । गाय का दूध निकाल कर कुत्तों को पिला देने में कौनसी बुद्धिमानी है ।

९२. गायाँ तो उछरगी अर् पोवटा छोड़गी ।

गायें चरने के लिए चली जाती हैं तो गोशाला में केवल उनका गोबर छूट जाता है । यह एक प्रकार से इस अर्थ में है, कि जैसे, 'डेरा तो लदग्या ने गदेड़ा रेग्या ।'

९३. गाय न बच्ची, नींद आवे अच्छी ।

हमारे यहाँ न तो गाय है और न ही बछड़ी । अतः सुख की नींद सोते हैं । किसी प्रकार की उलझन या जिम्मेदारी न होने पर अपने हाल में मस्त रहने वालों को लक्ष्य किया है । (गाय या बच्ची हो तो रात में भी जगकर घास डालना ही पड़ता है ।)

९४. गाँग्या ग्या अर् पराग्या आया ।

जैसा अयोग्य व्यक्ति गया, उसके स्थान पर वैसा ही अयोग्य व्यक्ति आ गया ।

९५. गाँव की छोरी अर् पर गाँव की बीनणी ।

जैसे—'गाँव का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध ।' अपने ही गाँव में उतनी पूछ नहीं होती, जितनी पर गाँव में होती है ।

९६. गाँव को छोरो अर् बारलो बींद ।

विवाह के समय दूल्हे को अपने ही गाँव में तो प्रायः छोकरा ही कहते हैं । यह अतिपरिचय के कारण होता है । कहा भी है—"अतिपरिचयादवज्ञा" ।

९७. गुड़ घी सूँ सींचे तोई नीम न मीठा होय ।

गुड़ और घी से सींचे जाने पर भी नीम का पेड़ मीठा नहीं हो सकता । दुष्टों के स्वभाव को सुधारने का कोई उपचार संभव नहीं । 'इण परगत (प्रकृति) री एक, रची स ओखद राजिया ।'

९८. गुड़ देताँ मर जावे तो विष क्यूँ देणो ।

'माहुर दीनें जो मरे क्यों दीज्ये विष ताहि ।' कोई मीठा व्यवहार करने पर ही अपनी बुराइयों से बाज आ जाये तो उसको कटुव्यवहार करके व्यर्थ ही अपना विरोधी क्यों बनाया जाय ।

९९. गुल के माखी चेंटे ई ज ।

जहाँ गुण होंगे वहाँ उनके ग्राहक अपने आप आवेंगे । जहाँ गुड़ होगा वहाँ मक्खिएँ अपने आप आवेंगी ।

१००. गुल बिना कँई चौथ ।

चौथ (गणेश चतुर्थी) का त्यौहार तो गुड़ के लड्डू बनाए बिना नहीं मनाया जा सकता । किसी खुशी के मौके पर किसी खास व्यक्ति की उपस्थिति अनिवार्य समझी जाने पर यह कहावत कही जाती है ।

१०१. गूजर को घी मीठो लागे ।

क्योंकि मुफ्त में मिलता है, गूजर के यहाँ बहुत भैंसें होती हैं, खूब घी-दूध होता है, उसे खरीदना नहीं पड़ता अतः खूब खिलाता है, फिर खानेवाले को मीठा क्यों नहीं लगेगा । मुफ्त की चीज हो और वह भी खूब मिले तो किसको अच्छी नहीं लगेगी ।

१०२. गूंगा ने गुड़ मल्यो जो नींठ मल्यो ।

गुड़ से मीठास का वर्णन करने में अक्षम गूंगा मन ही मन प्रसन्न होता है और उसके स्वाद का आनन्द लेता रहता है। गूंगा होने से ऐसी वस्तु वह माँग नहीं सकता अतः उसको गुड़ जैसी वस्तु मिलना भाग्य की ही बात है।

१०३. गोल तो अँधारा में ई मीठो लागे ।

गुड़ अँधेरे में भी मीठा ही होता है, अर्थात् अच्छी वस्तु सभी परिस्थितियों में आकर्षक और सुखदाई होती है।

१०४. गोयरा के पूँछड़े पीपलो डूबे ।

वर्षा होते समय गोयरे (एक जहरीले जानवर) पर बहुधा बिजली पड़ती है तो उसके साथ-साथ पीपल का वृक्ष (जिस पर वह चढ़ा हुआ होता है) भी जल कर राख हो जाता है। अभिप्राय यह है कि पापी के साथ उसका साथी या आश्रयदाता (जो चाहे बहुत धर्मात्मा ही क्यों न हो) भी नष्ट हो जाता है।

१०५. गँडकड़ो ई उकराळ ने बैठे ।

कुत्ता भी जगह साफ कर बैठता है। आलसी व्यक्ति जब गन्दगी में पड़ा रहता है तब यह कहावत कही जाती है।

१०६. गंडक का मूँडा मूँ पड़्यो ज्यो ई नफे ।

सारी खाद्य सामग्री कुत्ता ले चला जाय तब उसके मुँह से गिर पड़े उसी में गनीमत है। दुष्ट व्यक्ति के एकाधिकार से छूटकर जो भी मिला उसी में लाभ समझना चाहिए।

१०७. गंडक के गळे नोळी कुँण राखे ।

कुत्ते के गले में बँधी हुई रुपयों की थैली को तो, चाहे उसे पुचकार कर चाहे मारकर कोई भी ले लेगा। अयोग्य व्यक्ति बहुमूल्य वस्तु की सुरक्षा नहीं कर सकता।

१०८. गंडक के भार गाडो चाले ।

कुत्ता (छाया के लिए) गाड़ी के नीचे साथ-साथ चलता है तो मानो यह समझता है कि उसी के कंधों के बल गाड़ी चल रही है। मिथ्याभिमानी लोग किसी कार्य में तनिक-सी पूछ होते ही उसका सारा श्रेय अपने पर लेने के लिए स्वाँग करते हैं।

१०९. गंडक को माँस तो खार घाल्याँ ई सीजे ।

कुत्ते का माँस काफी क्षार डालने पर ही गल सकता है। दुष्ट आदमी भी समुचित दण्ड देने पर ही नम्र हो सकता है और काम आ सकता है।

११०. गंडक को सारो व्हे तो हाँडा में ई जबळे ।

कुत्ते का बस चले तो जिस बर्तन में भोज्य वस्तु बनी है उसी में खाना शुरू कर दे। नीच व्यक्ति को खुला अवसर नहीं देना चाहिए।

१११. घण गाजण बरसे नहीं, भूसण कुत्ता न खाय ।

गरजने वाला बादल अधिक नहीं बरसता, और भौंकने वाला कुत्ता अधिकतर नहीं काटता। अधिक शेखी मारने वाले व्यक्ति काम बहुत थोड़ा करते हैं।

११२. घणां कांगां मालवो ई मूँगो ।

भिखमगें बहुत अधिक हो जाने पर मालवे जैसे उपजाऊ प्रान्त में भी भिक्षा महँगी हो जाती है। अभिप्राय यह है कि किसी मौके पर जरूरत से अधिक संख्या हो जाने पर उनका महत्त्व नहीं रहता और कठिनाई बढ़ जाती है।

११३. घणीं घट्याँ गऊँ निकल्यो तो ई आखो को आखो ।

बहुत संस्कार करने पर भी मूर्ख व्यक्ति ठोठी ही रह जाता है उसकी बुद्धि चैतन्य नहीं होती। कई कई घट्टियों में पीसा जाने पर भी गेहूँ का दाना ज्यों का त्यों रह जाता है।

११४. घणीं नायण्याँ भेळी वे तो जापो बगड़े ।

प्रसव-काल में कई दाइयाँ इकट्ठी हो जाने पर प्रसवकार्य में खराबी रह जाना स्वाभाविक है। बहुत लोग एकत्रित होने पर वे एक मत होकर कार्य नहीं करते जिससे कार्य बिगड़ जाता है। जैसा कि अंग्रेजी में कहा है, 'Too many cooks spoil the broth.''

११५. घर आँगणें बोरड़ी लगाओ मती वा पागड़ी फाड़े ।

घर के आँगन में बेर का पेड़ लगाने पर उसके काँटों से उलझ-उलझ कर पगड़ी फट जाती है। अतः वहाँ यह पेड़ नहीं लगाना चाहिए। कंटक प्रकृति वाले व्यक्ति को घर के नजदीक नहीं बसाना चाहिए, वह हर प्रकार से नुकसान पहुँचाया करता है।

११६. घर का डाँडा सूँ आँख फूटे ।

घर के छत के डंडे से आँख फूट गई, अर्थात् जो अपना ही था और जिससे हित की आशा की जाती थी उसी ने अन्त में हानि पहुँचाई।

११७. घर का सुआ बारणे अर बारला हुया परधान ।

खुद के योग्य व्यक्तियों की कद्र न करने से वे बाहर जाकर नौकरी करते हैं, ऐसे राजा के यहाँ बाहर के लोग आकर दीवान का काम करते हैं।

११८. घर की मुर्गी दाल बराबर ।

अपने काबू में होने वाली वस्तु की चिन्ता कम होती है जैसे मलयाचल पर्वत पर चन्दन ईन्धन की तरह जलाया जाता है।

११९. घर को गंडक घर में शेर।

अपनी गली में तो कुत्ता भी शेर होता है। परिचित स्थान पर कमजोर भी वीरता का दम भरते हैं।

१२०. घर में लाय लागे तो घर का ऊँदरा कई सुख पावे।

परिवार पर आये सकट का प्रभाव सब पर होगा। घर में आग लग जायगी तो वहाँ के सभी आश्रित जन दुःख पावेंगे। चूहे भी झुलसकर भग जावेंगे या मर जावेंगे।

१२१. घाटो उत्तम है बाकी सींदरी को छेड़ो लेवे तो पार ई नीं पावे।

पानी भरने का घाट उत्तम है किन्तु यदि सबकी पानी भरने की रस्सियाँ देखी जाँय तो बुराइयों का पार नहीं। स्थान अच्छा हो तो सबकी बुराइयाँ ढक जाती हैं, यदि दूसरों के दोषों को ध्यान से देखा जाय तो सब में कोई न कोई बुराई अवश्य मिल जाती है।

१२२. घाणी को बलद बारा कोस चाले तोई घर में को घर में।

गृहस्थी कमा कमा कर थक जाता है फिर भी आगे नहीं बढ़ पाता तब अपनी कमाई के परिश्रम को घाणी के बैल के चलने की उपमा देता है।

१२३. घाणी पे गंडक।

कुत्ता खल नहीं खा सकता फिर भी वह घाणी पर रहकर दूसरों को लाभ उठाने से वञ्चित रखता है। दुष्ट लोग किसी पदार्थ का स्वयं उपयोग नहीं कर सकते तो भी दूसरों को उसका उपयोग नहीं करने देते हैं। जैसे—'A dog in the manger.'

१२४. घी ढुळ्यो तो ई मूँगाँ में।

घी गिरा तो भी मूंगों में। वास्तव में जब कोई विशेष हानि नहीं होती तब यह कहावत कही जाती है।

१२५. घोड़ा तो भूखाँ मरग्या अर् गदेड़ा के रातब।

योग्य व्यक्तियों को भूखों मारकर (अर्थात् तकलीफ देकर) (गदहों) अयोग्य व्यक्तियों को माल खिलाना (अर्थात् आराम देना) मूर्खता है।

१२६. घोड़ी ठाण दी दो वे ई।

कोई बहुत बड़ी गप या अनहोनी घटना सुनने पर यह कहावत कही जाती है। दिन के वक्त घोड़ी के बच्चा पैदा होने को अशुभ माना जाता है जिसके निवारण के लिए कोई बड़ी गप छोड़ना आवश्यक समझा जाता है।

१२७. घोड़ो घोड़ा की लात सूँ नीं मरे।

घोड़ा घोड़े की लात से नहीं मरता। जब दो समान बल वाले व्यक्ति लड़ते हैं तो आपस की हानि अपने आप सहन कर लेते हैं।

१२८. घोड़ो तो दौड़ दौड़ ने मरे ने सवार के मन ई नीं भावे।

घोड़ा अपने पूर्ण वेग स दौड़ता है फिर भी सवार के मन को तृप्ति ही

नहीं होती। भरसक महनत करने पर भी यदि कोई प्रसन्न न हो तो यह कहावत कही जाती है।

१२९. चक्कू न कटे, खड़बूजो क'टी।

चाहे चाकू को खरबूजे के ऊपर रखो या नीचे, कटेगा तो खरबूजा ही। बलशाली और समर्थ लोगों के मुकाबले नुकसान उन्हीं का होता है जो परवश और असहाय होते हैं।

१३०. चड़स के लार उलाळ्यो है।

चड़स को पानी में जल्दी डुबाने के लिए जो पत्थर बाँधा जाता है वह तो परवश है। उसका कोई अपराध नहीं है, फिर भी उसको चड़स के साथ पानी में डूबना पड़ता है। सेवक को स्वामी के साथ दुःख-सुख का भागीदार बनना पड़ता है।

१३१. चणा है तो चाबवा वाला कोय ने।

जहाँ घर में धन दौलत तो होती है पर उसका उपभोग करने के लिए सन्तान नहीं होती तब यह कहावत कही जाती है।

१३२. चार ई खूणाँ एकादशी अर् वच में शिवरात्रि।

चारों कोनों में एकादशी और बीच में शिवरात्रि है। यह महान निर्धनता (भुखमरी) का द्योतक है क्योंकि पाँचों ही तरफ उपवास का सामना है।

१३३. चार दिनां की चाँदणी, फेर अँधारी रात।

सुख की घड़ियाँ अस्थाई होती है किन्तु दुःख तो दीर्घकाल तक टिकता है।

१३४. चालता गाडा की लोर काढणी।

चलती गाड़ी का लोहे का धुरा काटकर उसे बिलकुल बेकार कर देना अनुचित है। सुख से चलती हुई घर-गृहस्थी को उजाड़ देना (संकट में डाल देना) दुष्टता है।

१३५. चालता बळद के आर देणी।

चलते हुए बैल के लकड़ी से ठेस लगाना ठीक नहीं है। वह लात मारेगा या गाड़ी को गड्ढे में गिरायगा। जो उलहने का मौका भी नहीं आने देता इस तरीके से काम करने वाले को छेड़ना या तंग करना अच्छा नहीं।

१३६. चाँद के सेलाणें गोळी मारणी।

चाँद को लक्ष्य करके गोली चलाने से क्या फायदा। जो अपनी पहुँच से कोसों दूर हो, ऐसे काम को हाथ में लेना नादानी है।

१३७. चियां को पाणी मंगरयां नी चढे।

खपरेल वाले मकान की छत पर बरसात का पानी ढाल के विरुद्ध ऊपर नहीं चढ़ सकता। स्वाभाविक रीति से ही कोई काम शोभा पाता है, विपरीत रीति से नहीं।

१३८. चिड़ी चुगवा गी ज्यो पाँख ई काट लीदा ।

छोटे अपराध के लिए कठोर सजा देना एक प्रकार की निर्दयता है । जो खाने की चीज मिले उसे चुगलेना चिड़िया के लिए स्वाभाविक है । इसकी सजा उसके पंख काटकर देना अनुचित कठोरता है ।

१३९. चीकणे घड़े पाणी न ठें'रे ।

चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता । दुनियादारी में रचे पचे आदमी पर सदुपदेश कारगर (प्रभावकारी) नहीं होता ।

१४०. चूड़ी में चूड़ी खटा जावे ।

एक पति की मौजूदगी में कोई स्त्री अन्य उपपति कर लेवे तो भी पोल चल जाती है । गर्भ रहजाने पर भी बदनामी का अंदेशा नहीं रहता, उसे स्वपति का ही मान लिया जाता है ।

१४१. चेत को मियो अर् चमार की छाछ ।

चैत्र मास की बरसात और चमार के घर की छाछ किसी काम की नहीं होती ।

१४२. चोंच दी दी तो चुगो ई दे' ई ।

भगवान ने मुँह दिया है तो खाने को भी देगा । अर्थात् शरीर बनाया है तो भरण-पोषण की जिम्मेदारी भी उसी पर है ।

१४३. छाळी रोवे जीव ने, खटीक रोवे खाल ने ।

लोगों को अपने अपने स्वार्थ की चिन्ता लगी रहती है जिससे दूसरों की जिन्दगी की पर्वाह कोई नहीं करता । बकरी को मारते वक्त उसका चमड़ा किस जगह काट कर मारने से ठीक बिकेगा, कसाई को यही खयाल रहता है जबकि बेचारी बकरी को जान के लाले पड़ जाते हैं । दुर्बल पक्ष वाले की ऐसे ही मुसीबत होती है ।

१४४. छींको टूटचो जदी मनखी को डाव लागो ।

बिल्ली कूदकर तो छींके पर रखे दूध दही को नहीं खा सकती पर छींका ही टूट जाता है तब तो उसे खूब खाने का मौका मिल जाता है । आश्रय के टूट जाने पर आश्रित को हड़प जाने का मौका उसके शत्रुओं को मिल जाता है ।

१४५. ज्यूँ ज्यूँ मुर्गी मोटी होवे त्यूँ त्यूँ अण्डो छोटो देवे ।

आदमी जितना अधिक धनी हो जाता है उतना ही उसका लालच बढ़ जाता है और दानशीलता घट जाती है ।

१४६. जणाँ जणाँ का थोग राखताँ वेश्या रेगी बाँझ ।

अपना पूरा जीवन दूसरों की आवभगत और सेवा में व्यतीत कर वृद्धा-वस्था के लिए कुछ भी साधन न जुटा पाने की सूरत में जो पछतावा होता है उसे अभिव्यक्त किया गया है । वेश्या प्रत्येक ग्राहक को संतुष्ट करती रही

ग्रौर खुद के कोई संतान उत्पन्न नहीं की जिससे बुढ़ापे के दुःख में कोई सहारा नहीं रहा ।

१४७. जतरा पूला उतरी ई लाय ।

जितना घास ग्रधिक होगा ग्राग भी उतनी ही ग्रधिक लगेगी । खतरनाक चीज़ का ग्रधिक संग्रह ग्रनुचित होता है ।

१४८. जुवाँ खाबा के दुःख झाबलो नीं नाकणीं आवे ।

जुग्रों के मारे कपड़ा नहीं फेंका जाता । किसी वस्तु में खराबी होने से खराबी को दूर करने की बजाय उस वस्तु को ही नष्ट कर देना ग्रव्यावहारिक है ।

१४९. जेठ सारू पेट कोयने ।

गर्भ में स्थित बालक जेठ के यहाँ गोद रखने के लिए नहीं होता । स्वयं के द्वारा कष्ट उठाकर किये हुए काम का लाभ स्वयं के लिए होता है, दूसरों के लिए नहीं ।

१५०. जेसमन्द को सेजो गोड़वाड़ में जा फूटचो ।

कहाँ जयसमुद्र (नामी बड़ी झील, उदयपुर से ३२ मील दूर) ग्रौर कहाँ गोड़वाड़ (देसूरी घाणेराव बाली बाला, पाली जिले का ग्ररावली पर्वतों का निचला भाग) । बीच में बहुत से बड़े बड़े पहाड़ होने से जयसमुद्र का पानी जमीन के नीचे नीचे गोड़वाड़ के कुग्रों को सजल नहीं कर सकता । पर ये कुए बहुत सजल होने से लोगों को ऐसा सोचने का मौका मिल गया । इसलिए जब किसी बात का प्रभाव मीलों दूर जाकर प्रगट होता है तब यह कहावत कही जाती है ।

१५१. झाड़ की ओट में खड़ बाँधबो ।

काँटेदार झाड़ी के इर्द गिर्द की घास मवेशी से बची रह जाती है । झाड़ी की ग्राड़ में ग्रौर जगह की घास काटकर उसका बड़ा गट्ठा बाँधकर ले जाने का मौका भी लोगों को मिल जाता है ।

१५२. टींटोड़ी समन्द उळीचे ।

जब बहुत थोड़ी शक्ति वाला सामर्थ्य से परे कोई कार्य करने का दुस्साहस करता है तो उसको लक्ष्यकर यह कहावत कही जाती है । टींटोड़ी (टिट्टिभ नामक चिड़िया) समुद्र के किनारे अंडे देती है जो ज्वार ग्राने पर डूब जाते हैं तब वह क्रोध करके समुद्र को सुखाने के लिए चोंच में पानी भरभर कर बाहर डालने लगती है ।

१५३. टोळ के टाँकी नीं लागे ।

सख्त गोल पत्थर पर टाँकी कुछ भी ग्रसर नहीं करती । उसी तरह घुटे घुटाये व्यक्तियों पर किसी की बात का प्रभाव नहीं पड़ता ।

१५४. ठीकरी घड़ा ने फोड़ नाके ।

छोटा सा फूटे घड़े का टुकड़ा भी बड़े घड़े को फोड़ देता है । छोटे किन्तु तेज व्यक्ति का अनादर नहीं करना चाहिए, वह अत्यधिक हानि पहुँचा सकता है ।

१५५. डाकण के पगां नीं लागे जींकी ई कसर पड़े ।

जिस औरत के डाकिन होने की धाक जमी हुई हो वह तो सब स्त्रियों से प्रणाम कराने की आशा करती है । कोई न करे तो उसी से नाराज होती है चाहे उसका और कोई अपराध न हो । यही हाल अपने को बड़ा समझने वालों का होता है ।

१५६. डाकण छोड़ स्यारी के पाने पड़बो ।

खड्डे से निकलकर कुए में गिरना ।''सियारी'' डाकिनों में भी अधिक भयंकर किस्म की डाकिन मानी जाती है ।

१५७. डाकण ने कालजा ई कालजा दीखे ।

जिसको जो वस्तु अभिप्रेत (प्रिय) होती है उसको हर समय उसी का स्मरण होता है । जैसे—'बिल्ली को ख्वाब में भी छिछड़े ही नजर आते हैं ।''

१५८ डूबता ने तुनकल्या को सहारो ।

डूबते हुए को तिनके का सहारा भी अच्छा लगता है चाहे उसके जरिए बचना नामुमकिन हो ।

१५९. डेकड़ तो बापड़ी गलगोतऊँ ई मर जावे ।

डेकड़ नाम का (कबूतर जैसा) पक्षी तो बेचारा गिलोल की साधारण मार से ही मर जाता है । छोटे को परास्त करने के लिए अधिक कठोर और तीक्ष्ण प्रहार करने की आवश्यकता नहीं होती ।

१६०. डेकड़ ने डींगाँ की मार ।

डेकड़ को बड़े सोटों से मारना अच्छा नहीं । जब कमजोर पर अधिक बल प्रयोग किया जाता है तब यह कहावत कही जाती है ।

१६१. डोकरी का घर में नार बड़ग्यो ।

बुढ़िया के घर में शेर घुस गया तो वह अपनी रक्षा कैसे कर सकती है । किसी कमजोर पर जब प्रबल का आक्रमण होता है तब यह कहावत कही जाती है ।

१६२. ढाँढा ने तो ढेड़ ईज थीं' सी ।

पालतू जानवर मरेगा तो उसको उसकी खाल कमाने वाले (ढेड़ जाति के) लोग ही घसीट कर गाँव के बाहर ले जावेंगे, कोई दूसरे नहीं अर्थात् जैसा काम होगा वैसे ही व्यक्ति उसको करेंगे ।

१६३. ढोकळा की बाफ निकळबो ।

ढोकले (भाप से पकाया गया खाद्य पदार्थ) की भाप (गर्मी) निकल जाने पर ठंडा हो जाने से वह स्वाद रहित हो जाता है वैसे ही घर का भरम चौपट हो जाने पर जीवन नीरस हो जाता है ।

१६४. तमाकू की लार गुल बळबो ।

तमाकू पीने वाले चिलम पर रखने के लिए कपड़े की गोटी का अंगारा (गुल) तैयार करते हैं, तमाकू के साथ-साथ वह भी जल जाता है । संग-दोष का नतीजा भुगतना पड़ता है ।

१६५. तल गिया, तलाँ का बाँदणा ई गिया ।

तिलों के पौधे चोर ले गये और उनको बाँधने के लिए सण जैसे दूसरे पौधों को भी काटकर ले चले गये । बड़ी वस्तु के साथ छोटी भी चली जाती है ।

१६६. ताली को दौड़ पीपल ताँई ।

अपने एक मात्र आश्रय की सीमा से आगे बढने की शक्ति न होने पर यह कहावत कही जाती है । कोई आपत्ति आने पर गिलहरी दौड़कर पीपल के पेड़ पर (जहाँ उसका घर है) जाने के सिवा और कहीं नहीं जा सकती, आगे उसकी शक्ति समाप्त है । जैसे—मियाँ की दौड़ मस्जिद तक ।

१६७. तीतर पे तोप चलावाऊँ बहादुरी थोड़े ई दीखे ।

तीतर तो छर्रे से भी मर सकता है, उस पर तोप चलाने में कोई बहादुरी नहीं है । अदने-से व्यक्ति पर कठोर प्रहार करना अच्छा नहीं होता ।

१६८. तीरथ ग्याँ मुंडावे ।

तीर्थ-स्नान की प्रथा के अनुसार वहाँ जाने पर बाल कटवाने ही पड़ते हैं । अवसर आने पर अधिक खर्चा करना ही पड़ता है ।

१६९. तुलसाँ में भांग को गोड़ ।

तुलसी जैसी पवित्र चीज के साथ भंग जैसा नशीला पौधा उगाना समीचीन नहीं । सत्पुरुषों के साथ दुष्ट को नहीं रखना चाहिए ।

१७०. तेल तो तलां में व्हे, घाणी लाट में थोड़े ई व्हे ।

तेल तिलों में होता है घाणी या लाठ में नहीं अर्थात् पैसा जहाँ से आता है वहीं से आयगा । वस्तुओं का मूल्य बढने से व्यौपारी अपनी गाँठ से थोड़े ही देंगे वे तो ग्राहकों से ही वसूल करेंगे ।

१७१. थारे भावे नाँगळो अर मारे भावे कतीर ।

तेरे लिए तो गहना है किन्तु मेरे लिए यह रांगा मात्र है । समझदार व्यक्ति पराये द्रव्य में "परद्रव्येषु लोष्ठवत्" की भावना रखते है ।

१७२. **दाँत पेलो आया कन जीभ ।**

जो रिश्ता जन्म से होता है उसे जीभ की व बाद का होता है उसे दाँतों की उपमा दी है। दाँत लगभग छह मास की ग्रायु होने पर निकलते हैं ग्रौर जीभ जन्म से ही होती है। इस लिए पुराने रिश्ते को प्राथमिकता देना चाहिए।

१७३. **दाँतली सूँ नीम नीं कटे ।**

पौधे (फसल व घास) काटने के ग्रौजार से वृक्ष नहीं कटता। बड़े कार्य के लिए बड़ा साधन चाहिए।

१७४. **दाँताँ वचली जीभ ह्वे ने रेणो है ।**

कठिन परिस्थिति में बचकर रहने के लिए यह उपमा कही जाती है, जैसे—'जिमि दशननि महुँ जीभ बिचारी।'

१७५. **दीवाऊँ दीवो जोवता आया ।**

दीपक से दीपक प्रज्वलित करते ग्राये हैं ग्रर्थात् एक दूसरे की वस्तुग्रों का ग्रादान-प्रदान करते हुए पारस्परिक सहयोग भावना से ही जिन्दगी बसर करने की परम्परा चली ग्रा रही है।

१७६. **दीवा तले अंधारो ।**

दीपक के नीचे अंधेरा रहता है ग्रर्थात् बहुधा ग्रपने ही दोष प्रकाश में नहीं ग्राते ग्रौर दूसरों के दोष देखे जाते हैं।

१७७. **दूध को दूध अर् पाणी को पाणी ।**

किसी के गुण-दोष परखने में या इन्साफ देने में कोई पक्षपात नहीं किया जाता है तब कहा जाता है कि हंस की तरह दूध ग्रौर पानी ग्रलग-ग्रलग निकाल कर रख दिया है।

१७८. **दो हल दचाँ, तीन ब'ल दचाँ ।**

साधनों की जोड़-तोड़ ग्रधूरी होने पर यह कहावत कही जाती है। दो हलों के साथ चार बैल होने चाहिए। तीन बैल होने पर एक की पूर्ति किये बिना काम ठीक तरह नहीं चल सकता।

१७९. **धजा पवन को जोड़ो ।**

ध्वजा ग्रौर पवन साथ रहने पर ही शोभा बढती है क्योंकि पवन के बिना वह फहरा नहीं सकती ग्रौर फहराये-फहराये बिना वह शोभा नहीं देती। पवन उसे कभी उलझाता है, कभी सुलझाता है। इस प्रकार एक दूसरे के लिए ग्रावश्यक ग्रौर अंतरंग साथ होने पर यह उपमा दी जाती है।

१८०. **धण्याँ वनाँ धोल्'र सूनी ।**

मालिक के बिना बाड़ा सूना है, मवेशियों की देखभाल कौन करे। स्वामी के बिना घर सूना-सूना लगता है, कुछ भी नहीं सुहाता। प्रायः घर के स्वामी को सबसे ग्रधिक महत्त्व देने की दृष्टि से यह कहावत कही जाती है।

१८१. धाई ओ बीरा थारी काँचली सूँ ।

अपने यहाँ लाकर पहले तो भाई ने बहन को खूब क्लेश पहुँचाया, बाद में विदा करते समय प्रथा के अनुसार जब चोली का कपड़ा देने लगा तब बहन के मुँह से यह कथन निकला—'तेरे से चोली की भर पाई तो पहले ही हो गई, मेरे भाई !' कहीं उमंग और आशा लेकर जाएँ, पर उलटा पिंड छुड़ाना ही कठिन हो जाए, तब यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है।

१८२. धान थोड़ो अर् धगानो घणों ।

जहाँ खिलाने-पिलाने व देने लेने के लिए माल तो बहुत कम होता है किन्तु गाजे-बाजे व बाहरी सजावट का दिखावा अधिक होता है वहाँ यह कहावत प्रयोग में ली जाती है।

१८३. धायो सूर बारा बीघां को उजाड़ करे ।

अत्यन्त तृप्त होने पर भी सूअर बारह बीघे की फसल को नष्ट कर देता है (भूखा होने पर तो केवल उतना ही नुकसान करता है जितना पेट भरने के लिए खाता है।) जिनको धन-वैभव की कोई कमी नहीं होती वे उन्मत्त होने पर बहुत अपव्यय और नुकसान पहुँचाते हैं।

१८४. धूळा का पूळा अर् खाँखलाँ का बंदणा ।

धूल का बण्डल और उसके लिए भूसे का बंधन अर्थात् जैसे को तैसा मिलने पर यह कहावत कही जाती है। जब दोनों ही एक जैसे निरर्थक होते हैं।

१८५ धोबी की हाँता गधो खाय ।

संग्रह-वृत्ति वाले कजूसों पर व्यंग्य है जिनके माल का उपयोग उनकी मृत्यु के बाद दूसरे भी नहीं कर सकते। कंजूस धोबी के मरने पर उसके श्राद्ध को गधे ही खाते हैं।

१८६. धोबी को कुत्तो घर को न घाट को ।

ऐसे लोग जिनकी प्रवृत्ति (दोहरे लाभ के लालच में) दो तरफ बनी रहती है वे प्राय: दोनों तरफ के लाभ से वंचित रह जाते हैं तब उनको धोबी के कुत्ते की उपमा दी जाती है। जैसे—"दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम।"

१८७. नत कूड़ो खोदणों अर् नत पाणी काढणो ।

घर की स्थिति अच्छी नहीं होने पर यही हाल होता है कि नित्य कमाओ और गुजारा चलाओ। नित्य कुआ खोदो और पानी निकालो। (Living from hand to mouth.)

१८८. नदी बही जावे तो कँई तेली का बाप की ।

तेली तो बहुत चाहता है कि नदी तेल की बहे और वह उसे घर में भर

लेवे किन्तु संसार में सभी वस्तुएं अपने लिए नहीं होती और न इच्छा मात्र से हमें मिल ही सकती हैं।

१८९. न मामा बचे काणो मामो ई चोको।

'Something is better than nothing', की तरह कुछ भी लाभ नहीं होने से तो थोड़ा होना ठीक है।

१९०. नरबदा का कंकर, शंकर ई शंकर।

नर्मदा नदी का बहाव तेज होता है और पहाड़ों में होकर ही अधिक बहती है जिससे उसमें छोटे-छोटे चिकने और गोल पत्थर (जिन्हें शिव लिंग के उपयुक्त होने से चुनकर पूजा में लिया जाता है) अनेकों होते हैं। जब किसी स्थान पर बड़े आदमियों की बहुतायत होती है तब यह उपमा दी जाती है।

१९१. नया भील मुसलमान विया जो राते ई उठ-उठ ने नमाज पढ़े।

भील मुसलमान बन जाने पर नया-नया होने से इतनी उमंग होती है कि रात में भी बार-बार उठकर नमाज़ पढने लगता है। इसमें नये पन के जोश में मूर्खता करवे वालों को लक्ष्य किया गया है।

१९२ नाच कूद अर् मोरचो पगां सामो नाले।

मोर का सारा शरीर सुन्दर होता है किन्तु पैर दीखने में भद्दे होते हैं। नाचने के बाद उनको देखने भर से उसका अपनी सुन्दरता का अभिमान गायब हो जाता है। वैसे ही खुद की कोई प्रत्यक्ष कमजोरी होती है तो वह गुणों के अभिमान को फीका कर देती है।

१९३. नार अर् छाळी एक घाट पे पाणी पीवे।

शेर और बकरी एक घाट पे पानी पीते हैं। उत्तम शासन व्यवस्था, तपस्या या अन्य किसी प्रकार की विशेषता के प्रभाव से जहाँ प्राणियों में नैसर्गिक शत्रुता के स्थान पर स्नेह और मैत्री का प्रादुर्भाव होते देखा जाता है, उस स्थिति के लिए यह कहावत लागू होती है।

१९४. नार का मूँडा आगे बाकरो मेल्यो।

शेर के मुँह के आगे बकरा रख दिया अर्थात् कमजोर और असहाय को किसी शक्तिशाली शत्रु के सुपुर्द कर दिया। अब उसके जीवित रहने या सुखी रहने की आशा कैसे की जा सकती है।

१९५. नार का मूँडा के बाच्यो कुण देवे।

सिंह के मुँह का चुम्बन कौन कर सकता है अर्थात् भयंकर खतरनाक कार्य के लिए कोई तैयार नहीं होता।

१९६. नार पड्यो कटाँजरे कँई करे बलवन्त।

जब बलशाली व्यक्ति भी परिस्थितिवश आपत्ति में फँस जाता है तो पिंजड़े के शेर की तरह उसकी दुर्दशा होती है।

१९७. नौ को नारो अर् सौ को खाग्यो चारो ।

कोई बैल यदि उसकी कीमत से भी कई गुना मूल्य की घास खा जाता है तो इससे उसका मूल्य उतना अधिक नहीं हो जाता । इसी तरह किसी वस्तु की हिफाजत आदि का का खर्चा मूल कीमत से भी बहुत अधिक हो जाने से नुकसान (घाटा) उठाना पड़ता है तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

१९८. नौ दिन चल्यो अढाई कोस ।

मन्दगामी को लक्ष्य किया है । नौ दिनों तक चलते रहने पर भी जो अढाई कोस (पांच मील) का फासला ही पार करता है वह जीवन में क्या प्रगति करेगा । वह तो व्यर्थ परिश्रम करता हुआ ही थक जायगा ।

१९९. पड़्चो पोयठो धूलो लेने ऊठे ।

गिरे हुए गोबर को उठाने पर उसके साथ और कुछ नहीं तो धूल तो चिपकी हुई आती ही है अर्थात् इतना सा लाभ तो होता ही है । पुरुषार्थ करने पर कुछ न कुछ लाभ अवश्य ही होता है ।

२००. परणे तो अखो ने घोड़ी ने बखो ।

विवाह तो अखा करता है और घोड़ी को कष्ट सहन करना पड़ता है । जब फायदा कोई उठावे और नुकसान कोई दूसरा सहे तब यह कहावत कही जाती है ।

२०१. पाका हाँडाँ गार नीं लागे ।

मिट्टी के पके हुए बर्तनों पर मिट्टी नहीं चढ़ (चिपक) सकती बड़े (परिपक्व) हो जाने पर कोई सीख असर नहीं कर सकती जैसे कि, 'बुड्ढा तोता कुरान नहीं पढ़ सकता ।'

२०२. पाणीं के पाळ अर् गाणां के ताळ ।

जिस प्रकार पानी को रोकने के लिए बाँध की आवश्यकता है उसी प्रकार संगीत को ठीक ढंग से प्रतिपादित करने के लिए ताल की आवश्यकता रहती है ।

२०३. पातल सु ँ जीमें जतरे काम, जीम्या र् फेंकी ।

पत्तल से भोजन करने तक ही मतलब रहता है । उसके बाद उसे फेंक दिया जाता है । किसी से मतलब पूरा हो जाने पर बाद में उसकी कोई कद्र नहीं करता ।

२०४. पातळी छाछ में पाणीं ।

पतले मट्ठे में पानी डालने पर वह और भी पतला हो जाता है । कठिनाई आने पर या बिगड़े हुए को और भी बिगाड़ देने पर यह कहावत कही जाती है ।

२०५. पाळचा गंडक पींडचाँ झूमे ।

पाला हुआ कुत्ता कभी-कभी पीछे चुपके से आकर अपने ही मालिक की

पिंडली काट खाता है। जब किसी का पाला-पोसा व्यक्ति उसी का विरोध करता है और अहित करता है तब यह कहावत कही जाती है।

२०६. **फाटा दूध के जाँवण न लागे।**

फटे दूध को जमाकर दही नहीं बना सकते। मन फट जाने पर फिर नहीं मिल सकता।

२०७. **फूल की जगाँ पाँखड़ी।**

यथा शक्ति नम्रतापूर्वक किसी को साधारण सेवा-सत्कार या भेंट पूजा अर्पित करने पर ठाट बाट से आवभगत करना नहीं बन पड़ने के संकोच को दूर करने के लिए यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है।

२०८. **बड़ा बड़ा लाखीणां घोड़ा भी ठोकर खा जावो करे।**

अच्छे से अच्छे आदमी से भी गलती हो जाया करती है। लाख रुपये की कीमत का घोड़ा भी ठोकर खा सकता है।

२०९. **बळी मूँज साँप की भड़क पाळे।**

मूँज का रस्सा जला हुआ पड़ा हो तो भी अंधेरे में साँप का भ्रम पैदा करता है। कमजोर भी अवसर पाकर डरा सकता है।

२१०. **बह पाणी मुलतान गियो।**

जो पानी (सतलज में) बहकर मुलतान चला गया, वह वापस नहीं आ सकता। मौका हाथ से निकल जाने पर फिर हाथ आना मुश्किल है।

२११. **बाड़ ई खेत ने खा जावे तो दूजो कुँण राखे।**

बाड़ ही खेत को खा जाय अर्थात् रक्षक ही भक्षक हो जाय तो उसकी रक्षा दूसरा कोई नहीं कर सकता।

२१२. **बाड़ बनां बेलो थोड़े ई चढे।**

बेल (लता) वृक्ष या झाड़ी आदि का सहारा लिये बिना ऊपर नहीं चढ़ती अर्थात् निर्बल और असहाय को सबल और समर्थ लोगों के सहारे की आवश्यकता होती है।

२१३. **बाळद का बळद के फाळचा को डाम।**

बनजारे के बैल को दागने का काम नहीं पड़ता है इसलिए उसे दागने से बड़ा कष्ट होता है। जिसको जिस विपत्ति का सामना नहीं करना पड़ा हो तो उस विपत्ति के आने पर उसको बड़ा कष्ट होता है।

२१४. **बाँकी चूँकी तोई गऊँ की रोटी।**

रोटी टेढी मेढी है लेकिन है तो गेहूँ की। आकार-प्रकार की अपेक्षा गुणों का महत्व अधिक हुआ करता है।

२१५. **बाँझ ने ब्यावर की कँई खबर।**

वन्ध्या स्त्री को प्रसव की पीड़ा नहीं मालूम होती। जिसे जिस काम का अनुभव नहीं, वह उस काम के कष्टों को नहीं जानता। जैसे—

'विद्वानेव हि जानाति विद्वज्जन परिश्रमम् ।
नहि वन्ध्या विजानाति गुर्वीं प्रसववेदनाम् ।।'

२१६. **बाँदरा ने काच बतावणो ।**

बन्दर को काच दिखाने पर वह उसमें अपना रूप देखकर प्रसन्न होने की वजाय उसको पटककर तोड़ देगा । मूर्ख व्यक्ति को ऐसी वस्तु देने से क्या लाभ जिसका उपयोग करना वह जानता ही न हो ।

२१७. **बाँदरा ने सीख देतां घर बया को जाय ।**

बरसात के समय बया पक्षी घोंसले में आराम से बैठा था व बन्दर भीग रहा था । बया ने बन्दर को घर बनाकर आराम से रहने की शिक्षा दी तो बन्दर ने गुस्से होकर उसके घोंसले को ही तोड़ डाला । कुपात्र को उपदेश देने से स्वय की हानि होती है । इस कहावत का पूर्वपद कम प्रचलित है—

"सीख वाको दीजिए, जाको सीख सुहाय ।"

२१८. **बांदरी गी ज्यो तो गी पण साँकल ई लेगी ।**

एक बड़ी हानि से जुड़ी हुई दूसरी छोटी हानि भी सहन करनी पड़ती है । बंदरी भग गई तो मदारी को उसके साथ-साथ उसके गले की जंजीर से भी हाथ धोना पड़ा ।

२१९. **बिना गुठली को मेवो है ।**

उस कार्य को लक्ष्य किया गया है जिसमें कष्ट तनिक भी नहीं होता, लाभ ही लाभ होता है ।

२२०. **बैठी भैंस्याँ में कोदू बखेरणाँ ।**

कोदू बहुत छोटे दाने वाला बेकार सा अनाज होता है । उसको बिखेरने से बैठी हुई भैंसें व्यर्थ ही खाने के लालच से उठ खड़ी होती हैं परन्तु न तो वह बिखरा होने से उनके पल्ले ही पड़ता है और न पेट ही भरता है । आराम करना भी व्यर्थ ही समाप्त हो जाता है ।

२२१. **बोर के भरोसे लट खाणीं आवे ।**

बेरों में अक्सर लटें पड़ जाती हैं जितने मीठे होते हैं उतनी ही अधिक लटें पड़ती हैं । बेर के लालच में कभी-कभी लटें (कीड़े) भी खा जाते हैं । अभिप्राय यह है कि किसी समय लोभ-मोह में कोई-कोई अपराध या दोष भी जाने-अनजाने हो ही जाता है ।

२२२. **बोर दे दो, बोरड़ी मत दो ।**

बेर दो दो, बेर का पेड़ मत दो । पैदावार भले ही दे दो क्योंकि ऐसा करने से मूल सम्पत्ति की तो रक्षा हो जायगी, यदि वही चली जायगी तो गुजारा कैसे होगा ।

२२३. **बोलबो मोर को, बरसबो इन्दर को ।**

माँगने वाला तो याचना ही कर सकता है, देनेवाले को मजबूर नहीं कर

सकता । मोरों के बार-बार जोरों से बोलने पर भी बरसना तो इन्द्र के ही हाथ है ।

२२४. **बन्दी बुवारी लाख की, खुल्याँ पछे खाक की ।**

घास के तिनके बँधे हुए रहकर झाड़ू (बुहारी) का काम देते हैं, खुलकर बिखर जाने पर उनकी कोई कीमत या उपयोगिता नहीं रहती । यहाँ 'बँधी बुहारी' एकता का प्रतीक है ।

२२५ **भटचारण कई गाँठ को पलेतण लगावे ।**

रोटी बेलते समय जो आटा चकलोटे पर बिखेरा जाता रहता है (पलेतण) वह कोई भटियारिन (रसोई बनाने वाली) अपनी ओर से नहीं लगाती, वह भी मालिक को ही देना पड़ता है । अर्थात् ऐसी अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि सेवक या मजदूर (या शुभचिन्तक) गाँठ की पूँजी का किसी मालिक के लिए (मेहनत के साथ-साथ) त्याग करे ।

२२६. **भरचा तो छलके नहीं, छलके वो अद्धा ।**
घोड़ा तो भूँके नहीं, भूँके वो गद्धा ॥

'अधजल गगरी छलकत जाय' अर्थात् आधा भरा हुआ घड़ा ही छलकता है, पूरा भरा हुआ नहीं; घोडा भौंका नहीं करता, गधा ही भौंकता है । इसमें आधा भरा हुआ घड़ा और गदहा जिस प्रकार ओछे और मूर्खों के प्रतीक हैं उसी प्रकार पूरा भरा हुआ घड़ा और घोड़ा गम्भीर और विचारवान् लोगों के प्रतीक हैं ।

२२७. **भरी गाड़ी में छाजला को कँई भार ।**

भरी हुई गाड़ी में सूप का क्या बोझ हो सकता है । किसी कार्य भार में बहुत अधिक मात्रा के साथ नगण्य सी वृद्धि हो जाय तो उससे कोई फर्क नहीं पड़ जाता ।

२२८. **भरी चिलम तो भील की भी न रे'वे ।**

चिलम तम्बाकू से भर दी है तो (वह चाहे भील—अत्यन्त अभाव ग्रस्त गरीब की ही क्यों न हो) उसके लिए आग मिल ही जायगी । किसी कार्य की लगभग सम्पूर्ण तैयारी हो जाने पर मामूली कसर होने से वह अधूरा नहीं रहेगा, चाहे किसी गरीब का कार्य ही क्यों न हो ।

२२९. **भाँग पीबो सोरो, लेराँ लेबो दोरो ।**

भाँग पीना सरल है किन्तु उसके नशे को सहन करना बहुत कठिन है । किसी बुरे काम को (या कठिन काम को) कर बैठना तो आसान है किन्तु उसका परिणाम भुगतना बहुत कष्टदायी होता है ।

२३०. **भींत पड़े कन पछींत ।**

घर पुराना होने पर सामने की या पिछली, कौनसी दीवार गिरे, यह

निश्चय नहीं किया जा सकता। पति और पत्नी में से कौन मरेगा, यह निश्चय नहीं होने से यह कहावत कही जाती है।

२३१. भुसबो अर् घट्टी चाटबो, साथे नीं वे सके।

कुत्ता चक्की चाटना और भौंकना साथ-साथ नहीं कर सकता है जैसा कि कैकेयी ने दशरथ जी से कहा है—'हँसउ ठठाय फुलाउब गालू।
दोउन इक संग होइ भुवालू।'

२३२. भूखो भैंस्याँ में न जावे।

भैंसें चराने का काम दिन भर का है। बिना कुछ खाए पीए भैंसें चराने के लिए कोई नहीं निकल सकता। अभिप्राय यह है कि किसी के लिए मुफ्त में परिश्रम कोई नहीं करता।

२३३. भूत मरे अर् प्रेत जागे।

भूत के मरने पर उसके स्थान पर प्रेत ही उठ खड़े होंगे। किसी दुष्ट की अनुपस्थिति में कोई वैसा ही दुष्ट व्यक्ति उसके स्थान पर आकर दुःख देने लगे तब यह कहावत कही जाती है।

२३४. भैंस्याँ का खोज जाणार व्हे जदी कायरा पाडा जन्मे।

भैंस की नस्ल नष्ट होने का योग होता है तब कायरे (मंजरे) भैंसे पैदा होते हैं। कपूत पुत्र के उत्पन्न होने पर कुल का नाश होता है।

२३५. भैंस के मूँडा आगे तन्दूरो बजायो तो रूँथ रूँथ र् खल खादी।

भैंस के आगे वाद्य बजाने से उसको उसका ज्ञान नहीं होता है, वह तो खाने में मस्त रहती है। इसी प्रकार कला और शास्त्र के न जानने वाले के सामने उसका प्रदर्शन व्यर्थ होता है।

२२६. भैंस को मन पाडो जाणे।

भैंस के बछड़े को ही अपनी माँ के मन की बात मालूम हो सकती है औरों को नहीं। जो परस्पर अज़ीज़ होते हैं वे ही एक दूसरे के मन की बात जान सकते हैं, दूसरे नहीं।

२२७. भैंस चारो पेट के बळे चरे धणी के बळे थोड़े ई चरे।

भैंस घास खाती है तो अपनी भूख बुझाने के लिए खाती है, मालिक को दूध देने के लिए नहीं। यह बात दूसरी है कि मालिक अपनी तरकीब से उसके भरे पेट होने का लाभ उठाकर प्राप्त कर लेता है।

२३८. भोळा हुया हरण्याँ की लार।

हिरणों के साथ दौड़कर उनको पकड़ने की आशा करना मूर्खता है।

२३९. भोळे बामण गाय खाई, अबे खाऊँ तो राम दुहाई।

एक सीधे ब्राह्मण ने अनजान में गाय का मांस खा लिया मालुम होने पर

उसने अपनी भूल की क्षमा माँगी और आगे के लिए पूरा ध्यान रखने की सौगन्ध खाई। लेकिन इससे उसके अपराध की जानकारी फैल जाने से बदनामी तो हो ही गई सीधे सादे व्यक्ति से अपराध हो जाने पर यही दशा होती है।

२४०. म्याँऊँ की ठौड़ कुण पकड़े।

बिल्ली का मुँह ही चूहों के लिए घातक होता है। वे एकता कर उसे काबू में करना खूब चाहते हैं पर मुँह को कौन पकड़े। जब खतरे की जड़ पर काबू पाने की समस्या पैदा होती है तब यह कहावत कही जाती है।

२४१. मण मण का काँदा अर् कण कण की भाजी।

प्याज बहुत अधिक मात्रा में होने पर भी उसकी सब्जी पकने पर बहुत थोड़ी हो जाती है और थोड़ी २ बाँटने पर भी समाप्त हो जाती है। खाने पीने की वस्तुओं का प्राय: यही हाल होता है।

२४२. मनखी का गला में टोकरी कुँण बाँधे।

चूहों ने एकत्रित होकर बिल्ली के गले में घंटी बाँधने का निर्णय तो जैसे बहुत बड़े बुद्धिमानों की तरह कर लिया लेकिन घंटी बाँधने का काम करने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ। प्राय: जान को खतरे में डालने जैसा काम करने के लिए आसानी से कौन तैयार होता है। 'Who will bell the cat'

२४३. माँ राँड को तो पतो ई कोयने अर् मासी ने रोबा जावे।

माँ की उपेक्षा कर मौसी के लिए चिन्तित होना मूर्खता है। यहाँ माँ और मौसी क्रमश: अधिक और कम निकट और महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के प्रतीक हैं।

२४४. माँडी मोरड़ी हार निगल गी।

चित्रलिखित मोरनी हार नहीं निगल सकती। लेकिन चोरी के दोषारोपण से बचने के लिए जब ऐसी अनहोनी बात का बहाना बनाया जाता है तब यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है।

२४५. माँस खावे पण गळे हाड़क्यो थोड़े ई बाँधे।

लोग माँस खाते हैं किन्तु गले में हड्डी नहीं लटकाते अर्थात् कुकर्मी लोग बदनामी के भय से अपनी करतूतों को छुपाते हैं, उनका प्रचार नहीं होने देते। प्रगट बदमाशी न करना चाहने वाले ऐसा उत्तर देते हैं।

२४६. मियाँजी जोड़े तार-तार, अल्लाजी गिले थान का थान।

'महाजन चोरे मुट्ठी मुट्ठो, अल्ला भर ले ऊँट।' कभी २ ईश्वर एक-एक करके किये गये गुनाहों की सजा एक साथ ही दे देता है और किया कराया सब कुछ बरबाद हो जाता है।

२४७. मियाँ मरग्या के रोजा घटग्या।

समय और साधन दोनों हाथ में हैं, अभी कुछ नहीं बिगड़ा है काम फिर से सम्हाल कर सुधारा जा सकता है। 'It is never too late to mend.'

२४८. **मुल्ला की दौड़ मसीत ताँई ।**

मुल्ला किसी विपत्ति से घबराकर दौड़ेगा तो अधिक से अधिक मस्जिद तक ही जायगा। विपत्ति के समय किसी निर्बल और असहाय की पुकार अधिक से अधिक उसके आश्रयदाता तक ही सीमित होती है।

२४९. **मसाणां में गाय दुवावेगा कँई ।**

शमशान में गाय दूध कैसे दे सकती है, जहाँ उसके खाने पीने के लिए कुछ नहीं होता। खाने पीने की पूरी सुविधाएँ होने पर ही कोई व्यक्ति दूसरों को लाभ पहुँचा सकता है।

२५०. **मूल सूँई ब्याज भारी ।**

लम्बे समय तक कर्जा बना रहने पर ब्याज मूल से भी भारी हो जाता है। जब कोई काम उसके साधनों की दुर्लभता के कारण बहुत कठिन और महँगा पड़ जाता है तब यह कहावत कही जाती है।

२५१. **मूँगाँ पेली चाँवल सीजे ।**

दुर्बल और सबल पर एक साथ संकट आने पर दुर्बल पहले नष्ट हो जाता है। खिचड़ी पकाते समय मूँगों से पहले चाँवल गल जाया करते हैं।

२५२. **मेदा लकड़ी को कँई भाव, देखजे मार ।**

किसी की हड्डी टूट जाने पर उसको जल्दी जोड़ने के लिए मेदा-लकड़ी खिलाई जाती है। यह दवाई हमेशा नहीं मिलती इसलिए इसके महँगे-सस्ते भाव (मोल) में नहीं उलझना चाहिए; चाहे जिस भाव मिले खरीद लेना चाहिए। इसी प्रकार, जिसके बिना काम रुक जाये, ऐसी वस्तु के महत्व को उसकी कीमत से भी अधिक ऊँचा समझना चाहिए।

२५३. **मेंडकी के माथे डाम न खटावे ।**

मेंढक कमजोर जानवर है उसके सिर पर जलते लोहे से दाग लगाने से तो वह मर ही जाता है। निर्बल पर भारी प्रहार करना अनुचित है।

२५४. **मोटा हाँडा की तो खुरचण ई भली ।**

दूध उबालने के मिट्टी के बड़े बरतन में दूध उबल जाने के बाद गाढा दूध चिपक जाता है जो खोए जैसा होता है और बरतन बड़ा होने से भरपूर मात्रा में मिल जाता है। इस प्रकार कहा गया है कि बडे वैभवशाली और समर्थ पुरुषों (मोटा हाँडा) के काम काज निबटने पर छोटे आदमी को बचत-खुचत ही मिल जाये तो वही पर्याप्त होती है।

२५५. **मोत्याँ को पाणी मोत्याँ में ।**

बनी हुई बात के बिगड़ने का पूरा अन्देशा हो जाने पर भी वह न बिगड़े और इज्जत (पानी) रह जावे तब यह उपमा दी जाती है।

२५६. **मोर आपका पगाँ ने देख र् रोवे ।**

मोर के सब अंग सुन्दर होते हैं लेकिन पैर असुन्दर होते हैं। अभिमानी

पुरुष को अपनी सभी अच्छाइयों के बावजूद एक भी कमजोरी होती है तो वही बहुत खलती रहती है ।

२५७. **मोर को बेठबो, डाल को टूटबो ।**

इत्तिफाक से मोर के बैठते ही डाली टूट जावे (जो कि मोर के बैठने से उसके बोझ के कारण नहीं टूट सकती), ऐसे संयोग को 'काकतालीय न्याय' कहते हैं । इधर से कौआ उड़ता हुआ ताड़ के पेड़ के नीचे से निकला और उधर से ताड़ का फल टूट कर उस पर गिरा ।

२५८. **या घोड़ी तो हुरड़े चढी ।**

हुरड़ा (एक कस्बा) मेवाड़ की सीमा पर है । हठीले व्यक्ति जब अन्तिम हद तक पहुँचे बिना नहीं मानते हैं तब यह उपमा दी जाती है ।

२५९ **याँ तलाँ में तेल नीं ।**

इन तिलों में तेल नहीं है । जिनसे खूब परिश्रम-प्रयत्न करने पर भी कोई लाभ नहीं होता, उनको ऐसी उपमा दी जाती है ।

२६०. **रहा की भींत पर पट्याँ नाकबो ।**

मिट्टी की दीवार अपनी छत पर पट्टियों का बोझ नहीं झेल सकती । कमजोर आधार पर बड़ा काम नहीं हो सकता ।

२६१. **राई का भाव रातऊँ ई ग्या ।**

गया हुआ समय वापस नहीं आता । एक सेठ (जिसके घर में काफी राई थी) के घर में चोर घुसे । सेठ ने उनको धोखा देने के लिए सेठानी को सुनाते हुए जोर से कहा कि अब राई का भाव बहुत ही बढ़ गया है । चोर यह सुनकर केवल राई ही बाँध ले गये किन्तु कुछ दिनों बाद निराश होकर उसी सेठ के पास राई बेचने के लिए आये तब सेठ ने उपरोक्त उत्तर देकर उन्हें लज्जित किया ।

२६२. **राई ओड़े परबत है ।**

राई की ओट में पहाड़ है अर्थात् छोटी बात में कोई बड़ा रहस्य छिपा हुआ है ।

२६३. **राज तो पोपा बाई को पण लेखो पाई पाई को ।**

सरकार में तो पोल है परन्तु हिसाब तो पूरा व सही-सही देना पड़ता है ।

२६४. **राँड की अबे फेर कई राँड वे' ई ।**

विधवा होने के बाद किसी के द्वारा 'राँड' कहे जाने पर घबराने या नाराज होने की जरूरत नहीं है, इसे दुराशीष नहीं मानना चाहिए । अर्थात् जो अनिष्ट हो चुका है वह दुबारा होने की आशंका नहीं ।

२६४. **राँदयो धान कतराक दन को ।**

उबला हुआ धान अधिक समय तक नहीं रक्खा जा सकता । बने बनाये

भोजन को शीघ्र ही खिला देने या शादी शुदा लड़की को अधिक दिनों तक पीहर में न रख जल्दी ही सुसराल भेज देने के लिए यह कहावत प्रचलित है।

२६५. **राँभ रेऽलो केरड़ो अर् बेठ रेऽली गाय।**

गाय को चरने के लिए छोड़ने पर बछड़े से अलग होने के कारण दोनों ही उछलकूद करने लगते हैं लेकिन थोड़ी ही देर में बछड़ा शोर मचाकर चुप होगा ही और गाय भी अधिक से अधिक थोड़ी देर बैठ जायगी फिर तो चरेगी ही। अर्थात् थोड़ी देर की चिल्ल-पों से घबराकर किसी काम को छोड़ना नहीं चाहिए।

२६६. **रीती पुँवाळ में डाँग बाबो।**

चाँवल निकाल लिये जाने के बाद उनके भूसे को डंडे से कूटने से कोई लाभ नहीं होता। व्यर्थ परिश्रम नहीं करना चाहिए।

२६७. **रींछ का डील पे रूँगच्या को कँई तोड़ो।**

किसी के पास किसी वस्तु की अनाप-सनाप बहुतायत होने पर उसमें से थोड़ी बहुत वस्तु कोई ले ले तो क्या फर्क पड़ता है। रींछ के शरीर से कुछ बाल ले लेने पर क्या कमी हो सकती है।

२६८. **रूँगच्या पाड़्याँ ई मुर्दा हल्का न पड़े।**

मुर्दे का मुंडन कर देने से उसके वजन में कोई कमी थोड़े ही होती है।

२६९. **रोजा छुड़ावा ग्या तो नमाज गळे पड़गी।**

जब किसी एक मुसीबत से छुटकारा पाने के प्रयत्न में उससे तो छुटकारा नहीं मिलता और उससे बड़ी दूसरी मुसीबत और आ पड़ती है तब यह कहावत कही जाती है। रोज़े तो साल में एक बार महीने भर के लिए आते हैं परन्तु नमाज़ तो हमेशा पाँच बार पढ़नी पड़ती है।

२७०. **लाल्या ने लखो ने घोड़ी ने बखो।**

दुल्हा तो साज श्रृंगार कर विवाह करने जाता है, लेकिन इससे घोड़ी (जिस पर वह सवार होता है) को तो कोई प्रसन्नता नहीं होती, उसे तो उल्टा बोझ ही उठाना पड़ता है। जब किसी के स्वार्थ के लिए किसी दूसरे को यद्यपि कोई लेना देना नहीं होता फिर भी कष्ट झेलना पड़ता है तब यह कहावत कही जाती है।

२७१. **लाली मत खेल अणूँथा खेल।**
जठाऊँ लाई लाकड़ी उठे ई पाछी मेल॥

हे लाली (लड़की), तू दूसरों की छड़ी से गैरवाजिब खिलवाड़ मत कर और उसे जहाँ से उठाया है वहीं वापस रख दे। दूसरों की वस्तु से अपने मनोविनोद या उपयोग का साधन बनाने वालों को लक्ष्य कर ऐसा करने से स्वयं की हानि होने की संभावना के लिए चेतावनी दी गई है।

२७२ **लाडू की कोर, कसी खाटी अर् कसी मीठी।**

जो वस्तु सब प्रकार से अच्छी होती है, उसको लड्डू से उपमा दी है जिसके सभी भाग एक समान मीठे होते हैं।

२७३. लुवार का वास में ताकला बेच बो।

लुहार के मोहल्ले में लोहे का सामान (और वह भी मामूलीसा) बेचने जाना मूर्खता है। जैसे— 'Carrying coal to new castle.'

२७४. लोह जाणे लुहार जाणे अर् खाती की बलाय जाणे।

लकड़ी का काम करने वाले सुधार को लोहे और उसकी वस्तुएँ बनाने वाले लुहार से क्या लेना देना। जिसका जो पेशा है उसको छोड़ दूसरे धंधे से क्या वास्ता।

२७५. लंका ने सोना की मूँदड़ी बतावे।

यह वैसी ही बात है जैसे सूरज को दीपक दिखाना।

२७६. वो ई ताबूत ऊँचावे अर् वोई हाय दोश खेले।

मोहर्रम पर ताजिया उठाना और उसके आगे छाती पीटने का रस्मी अभिनय करना ये दोनों काम एक ही व्यक्ति से एक साथ नहीं निभते। जब दो विरोधी काम एक साथ एक ही व्यक्ति पर आ पड़ते हैं तब यह कहावत कही जाती है।

२७७. साकर तो सूनी जावे अर् लूण के पेरो देवे।

शक्कर नमक के मुकाबले मूल्यवान वस्तु है जिसकी तो परवाह न करे और नमक की रखवाली करे यह एक प्रकार की नासमझी ही है 'Penny wise, Pound foolish'

२७८. सभी धान बाइस पंसेरी।

जहाँ समझ नहीं होती वहाँ भले बुरे की परख भी नहीं होती, सब एक समान माने जाते हैं। इसीका दूसरा रूप है—'सभी घोड़ी नो टका।'

२७९. समदर में रेणो, मगरमच्छ ऊँ बेर।

जहाँ जिसकी सामर्थ्य और शक्ति का एक छत्र प्रभाव हो, वहाँ सुख-पूर्वक निवास तभी संभव है जब उससे शत्रुता न रखी जाय।

२८०. समंदर में सबको सीर है।

समुद्र में सबका हिस्सा है। गहरे साधन सम्पन्न व्यक्ति का लाभ सभी उठाते हैं।

२८१. समदर साणू मच्छा।

जैसा समुद्र होगा वैसी ही वहाँ की मछलियाँ होंगी। बड़ी जगह रहने वाले वैसे ही बड़े होते हैं।

२८२. सराई खीचड़ी दाँताँ चढ़ी।

सराहना की हुई खिचड़ी दाँतों पर चिपकती है। ओछे व्यक्ति की प्रशंसा करने पर वह दुखदायी हो जाता है।

२८३. सरंग तो नरोई फाट्यो, थेगळो कठे कठे लगाऊँ ।

आकाश तो बहुत फट गया अब नस्तर कहाँ कहाँ लगाया जाय । बहुत मुसीबतों का समूह आ जाने पर व्यक्ति हिम्मत हार जाता है ।

२८४. सात की पूण्याँ अर् नो को सूत ।

रुई की पूनियाँ सात की थी और कातने पर सूत नौ का हो गया । परिश्रम से ही धन-लाभ होता है ।

२८५. सात की लकड़ी अर् एक को भार ।

सात आदमी अलग अलग उठायें तो एक व्यक्ति का भार लकड़ियों के रूप में बँटकर हल्का हो जाता है । काम बाँट लेने पर अथवा सात आदमियों के सहायता करने पर एक का बोझ हल्का हो कर आसान हो जाता है ।

२८६. सावा की बीजळी घोसुण्डा पे जा पड़ी ।

किसी की बला किसी के सिर पर जा पड़े तब ऐसा कहा जाता है । सावा और घोसुण्डा दो गाँव हैं जिनमें बारह मील की दूरी है ।

२८७. साँकड़ी सेरी अर् मारकण्यो बळद ।

रास्ते की गली तंग हो और बीच में मारने वाला बैल खड़ा हो तो वहाँ से पार होना कठिन होता है । जैसे—'Between the devil and the deep sea. Between scylla and charibdis.

२८८. साँठा का चोर ने मुक्याँ की मार ।

छोटे अपराध की सजा भी साधारण ही होनी चाहिए । गन्ना चोरने वाले के मुक्का मार देना पर्याप्त सजा है ।

२८९. साँठा की भारी अर् पोखर जी की जात्रा ।

पुष्कर का मेला कार्तिक में लगता है जब गन्ने की फसल उठाना शुरू किया जाता है । लोग गन्ना बेचने के लिए वहाँ जाते हैं तो साथ साथ यात्रा का लाभ भी हो जाता है, इस प्रकार 'एक पंथ दो काज' वाली बात के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

२९०. साँप की ठोड़ी जगदवाऊँ पूँछ को बळ थोड़े ई जावे ।

साँप को उसके मुँह पर डंडे मार कर मार देने पर भी उसकी पूँछ काफी देर तक हिलती (और बल खाती) रहती है । इसमें दुष्ट मनुष्यों की प्रकृति और अकड़ को लक्ष्य किया गया है ।

२९१. साँप ने दूध पावो तो ई जेर उगले ।

दुष्ट का उपकार करने पर भी वह दुष्टता नहीं छोड़ता सूरदास ने कहा है—'कहा होत पय पान कराये विष नहिं तजत भुजंग ।'

२९२. साँप भी मर जावे अर् लाठी भी नीं टूटे ।

काम भी बन जावे और नुकसान भी नहीं हो, ऐसी चतुराई को लक्ष्य करते हुए यह कहावत कही जाती है ।

२९३. सीदा तो समंदर ई नठ जावे ।

कमाई नहीं करने पर तो धन का बड़ा कोष भी समाप्त हो जाता है। समुद्र में नदियों द्वारा पानी नहीं आवे तो वह भी खाली हो जाता है।

२९४. सीदी आँगल्याऊँ घी नीं निकळे ।

बरतन में जमे हुए घी को निकालने के लिए अंगुली को टेढ़ी करनी पड़ती है, सीधी रखने पर तो वह चिकनी हो जायगी लेकिन घी नहीं निकलेगा। ऐसे ही सज्जनता का व्यवहार करने से जो काम नहीं होता है वह टेपड़ेन से हो जाता है।

२९५. सींदरी को साँप कर दी दो ।

रस्सी को भ्रम फैला कर साँप बता देना अर्थात् बात का बतंगड़ खड़ा कर देना ।

२९६. सूळी सूँठ आदाऊँ कई नींची पड़े ।

सुली हुई सौंठ अदरक से तो तेज ही होगी। बलवान व्यक्ति कमजोर होने पर भी उससे नीची श्रेणी वालों के लिए तो बलवान ही होता है।

२९७. सूता साँप ने न जगावणो ।

सोते हुए साँप को नहीं जगाना चाहिए अर्थात् क्रूर और क्रोधी व्यक्ति अगर कोई नुकसान नहीं कर रहा है तो उसे नहीं छेड़ना चाहिए। जैसे— "Let the sleeping dogs lie".

२९८. सूम के घर डूम आया ।

कंजूस यजमान के घर ढोली जावे तो उसका जाना व्यर्थ ही रहता है। सूम तो प्रशंसा से पसीजने वाला नहीं है।

२९९. सूरज के आगे धूळो नाँकबाऊँ सूरज थोड़ो ही छिप सके ।

सूरज के आगे धूल उड़ाने से वह नहीं छिप सकता। बड़े आदमी का वृथा विरोध करने पर यह कहावत कही जाती है।

३००. सूरज ने दियो बतावे ।

जिस तरह सूरज को दीपक बताना व्यर्थ है उसी प्रकार ज्ञानी को उपदेश देना मूर्खता है।

३०१. सूराँ की लार साँठा भाँगे।

सुअरों के साथ ईख तोड़ने जाने वालों को दाँत तुड़वाने की हानि उठानी होगी। कमजोरों को बलवानों की देखादेखी नहीं करनी चाहिए।

३०२. सेर की हाँडी में सवासेर न खटावें ।

'आध सेर के पात्र में कैसे सेर समात।' योग्यता से अधिक धन या महत्व से आदमी में मिथ्या अभिमान पैदा हो जाता है जिससे वह छलकता रहता है।

३०३. सोना की थाली में ताँबा की मेख।

सब प्रकार से अच्छी वस्तु या गुणी व्यक्ति में थोड़ा सा भी कलंक या दुर्गण हो तो वह अधिक खलता है।

३०४. सौ गायाँ मूँ एक तू जावे तो कई वे वे।

अनेक व्यक्तियों में से कोई एक यदि मौके पर काम न आवे तो उससे कोई अंतर नहीं पड़ता। जैसे सकड़ों गायों में से एक का गर्भपात हो जाय और वह दूध देने योग्य न रहे तो उससे कोई भारी हानि नहीं होती।

३०५. सौ सुनार की एक लुहार की।

बलवानों का एक प्रहार कमजोरों के अनेक प्रहारों से भी बढ़कर होता है।

२०६. हमाल का माथा पूँ पोट न पड़े।

जिसको जिस काम का अभ्यास होता है उसको वह कुशलतापूर्वक कर सकता है। कुली के सिर पर रखी हुई गठरी एकाएक नीचे नहीं गिरती चाहे वह कितना ही तेज चले।

३०७. हाथी का दाँत खाबा का ओर अर् दिखाबा का ओर।

जो नीच आदमी मन में कपट रखकर बाहरी प्रेम दिखाया करते हैं, उनको यह उपमा दी जाती है।

३०८. हाथी कीचड़ में फँसे जदी डेडका ई कूदे।

हाथी जब कीचड़ में फँस जाता है तो मेंढक भी उस पर कूदने लगते हैं। बलवान व्यक्ति जब आपत्ति से घिर जाता है तो निर्बल भी उसको तंग किया करते हैं।

३०९. हाथी तो विया जावे ने कीड़ी केवे के मूँ पार उतरूँ।

बहते पानी के वेग में जब हाथी भी बहने लगता है तो चींटी कैसे पार हो सकती है। अर्थात् बड़े-बड़े भी जहाँ विपत्तिग्रस्त होते हों वहाँ कमजोर कैसे बच सकते हैं। उनको ऐसी विपत्ति से दूर ही रहना चाहिए।

३१०. हाथी तो बिना सणगारचाँ ई आछ्या दीखे।

बलवान और गठीले बदन वाले व्यक्ति तो बिना आभूषणों के भी आकर्षक लगते हैं जैसे हाथियों का शृंगार न करने पर भी उनको देखने में लोगों की रुचि दौड़ती है।

३११. हाथी ने हड़क्याव कुँण देवे।

अत्यन्त बलशाली व्यक्ति को पागल करना खतरनाक होता है।

३१२. हाथी लाख बेशक्यो होई तोई गोड़ा साणा पाणी में पाणी पीं' वी।

हाथी चाहे कितना ही दुर्बल हो जायगा तो भी वह घुटनों तक गहरे पानी में जाकर ही पानी पीवेगा। इसी तरह कोई सामर्थ्यवान व्यक्ति भी कितना

ही असमर्थ हो जाय, वह अपने रुतबे के अनुसार ही काम करने का प्रयत्न करेगा।

३१३. हाथी हजार को अर् महावत बजार को।

उपयोगी वस्तु मूल्यवान होती है और उसी का महत्व होता है। उसके सेवक या रखने वाले का महत्व नहीं हुआ करता।

३१४. हाथी हाथी चल्यो जाय अर् गंडक गंडक भुस्याँ जाय।

हाथी चलता रहता है गंडक पीछे-पीछे भोंकते रहते हैं किन्तु वह कोई परवाह नहीं करता। महापुरुष अपने काम पर डटे रहते हैं और निन्दकों की कोई परवाह नहीं करते।

११५. हीरा मुख से कब कहे लाख हमारा मोल।

गुणवान व्यक्ति अपने मुँह मियाँ मिट्ठू नहीं बनता। उसके गुण ही उसका महत्व प्रगट कर देते हैं।

३१६. होळी का गीत दिवाळी में।

जब कोई बात या काम बेमौके किये जाते हैं तब यह कहावत कही जाती है।

३१७. होळी में ज्यो आवे ज्योई खाँडो नाके।

होली जलाई जाती है तब जो आता है वही उसमें काठ की बनाई हुई तलवार डालते हैं। पहले यह प्रथा थी कि प्रतिष्ठित व्यक्ति होली में लकड़ी या घास के बजाय काठ की घड़ी हुई रंगीन तलवार डालते थे। इस कहावत में नाशोन्मुख को विनष्ट करने की मनोवृत्ति (या क्लेश को द्विगुणित करने की मनोवृत्ति) को लक्ष्य किया गया है।

जाति सम्बन्धी (४)

१. अग्रे अग्रे ब्राह्मण। ।

ब्राह्मण सब कामों में आगे रक्खा जाता है, विशेषकर भोजन में पहले उसे खिलाना उसे रुचिकर है ।

२. आखो बळद, अरानी नार; ये सोवे बामण के द्वार ।

ब्राह्मण बैल को अखता नहीं करता । (उसे नपुंसक बनाने में जो पीड़ा होती है उसे पाप मानकर वह पीड़ा नहीं पहुँचाता) । वह किसी स्त्री को जो निराश्रित होती है नहीं छेड़ता । अतः ये दोनों ब्राह्मण के द्वार पर निश्चिन्त होकर निवास करते हैं । व्यंग्य में इस प्रकार कहा गया है कि ये उसके द्वार की शोभा बढ़ाते हैं ।

३. आगल बुद्धि बाणियो, पाछल बुद्धि विप्र ।

बनिये को बुद्धि समय से पूर्व ही उपजती है जबकि ब्राह्मण को अवसर चूक जाने पर।

४. आठ पूरबिया अर् नो चूल्हा ।

पूरविये (कान्य कुब्ज ब्राह्मण) आपस में भी इतनी ऊँचनीच की भावना रखते हैं कि एक ही जाति के होने पर भी अलग-अलग चूल्हों पर भोजन बनाते हैं । 'नौ चूल्हा' उनकी इसी मनोवृत्ति पर व्यंग्योक्ति है ।

५. आँधी झाड़ो मूँडापाती, वेगो आज्ये रे काका आदे काती ।

गूजरों के यहाँ काका श्राद्ध आश्विन के बजाय कार्तिक में ही होता है जब अपामार्ग (आँधी झाड़ा) के पौधे खूब बढ़ जाते हैं (जो श्राद्ध में काम आते हैं) । वह गूजरों की भौंडी अक्ल पर व्यंग्य है जो श्राद्ध में खीर जैसे व्यंजन के स्थान पर इन पौधों को महत्व देते हैं ।

६. आँबो, नींबू बाणियो गल भींच्याँ रस देत ।

आम और नींबू की तरह बनिया भी गला दबाने (अर्थात् कष्ट पहुँचाने पर ही) रस अर्थात् रुपया या मालियत देता है ।

७. ओसवाल भोपाल ।

ओसवाल जाति के वैश्य राजा की तरह उदार होते हैं ।

८. और मंत्री सब कीजिये, एक कीजिये बाणिया ।
उरो बुलावे, मीठो बोले, करे मन का जाणिया ।।

हे राजा ! और जाति के लोगों को भले ही मंत्री बनाओ पर एक बनिये को मंत्री जरूर बनाना । वह मनमानी करने पर भी सबसे मीठा बोलकर खुश कर सकता है ।

९. काग घुँवाळाँ मारजे, जाट जडूलाँ माँय ।

कौवे और जाट इतने चालाक होते हैं कि इनको कोई पकड़ नहीं सकता । कौवा घोंसले से बाहर न उड़ सके उससे पूर्व व जाट जडूले (मुंडन संस्कार) के पहले ही मारे जा सकते हैं ।

१०. कायथ, खत्री, कूकड़ा, जात जात वे पाळै ।
बामण, स्वामी, सेवड़ा, जात जात ने मारे ।।

कायस्थ, क्षत्री और मुर्गे अपनी जाति का पक्ष लेते हैं किन्तु ब्राह्मण, साधू और सेवक अपनी जाति का अपने स्वार्थ के लिए विनाश करते हैं ।

११. कालो बामण, गोरो शूद्र, याँ सूँ काँपे महारूद्र ।

ब्राह्मण यदि काले वर्ण का और शूद्र गौर वर्ण का हो तो इनसे शिव भी डरते हैं । अर्थात् ये महा भयंकर समझे जाते हैं ।

१२. कीर, कसाई, बागरचो, मत सरजे करतार ।
नत का बाँधे तड़ी तूँबड़ा, नत हरण्या की लार ।।

कीर (कहार की तरह की एक जाति) सदा भैंसों पर सामान लादकर ककड़ी, खरबूजे आदि बेचता फिरता है । कसाई मारने के लिए पशुओं को खरीदने-बेचने के लिए फिरता रहता है और बागरिया नित्य हिरणों को मारने या पकड़ने के लिए अपना सामान लिए दौड़ता रहता है । हे भगवान ऐसी अस्थिर पाप वृत्ति वाली जाति में जन्म मत देना क्योंकि इनका नित्य प्रति का कार्य जानवरों के पीछे लगा रहना है ।

१३. खाती में छोडा जतरी बाँक वे'वे ।

पेड़ का छिलका प्रायः साफ-सुथरा और सीधा नहीं होता, उसमें खुरदरापन या टेढापन थोड़ा बहुत तो होता ही है । इसी तरह उसको घड़ने वाले सुधार में भी थोड़ी बहुत खोट हुआ करती है ।

१४. गऊँ बगाड़ गाडरणी, गीत बगाड़ बण्याणी ।

गाडरी (भेड़ चराने वाले) की औरत भोजन बनाना ठीक तरह से नहीं जानती तथा बनिये की औरत गीतों की तान बिगाड़ दिया करती है ।

१५. गरज मटी अर् गूजरी नटी ।

गूजर बहुत स्वार्थी होते हैं जब तक उनको किसी काम की गरज है तब तक दूध-दही आदि देते रहेंगे. बाद में मना कर देंगे ।

१६. गरभवासा में दाँत पाता तो माँस खाता माई का ।

कायस्थों के लिए यह उक्ति कही गई है कि यदि वे गर्भवास में दाँत पाते तो माता का मांस भी खा जाते, उसे भी नहीं छोड़ते । कहा भी है—

'कायस्थेनोदरस्थेन मातुर्मांसं न भक्षितम् ।
मा जानीहि दयालुत्वं तत्र हेतुरदन्तता ।।'

१७. गायाँ भैस्याँ बामणाँ भागाँई भला ।

गाय-भैंस की तरह ब्राह्मणों को भी वीरता नहीं बताना ही उचित है । भग जाना ही हितकर है ।

१८. गाँव बगाड़ो गोरस्यो, ब्याव बिगाड़ो मेह ।

जिस प्रकार वर्षा विवाह के समारोह को बिगाड़ देती है उसी प्रकार गूजर (दूध बेचने वाला) गाय भैंस आदि पशुओं को चराकर खेती नष्ट कर गाँव को उजाड़ देता है ।

१९. गीत गुवाळ का, जान सरदाराँ की अर् जीमबो बाण्याँ को ।

दिल खोल कर गाना ग्वालों का (क्योंकि मवेशी चराते समय जंगल में धीरे गाने की कोई जरूरत नहीं), बरात में शानशौकत से रहना सरदारों का और बरात में खाने पीने की मौज बनियों की मशहूर है । सरदारों के लिए कहा भी है—'सरदाराँ की जान में, रेणों आन तान में, बाँताँ केणी कान में अर् अन्न आसमान में ।'

२०. गूजर, काँजर, मेर, कुत्ता; सूताँ केड़े सात मता ।

गूजर, काँजर, रावत और कुत्ते—ये सोने के बाद अनेक विचार वाले हो जाते हैं अर्थात् ये अव्यवस्थित चित्त वाले होते हैं इस कारण शीघ्र ही अपने निर्णयों में परिवर्तन कर लेते हैं । इनसे जो कुछ कार्य कराना हो वह शीघ्र ही करा लेना चाहिए ।

२१. गूजर की जात, मूछ्याँऊँ छाणे छाछ ।

गूजरों की दाढ़ी-मूछ बढी हुई ही रहती है, मवेशी चराने का पेशा करते हैं । उनको छाछ छानकर पीने की जरूरत नहीं होती क्योंकि वह तो उनकी बढी हुई मूँछों से ही छन जाती है ।

२२. गूजर के ज्ञान नीं, दाँतली के म्यान नीं ।

जिस प्रकार दाँतली (घास काटने का औजार–हँसिया) के म्यान नहीं होती उसी प्रकार गूजर को भी ज्ञान नहीं होता ।

२३. गूजर को बळद अर् सरदाराँ की बेटी कदे बूढा न वे वे ।

राजपूतों की लड़कियाँ वर देर से मिलने के कारण उम्मीदवारी में ही उमर याफ्ता हो जाती हैं पर बूढी दिखती नहीं क्योंकि एक तो उनको हमेशाँ 'बाइ सा' ही कहा जाता है और दूसरे उन्हें खिला पिला कर गूजर के बैल की तरह तन्दुरुस्त रखा जाता है ।

२४. गूजर, गोला, गंडकड़ा, पुचकारयाँ विस्वास ।
दुत्कारयाँ धक्के चढे, ये बिना गुरु की जात ।।

गूजर, गोले और कुत्ते पुचकारे जाने पर ही विश्वास करते हैं, दुत्कारने से ये विरोध करने के लिए उद्यत हो जाते हैं इसलिए कहा है कि ये गुरु विहीन (नुगरे) होते हैं जिससे अनुशासन को नहीं मानते ।

२५. गूजर चावे ऊजड़ ।

गूजर खेती बाड़ी से सरसब्ज इलाके को नापसन्द करता है । उसको अपने पशुओं को चराने के लिए अकूनुल होने के कारण ऊजड़ स्थान की ही तलब रहती है ।

२६. गूजर बड़ा गँवार, छाछ पीवे ने घी बेचे ।

गूजर बड़े गंवार होते हैं क्योंकि अनेक पशु पालते हैं जिससे घी बहुतायत में उपलब्ध होने पर भी खुद नहीं खाकर बेच देते हैं और छाछ पीकर जीवन निर्वाह करते हैं ।

२७. गूजर से ऊजड़ भला, मीणाँ को कोवास ।
वास बगाड़चो राँगड़ो, खेत बगाड़ो काँस ।।

गूजर पशुओं को चराकर खेत को उजाड़ कर देता है, मीणा रात्रि को चोरी करने चला जाता है अतः कठिनाई में काम नहीं आता । राजपूत साधारण सी बात पर मरने मारने पर उद्यत होकर पड़ौसी के घर को नष्ट कर सकता है और काँस जिस खेत में उग जाता है उसे बिगाड़ देता है इस कारण इनसे सम्हल कर चलना चाहिए ।

२८. गोला, ढोला, लोहड़ा, पापड़, रूई, कपास ।
अतरा कूटचाँ गुण करे, बिन कूटचाँ बनास ।।

गोले, ढोली, लोहा, पापड़ का बेसन, रूई और कपास पीटे जाने पर ही गुण करते हैं, बिना पीटे किसी काम नहीं आते और बिगड़ जाते हैं ।

२९. गोली सूँ भायलो नीं राखजे ।

दरोगिन से मित्रता नहीं रखनी चाहिए ।

३०. गंधी बैठो खोटा खाय, ब्याज मूल सूँ कदी न जाय ।

तेल इत्र बेचने वाला व्यक्ति ग्राहक न मिलने की व कुग्राहकों की बुराई करता है पर मौका मिलने पर इतना मुनाफा कमा लेता है कि ब्याज व मूलधन सब वसूल पा लेता है ।

३१. घटियो बाण्यों अर् दण्ड्यो राजपूत, याँ की कदे नीं बावड़े ।

घाटा चला जाने पर तो वैश्य और दण्डित होने पर राजपूत—इन दोनों का ऐसा पतन होता है कि पुनः अपनी पूर्व स्थिति में कभी नहीं आ सकते ।

३२. घोड़ा की जात परात अर् रजपूत की जात जमीं ।

जिस प्रकार घोड़े को अच्छी खुराक मिलने से छोटा होने पर भी वह अच्छा मालूम होता है उसी प्रकार क्षत्रियों के पास अच्छी जागीर होने पर उनके कुल को उच्च मान लिया जाता है ।

३३. चारण मतकर चतुरभुज, नाई करज्ये नाथ ।
आधी गादी बेठबो, माथा ऊपर हाथ ।।

हे ईश्वर हमें तू चारण न बनाकर नाई बनाना जिससे राजा की (हजामत करते समय) आधी (गादी) गद्दी पर बैठकर उसके सर पर हाथ धरने का मौका तो उपलब्ध होता है जबकि चारण को तो कुछ प्राप्त होने से पहले ही राजा की अनाप-सनाप तारीफ और खुशामद करते ही रहना पड़ता है ।

३४. चेजारा अर् बेजारा ने न जीते ।

इमारत बनाने वाला कारीगर और कपड़ा बुनने वाले जुलाहे बुनकर, भाँभी आदि बहुत बातें बनाना जानते हैं, इनसे कोई नहीं जीत सकता ।

३५. छाणो फूटे अर् बामण ऊठे ।

ब्राह्मण कण्डों के अंगारों पर पकाई जाने वाली (चूरमा बाटी की) रसोई के बेहद शौकीन होते हैं । इस व्यंग्योक्ति में इसे इस प्रकार बताया गया है कि जहाँ कण्डे फोड़े जाते हैं (रसोई बनाने के लिए) वहाँ ब्राह्मण पैदा हो जाते हैं अर्थात् न जाने कहाँ कहाँ से आकर इकट्ठे हो जाते हैं ।

३६. ज्याँ घर लागा बाणियाँ वे घर जाता जाणिया ।

जिन घरों में बनियों का आना जाना (व्यवहार) होता है वे घर बरबाद हो जाते हैं अर्थात् बनियों के द्वारा उनका शोषण हो जाता है ।

३७. जाट की आँट कदे ई न खुले ।

जाट की आँट (मन में पड़ी गाँठ) कभी नहीं खुलती अर्थात् इनकी कुटिलता कभी नष्ट नहीं होती ।

३८. जाट जठे ठाठ ।

जहाँ जाटों का निवास होता है वहाँ ठाठ बाट (सम्पन्नता) बना रहता है । वे खेती बाड़ी में निपुण होते हैं इसी कारण वहाँ धन-धान्य की कमी नहीं होती ।

३९ जाट, जँवाई, भाणजा, रेबारी, अर् सुनार ।
अतरा कदी न आपणाँ कर देखो उपकार ।।

जाट, दामाद, भानजा, रेबारी (ऊँट पालने वाले) और सुनार इनके साथ

कितना ही उपकार करने पर भी ये किसी के सगे नहीं होते । यदि विश्वास न हो तो इनके साथ उपकार करके देख लो ।

४० जाटणी की छोरी अर् फुलकाँ बिना दोरी ।

जाट की लड़की इस बात के लिए दुखी हो कि उसे पतले-पतले फुलके (चपातियाँ) नहीं मिलते, यह कैसी अजीब बात है । उसको तो मोटी रोटियाँ ही मिलती रही हैं और वे ही उसके लिए उपयुक्त होती हैं ।

४१. जाण मारे बाणियो पिछाण मारे चोर ।

बनिया उस व्यक्ति को ज्यादा ठगता है जिससे उसकी अच्छी जान पहचान होती है और जो उस पर भरोसा करता है; किन्तु चोर उसको जान से मार डालता है जो उसको पहचान लेता है ।

४२. जात काळी रात ।

जाति के पंच इकट्ठे होकर अन्धाधुन्ध गलत फैसले भी कर देते हैं इसलिए इनसे अन्धेरी रात की तरह सशंक रहना चाहिए ।

४३. जात जीमे आटे-साँटे, बेटी साँटे जमाई ।
छाती साटे बामण जीमें, दूना साँटे नाई ।।

जाति वाले किसी दावत में जीमते हैं तो इसलिए कि अपनी-अपनी बारी पर वे भी जिमाते रहते हैं, जँवाई (दामाद) को इसलिए दावत दी जाती है कि उसे बेटी दी है । ब्राह्मण इसलिए जीमते हैं कि रसोई बनाने का कठोर परिश्रम उन्होंने ही किया है किन्तु नाई केवल इसलिए जीमता है कि उसने पत्तल दूने दिये हैं । इसमें नाई की चालाकी को व्यंग्य रूप में लक्ष्य किया है ।

४४. जात का उदारा कुआ, जीम अर् जिमाणा ।

जाति वालों के यहाँ भोजन करना एक प्रकार से उधारी के लेन देन जैसा है क्योंकि उन्हें मौका पड़ने पर अपने यहाँ भी वापस भोजन कराना पड़ता है ।

४५. जाँघ्यो हाल्यो अर् भील चाल्यो ।

जाँघिया अर्थात् पाजामा या पतलून पहने हुए (वर्दी वाले) सिपाही को देखकर या उसके हुक्म से ही भील चल पड़ता है ।

४६. जींका घर के बारणे फरे बाण्यो ।
वाँ घर ने धूल-धाणी वे तो जाण्यो ।।

जिस घर पर बनिये का आमदरफ्त होता है वह घर मिट्टी में मिलकर रहता है । बनिया अपने स्वार्थ के लिए उसका शोषण करता रहता है ।

४७. झाड़ कूटयो अर् आसोपो ऊठयो ।

प्रत्येक झाड़ में आसोपा (दायमा जाति का एक गौत्र) गौत्र का व्यक्ति मिलता है अर्थात् इस गौत्र के मनुष्य बहुत होते हैं ।

४८. ठगायो बाण्यो अर् लुटायो रजपूत कठे ई नीं केवे ।

ठगा हुआ बनिया और लुटा हुआ राजपूत अपनी कमजोरी कहीं पर भी जाहिर नहीं करता । जैसे–'A man's folly to be his greatest secret.'

४९. डूमड़ी रोवे तोई राग में ।

ढोलण रोती है तो भी राग (स्वर-लय) में ही रोती है। लत या संस्कारों का प्रभाव अमिट होता है, यह इस कहावत से लक्षित किया गया है ।

५०. डूम धण्याँ के पांमणा अर् वेळाँछते ई विछावणां ।

ढोली अपने स्वामी (यजमान) के यहाँ जब महमान होते हैं तो वहाँ उन से कोई काम तो लिया जा नहीं सकता अतः वे अपने बिछौने दिन रहते ही फैलाकर सो जाते हैं ।

५१. डूँगर सूँ सी ऊतरची पेर पगाँ में जूता ।
अळयाँ गळयाँ में हेरतो फरे ढोली कठे क सूता ।।

ढोली जाति के लोगों को ठण्ड ज्यादा लगती है, इसे इस कहावत में इस तरह बताया है कि पहाड़ से उतर कर ठण्ड गली २ में यह खोजती फिरती है कि ढोली कहाँ पर सोये हैं ।

५२. ढम-ढम बाजे ढोला, बना पइसा परणे गोला ।।

ढम-ढम ढोल बजता है और राजघराने या ठाकुरों के दास-दासियों का विवाह भी उनके स्वामियों के साथ ही हो जाता है इस प्रकार उनके विवाह मुफ्त में ही हो जाते हैं ।

५३. ढोलक का चाम अर् वैरागी का जाम कई काम नीं आवे ।

ढोलक पर चढ़ा हुआ चमड़ा छोटा होने से कुछ काम नहीं आता इसी प्रकार वैरागी साधुओं के पुत्र भी निकम्मे होते हैं ।

५४. तुरक, तजारो, बाणियो, ओछे ठाकर बास ।
मिलता तो नींका मिल्या, रे रे काढे राछ ।।

तुर्क, तजारे का दाना (खस का दाना), बनिया, नीच ठाकुर, ये पहली बार तो अच्छी प्रकार से मिलते हैं किन्तु बाद में रह रह कर दुःख देते हैं । इसमें तजारे के दाने के लिए अभिप्राय यह है कि उसका व्यापार पहले तो लाभदायक लगता है पर बाद में नुकसान होने लगता है ।

५५. तेलण सूँ नीं मोचण घाट ।
वाँकी मोगरी वीं की लाट ।।

तेली की और मोची की स्त्रियाँ लड़ने में तेज होती हैं । मोचिन चमड़ा कूटने की मोगरी चलाती है तो तेलिन कोल्हू का लकड़ी का लट्ठा (लाठ) चलाती है । इस प्रकार दोनों एक दूसरी से कम नहीं होती ।

५७. तेली रे तेली, थारे अमर बेली ।

तेली की घाणी चलती रहे तो उसकी अमर कमाई हुआ करती है । ऊपर छाया हो तो बरसात में भी उसका काम बन्द नहीं होता ।

५८. दधीच पुत्रं कभी न मित्रं, जे मित्रं तो दगम्दगा ।

दाधीच जाति के लोग कभी किसी के मित्र नहीं होते हैं। यदि संयोगवश किसी के मित्र बन भी गये तो बाद में धोखा देते हैं।

५९. दायमा अर् दसून्दी; दोई मरच की लूँदी।

दायमा और दसून्दी (एक जाति के राव) दोनों बड़ी तेज प्रकृति के होते हैं इसलिए इन्हें मिर्ची की लुगदी की उपमा दी है।

६०. दायमा की दारी जात, खायाँ पछे मारे लात।

दायमा ब्राह्मण बड़े अहसान फरामोश होते हैं, जिसका खाते हैं खाने के बाद उसी को लात मारते हैं।

६१. धाकड़ काँटा के गाड़े राम-राम करे ,साँठा के गाड़े नीं करे।

धाकड़ जाति के लोग इतने स्वार्थी और चतुर होते हैं कि ईख लादकर जाते समय पहचान वालों से राम २ भी नहीं करते (क्योंकि कहीं एक आध ईख देनी न पड़ जाय) लेकिन गाड़ी में काँटे लादकर आते-जाते खूब राम-राम करते हैं।

६२. धान में कायमो अर् बामणाँ में दायमो।

जिस तरह धान में कायमा (काग्या एक प्रकार का काला कचरा) होता है उसी तरह ब्राह्मणों में दायमा जाति के लोग होते हैं।

६३. धोबी का घर में बड़ग्या चोर। डूब्या और ई और॥

धोबी के घर से चोरी कर चोर कपड़े ले चले जावेंगे तो कपड़ों के मालिकों की ही हानि होगी, धोबी का कुछ नहीं बिगड़ेगा।

६४. नराँ में नाई, पंखेरू में काग।
पाणी मइलो काछबो, तीनूँ दगाबाज॥

मनुष्यों में नाई, पक्षियों में कौआ, पानी में रहने वाले जन्तुओं में कछुआ, ये तीनों ही बड़े दगाबाज होते हैं।

६५. नवरो नाई कई करे, बैठों-बैठो पाटला मूँडे।

नाई उसके हाथ में कोई काम न होने पर भी चुप नहीं बैठता, कुछ नहीं तो पाटले ही मूँडता है अर्थात् जिसके स्वभाव में आलस्य नहीं होता वह कुछ न कुछ काम करता ही रहता है। जैसे—'बेकार मुबाश कुछ किया कर, कुछ नहीं तो पाजामा ही उधेड़ कर सिया कर।

६६. नाथ के घरे नाहीं नै।

नाथ पंथी साधुओं की जमात में कोई भी सम्मिलित हो सकता है। वहाँ किसी के लिए निषेध नहीं होता।

६७. नायाँ की जान में सारा ई ठाकर।

नाइयों की बरात में सभी ठाकुर बने होते हैं क्योंकि सब समान होते हैं और सेवा कार्य करने वाला (अर्थात् बरात में नाई का काम करने वाला) कोई नहीं होता।

६८. नौ नाई अर् पूण आदमी, बोहत्तर छींपा कुछ न कुछ।
लाख लखारा बरणे ऊभा, सण्डो वे तो मेंई चालां।

नाई, छींपा और लखारा—इन जाति वालों के लिए कहा है कि ये बहुधा डरपोक होते हैं। नौ नाई मिलकर पौन आदमी के बराबर कहे गये हैं। बहत्तर छींपे इकट्ठे होकर भी कुछ नहीं के बराबर बताये गये हैं और लखारे तो एक लाख होने पर भी इतने डरते हैं कि कहीं दूर जाने में किसी के साथ की प्रतीक्षा करते है। इस प्रकार इनके डरपोक स्वभाव पर व्यंग्य किया गया है।

६९. पाँच भील पच्चीस बाण्याँ।
मती करो बावजी लेडक बाण्याँ॥

बनियों के लिए कहा है कि वे बहुत डरपोक होते है। पच्चीस बनिये एक साथ होकर भी पाँच भीलों से इतने डरते हैं कि उनके आगे गिड़गिड़ाने लग जाते हैं।

७०. पांड्या अर् आगले घरे माण्ड्या।

पाँड्या (अर्थात् ग्रहों का फलादेश बताने वाला ज्योतिषी) तुम्हारी यहाँ नहीं चलेगी। किसी अगले घर जाकर अपना फलादेश लिखाओ।

७१. बणज कर रे बाणिया बारा भ भा टाल।
भुवा, भतीजो, भाणेज, देताँ लेताँ लागे जेज।
भील, भंगी, भगतण, भोपा, देताँ लेताँ वाजे बोफा।
भाँड, भुवाई, भाट ऽर् भूप, देताँ लेताँ बगड़े रूप॥

हे बनिये, तू इन बारह प्रकार के लोगों (जिनके नाम का पहला अक्षर 'भ' है) को छोड़कर अन्य लोगों के साथ व्यापार किया कर। भुवा, भतीजा, भाई और भाणेज, इन चारों से उधार पटाने में अधिक समय लग जाता है; भील, भंगी, वैश्या और भोपे, इन चारों के साथ लेन-देन करने वाले को लोग गँवार समझते हैं और भाँड (बहुरूपिया) भँवाई (नट की एक जाति), भाट और राजा, इन चारों से लेन-देन करने पर उसका स्वरूप ही बिगड़ जाता है।

७२. बलाई का माथा सूँ कूड़ा के पींदे जा बैठे तो ई बेगार नीं उतरे।

बलाई (बुनकर) बेगार से बचने के लिए कुए में एक खोह में जाकर बैठ गया तो वहाँ भी उसके सर पर एक मेंढक आकर बैठ गया। अभिप्राय यह है कि बेगारी किसी भी प्रकार से बेगार से नहीं बच सकती।

७३. बाण्याँ की गत बाण्यो जाणे।

बनियों की कुटिलाई को बनिया ही जान सकता है, दूसरे नहीं। अशोक वाटिका से हनुमान जी के चले जाने पर राक्षसियों ने सीताजी को पूछा कि वह छोटा सा प्राणी कौन था जो तुमसे बात कर रहा था तो जवाब दिया कि

राक्षसों की इस नगरी में नाना रूपधारी राक्षसों को तुम लोग ही पहचान सकती हो। साँप के पद-चिह्नों को साँप ही पहचान सकता है।

७४. बाण्याँ की बेट्याँ अर् रुप्याँ की पेट्याँ।

वैश्य की बेटियाँ रुपयों की पेटियाँ समझी जाती हैं क्योंकि इनकी जाति में विवाह करते समय वर पक्ष से बहुत रुपये लेने की प्रणाली थी।

७५. बाण्याँ, टणियाँ, टनूटणियाँ, सूत, सण अर् ढोल।
आतराँ ने कूट्याँ भला, दूणाँ पावे मोल॥

बनिया, टन् टन् बजने वाली धातु –काँसा, सूत, सन (जूट) और ढोल, इनको पीटना ही अच्छा है जिससे इनमें सुधार होकर इनका मूल्य बढ़ जाता है।

७६. बाण्यो के तो आँट में दे के खाट में दे।

बनिया अपना रुपया तब खर्च करता है जब या तो किसी को अपनी चाल में फँसाने और अपनी ईर्ष्या की भावना को संतुष्ट करने की आवश्यकता होती है या वह बीमार पड़ जाता है तब इलाज या रोग मुक्ति के लिए पाठ-पूजन आदि कराना पड़ता है।

७७. बाण्यो खाट में तो बामण ठाट में।

बनिया बीमार होकर चारपाई पकड़ता है तब अपने आरोग्य-लाभ के लिए ब्राह्मणों से पूजा पाठ आदि करवाना है जिसके लिए उनको खूब आदर सत्कार, धन और भोजन वस्त्र आदि देता है तब यह कहावत व्यंग्य रूप में कही जाती है।

७८. बाण्यो तोल में ई खावे अर मोल में ई खावे।

बनिया मोल में और तोल में, दोनों में लूटता है।

७९. बाण्यो बड़ को बीज।

वट वृक्ष का बीज बहुत छोटा है पर उसके पेड़ का विस्तार विशाल होता है, वैसे ही बनिया अपने व्यापार और माया का फैलाव करता है।

८०. बाण्यो मित्र न वैश्या सती।
कागा हंस न गधा जती।
याँ की बात कोई पूछो ई मती॥

जिस प्रकार वैश्या कभी सती नहीं हो सकती। कौआ हंस और गधा यती नहीं हो सकते उसी प्रकार बनिया कभी किसी का मित्र नहीं हो सकता।

८१. बामण को धन सबोड़ा में।
धाकड़ को धन लपोड़ा में॥

ब्राह्मण बड़े स्वादू होते हैं अतः उनका द्रव्य स्वादिष्ट भोजन में और धाकड़ जाति के लोग झगड़ालू होते हैं अतः उनका धन झगड़ों में व्यय होता है।

८२. **बामण थारी गाय ने नार मारे, तो के वींने राम मा'री ।**

ब्राह्मण की गाय को शेर मार खाये तो वह उससे बदला तो ले नहीं सकता अतः उसे शाप देकर ही संतोष कर लेता है कि शेर को भगवान मारेगा। निर्बलों की विवशता को लक्ष्य कर यह कहावत अन्योक्ति रूप में भी कही जाती है।

८३. **बामण बटको, लींबड़े लटकी, दे दे सोटा नीचे पटकी ।**

कुछ ब्राह्मण घमण्ड के मारे अपने आपको बहुत ऊँचा समझते हैं, उनका यह घमण्ड डंडे लगने पर ही दूर हो सकता है। इसे लक्ष्य करते हुए इस कहावत में बताया गया है कि ब्राह्मण का बेटा नीम के पेड़ पर अकड़ कर बैठा जिसके डंडे लगने पर उतरना पड़ा।

८४. **बामण, भैंस अर् हाथी, तीनूँ जल का साथी ।**

ब्राह्मण शौच-स्नान के लिए, भैंस तथा हाथी अपने प्रमोद के लिए पानी को अधिक चाहते हैं। अतः यह कहावत चल पड़ी है।

८५. **बामण, भैंस, मींडको, माली ।**
पाणी देख ऽर् गोडी ढाळी ।

ब्राह्मण, भैंस, मेंढक और माली पानी के प्रेमी होते हैं। ये चारों जहाँ जल देखते हैं, वहीं पर घुटने टेक देते हैं अर्थात् ठहर जाते हैं।

८६. **बामण माँग खावे अर् माँग खुवावे ।**

ब्राह्मण अत्यन्त संतोषी होते हैं। भिक्षा से गुजर कर लेते हैं। उनका संग करने वालों को भी अपना ही गुण सिखा कर माँग खाता कर देते हैं।

८७. **बामणाँ की बरात में बाटचाँ की राड़ ।**

ब्राह्मणों की बरात में बाटियों के लिए लड़ाई हो जाती है। इससे प्रतीत होता है कि ब्राह्मण भोजन के लिए लड़ने वाले होते हैं।

८८. **बामणाँ बुद थोड़ो, बेंचे भैंस अर् लावे घोड़ी ।**

ब्राह्मणों की अल्प बुद्धि का नमूना दर्शाया है कि वे भैंस जैसे लाभदायक उपयोगी पशु को बेचकर घोड़ी खरीदते हैं जो उनके किसी काम नहीं आती।

८९. **बारा बामण ने तेरा चूल्हा ।**

ब्राह्मणों में ही अनेक उपजातियाँ होती हैं जिनमें चौके चूल्हे तक का भेदभाव होता है। इसलिए यह कहावत कही जाती है।

९०. **बिना भण्यो जाट भण्याँ जस्यो, अर् भण्यों तो फेर खुदा जस्यो ।**

बे-पढ़ा जाट पढ़े के बराबर होशियार होता है और पढ़ जाने पर तो मानो वह भगवान ही हो, इतना इतरा जाता है।

९१. बीजा बरगीबाणिया, करे मन का जाणिया ।

विजयवर्गी जाति के ब्राह्मण किसी की सलाह के बावजूद अपनी इच्छा के अनुसार ही कार्य करते हैं ।

९२. बीजाबरगी बाणियो, दूजो गूजरगौड़ ।
तीजो मलग्यो दायमो, करे साह ने चोर ।।

विजयवर्गी वैश्य, गुर्जरगौड़ और दायमा ब्राह्मण ये तीनों मिलकर इतने चतुराई में पारंगत होते हैं कि साहूकार को भी चोर बना देते हैं अर्थात् ये तीनों जातियाँ बहुत चालाक होती हैं ।

९३. बेठचो बाण्यो कई करे, अठी का तोला उठीने धरे ।

निकम्मा वैश्य स्वभाववश इधर के तोले उधर डालता है अर्थात् हर समय काम में लगे रहने की आदत वाला व्यक्ति कुछ न कुछ करता ही रहता है चुप होकर नहीं बैठ सकता ।

९४. बेठतो बाण्यो अर् ऊठती मालण ठगावे ।

बनिया दुकान खोलते ही (बोहनी) बिक्री का शुभारम्भ करने को उत्सुक होने से अपना माल कुछ सस्ता भी बेच देता है और मालिन उठकर घर जाते समय शाक भाजी को (पड़ी रहने पर वैसे ही सड़ जाती है, इसलिए) सस्ते भाव में बेच देती है ।

९५. बोलजे बाबा हरजी, आदा छींपा अर् आदा दरजी ।

बहुत अधिक संख्या में एकत्र लोगों को देखकर डाकू सहम गये और हरजी बाबा को उनकी टोह लेने के लिए भेजा । जाँच करने पर उसको पूछा तो उसने बताया गया कि उनमें आधे तो छींपे हैं और आधे दरजी । अर्थात् इनकी संख्या से भय खाने जैसी कोई बात नहीं है । अभिप्राय यह है कि दरजी और छींपे बहुत डरपोक होते हैं ।

९६. भट, भण्डारी, भोजक, भोई ।
इण बणज्याँ सब पूँजी खोई ।

भट, भण्डारी, भोजक और भोई से लेन देन करने से व्यापार का मूलधन भी नष्ट हो जाता है ।

९७. भाजी में भाभरो अर् माजनाँ में काबरो ।

जैसे भाजी में एक प्रकार का घास जैसा बेकार का पौधा भाभरा होता है वैसे ही वैश्य जाति में काबरा गोत्र के माहेश्वरी होते हैं ।

९८. भाँडाँ के कसी भुवा, ने साँपाँ के कसी मासी ।

भाँडों के लिए कौनसी भुवा और साँपों के लिए कौनसी मौसी अर्थात् ये दोनों किसी की रिश्तेदारी नहीं मानते । ये सबको ठगते तथा कष्ट देते हैं ।

९९. भील के कँई ढील ।

भील के काम करने में क्या देरी होती है अर्थात् भील कार्य करने को सदैव तैयार रहते हैं ।

१००. भील भूखाँ ई मरे पण बागाँ में फरे ।

भील को मजदूरी करते हुए बगीचों में सैर करने की फुरसत कहाँ पर उनमें भी कई ऐसे शौकीन होते हैं कि भूखे रहकर भी बगीचे की सैर के लिए चले जाते है अर्थात् अभावग्रस्त होकर भी मौज मनाने लगते हैं । इसे अन्योक्ति रूप में भी लिया जाता हैं । इसे अन्योक्ति रूप में भी लिया जाता है ।

१०१. भोली माँ का डावा बेटा अर् डावी माँ का भोला बेटा ।

भोली माँ के चतुर पुत्र और चतुर माँ के भोले पुत्र होते हैं । महाजनों में माता भोली और पुत्र चतुर तथा क्षत्रियों में माता चतुर किन्तु पुत्र भोले होते हैं ।

१०२. मरचो दायमो जीवता गुजरगौड़ ने खाग्यो ।

मरता हुआ दायमा जीवित गुर्जरगौड़ को खा गया । एक बार दोनों ने विदेश में जाकर धन उपार्जन किया । वहाँ जाकर दायमा बीमार पड़ा तो उसने सोचा कि मैं तो मर जाऊंगा और वह अपने घर जाकर आनन्द करेगा । इस कारण उसने गुर्जरगौड़ से कहा कि जब मेरे प्राण निकल जाएँ तो तू तेरे मस्तक में कीली ठोक देना । इससे मेरे प्राण ब्रह्मरन्ध्र से निकलकर मुझे मुक्ति मिलेगी । गुर्जरगौड़ ने जब ऐसा ही किया तो हत्या के अपराध में पकड़ा गया और फाँसी पर चढाया गया । यह कहावत दायमा लोगों की चालाकी के लिए प्रसिद्ध है ।

१०३. मरचो मेशरी जीवता ओसवाल ने खाग्यो ।

दायमा जाति के लिए प्रचलित उपर्युक्त कहावत की तरह ही वह कहावत भी माहेश्वरी वैश्यों की ओसवाल वैश्यों के मुकाबले अधिक चालाकी और होशियारी के लिए प्रसिद्ध है ।

१०४. माजन को भरमायो अर् जोगी को फटकारचो कदेई बागड़े नीं मले ।

बनिये की बहकावट का प्रभाव बहुत पड़ता है वैसे ही साधु की फटकार का भी बड़ा गहरा प्रभाव होता है । इन दोनों से सम्हलकर पुरानी स्थिति पर वापस नहीं आ सकते ।

१०५. माजन चोरे मुट्ठी-मुट्ठी, अल्ला भर ले ऊँट ।

बनिया अपने लाभ के लिए थोड़-थोड़ी चोरी (जैसे कम तोलना—आदि) करता रहता है; पर कभी अचानक ही उसका परिणाम ईश्वर एक साथ ही भुगता देता है । इसलिए कहा है कि 'अल्ला भर ले ऊँट ।' पापात्मा पर दैवी प्रहार अचानक होता है ।

१०६. माजन पोई रोटी बेच देवे ।

बनिया मुनाफे के लिए इतना तैयार रहता है कि अपने खाने के लिए बनाई हुई रोटी तक को बेच देने में कोई संकोच नहीं करता ।

१०७. मारवाड़ा जूता में मोहराँ राखे ।

मारवाड़े दीखने में गरीब; किन्तु असल में धनी होते हैं । वे जूतों में मोहर (सोने का सिक्का) छुपा कर रखते हैं । वे बहुधा, खासकर अकाल के समय, मवेशियों को लेकर घूमते फिरते हैं तब खो जाने के भय से मोहरों को जूतों में दबा कर रख लेते हैं ।

१०८. माळा वाळो मेशरी, कथा वालो भट्ट ।
कड़ा वाली पंसेरी तीनूँ गला कट्ट ।।

माला वाला माहेश्वरी, कथा कहने वाला भट्ट और कड़े वाली पंसेरी ये गला काटने वाले होते हैं अर्थात् धोखा और नुकसान देने वाले होते हैं । माहेश्वरी माला के दिखावे से धर्मात्मा दीखता है और राम के सोगन खाकर भी धोखा दें देता है । कथा भट्ट ठगाई करने के लिए मनगढन्त किस्से कथा में जोड़ता रहता है और कड़े वाली पत्थर की पंसेरी में सही वजन नहीं होता ।

१०९. माळा वाळो मेशरी, जेवा वालो जाट ।
पाणी मइलो काछबो, ये तीनूँ दगाबाज ।।

माला पहनने वाला माहेश्वरी, जेवा (काँटो का भार उठाकर लाने के काम आने वाला खेती का एक लकड़ी का औजार) रखने वाला जाट और पानी का कछुवा ये तीनों ही दगाबाज होते हैं । माला दिखाकर माहेश्वरी भगवान की झूठी शपथ लेकर ठगता है । जेवा के नोकदार सिरों से जाट शत्रुको मार सकने का अभिमान रखता है और कछुआ पानी में छिपने लिए तैयार ही रहता है ।

११०. माली अर् मूळा तो छीदाई भला ।

मालियों की जाति में बड़ा संगठन होता है इसलिए इनको इकट्ठे नहीं बसने देना चाहिए । इसी तरह मूली के पौधे भी बहुत पास पास नहीं लगाने चाहिएँ । ये दूर दूर होंगे तो मूली मोटी ताजी पैदा होगी ।

१११. मिले तो अमीर, नीं मिले तो फकीर, मरे तो पीर ।

मियाँजी जब कुछ मिलता है तो अमीर, नहीं मिलता है तो फकीर और मर जाने पर पीर बन जाते हैं । वे कभी हानि में नहीं रहते ।

११२. मूसल के अणी नीं, बामण के धणी नीं ।

जिस प्रकार मूसल को फट जाने से बचाने के लिए उसकी नोक लोहे की (अनी) नहीं होती उसी प्रकार ब्राह्मणों का रक्षक भी कोई नहीं होता ।

११३. मेशरचाँ में मूँदड़ो अर् मुसलमानाँ में कूँजड़ो ।

माहेश्वरी वैश्य जाति में तो मूँदड़ा (एक गोत्र विशेष) के लोग और

मुसलमानों में कुँजड़ा (सागभाजी के व्यौपारी) दोनों एक समान होते हैं अर्थात् ये प्राय: गम्भीर नहीं होते ।

११४. रजपूत का दूजा अर् छाळी का तीजा ने जगाँ नीं ।

जिस प्रकार बकरी के दो ही स्तन होने से तीसरे बच्चे के लिए कोई स्तन बाकी नहीं रहता उसी प्रकार क्षत्रियों में प्रथम पुत्र को राज्य (जागीर) मिलने के कारण द्वितीय पुत्र को कोई नहीं मानता ।

११५. रजपूत की ऊठ अर् मुसलमान की पूठ कमजोर होवे ।

राजपूत की वृद्धि धीमी होती है और मुसलमान पीठ पर मार नहीं सह सकता, जल्दी गिर जाता है ।

११६. राजपूत एक थण चूँके अर् एक थण काटे ।

राजपूत किसी का सगा नहीं होता । इतना स्वार्थी होता है कि माता के एक स्तन से दुग्ध पान करता है तो दूसरा स्तन काट सकता है ।

११७. रावत जाई डीकरी सदा सुहागण होय ।

रावतों की स्त्रियों में विधवा विवाह इतना प्रचलित है कि विधवा होने पर कोई भी स्त्री अधिक दिन बैठी नहीं रह सकती और जल्दी ही दूसरा पति कर लेती है । इसलिए उसे 'सदा सुहागन' कहा गया है ।

११८. रंडी का जीव हंडी में ।

कुलटा स्त्रियों का ध्यान खाने पीने के स्वाद में ही लगा रहता है । यह कहावत अन्योक्ति रूप में तब कही जाती है जब कोई अपनी किसी लत या दुर्व्यसन में हर समय उलझा रहता है ।

११९. सरदाराँ की जान में, रेणो तान-मान में,
बाताँ केणी कान में अर् अन्न आसमान में ।

सरदारों की बरात में लोग बहुत ठाट-बाट से रहते हैं । शराब पीने और बातें करने में इतने मशगूल रहते हैं कि खाना-पीना भी भूल जाते हैं ।

१२०. सरदाराँ में गौड़, घोड़ाँ में रोड़ ।

जिस प्रकार घोड़ों में रोड़ (टट्टू) छोटा होता हुआ भी मजबूत होता है उसी प्रकार क्षत्रियों में गौड़ होते हैं ।

१२१. सरदाराँ में डोड़चो अर् घोड़ा में रोड़चो ।

जिस प्रकार घोड़ों में रोड़ (टट्टू) छोटा परन्तु बलवान होता है उसी प्रकार राजपूतों में डोड़चा होता है ।

१२२. सादू, गोला, भंगी; तीन जात या जंगी ।

साधु, दरोगे और महतरों में सभी मिल सकते हैं इसलिए ये बड़ी वृद्धि-शील जातियाँ हैं ।

१२३. सारस्वत को संग न कीजे, कालो साँप सिराणे लीजे ।

सारस्वत जाति के ब्राह्मण का साथ करना काले साँप को मस्तक के नीचे लेकर सोने से भी अधिक भयंकर है ।

१२४. साह कटारा बाँधिया, चोराँ दूणो लाभ ।

बनिया कमर में कटारी बाँध कर निकले तो चोरों को इससे दूना लाभ होता है अर्थात् वे उसका माल लूटने के साथ ही हथियार (कटारी) उपलब्ध हो जाने से उसकी जान भी ले लेते हैं। निर्बल व्यक्ति (या कायर) को अपने साथ हथियार नहीं रखना चाहिए।

१२५. साँठा में खोड़बाड़ अर् माजनाँ में पोरवाड़ ।

गन्ने (ईख) में दो साली फसल—खोड़वाड़ का गुड़ अधिक बैठता है इसी तरह महाजनों (वैश्यों) में पोरवाड़ मालदार होते हैं।

१२६. साँप, सिपाई, सलावट, सीदी ताकण हार ।

साँप, सिपाही और सलावट (शिल्पी) ये सब बनी बनाई तैयार वस्तुओं का इस्तेमाल करने वाले होते हैं।

१२७. सुखवाल कदे सपूत विया ।

सुखवाल जाति के ब्राह्मण कभी योग्य नहीं निकलते।

१२८. सूताँ पछे सुनारा, पाछली रात का पिनारा ।

सुनार और पिनारे (रुई पीनने वाले) मनुष्यों के सो जाने पर और पिछली रात रहने पर अपना धंधा करते हैं ताकि उसमें मिलावट आदि बदमाशी करने पर भी कोई न जान सके।

१२९. सूतो दरजी सात कोस जाय ।

दर्जी बहुत ही बेखकर सोते हैं।

१३०. हारचो डूम दिवाळी गावे ।

हारे हुए ढोली को यदि कुछ भी नहीं आता तो वह दिवाली ही गाने लगता है। हारा हुआ व्यक्ति अपनी हार छिपाने के लिए असंगत कार्य करने लगता है।

———

ऐतिहासिक (५)

१. आँवल-आँवल मेवाड़, बोळये-बोळये मारवाड़ ।

अरावली पहाड़ों के नीचे मेवाड़ का इलाका था जो गोड़वाड़ कहलाता है, उसमें आँवल के पौधे अधिक होते हैं। उसके बाद मारवाड़ (जोधपुर राज्य) की सरहद आती थी जिसमें बंबूल के पेड़ अधिक होते हैं। इस प्रकार दोनों राज्यों की सरहद के लिए यह कहावत प्रचलित हो गई।

२. काऴ पड़े तो कुम्भा धणी, मेह बरसे तो मजूरी धणी ।

महाराणा कुम्भा ऐसे प्रजापालक थे कि प्रजा अकाल से नहीं डरती थी। बरसात अच्छी हो जाने पर तो वैसे ही काफी मजदूरी मिल जाया करती थी।

३. काँदा खादा कामधजाँ गुऴ खायो गोलाँ ।
पाली चाली प्रेम सूं बाजन्ता ढोलाँ ।।

पाली (मारवाड़) के ठाकुर प्रेमसिंह जी दरोगों को ज्यादा चाहते थे उनको गुड़ से रोटी खिलाते थे और राठौड़ों को प्याज से रोटी खानी पड़ती थी। जब शत्रुओं ने पाली पर हमला किया तो राठौड़ नहीं लड़े और चूँकि दरोगे लड़ाई में अधिकतर बेकार ही होते थे इसलिए शत्रु लोग ढोल बजाते हुए आसानी से पाली में घुस गये।

४. खादा पीदा भरचा पेट, छाती कूटो नगर सेठ ।

'हमने तो खा पी कर पेट भर लिया, अब नगर सेठ भले ही छाती कूटे।'—यह कहावत तभी से चल पड़ी जब एक बार नगर सेठ ने भोजन रुकवाया किन्तु लोगों ने तो उससे पहले ही भोजन कर लिया। इस कहावत को अन्योक्ति के तौर पर भी प्रयुक्त किया जाता है।

५. खेराड़ का खेझा अर् मेवाड़ का मंगळा ।

खेराड़ (भीलवाड़ा जिले की जहाजपुर तहसील का भौगोलिकनाम) के लोगों की बोली जंगली होती है उसके मुकाबले में मेवाड़ के अन्य भागों को लोग मधुर (मंगलकारी) बोली बोलते हैं।

६. चित्तौड़ ने चित्तौड़ी लागी ।

चित्तौड़ का किला अधिक ऊँचे पहाड़ पर है और चित्तौड़ी उससे सटी हुई एक छोटी पहाड़ी है। इस पहाड़ी पर अकबर बादशाह ने किले से गोले बरसाये जाने पर भी मिट्टी डलवाकर अपनी तोपों को जमाने के लायक करा दी और उस पर गोले बरसाकर किले की दीवार तोड़ दी। जब पास वाली छोटी वस्तु बड़ी वस्तु के नाश का हेतु बन जाय तब यह उदाहरण दिया जाता है।

७. चित्तौड़ मारचाँ को पाप अर् गऊ मारचाँ की हत्या ।

जब अकबर ने चित्तौड़ का किला जीता तब हजारों क्षत्रिय मारे गये। यह नरसंहार भयंकर पाप माना जाता रहा है। इसकी तुलना गोहत्या से की है। साधारणतया पाप और झूँठ के आचरण को लेकर शपथ देने-लेने के लिए यह कहावत प्रचलित है। यहाँ तक कि पुरानी लिखावट के इकरारनामों में भी एक परिपाटी के तौर पर इसका प्रयोग किया जाता रहा है।

८. टूटो तोई टोड़ो अर् भाँगी तोई भदेर ।

टोड़ा शहर (टोड़ा रायसिंह) ध्वंस कर दिये जाने पर भी व भदेसर का किला तोड़ दिया जाने पर भी अन्य शहरों के मुकाबले अपनी अनूठी शान रखते हैं।

९. ढींकोळा का ढींच अर् साईपरा का नींच ।

ढींकोला गाँव के ढींच व शाहपुरा के नीच लोग एक जैसे दुष्ट होते हैं। ढींकोला एक गाँव है जो शाहपुरा से कुछ मील दूर है। ढींच नामक बड़ी टाँगों वाली जल व स्थल दोनों पर रहने वाली एक प्रकार की बड़ी चिड़िया होती है जो मछलियों को समाप्त कर देती है।

१०. तिरिया तेल, हमीर हठ, चढ़े न दूजी बार ।

कन्या की शादी (तेलपाण चढ़ाकर कुँवारी कन्या का विधिवत् विवाह) और राजा हमीर का हठ, ये दो बार नहीं होते। राजा हमीर का हठ प्रसिद्ध है। अपने हठ को पूरा करने के लिए मर मिटना ही उसको अभीष्ट था। विधवा विवाह भी कई जातियों में सम्भव नहीं था।

११. दिल्ली फकीरां जोगी हुई ।

राजधानी कलकत्ते में होने पर दिल्ली फकीरों के रहने योग्य हो गई थी।

१२. पुर माँडल के चोवटे, झामा पीर झले ।
छोरा छोरी सू गया अर् राँडाँ चूरमो गले ।

बड़ी तीज के पहले की रात्रि अधरतिया कहलाती है। तीज के दिन सधवा स्त्रियाँ सुहाग-कामना से दिन भर उपवासी (भूखी-प्यासी) रहती हैं और पूर्व रात्रि के मध्यभाग में चूरमा-बाटी की रसोई जीम कर इस व्रत की तैयारी करती हैं। उस समय बच्चे-बच्ची तो सोये रहते हैं अतः उन्हें न जगा कर अकेली ही खाती हैं। अतः यह कहावत व्यंग्य रूप में कही जाती है। पुर

और माँडल के बीच में झामाजी पीर का मंदिर है। इन दोनों गाँवों में अधरतिया का चूरमा खाने का रिवाज अधिक होने से इनका उल्लेख किया गया है।

९३. भीलोड़ा का भील बेचण्यां, बूँदी का बोपारी।

बूँदी के व्यापारी ऐसे चालाक थे कि भीलवाड़ा के भीलों को (सागड़ी की तरह) बेचकर रुपये खा गये।

१४. राणाजी रूँसी तो वाँको उदेपुर रा'खी।

किसी के आश्रित न रहने और किसी की कोई गरज न करने की मनोवृत्ति पर यह एक प्रकार की अन्योक्ति है कि महाराणा यदि नाराज हो जायेंगे तो अधिक से अधिक उनके उदयपुर से निकाल देंगे। इससे घबराने की क्या आवश्यकता! दूसरे नगर में जाकर जिन्दगी बसर करेंगे।

१५. रावण का घर में रोवा वाळो ई कोय ने।

सर्वनाश की ऐसी घड़ी आजावे कि रोने के लिए भी किसी के बचे रहने की सम्भावना न हो तब यह उपमा दी जाती है कि रावण के घर में रोने वाला भी कोई नहीं रहा।

१६. सत पुरुषाँ की मूँडक्याँ गिल गी राँड गंगार।

गंगरार में लड़ाई हुई तब साधुवेशधारी लड़ने वालों के सिर भी कट गये और उनका इस कुग्राम में पता भी नहीं चला। (अड़सी जी के समय की बात)

१७. सन्त सगाई ना करे, माथे न बाँधे मोड़।
परणी लावे पारकी, जाय घोसुण्डे दोड़॥

वैरागी साधु न तो सिर पर मोड़ बाँधते हैं और न सगाई ही करते हैं। वे तो घोसुण्डे के मेले में जाकर दूसरों की विवाहित स्त्री को ले आते हैं। मेवाड़ के घोसुण्डे नामक गाँव में पहले वैरागियों का एक मेला लगता था जिसमें अपनी नापसंदगी की पत्नियाँ कपड़े से पूरी ढककर बैठा दी जाती थीं। जिसके जी में जो आती, वह उसे उठा लाता और आगामी मेले (एक वर्ष) तक तो उसे रखना ही पड़ता था।

१९. साइपरा का साल्या लोग, भरे छाबड़ी बेचे बोर।
एक बोर घट गियो, आखाई साइपरा को नाक कटगियो।

शाहपुरा के लोग छोटी बात को बड़ा महत्व देने की मूर्खता करते हैं। बेचने के लिए बेरों से भरी हुई टोकरी (छबड़ी) में से एक बेर नीचे गिर जाय या कम हो जाय तो कोई बड़ी बात नहीं होती लेकिन इसमें भी वे अपने शहर की भारी बेइज्जती होना मानते हैं।

१९. सोढी जी वाला सिणगार करे।

सोढा क्षत्रियों की बेटियाँ बहुत सुन्दर व अत्यन्त शृंगारप्रिय होती थीं। एक बार अपने पति के आने पर अत्यधिक शृंगार करते रहने में इतनी रात

बीत गई कि प्रतीक्षा से तंग आकर उसका पति वापस लौट गया। इस प्रकार इनके लिए यह व्यंग्य प्रचलित हो गया जिसे इस प्रकार भी कहा जाता है कि—'सोढी जी सणगार कीदो जतरे राणाजी पाछा उदयपुर पूगग्या।'

२०. **सोर लाओ, गोली लाओ,**
चित्तौड़ को किला तोड़ बनेड़ा को भक लूँ।

गोली बारूद तो पास है नहीं और डींग इतनी जोर की हाँकता है कि (ये चीजें कोई लाकर दे दे तो) चित्तौड़ का किला तोड़ कर (वहाँ से करीब 50 मील दूर स्थित नगर) बनेड़ा को भी ध्वस्त कर दूँगा। यह डींग हाँकने वालों के प्रति व्यंग्य है।

२१. **हाड़ा सिसोदयाँ वाळो बैर।**

बूँदी के राव और चित्तौड़ के राणा रतनसिंह एक दूसरे के साले बहनोई थे। एक बार बूँदी में दोनों आपस में एक छोटी सी बात पर लड़ पड़े और मारे गये तब से बूँदी के हाड़ों (चौहानों की एक शाखा) व चित्तौड़ के शिशोदिया क्षत्रियों में वंश परम्परागत वैर हो गया जो सदियों तक चला।

२२. **हाड़ो ले डूब्यो गणगोर।**

प्रसिद्ध है कि बूँदी के हाड़ा राजा ने तालाब पर गणगोर की सवारी निकाली। राजा की नाव डूब गई तो उसके साथ गणगोर भी डूब गई। दोषी व्यक्ति के साथ रहने से निर्दोष व्यक्ति भी मारा जाता है।

ऋतु-सम्बन्धी (६)

१. आई राखी, मरी माखी ।

बरसात में मक्खियाँ अधिक हो जाती हैं । श्रावण शुक्ला पूर्णिमा (राखी) के बाद बरसात कम होने लगती है और मक्खियाँ भी मरने लगती हैं ।

२. आगण अर् बड़ा घरां का आदण ।
चेत चतारो अर् फूहड़्याँ का मेल उतारो ।।

अगहन मास आने पर अमीरों के यहाँ सर्दी की ऋतु में कई प्रकार के व्यंजन बनाये जाने लगते हैं । फूहड़ स्त्रियाँ सर्दी में ठण्ड के डर से स्नान नहीं करती हैं, चैत्र महिना आता है तब उनके शरीर का मैल उतरता है ।

३. आदरा भरे खादरा, पुनरवसु भरे तलाव ।
न बरस्यो पूखे तो बर' सी घणां दूखे ।।

आर्द्रा नक्षत्र में छुटपुट बरसात शुरू होती है और खड्डे भरने जितनी ही होती है । पुनर्वसु नक्षत्र में अच्छी वर्षा होती है और तालाब भरने लगते हैं । यदि पुष्य नक्षत्र में बरसात न हो तो फिर होना मुश्किल है ।

४. आदे माह अर् काँधे कामळी ।

माह (माघ) मास आधा बीत जाता है उसके बाद अधिक ठण्ड नहीं पड़ती अत: कम्बल कन्धे पर ही पड़ी रहती है ताकि वक्त जरूरत ओढ़ी जा सके ।

५ आसोजाँ का तावड़ा में जोगी वेग्या जाट ।
बामण वेग्या सेवड़ा जो बाण्यां वेग्या भाट ।।

आसोज मास की धूप बहुत तेज होती है । जाट को खरीफ की फसल को समेटने और रबी की बुवाई करने का काम तेजी से (उस कड़कड़ाती धूप में) करना पड़ता है जिससे वह पञ्चाग्नि तपस्या करने वाले जोगी जैसा हो जाता है । ब्राह्मण घर-घर श्राद्ध खाने के लिए सेवक (सेवड़ा या शाकद्वीपी ब्राह्मण)

जैसा हो जाता है। सेवक (सेवड़ा) बहुधा मन्दिरों में पुजारी हुआ करते हैं जो अपने पूजा के ओसरे (Turn) के दिनों में घर घर से आटा, दाल, घी आदि लाते हैं। ब्राह्मण भी घर घर श्राद्ध-भोजन के लिए जाने के कारण सेवकों जैसे हो जाते हैं। बनिये (खरीफ की फसल से) अपने आसामियों से वसूली करने के लिए घर घर घूमते हैं, मीठे बोलकर खुशामद करते हैं अत: वे भाट जैसे हो जाते हैं। इस प्रकार आश्विन मास में इन तीनों की गतिविधियों को लक्ष्य कर यह उपमा दी जाती है।

विशेष:—डा० वासुदेव शरण अग्रवाल ने इस ग्रंथ (संस्करण सन् १९४६ ई०) की भूमिका में 'सेवड़ा' का अर्थ श्वेताम्बर लिया है और श्राद्ध पक्ष में ब्राह्मण को एक ही बार भोजन करने वाला बताया है। किन्तु मेवाड़ में सेवड़ा 'सेवक ब्राह्मण' के लिए उपहासात्मक अपभ्रंश है। मन्दिर में पूजा के 'ओसरे' पर इन लोगों में ईर्ष्या-द्वेष भी अधिक होता है इसीलिए 'बामण नाई सेवड़ा जात जात ने मारे', यह लोकोक्ति श्वेताम्बरियों की अपेक्षा इन्हीं पर ज्यादा घटती है। मेवाड़ में बहुत से ब्राह्मण एक से अधिक बार भी (एक ही दिन में) श्राद्ध-भोजन करने चले जाते हैं। इस प्रकार मलिक मुहम्मद जायसी की बिहारी भाषा से इस शब्द (सेवड़ा) का मेल बैठाना उपयुक्त नहीं जँचता।

६. उगैणी री माछली, आथवे तेरो मोख।
भीम कहे सुण भड्डली, नदियाँ चढसी गोख॥

यदि मछली नदी में पानी के प्रवाह की विपरीत दिशा में तैरती है तो (भीम भडुली से कहते हैं कि) भारी वर्षा होगी और नदियाँ किनारे पर बने मकानों के झरोखों तक चढ़ जावेगी।

७. उतरे जेठ जे बोले दादर।
कहे भडुली बरसे बादर॥

जेठ मास उतरने पर यदि मेंढक बोलें तो बादल जरूर बरसेंगे। (किन्तु इसके विपरीत दूसरी कहावत भी है, 'जेठ उतरचाँ०, इसी अध्याय में आगे)।

८ उलटो बादल जो चढे, विधवा ऊभी न्हावे।
भीम कहे सुण भडुली, या बरसे वा जावे॥

बादल यदि पूर्व से पश्चिम की तरफ को ओर चढ़े, विधवा यदि खड़ी-खड़ी नहाने लगे (अर्थात् निर्लज्ज या उच्छृंखल हो) तो (भीम कहते हैं कि हे भडुली) वह तो बरसेगा और यह किसी के संग जाती रहेगी, यह निश्चय जानो।

९. ऊगाणां धनुष चढचा, आँथूणाँ तण्या मच्छ।
केरड़ा-केरड़ी मत उछेरो, भरसी खाड़ा खच्छ॥

पूर्व की ओर सुबह ही इन्द्रधनुष खिंच जावे व पश्चिम की ओर मछलियों

की आकृतियों वाले बादल छाये हुए हों तो बछड़े-बछड़ियों को चरने के लिए रवाना मत करो। वर्षा इतनी होगी कि खड्डे पूरे भर जायेंगे और वे कहीं डूब जायेंगे।

१०. ऊँटां, टेटां, टेगड़ा, गुड़, गाडर, गाड़ाँ।
अतरां ने दुख ऊपजे, जद मेंढक बोले नाड़ाँ॥

वर्षा ऋतु (पोखर में मेंढक बोलने के दिनों) में ऊँट फिसल जाने से, बकरियाँ, कुत्ते घावों में कीड़े पड़ जाने से, गुड़ पिघल जाने से, भेड़ बालों में पानी भर जाने से और गाड़ियों को फँस जाने से बहुत कष्ट होता है।

११. काती को मेह कटक बराबर।

कातिक महीने की वर्षा फौज की तरह विजय प्रदान करने वाली होती है क्योंकि उसकी तरावट रबी की फसल के लिए वरदान होता है।

१२. काती देख्याँ काळ अर् समय देख्याँ सुकाळ।

कातिक मास तक भी यदि वर्षा हो जाय तो अकाल का भय नहीं रहता। इससे खरीफ के अभाव में रबी की फसल अच्छी होने की आशा बँध जाती है। समय पर (आवश्यकतानुसार) वर्षा होना ही सुकाल की निशानी है।

१३. काळ का काचरा अर् सुकाळ का बोर।

अकाल में काचरे (छोटी २ खट्टी ककड़ी) और सुकाल में बेर बहुतायत से पैदा होते हैं—यह उनकी पहचान है।

१४. काळी पीळी बादळी सावण लास्या जाय।

सावण में सभी तरह के बादल आकर बरस जाते हैं।

१५. चेत चरपरो अर् सावण निरमलो।

चेत में वर्षा हो और श्रावण में आकाश स्वच्छ रहे तो फसलों के लिए शकुन अच्छे नहीं समझे जाते।

१६. जेठ उतरचा दोय दाड़ा जेर इन्दर धरहरे।
अषाढ सावण जाय सूखो, भादवे बरखा करे॥

जेठ मास के अन्तिम दो दिनों में यदि बादल गरजें तो आषाढ़ श्रावण सूखे निकलकर भाद्रपद में वर्षा होगी।

१७. परभाते गेह डंबराँ, शीतल वायु चलन्त।
राते चमके तारका, चेला करो गच्छन्त॥

यदि वर्षा ऋतु में सुबह तो बादल छाये रहें और ठण्डी हवा चलती रहे व रात को आकाश निर्मल हो जाय तो (हे शिष्य! यहाँ से चल देना ही उचित है क्योंकि) ये लक्षण अकाल के हैं।

१८. पोस अर् खालड़ी कोस।

पोष में इतनी सर्दी पड़ती है कि उसे चमड़ा खींच देने वाली कहा है।

१९. बरसे भरणी, छोड़े परणीं।

भरणी नक्षत्र में वर्षा होगी तो ऐसा अकाल पड़ेगा कि विवाहित स्त्री भी पति को छोड़ भागेगी।

२०. भादवा की छाछ भूतां ने अर् काती की पूतां ने।

भाद्रपद में बादल बने रहने से छाछ खट्टी व नुकसान देने वाली होती है (जो भूतों को पिलाने योग्य है) और कार्तिक में उसका स्वाद और गुण उत्तम होता है (जो पुत्रों को पिलाने योग्य होती है)।

२१. भादवा में तो भीलड़ी ई भुज्या करे।

भाद्रपद मास तक अच्छी वर्षा के कारण आगामी फसल के शुभ आसार होते हैं, सबको खुशी होती है, अत्यन्त अभावग्रस्त होने वाली भीलण भी (भुज्ये) पकौड़े बनाकर खाती है।

२२. भादवो कोरो अर् करसो सोरो।

भाद्रपद में वर्षा न हो (और उससे पहले अच्छी हो गई हो) तो किसान बहुत प्रसन्न रहता है क्योंकि अधिक वर्षा के कारण होने वाले नुकसान से बच जाता है।

२३. सावण सूता साँथरी, माह अखरोड़ी खाट।
आपू ई मर जावसी, जेठ चलन्ता बाट॥

श्रावण में कोरे आँगन पर, माह में बिना बिछौने वाली खाट पर और ज्येष्ठ मास में बिना जूतों के पैदल चलने वाले अपने ही आप मारे जाते हैं। इस प्रकार से आचरण तब करते हैं जब घर में किसी की मृत्यु हो जाती है या अत्यन्त निर्धनता होती है।

———

कृषि-सम्बन्धी (७)

१. **आखा तीज के दिनाँ, गुरु रोहिणी संजोत ।**
सहदेव जोशी कहत है, निपजे माल बहोत ।।

अक्षय तृतीया के दिन यदि गुरु और रोहिणी साथ हो तो खेती का माल बहुत होगा अर्थात् बरसात ठीक समय पर पर्याप्त मात्रा में होगी ।

२. **आदरा बाजे बाय, झूँपड़ी झोला खाय ।**

आर्द्रा नक्षत्र में बरसात होने के बजाय हवा ही चले तो झोंपड़िया भी उठ जाने की स्थिति पैदा होगी अर्थात् दुर्भिक्ष पड़ेगा ।

३ **आषाढी पूनम दिनाँ, निरमल ऊगे चन्द ।**
कोई सिन्ध कोई मालवे जायाँ कटसी फन्द ।।

आषाढी पूर्णिमा के दिन आकाश साफ रहे और निर्मल चंद्र का उदय हो तो लोगों को अकाल ग्रस्त होने पर सिन्ध या मालवा प्रान्त में जाने पर ही राहत मिलेगी ।

४ **ओछी पींड्या, बैंगण खुरो ।**
मूँगो-मूँगी लीज्यो उरो ।।

बैल खरीदने वाले किसान को राय दी गई है कि बैल की पिंडलिएं ज्यादा लंबी न हो और उसके खुर बैंगन की शकल के हो तो वह महंगा मिल रहा हो तो भी खरीद लेना चाहिए ।

५. **एक आदरचो हाथ लाग जावे तो करसो राजी ।**

आर्द्रा नक्षत्र में एक बार ही अच्छी बरसात हो जाय तो किसान बहुत प्रसन्न होता है ।

६. **कर्महीण खेती करे, बळद मरे कन सूखेड़ो पड़े ।**

अभागा व्यक्ति खेती करता है तो या तो बैल मर जाते हैं या सूखा पड़

जाता है। भाग्यहीन व्यक्ति को उत्तरोत्तर आपत्तियों का ही सामना करते रहना पड़ता है। जैसे—'प्रायो गच्छति यत्र भाग्यहीनस्तत्रैव यान्त्यापदः।'

७ कातिक तेरह, तीन असाढ।

कार्तिक की बुवाई तेरस और आषाढ़ में खरीफ की बुवाई तीज के दिन शुरू करना चाहिए।

८. काती का जुवारा अर् जेठ का लुवारा।

कार्तिक में बोए जो-गेहूँ के पौधे और जेठ में पैदा होने वाले बछड़े अच्छे होते हैं।

९. काती सब साथी।

पहले आगे-पीछे बोई हुई होने पर भी खरीफ की फसल कार्तिक में एक साथ काटी जाने जैसी हो जाती है।

१०. खाताँ खेती अर् घोड़ाँ राज।

खेती की पैदावार अधिक होना अच्छी खाद पर और शासन की सफलता अच्छे घोड़ों वाली फौज पर निर्भर होते हैं।

११. खाताँ खेती अर् मनखाँ टापरो।

खात से खेती और मनुष्यों से घर आबाद होते हैं।

१२. खेत खळै नाड़ो, घरे आयाँ पछे किंवाड़ आड़ो।

किसानों से खेत या खलियान में वसूली करना सरल है किन्तु अनाज घर ले आने के बाद उसे निकलवाना बहुत ही कठिन काम है।

१३. खेत में पड़गी खाळी, धान में पड़ग्यो काग्यो।
बड़ा बेटा पे पड़ी बीजळी, तबलो भँवरी खाग्यो॥

एक साथ कई मुसीबतें आ जाने से दशा बिगड़ जाती है जैसे अतिवृष्टि से खेत के बीच में कटाव हो जाना और नाला बन जाना, जौ की फसल में काग्या (एक प्रकार का रोग) हो जाना, अचानक बड़े बेटे का निधन हो जाना आदि।

१४. खेती करे तो राख गाडो, राड़ करे तो बोल आडो।

जिस तरह खेती करने के लिए बैलगाड़ी रखना नितान्त आवश्यक है उसी तरह किसी से लड़ने के लिए विरोध में बोलने की जरूरत होती है।

१५. खेती गोरी मोठ की, धाणी धोळी गाय।

खेती मोठ की अच्छी होती है जिसमें अधिक परिश्रम या लागत का काम नहीं। गाय सफेद अच्छी होती है।

१६. खेती-पाती, बीनती अर् घोड़ा को तंग।
अपने हाथ सँवारिये लाख लोग वो संग॥

चाहे जितने आदमी आपका हुकुम उठाने वाले हो तो भी ये काम तो

तभी सार्थक और लाभदायक हो सकते हैं जब स्वयं ही इनको सम्हाला करे; खेती-पाती, किसी समर्थ के आगे अपनी कोई प्रार्थना रखना व रवानगी के पहले यह देखना कि सवारी के घोड़े का तंग ठीक कसा हुआ है या नहीं।

१७. गोरमा की खेती अर् गोरी लुगाई नै तो रुखाल्याँ ई पार पड़े।

गाँव के निकट खेती हो तो मनुष्य और गाँव के जानवर (मवेशी-गधे, घोड़े, ग्राम सूकर आदि) उसको हानि पहुँचाते हैं और स्त्री सुन्दर हो तो गाँव के लोग कुदृष्टि डालते हैं इसलिए इनकी रखवाली किये बिना पूरा नहीं पड़ता।

१८. छीदा भला जो अर् चणाँ, छीदी भली कपास।
जाय कहो करसाण ने, बोवे घणी उखास॥

जो, चने और कपास की फसल बोने में एक पौधे से दूसरे पौधे की दूरी अधिक रखनी चाहिए (अर्थात् उनको बहुत पास-पास नहीं रखना चाहिए) किन्तु गन्ने की फसल में ऐसा नहीं। गन्ना बहुत पास-पास बोना चाहिए।

१९ जतरो गहरो जोते खेत, बीज पड़्याँ फल वतरो देत।

खेत की जुताई जितनी गहरी की जायगी, फसल उतनी ही अच्छी होगी।

२०. जाबता बिना खेत अर् साळा बिना सासरो आछ्यो न लागे।

काँटे की बाड़ या अन्य प्रकार से हिफाजत किये बिना खेत अच्छा नहीं लगता वैसे ही सुसराल में साला न हो तो वहाँ जाना भी अच्छा नहीं लगता।

२१. जेठ पेली पड़वा बुधवासर जे होय।
मूल आषाढ़ जे मिले, परथी कंपे जोय॥

जेठ कृष्णा १ के दिन बुधवार और आषाढ में मूल नक्षत्र आ जाय तो भूकम्प जैसी कोई भयंकर घटना होगी।

२२. जेठ बदी दसमी दिवस, जे सनीवासर होय।
पाणी होय न धरण में, बिरला जीवे कोय॥

जेठ कृष्णा १० के दिन यदि शनिवार हो तो पृथ्वी पर पानी की इतनी कमी हो जायगी कि कोई बिरला ही जीवित बचेगा।

२३. जेठ मूँगो अर् सदा सूँगो।

सदा सस्ती रहने वाली वस्तुएँ भी ज्येष्ठ मास में (बरसात की मौसम से पहले जमाना अच्छा होने की अनिश्चितता के कारण) महँगी हो जाती हैं।

२४. जेठ रवी भादों शनि, माह जे मंगल होय।
परजा भटके अन्न बिना, बिरला जीवे कोय॥

ज्येष्ठ में रवि, भाद्रपद में शनि और माघ में मंगल ग्रह आ जावे तो प्रजा अन्न के बिना भटकती फिरेगी और कोई बिरला ही जीवित रह सकेगा।

२५. जो बरसेली उत्तरा, धान न खावे कूतरा।

यदि उत्तरा नक्षत्र में वर्षा होगी तो पका हुआ धान भीग कर ऐसा सड़ जायगा कि उसको कुत्ते भी नहीं खायँगे ।

२६. **जो हळ हाँके, खेती वाँकी; और नहीं तो झाँकी, ताकी ।**

खेती में वही सफल होता है और टिका रह सकता है जो स्वयं हल चलाता है अन्यथा लोग उसके मालिक बन जाने की घात लगाये रहते हैं ।

२७. **ढाँढाँ खेती सीर ।**

मवेशियों का और खेती का जोड़ा है । दोनों एक दूसरे को पनपाते हैं । मवेशियों से खेती के लिए खाद और खेती से मवेशियों के लिए घास उपलब्ध होकर एक दूसरे के विकास में योग देते हैं ।

२८. **ढाँढो उजाड़ो अर धणी उघाड़ो ।**

जिसका मवेशी दूसरों के खेत में (उजाड़) नुकसान करता है, उसको लोग बहुत भली बुरी सुनाकर बेइज्जती करते हैं ।

२९. **दीवाळी का दीवा दीठा, काचर बोर मतीरा मीठा ।**

दीवाली के दीपक दिखाई देने के बाद (अर्थात् तब तक पक कर) काचरे, मतीरे और बेर मीठे हो जाते हैं ।

३०. **धन खेती धृक् चाकरी, धन-धन हे बोपार ।**

खेती के व्यवसाय को धन्य है, नौकरी को धिक्कार है और व्यापार का धंधा तो सबसे उत्तम है ।

३१. **धुर आषाढ पड़वा दिवस, जे उत्तर गरजन्त ।**
छत्री छत्री जूझवे, नेहचे काळ पड़न्त ।।

आषाढ कृष्णा १ के दिन उत्तर दिशा में यदि बादल गरजते हैं तो क्षत्रिय (शासक) आपस में लड़ेंगे और निश्चय ही दुर्भिक्ष पड़ेगा ।

३२. **पुस्या अर् तुस्या ।**

पौष में बोया हुआ अनाज-जौ-गेहूँ आदि में पैदावार इतनी घटिया होगी कि जैसे तुस ही हो ।

३३. **पून्यूँ तपी, पड़वा तपी, तप्या ज्येष्ठा मूल ।**
खाई कोठा खोल दो, सम्यो साताँ तूल ।।

अगर पूर्णिमा, एकम (प्रतिपदा), ज्येष्ठा और मूल इन तिथियों और नक्षत्रों में खूब गर्मी पड़ती रहे, वर्षा न हो, तो खाइयाँ और कोठे (अनाज भरने के 'स्टोर') खोल दो (अर्थात् अनाज के संग्रह की कोई आवश्यकता मत समझो), जमाना बहुत अच्छा होगा ।

३४. **पेली पड़वा गाजे तो दिनाँ बहत्तर बाजे ।**

प्रथम पड़वा (प्रतिपदा) आषाढ कृष्णा के दिन बादल गरजेगा तो बहत्तर दिनों तक हवा ही चलती रहेगी ।

३५. फागण का फेरचा अर् चेत का अवेरचा ।

फाल्गुन में फसल पकती है तब उसकी देख-भाल के लिए फेरी लगाना उतना ही आवश्यक है जितना चैत्र में पकी फसल को काटना ।

३६. बलद बिकावण, नाड़ा टाँकण ।
मत बाज्ये रे आधा सावण ।।

यदि आधे सावण तक हवाएँ चलेंगी और बाद में बरसात की सम्भावना भी होगी तो भी वह समय बुवाई के लिए उपयुक्त नहीं होगा । ऐसी फसल उल्टा आर्थिक बोझ पैदा कर देगी और बैलों को बेचना पड़ जायगा जिससे हलों के नाड़े (हल को जूड़े से बाँधने की रस्सी) खूंटी पर टाँकने पड़ जायेंगे । इसलिए आधे सावन के बाद फसल बोने का निषेध किया है । अभिप्राय यह है कि बहुत पछेती फसल घाटा डालने वाली होती है ।

३७. बुध बावणी अर् शुकर लावणी ।

फसल बोने के लिए बुधवार और काटने के लिए शुक्रवार, ये दिन अच्छे माने गये हैं ।

३८. बोवे जो हळां, पावे सो खळां ।

हलों से जैसी जुताई वगैरह की जायगी तो पैदावार भी वैसी ही होगी ।

३९. मघा मचन्ता मेहा, नीं तो उड़न्ता खेहाँ ।

यदि मघा नक्षत्र में बरसात नहीं हुई तो फिर धूल ही उड़ेगी ।

४०. मूंगे मोलां लाज्यो कंत, पीळचा का मत देखो दन्त ।

'पीला बैल चाहे महँगा मिले तो भी उसके दाँत वगैरह (आयु आदि) की जाँच किये बिना ही खरीद लो', पत्नी अपने पति से कह रही है ।

४१. रत का बोया मोती नींपजे ।

यथा समय बो देने से कीमती अनाज (मोती जैसा, स्वाति नक्षत्र में सीप में पड़ी बूंद की तरह) उपजता है ।

४२ राते बोले कागला, दिन में बोले स्याळ ।
के राज को राजा मरसी, के तो पड़सी काळ ।।

कौए व सियाल आम तौर से (क्रमशः) रात में व दिन में नहीं बोलते, यदि ये यह मर्यादा छोड़ दें तो मान लेना कि या तो राज्य का राजा मरेगा या दुर्भिक्ष पड़ेगा ।

४३. सण घणो, बण बिखरे, मेंढक फन्दे ज्वार ।
पेंड पेंड पर बाजरो, करे दलिदर पार ।।

सन के बीज घने, बण (कपास) के पौधे बिखरे-बिखरे और ज्वार मेंढक की कूद के जितने फासले दर फासले पर व बाजरा एक-एक कदम दूर-दूर बोने से दारिद्रय दूर होता है अर्थात् पैदावार अच्छी होती है ।

४४ **साख हारी, जमारो थोड़े ई हारचो ।**

फसल खराब हुई तो क्या जीवन थोड़े ही बरबाद हो गया, छह महीने में दूसरी फसल फिर तैयार हो जायगी ।

४५. **सावण चाले सूरियो, भादूड़े परवाई ।**
आसोजाँ में पिछवा चाले, दोनूँ साख सवाई ।।

श्रावण में उत्तर-पश्चिम से, भाद्रपद में पूर्व से और आश्विन में पश्चिम से पवन चले तो दोनों ही फसलें (खरीफ और रबी) सवा गुनी अधिक पैदा होंगी ।

४६. **सावण पेली पंचमी ज्यो न धडूके इन्द्र ।**
खाई कोठा खोल दो, धान खरीदो कन्त ।।

श्रावण कृष्णा पंचमी के दिन बादल न बरसे तो अकाल पड़ेगा इसलिए हे पति खाई-कोठे खोल कर धान का (उनमें) संग्रह करने लग जाओ ।

४७. **सावण पेली पंचमी मेह न माँडे माल ।**
पीव पधारो मालवे में जास्याँ मोसाल ।।

श्रावण कृष्णा पंचमी को यदि बरसात न हो तो अकाल पड़ेगा । हे स्वामी तुम तो मालवे में जाना और मैं ननिहाल चली जाऊंगी । मालवे में प्राय: अकाल नहीं पड़ता अत: राजस्थान से अकालग्रस्त लोग वहीं जाकर जीविकोपार्जन करते हैं और स्थिति सुधरने पर पुन: लौट आते हैं ।

४८. **सावण बुद एकादशी जो गरजे परभात ।**
थें जावो पिव मालवे, में जास्याँ गुजरात ।।

श्रावण कृष्णा एकादशी को यदि प्रातः काल में बादल गरजें तो जमाना बिगड़ जायेगा । ऐसी स्थिति में (पत्नी कहती है) हे स्वामी तुम तो जीविका कमाने मालवे प्रान्त में जाओ और मैं गुजरात में जाऊँगी (क्योंकि वहाँ स्त्रियों को अधिक मजदूरी मिल जाया करती है) ।

४९. **सावण बोया काकड़ा, कई नींपजे बापड़ा ।**

कपास श्रावण में बोया जावे तो (लगातार वर्षा के दिन होने से उसकी सफाई और हिफाजत सम्भव नहीं होती है अत:) पैदावार बहुत ही थोड़ी होती है या उसके पौधे गल कर नष्ट ही हो जाते हैं ।

५०. **सावण में सूतो भलो अर् ऊभो भलो अषाढ़ ।**

चन्द्रमा जो द्वितीया के दिन उदित होता है वह आषाढ़ में तो खड़ा और श्रावण में सोया (अर्थात् Horizentle) अच्छा माना गया है, शकुन की दृष्टि से वह शुभ होता है ।

५१. **सींगा कोड़ी सिर भमराळचो ।**
मोलकार मत लाज्यो काळचो ।।

काला बैल जिसके सींग छोटे हों व माथे में भ्रमरी (गोल चकरी) हो तो नहीं खरीदना चाहिये। वह खेती के लिए अच्छा नहीं होता।

५२. हरी खेती, ग्याबण गाय, घरे आयाँ भाग है।

हरी फसल को और गर्भवती गाय को देखकर फूलना नहीं चाहिए और न उसकी आमदनी के अनुमान पर आगे के खर्चे ही ओढने चाहिए। ये दोनों जबतक घर न आ जावें तब तक कोई भी दुर्घटना हो सकती है। फसल पर ओले गिर सकते हैं और गाय का कहीं चोट खाने से गर्भपात हो सकता है। अभिप्राय यह है कि जब तक फसल पककर घर में न आ पड़े तब तक उसके भरोसे नहीं चलना चाहिए।

विविध (८)

१. अठीने पड़ूँ तो कूड़ो अर् उठीने पड़ूँ तो खाड़ो ।

दोनों ही तरफ मुसीबत है, कुए में गिरने से डूबकर मर जाने का व खड्डे में गिरने से हड्डियाँ टूट जाने का खतरा है । 'Between the Devil and the deep sea.'

२. अस्सी की आमद सौ को खरच ।

'नौ आवे तेरह की भूख', जब आमदनी से खर्चा अधिक होता है, आवश्यकताएँ बढ़ती रहती हैं तब ऐसा कहा जाता है ।

३. आई बू आयो काम, गई बू गयो काम ।

बहू आई तो काम बढ़ गया और गई तो काम भी घट गया । इसलिए सास के काम करने की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं पड़ा । अपनी कार्यक्षमता का अभिमान करने वाली सास ऐसा ही कहती है ।

४. आ'ई बेटी अर् ओ' ई डायजो ।

बेटी के विवाह में दहेज के रूप में देने के लिए कुछ न होने पर ऐसा कहते हैं कि 'यही तो बेटी है और (डायजा) दहेज भी इसी को समझ लेना ।' इस कहावत का अन्योक्ति रूप में भी प्रयोग होता है ।

५. आई मूँछ्याँ अर् कुण ने पूछ्याँ ।

मूँछें निकल आने (अर्थात् जवान हो जाने) पर हर एक व्यक्ति अपने आप को इतना जिम्मेदार समझने लगता है कि अपनी ही इच्छा से कोई भी काम करने योग्य हो जाता है फिर किसी को कुछ पूछने की जरूरत नहीं रहती ।

६. आम का आम अर् गुठली का दाम ।

किसी वस्तु के दोहरे लाभ के लिए यह कहावत कही जाती है ।

७. आँख्यां को आँधो अर् नाम नेणसुख ।

नाम के विपरीत गुण होने पर ऐसा कहा जाता है । अन्धे व्यक्ति का नाम नेनसुख होना ऐसी ही बात है ।

८. आँख है जो लाख है ।

शरीर के अङ्गों में आँख बहुत ही आवश्यक एवम् हिफाजत से रखने योग्य है ।

९. आँधी-आँधी परणावणा हैं ।

अंधा और अंधी का विवाह करने में कोई अड़चन नहीं आती है क्योंकि वे एक दूसरों को नहीं देख सकते । जहाँ सब भला-बुरा चल जाता है वहाँ यह कहावत कही जाती है ।

१०. आँधी में खाँखलो उफणबो है ।

आँधी की तेज हवा में भूसी को साफ कर उसमें मिले हुए माल को निकालने का नतीजा यह होता है कि भूसा और माल दोनों ही हाथ नहीं आते । इस प्रकार का मूर्खतापूर्ण परिश्रम करने पर यह कहावत कही जाती है ।

११. ओ दाँ घोड़ा नीपजे, धरा नीपजे धान ।
माँ बिचारी कई करे, नाँदेरा की खान ।।

जैसी घोड़े की नस्ल होती है वैसी ही उसकी संतान होती है, जैसी धरती होती है उसी के अनुसार धान की फसल होती है, इसी प्रकार जब संतान अपने ननिहाल वालों के गुण और रूपरंग लिये होती है तो उसमें बेचारी माँ का क्या दोष ।

१२. ई रॉंड का जाया जो कदे न हाँसी घड़ाया ।

इस निकम्मी औरत की औलाद क्या जेवर बनवा सकती है, यह बहू का अपनी सास और पति के प्रति आक्रोश है ।

१३. उतरे काल जोगी हो बो ।

अकाल समाप्त होने पर माँग खाने के लिए (पेट भरने के लिए) साधू बनना मूर्खता है (अकाल के दिनों में तो नहीं और बाद में साधू बनना अपनी अयोग्यता का सूचक है) ।

१४. उलट-पलट कर देखो पाना, रुप्या का रेग्या छः छः आना ।

अधिक मात्रा में सौदे का विस्तार करने और हानि-लाभ का ध्यान न रखने पर यही हाल होता है कि जब हिसाब पन्ने उलट पलट कर बार-बार मिलाया जाता है तो मूल पूँजी में ही रुपये की जगह छह आना हो जाता है, इतना घाटा होता है ।

१५. उलट-पलट कर देखो बही, खातो है पण रोकड़ नहीं ।

नकद-उधार का लेखा प्रतिदिन की रोकड़ में दर्ज होता है जिसके आधार

से खाता बही चलती है। केवल खाता बही के आधार से किसी की माँग-ताँग खरी नहीं ठहरती जब तक कि उसका रोकड़ से मिलान न हो। जब ऐसा होता है अर्थात् केवल खाते से वसूली करते हैं तो उसकी सच्चाई की तसल्ली नहीं होती, तब यह कहावत कही जाती है।

१६ ऊँट कसी करवट बे'ठी।

जब भावी की कोई बात पूर्व निश्चित या अनुमानित न हो सके तब यह कहावत कही जाती है, 'ऊँट किस करवट बैठेगा।'

१७ अंगूठो सूज जावे ज्यो कई माथा के बराबर थोड़े ई वे जावे।

छोटी वस्तु को चाहे जितना बढ़ाओ, बड़ी का मुकाबला नहीं कर सकती।

१८ एक घर में दो घुसग्या, भगतण अर् भोपी।
एक बजावे शंख अर् दूजी नराताल की रोपी॥

भोपे की पत्नी और वैश्या यदि एक ही घर में हों तो दोनों के परस्पर विरोधी आचरण साथ-२ नहीं निभ सकते और वे सुखपूर्वक नहीं रह सकतीं। भोपी तो शंख बजाकर यात्रियों को एकत्र करेगी जब कि वैश्या को बिल्कुल एकान्त की तलब होगी। यह कहावत अन्योक्ति रूप में प्रचलित है।

१९. एक मंडी में तीन घुसग्या. घोड़ो, गधो अर् गाय।
ऊ हींसे, वा राँभड़े, बलाँबली ने जाय॥

एक ही छोटे मकान में तीन भिन्न-२ प्रकृति के जानवरों या मनुष्यों का साथ रहना कठिन है। घोड़े, गधे और गाय की तरह भिन्न-भिन्न प्रकृति के पुरुष साथ-२ नहीं रह सकते।

२०. एक सती, नो लख तारा।

नौ लाख तारों से भी अधिक दीप्ति एक सती के सतीत्व की फैलती है।

२१. एँस ई खेती कीदी, एँस ई सूखेड़ो पड़्यो।

भाग्यहीन आदमी को कार्य के आरम्भ में ही आपत्तियों का सामना करना पड़ता है।

२२. ओहदो अमीन को, काम कमीन को।

यह माल सीगे के भूमापक अहलकार, अमीन लोगों की बुराई में कहा गया है। ये लोग रिश्वत न देने पर भूमि का नाप या मालिक के नाम आदि में गड़बड़ कर कमीनापन दिखाते थे, हानि पहुँचाते थे।

२३. कठा की तेलण अर् कठा को पळो।

कहाँ की तेलण और कहाँ का तेल निकालने का बड़ा चम्मच, बिना कारण ही सम्बन्ध जोड़ देने पर यह कहावत कही जाती है, जैसे, कहाँ की ईंट और कहाँ का रोड़ा, भानमती ने नाता जोड़ा, संस्कृत में ऐसा नाता जोड़ने पर 'बादरायण संबंध' कहलाता है।

२४. कठे राजा की रेवाड़ी ने कठे नाई को थेंचा कूटो ।

कहाँ तो राजा का रुतबा और कहाँ नाई का ओछा धंधा, इनमें जमीन-आसमान का अन्तर होता है । जब वैभव, प्रतिष्ठा आदि में ऐसा ही अन्तर प्रतीत होता है तब यह कहावत कही जाती है ।

२५. करम आड़ो भाटो है, पानड़ो वे तो उड़ जावे ।

सब परिस्थितियाँ प्रतिकूल दिखती हैं, सफलता नहीं मिलती या मिलते-मिलते उससे वंचित हो जाते हैं तब ऐसी कहावत कहकर भाग्य को कोसा जाता है ।

२६. करसा नके धन वेवे तो के तो लावे लोड़ी अर् के लावे घोड़ी ।

किसान अपनी संपत्ति को पचा नहीं सकता । थोड़ा पैसा बन जाने पर आम तौर से या तो एक विवाह और कर लेगा या घोड़ी खरीद लेगा ।

२७. करेड़ा का राजाजी अर् साहपरा को रीप्यो गाम को गाम में ईं चाले ।

करेड़ा की जागीर तो छोटी थी किन्तु खिताब राजाजी का था ऐसे ही शाहपुरा राज्य भी छोटा था तो उसका सिक्का भी शाहपुरा में ही चल सकता था ।

२८. कलछ्‌छू राख बास्ती घालबो ।

आग माँगने वाले को अंगारे कलछू में भरकर दिये जाते हैं । देने की चीज अंगारे हैं उनके साथ कलछू थोड़े ही दे दी जाती है । शरीर की हिफाजत रखते हुए ही धर्म का पालन करना ठीक होता है—'काया राख धरम ।'

२९. कवी, चितारो, पारधी, मगलगाणी नार ।
एकलहट्ठो बाणियो, पाँचों नरक दुवार ।।

कवि, चित्रकार, बहेलिया, गाने का पेशा करने वाली और सारे गाँव में एक ही दूकान वाला बनिया, इन पाँचों के पेशों को नरक के द्वार कहा गया हैं।

३०. काचर, केरी आमरस, पीऊ अर् परधान ।
अतरा तो पाका भला, काचा कसरा अकाम ।।

काचरी (छोटी खट्टी ककड़ी), आम का फल, पति और प्रधान राज्यमंत्री ये तो प्रौढ़ होने या पकने पर ही उत्तम होते हैं अन्यथा नादान या कच्चे रहने पर उनमें कोई न कोई कसर रह जाती है जो उन्हें व्यर्थ (निकम्मे) साबित कर देती है ।

३१. काया ने भो कूटण को, माया ने भो लूटण को ।
गाड़ी ने भो पूठण को, बूढा ने भो ऊठण को ।।

शरीर, माया (धन) और गाड़ी के लिए भयदायक बातें क्रमशः चोट

लगने, लुटे जाने, और टूटने की होती हैं इसी प्रकार वृद्ध को भी बैठ-ऊठ में बड़ी कठिनाई रहती है।

३२ के जागे ज्याँका घर में साँप, के जागे बेटी को बाप ॥

या तो जिसे अपने घर में साँप घुसे होने की शंका हो उसको नींद नहीं आती या फिर बेटी बड़ी हो रही हो तो उसके बाप को नींद नहीं आती।

३३. के वा वाला के'ई छूटे, बळद बे ई छूटे।

समझदार आदमी राय देकर जिम्मेदारी से मुक्त हो जाता है और बैल तो बोझ ढोने या हल चलाने आदि परिश्रम के बाद ही मुक्त होता है।

३४. कोड़ी साँटे हाथी जावे, पण कोड़ी ह्वे तो आवे।

चीज बहुत ही सस्ती बिक रही है, किन्तु इतने सस्ते मोल के लिए भी पैसा बिलकुल ही न हो तो लाचारी है, नहीं खरीद सकते।

३५. खटीक वाली खूँटी।

खटीक (कसाई) के यहाँ दीवार में एक खूँटी मृत पशुओं की खाल लटकाने के लिए प्रायः निश्चित होती है। जब किसी कुकृत्य के लिए कोई स्थान व दैनिकचर्या अबाध और निश्चित होते हैं तो यह उपमा दी जाती है।

३६. खलो मत करे कामणी, घोड़ा ने घी देतां।
कोई दन आड़ा आवसी, बाटाली बहतां ॥
थांने पूछूँ ठाकराँ, हरण कश्या घी खाय।
दूब चरन्ता मानवी, घोड़ाँ आगे जाय ॥

घोड़ों को घी दूध आदि खिलाने पर जब ठाकुर की स्त्री कलह मचाती है तो ठाकुर उसे समझाता है कि आपत्ति पड़ने पर यह तेजी से भाग सकेगा और काम आवेगा। पर वह नहीं मानती और हरिण का उदाहरण देती है कि वह तो केवल दूब खाकर घोड़ों से भी ज्यादा तेज भागता है। उसे कौन घी खिलाता है।

३७. खाय ले, खाय ले, बहूड़ी आई।
पहर ले, पहर ले, धीयड़ी आई ॥

(पंजाबी—'खाले-खाले बहू अलना, पहनले २ धी अलना) पुत्र-वधू आवे उससे खाने-पीने की और बेटी बड़ी हो अथवा पीहर आवे उससे पहले २ पहनने-ओढने (शृंगार करने) की मौज मना ले, उनकी उपस्थिति में यह मौज नहीं मिल सकेगी।

३८. खाँड को टको राँड के माथे।

शक्कर पर जो पैसा खर्च होता है वह औरत के जिम्मे है।

३९. खीर में मूसल।

योग्य वस्तुओं का परस्पर साथ शोभा देता है। खीर चम्मच से हिलाई जा सकती है, मूसल से नहीं।

४०. गढ़ तो चित्तौड़गढ और सब गढ़ैया ।
ताल तो भोपाल ताल और सब तलैया ।
राणी तो पदमणी और सब गधैया ।।

गढ़ों में चित्तौड़गढ़, तालों में भोपाल ताल और रानियों में महारानी पद्मिनी (जौहर करने वाली) सर्वश्रेष्ठ हैं, इनका मुकाबला दूसरे नहीं कर सकते ।

४१. गधो, गंडकड़ो, दायभो, जुँओं, चींचड़ी, जूँ ।
सूँ पूछूँ भगवान ने, थें ये सरज्या क्यूँ ।।

गदहा, कुत्ता, दायभा (जाति), जूआ, चींचड़ी और जूँ ये सब एक जैसे स्वभाव के और दूसरों के लिए दुख:दायी होते हैं, हे भगवान तुमने इनकी सृष्टि तो व्यर्थ ही की है ।

४२. गाय लाय ।

जिसके घर में दुधारू गाय होती है उसको उसकी देखभाल की दृष्टि से इतनी उतावली लगी रहती है जितनी किसी के घर में लाय (आग) लग जाने पर होती है ।

४३. गाल सारू थाप ।

जैसा गाल हो वैसो ही थप्पड़ मारना बुद्धिमानी की बात है । इस कहा-वत को अन्योक्ति के रूप में प्रयुक्त किया जाता है ।

४४. गाल थाप के कई आँतरो ।

गाल पर थप्पड़ कभी भी पड़ सकती है ।

४५. गाँगो गायो ने गीताँ को छै आयो ।

गीतों की समाप्ति होने पर 'गाँगा' गाया जाता है । जैसे धर्म ग्रंथ की समाप्ति होने पर फलश्रुति गाई जाती है । किसी अरुचिकर लम्बे विवरण को समाप्त कर देने के लिए यह कहावत कही जाती है ।

४६. गाँव थारो अर् नाम मारो ।

गाँव तो तुम्हारा है और अच्छे-बुरे की जिम्मेदारी मुझ पर क्यों डाली जाती है ?

४७. गाँव में घर नीं, माळ में खेत नीं ।

जिसके पास न तो घर हो और न खेत अर्थात् जो सर्वथा दरिद्र हो उसके लिए ऐसा कहा जाता है ।

४८. गुल डल्याँ ने घी आँगल्याँ ।

एक-एक डली करके गुड़ और एक-एक अंगुली करके घी, काम में लेते रहने से चाहे कितनी ही मात्रा में हो, शीघ्र ही समाप्त हो जाता है ।

४९. घट्टी के चाकड़ी अर् घाणी के माकड़ी ।

घट्टी (चक्की) में दोनों पाटों के बीच में लकड़ी की गोल चाकड़ी लगाते

हैं उसके दोनों पाटों का दलने पीसने का काम नियमित नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार लकड़ी की तेल घाणी के लट्ठ के ऊपर माकड़ी रहती है। उससे लट्ठा ठीक तरह काम करता है परन्तु दोनों आवश्यक अंग कोरे ही रहते हैं।

५०. घर सूँ बेटी नींकली छावे, जम ले जावो चावे जमाई।

बेटी के बाप की जिम्मेदारी बड़ी भयंकर है, उससे छुटकारा प्राप्त होना चाहिए। चाहे उसे विवाह कर जँवाई ले जावे चाहे यमराज (मरने पर) उठा ले।

५१. घोड़ा की खोड़ गदेड़ो अर् उदेपर की खोड़ बनेड़ो।

जिस प्रकार घोड़े की नकल गदहा है उसी प्रकार उदयपुर की नकल बनेड़ा (मेवाड़ का एक कस्बा जहाँ के जागीरदार राजा कहलाते व ठाट-बाट में उदयपुर की नकल करते थे) है। जैसे—Pitt is to Addingtion, as London is to Paddingtion.'

५२. घोड़ाँ सूँ घर कईं दूरा।

घोड़ा चलने में बहुत तेज होता है, उससे घर दूर नहीं होता।

५३. चट भी मारी अर् पट भी मारी।

चट और पट किसी सिक्के के दोनों पहलू होते हैं। जब किसी पहलू पर दो पक्षों में फैसला करने के लिए सिक्के को उछाला जाता है तब लालची आदमी चट और पट, दोनों तरह से सिक्का पड़ने पर अपना काम बनाने की धुन में रहता है तब यह कहावत कही जाती है। अंग्रेजी में भी ऐसे व्यक्ति के लिए कहा जाता है "Heads I win, tails you lose"

५४. चढ़ जा बेटा सूली पे, भली करेगा राम।

जब दूसरों को उकसा कर आफत में डाल देने जैसी सलाह दी जाती है तब यह कहावत कही जाती है।

५५. चतुर ने चौगुणी, मूरख ने सौ गुणी।

पराई लक्ष्मी चतुर व्यक्ति को चार गुना अधिक प्रतीत होती है और मूर्ख को तो सौ गुना अधिक लगती है।

५६. चरणामृत का गटका, मटे चौरासी का भटका।

ईश्वर के चरणामृत की महिमा दर्शाई गई है, जिसका पान करने मात्र से मुक्ति प्राप्त हो जाती है और चौरासी लाख योनियों में नहीं भटकना पड़ता।

५७. चरमराटो तो मट जावे पण गड़बड़ाटो नीं मटे।

ऊपर से लगी चोट (या जलने) का दर्द तो मिट सकता है किन्तु आपसी लड़ाई की (गड़बड़ाहट) वैमनस्यता नहीं मिटती।

५८. **चाकर को ठाकर कीजे, बाँदी को कीजे बेण।**
डाकण को मौसी कीजे, तीनूँ बात को चैन ।।

दूसरों को थोड़ा ऊँचा चढ़ाने और काम निकालने की मनोवृत्ति को लक्ष्य करते हुए कहा है कि चाकर (दास) को ठाकुर, बाँदी (दासी) को बहन और डायन को मौसी कहने से बड़ा चैन मिल जाता है। ऐसा करने से कम से कम इनसे पैदा किये जाने वाले उत्पात से तो बचा जा सकता है।

५९ **चार आँगल की ललाड़ी, दूजी है तो सल्लाड़ी।**

छोटे ललाट वाले की बड़े ललाट वाले के प्रति ईर्ष्या को लक्ष्य किया गया है जो इस प्रकार का व्यंग्य किया करता है।

६०. **चार चूल्हाँ चौमासो, दो फटकारे ब्याव।**

एक जगह पानी टपकेगा और चूल्हा दूसरी जगह बनाना पड़ेगा, इस प्रकार अधिक से अधिक चार बार चूल्हा बदलने पर तो वर्षा ऋतु ही चली जायगी। इसी तरह अधिक से अधिक दो बार भरपूर तैयारी की नहीं कि विवाह भी संपन्न हो जायगा। (अर्थात् इसके लिए चिन्तित नहीं होना चाहिये।)

६१. **चार हाथ की साड़ी, चारूँ आड़ी गोटो।**

छोटी सी साड़ी हो और चारों ओर गोटा लगाया गया हो तो इसमें क्या विशेषता ? (अर्थात् छोटी सी साड़ी के गोटा लगाने में कोई खास खर्चा नहीं होता परन्तु जो होता है वह भी व्यर्थ है।)

६२. **चाल दारी पोखर चालाँ।**

एक जैसे चालाक व्यक्ति मिलकर आसानी से धर्मात्मा दिखाई देने का ढोंग कर सकते हैं। दारी से यहाँ तात्पर्य छिनाल से है।

६३. **चाल मारा पाँड्या अर् आगला घर माँड्या।**

ऊपर इस रूप में यह कहावत आ गई है "पाँड्या अर् आगले घरे माँड्या"।

६४. **चाँवल की कणी अर् भाला की अणी।**

चाँवल कच्चा रहने पर भाले की नोंक के समान दुखदायी होता है।

६५. **चाँवल, चन्दण, त्रण, त्रिया, तुरी राग अर् तार।**
ए दश पतला ई भला, सिंह, सर्प, सरदार ।।

चाँवल, चन्दन, घास, स्त्री, घोड़ा, राग (स्वर), तार, सिंह, साँप और सरदार, (योद्धा) ये दस तो पतले ही होने चाहिए।

६६. **चोटी को रेलो एड़ी ताँई आवे जदी पइसो जुड़े।**

कठिन परिश्रम कर पसीना बहाने पर ही पैसा जुड़ता है।

६७. **चोर, जुवारी अर् मतवालो, लोभी ठाकर, निरधन साळो।**
कपटी मित्र, निर्गुणी नार, याँ साताँ को छेह न पार ।।

चोर, जुआ खेलने वाला, शराबी, लोभी ठाकुर (जागीरदार), निर्धन साला, कपटी मित्र और गुणहीन स्त्री, इन सातों को कभी संतुष्ट नहीं किया जा सकता, इनका पार नहीं पाया जा सकता।

६८. **छदाम की डोकरी, टका को जेर।**

निकम्मी बुढिया को दो पैसे का जहर खिलाना भी महँगा पड़ता है।

६९. **छदाम की राँड, त्याँवला (रुपये का $\frac{1}{8}$ भाग) का बींछ्या।**

निकम्मी स्त्री को कम कीमत का जेवर पहनाना भी महँगा पड़ता है।

७०. **छमटी २ चूरमो अर् दूनो २ दाल।**

मिठाई कम परोसने व दाल अधिक परोसने पर यह व्यंग्य किया जाता है।

७१. **छींपा अर् छाळी ने चौमासो न सुवावै।**

छींपे अपने रंगे व छापे हुए कपड़ों को सुखाने के लिए धूप चाहते हैं। बकरी को बरसात में बाल भीगने व बैठने को सूखी जगह न मिलने से दुःख उठाना पड़ता है। वे दोनों वर्षा ऋतु को नहीं चाहते।

७२. **छोड़्या जो द्वारका।**

द्वारिका में (तीर्थ यात्रा पर) जाकर कोई चीज त्याग दी तो त्याग दी, नहीं तो नहीं छूटेगी।

७३. **छोड़ो (टालो) ईस, बैठो बीस।**

चारपाई की ईस के ऊपर न बैठकर बीच में चाहे बीस आदमी भी बैठ जावें तो वह नहीं टूटेगी।

७४. **छोरा की काँगसी करावा गी तो घर धणीं की काँच निकलगी।**

बच्चे के काँगसी रोग (जिससे वह सूखने लगता है) का इलाज कराने गई तो पति को उससे भी अधिक कष्टदायी रोग हो गया। किसी काम में लाभ की अपेक्षा हानि अधिक हो जाती है तब ऐसा कहा जाता है।

७५. **जगन्नाथ के भात को जगत पसारे हाथ।**

दूसरों के हाथ का बना हुआ कच्चा भोजन ग्रहण न करने वाले भी पुरी में जगन्नाथ के भात (चाँवल) से कोई परहेज नहीं करते बल्कि उसके लिए हाथ फैलाकर याचना करते हैं, क्योंकि वह ईश्वर का प्रसाद है। बहुधा मुफ्त में बाँटी जाने वाली वस्तु के लिए यह कहावत प्रचलित है।

७६. **जात को नाई अर् नाम परथी सिंह।**

जब नाम और औकात में मेल नहीं होता, नाम बहुत बढ़ा चढ़ा कर रखा जाता है तब यह उपमा दी जाती है।

७७. जाया ने पोतड़ा मोकळा मल्या रे' ई ।

बच्चा पैदा तो हो, उसके लिए पोतड़े (छोटे २ अधःवस्त्र के उपयोगी कपड़े) तो काफी मिल जायेंगे ।

७८. जींकी आँत भारी, वाँको माथो भारी ।

जिसकी आँतें साफ नहीं रहतीं उसको सरदर्द भी बना ही रहता है।

७९. जीं की खीचड़ी, वींने ई डेढ़ चाटू ।

जिसका माल हो उसको तो पूरा (पर्याप्त) ही परोसना पड़ता है । ऐसा न करने पर यह कहावत कही जाती है ।

८०. जीं गेले माटी मरग्या वीं गेले रोज थोड़ा ई मरे ।

एक बार जिस रास्ते पर मनुष्य मारे जावें या कोई भारी दुर्घटना हो जाय, उस रास्ते जाने से हमेशा कहाँ तक डरते रहेंगे ।

८१. जो जाँटो अर् तीजो बाँटो ।

गेहूँ के मुकाबले में जौ की खेती बेकार होती है । उसमें तुश अधिक निकलते हैं । तीसरा हिस्सा ही माल निकलता है ।

८२. टाटी का घर के कामें जड़े ताळो ।
बड़ा भाई को परणें नीं साळो ।।

जिस प्रकार पतली २ लकड़ियों से बने द्वार के ताला नहीं लगाया जाता (क्योंकि इससे कोई लाभ नहीं) उसी प्रकार जिन परिवारों में लड़की की एवज पर लड़की मिल सकती है, उनमें कोई लड़की शेष नहीं रहने से बड़े भाई का साला भी विवाह नहीं कर सकता । वह अविवाहित ही रह जाता है ।

८३. डाढी मूँ साँप निकल्यो ।

कोई निकटस्थ व्यक्ति जब अचानक, अनपेक्षित और अप्रत्याशित शत्रुता करता है तब 'आस्तीन का साँप' की तरह ऐसा कहा जाता है ।

८४. तेल की पळी अर् घी की सळी ।

तेल तो पळी (बड़ा चम्मच) भरकर परोसना पड़ता है जिसकी जगह यदि घी परोसना हो तो वह बहुत थोड़ी (सलाई भर) मात्रा में परोसने पर भी व्यक्ति संतोष से भोजन कर सकता है ।

८५. थारी छोल, मारो बरणो ।
अणी ब्याव को कई केणो ।।

तेने छोल (बहू को सुसरे की गोद में बैठाकर फल मेवे और मिठाई से उसकी गोद भरने की प्रथा) अच्छी दी, मैंने बहू के कपड़ा अच्छा रखा, बस विवाह बहुत अच्छा हो गया जिसका कहना ही क्या ! अभिप्राय यह है कि बहुत छोटे, कम खर्च के रिवाजों को महत्व देकर, बड़े-बड़े भारी खर्चे के कार्यक्रम को महत्व न देकर जो विवाह को अच्छा बुरा बताते हैं, उन पर व्यंग्य किया गया है ।

८६. थूँ कई नाचे राज्या, थारा गऊँ नाचे बाज्या ।

अरे राज्या, तू बहुत खुश क्यों हो रहा है, यह बात अब समझ में आ गई। तुझे खाने के लिए अच्छे गेहूँ मिल गए इसलिए नाचता फिर रहा है । गेहूँ बाज्या और काठा दो प्रकार के होते हैं । बाज्या की रोटी व काठा की बाटी और लपसी अच्छी बनती है ।

८७. थूँ परण्यो टोडे, मारे टोडा की घट्टी, आपी दोई साडू होग्या।

बादरायण सम्बन्ध (बिना वास्तविक सम्बन्ध के) बताकर चालाक आदमी लाभ उठाने का प्रयत्न करते हैं । एक बार पैदल चलते एक पंडित ने एक जाट को अपने घर में बेर का पेड़ होने व उसकी गाड़ी के पहिये बेर की लकड़ी के होने से ही दोनों में सम्बन्ध होना बताया तो जाट ने उसको गाड़ी में बैठा लिया । इस प्रकार ऐसी स्थिति के लिए यह कहावत प्रचलित है ।

८८. दलाल के दीवालो नीं, मसीद के तालो नीं ।

जिस प्रकार मस्जिद में कोई जोखिम की वस्तु न होने से ताला नहीं लगाया जाता उसी प्रकार दलाल के दिवाला नहीं निकल सकता क्योंकि वह दलाली मात्र करता है कमीशन लेता है खुद व्यौपार नहीं करता ।

८९. दाँत हुया खोळा, जा बैठो अकोळा ।

दाँत हिलने लगे (अथवा 'केश हुया धोला', बाल सफेद हो गये), बुढ़ापा आ गया । अब एक तरफ जाकर बैठ जाओ, कोई पूछने वाला नहीं है ।

९०. दूधाँ न्हाओ, पूताँ फळो ।

आशीर्वाद दिया जाता है कि खूब सम्पन्न और बहुत संतान वाले बनो ।

९१ देख्यो राणाजी थाँरो देश, राँड सुहागण एक ई भेष ।

मेवाड़ में पहले सफेद मलमल पर छपी हुई टिपकीदार साड़ी (अंगोछे की साड़ी) विधवा और सधवा दोनों ही प्रकार की स्त्रियाँ पहना करती थीं, जिसकी हँसी के लिए यह कहावत कही जाती है ।

९२. दे रे नागा ताली, सुवो ऊबी पाळी ।

निर्लज्ज या वस्त्रहीन व्यक्ति को कोई खतरा नहीं । वह खेत पर जाकर खुले आम खेत के किनारे सो सकता है ।

९३. देशाँ देशाँ आँतरो, अर् बोली बोली फरक ।
थाँके केवे फरिश्ता, अर् माँ के केवे जरक ।।

मुर्दे को जमीन में गाड़ने के दूसरे ही दिन देखा गया तो वह गायब था । एक ग्रामीण ने यह देखकर कहा कि इसको तो जरख (एक हिंसक जानवर) निकाल ले गया । गाड़ने वालों ने विरोध करते हुए कहा कि इसे फरिश्ते (देवदूत) ले गये । इस प्रकरण पर यह फबती प्रचलित हो गई । ग्रामीण ने कहा कि तुम्हारे यहाँ जरख (Haena) को फरिश्ता कहते होंगे ।

९४. धणी जाग्यो अर् चोर भाग्यो ।

चोर में इतना ही दम होता है कि जब तक मालिक नींद में होता है तभी तक वह अपना काम कर सकता है। मालिक ज्यों ही जगता है, वह भाग खड़ा होता है।

९५. धरम करताँ ई करम फूट्या।

'होम करते हाथ झुलस जाय', की तरह कोई पुण्य कार्य करने पर उल्टा दुःख उठाना पड़े तब यह कहावत कही जाती है।

९६. धान पुराणा, घी नुवाँ, आज्ञाकारी नार।
पुरुष तुरी चढ चालणों, पुण्याँ का फल चार ।।

पुराना धान, नया घी, आज्ञाकारिणी स्त्री और नर घोड़े (बिना अख्ता किए हुए) की सवारी, ये चारों वस्तुएँ किसी मनुष्य को बड़े पुण्य से ही मिलती हैं।

९७. धीयो न पूतो, हाँडी लेग्यो कुत्तो ।

न स्त्री और न लड़का, हाँडी भी कुत्ते ले गये। पहले घर में स्त्री सामान आदि कुछ नहीं था, जो था वह भी नष्ट हो गया। जैसे—'गरीबी में आटा गीला।'

९८. न्हा धो ऽर् कोढ़ बाँछे।

स्नान करने के बाद भगवान का नाम लेना चाहिए उसके बजाय किसी का अनिष्ट चाहना बुरा है। कोढ बांछना अर्थात् दूसरे के कोढ का रोग हो जाने की वांच्छा करना।

९९. नटग्यो महतो नेणसी, ताँबो दे ऽर् तलाक ।

मेहता नेणसी राज कर्मचारी था। राजा उससे क्रुद्ध हो गया और उसे जेल में भेजने की आज्ञा दी। नेणसी ने इज्जत बचाने के लिए लाख दो लाख रुपए तक जुर्माना लेकर जेल न भेजने की प्रार्थना की; पर राजा नहीं माना। जेल भेजने के बाद राजा को यह सूझ पैदा हुई कि नेणसी से जुर्माने की भारी रकम लेना ज्यादा लाभदायक होता। उसे कहलाया कि अब जुर्माना देकर छूट जावे; परन्तु वह एक पैसा भी देने को तैयार नहीं हुआ।

१००. नारी को जोबन नर है, नर को जोबन घी।
घोड़ा को जोबन जो है, अर् जो को जोबन सी।

नारी का यौवन पति से, पुरुष का घी से, घोड़े का जौ (अनाज का दाना) से, और जौ का (अच्छी तरह से पकाना) ठंड से माना गया है।

'अर्थो नराणां पतिरंगनानां, वर्षा नदीनां ऋतुराट् तरूणां।
स्वधर्मचारी नृपतिः प्रजानां, गतं गतं यौवन मानयन्ति।'

१०१. नीम निमाणे अर् धरम ठिकाणे।

नीम निमाण (कुआ बावड़ी) पर व धर्म अपनी जगह रह गए अर्थात् बात बनी रह गई और कुछ नहीं बिगड़ा।

१०२. पग तो धान्या तेली का, रीत साहूकारां की।

पैरों के गन्दे और बड़े-बड़े होने से गँवार सा लगता है और तौर तरीके सेठों के अपनाता है।

१०३. पलसे माँडी झोंपड़ी, लख आवे लख जाइ।

रास्ते पर (मोहल्ले की बीचो बीच) झोंपड़ी बनाकर निवास करने पर घर की तरह एकान्त और शान्ति कैसे मिल सकते हैं, वहाँ तो लाखों आयेंगे और जायेंगे।

१०४ पाव सूँ पूणी ई न कती।

अभी तो एक पूणी भी नहीं काती जा सकी है (जबकि पावभर रुई में कई पूणियें बनी होती हैं) अर्थात् थोड़ा सा भी काम पूरा-पूरा नहीं हुआ जबकि बहुत सारा बाकी है।

१०५. पाँच ई आँगल्याँ घी में (अर् माथो कोठी में)।

किसी को खूब खाने पीने और मौज उड़ाने का अवसर मिल जाता है, जैसे सुसराल में जँवाई को, तब हास्य के तौर पर यह कहा जाता है।

१०६. पीतल की डेगची के चाँदी की झलक।
पींजारा की छोकरी के केसर को तलक ।।

डेगची (पतीली) तो पीतल की है पर उस पर बढिया व नई कलई की हुई हो तो वह चाँदी के जैसी लगती है। इसी तरह पिनारे की लड़की के केसर का तिलक लगा देने से वह भी अच्छी लगने लगती है। पर ये दोनों ही विशेषताएँ कृत्रिम व अस्थाई होती हैं।

१०७. पूठी भागे ऽर् पाचरो।

कुछ भी नहीं बिगड़ेगा। न तो बैलगाड़ी के पहिये पर चढी हुई लकड़ी टूटेगी और न पाचरा (पूठियों को मजबूत बैठाने के लिए बीच में फँसाया हुआ फच्चर)।

१०८. पूँजी के नूँजी लगावे।

बिना सोचे-समझे खर्चे पर खर्चा कराते हुए पूँजी को अचार की तरह खा जावे। स्वार्थी लोग जब किसी के धन को खर्चा कराने पर तुले रहते हैं तब ऐसे कहा जाता है।

१०९. पेट कुई सो अर् मूँडो सुई सो।

पेट तो गहरे कुए जैसा है अर्थात् बहुत खाने पर भी नहीं भरता पर मुँह बहुत छोटा है (जिससे लोग भ्रम में पड़ जाते हैं)।

११०. पेली पाँत कपासण की।

कपासन के लोग जीमने में सबसे पहले बैठने वालों में रहते हैं जिससे यह कहावत प्रचलित हो गई है।

१११. पोता अर् गंगाजी में गोता।

पौत्र का जन्म होने पर लोग ऐसा सौभाग्य अनुभव करते हैं कि मानो गंगाजी में नहाए हों। "तनये तनयोत्पत्तिः सुरवरनगरे किमाधिक्यम्"।

११२. ब्याज का ब्याज में अर् नाज का नाज में।

अनाज बाढी (सवाया या डेढा वापस फसल आने पर लेने की शर्त पर) दिया जाता है। ऐसे कर्जदार को नकद रुपया भी उधार दिया जावे तो दोनों हिसाबों को मिला देने के लिए बोहरा रजामन्द नहीं होता।

११३. ब्याव मण मोत्याँ अर् ब्याव मण मूँगां।

विवाहोत्सव पर जितना खर्चा करो उतना ही हो सकता है, अधिक से अधिक (मन भर मोतियों जितना) और कम से कम (मोतियों की जगह मन भर मूंगों की कीमत जितना)।

११४. ब्याव हजारचा अर् ब्याव पेजारचा।

विवाह अच्छा होने पर हजारों लोग प्रशंसा करते हैं और बिगड़ जाने पर समधी आदि परस्पर जूते मार लड़ाई भी लड़ लेते हैं।

११५. बत्ता पट्टा राज का।

सरकार तो हमेशा फायदे में ही रहती है जैसे नीलाम की बोली में।

११६. बलगत भाड़े पोखर जात्रा।

गाड़ी चलाने वाला भाड़ा भी कमा लेता है और गाड़ी में बैठकर जाने वाले यात्रियों के साथ पुष्कर में स्नान भी कर आता है—'एक पंथ दो काज'।

११७. बाई का फूल बाई की लार।

लड़की की शादी करने के लिए लड़के वालों से जब कोई रुपये लेता है और केवल उतने ही लेता है जितने विवाह के खर्चे के लिए चाहिए और उन्हें उसी निमित्त खर्च भी कर देता है तो यह कहावत कही जाती है।

११८ बाई थारो बीर बसे गल कट्टयाँ के पास।

खराब सोहबत करने वाले भाई की बहन को यह उलहना है (कि वह गला काटने वाले अर्थात् कसाई जैसे दुष्टों के पास रहता है)।

११९. बाड़ी बारा, हाट अठारा, घर बैठाँ चोईसा।

कोई भी वस्तु ग्राहक की गरज से तो अधिक महँगी और बिक्रेता की गरज से अधिक सस्ती बिका करती है। माली से कोई फल बाड़ी में जाकर खरीदने पर, बाजार में खरीदने पर और घर बैठे लेने पर क्रमशः १२, १८ और २४ के भाव से प्राप्त होगी।

१२०. बालकाँ को सी बकरयाँ चरे।

जहाँ सर्दी की मौसम में बूढे ठिठुरते रहते हैं वहाँ बच्चे बिना ओढ़े-पहने ही खेलते-कूदते रहते हैं इसलिए ऐसा कहा जाता है कि उनकी ठंड को बकरिएं चर जाती हैं।

१२१. **बालो घर को रुखाळो।**

जिसके बाला (नारू) निकलता है वह चलने-फिरने में असमर्थ हो जाने से घर पर ही पड़ा रहता है, मानो चौकीदारी कर रहा हो।

१२२. **बाँटी ओखद अर, मूँड्या जोगी की कँई खबर पड़े।**

जिस प्रकार पीसी हुई औषधि का पता नहीं चलता कि उसमें कौन २ सी वस्तुएं मिली हुई हैं उसी प्रकार मूंडे हुए साधु का भी पता नहीं चलता कि वह कौन से पंथ का है।

१२३. **बींदया सो मोती।**

जो सम्बन्ध नहीं तोड़ा जा सकता उसकी आलोचना करना व्यर्थ है। मोती जब एक बार पिरोये जा चुके हैं तब वे सच्चे झूठे भी हों, जेवर में ही काम आवेंगे।

१२४. **बूर का लाडू, खावे ज्योई पछतावे, न खावे ज्योई पछतावे।**

घी-शक्कर रहित केवल आटे के बूरे के लड्डू जहाँ देखने वाले का जी ललचाते हैं वहाँ खाने वाले को पश्चात्ताप पैदा करते हैं। इस प्रकार उनको लेकर दोनों ही पछताने लगते हैं। (यह एक प्रकार का अन्योक्ति रूपक है।)

१२५. **बूँद बूँद ऊँ घड़ो भर जावे।**

'बूँद-बूँद तें घट भरे टपकत रीतो होय।' पर्याप्त संग्रह के लिए प्रत्येक बूँद या कण के संचय का भी पूरा महत्त्व होता है।

१२६. **बेटी परणाई है, बेची थोड़ी' है।**

बेटी को सुसराल वाले जब एकाधिपत्य में रखने लगें और पीहर भेजने से मना करें तब ऐसा कहा जाता है।

१२७. **बेटी को ब्याह अर, बाप को मोशर बराबर थोड़ो ई व्हे।**

बेटी के विवाह और बाप के मौसर—दोनों का महत्त्व जुदा २ और खर्च भी कमोबेश होता है।

१२८. **बेठाँ के ऊबो पामणो।**

बैठे हुए व्यक्ति के लिए खड़ा हुआ व्यक्ति मेहमान की तरह होता है (अर्थात् उसे बैठने के लिए खुद को जगह करनी चाहिए), जिसको आदर देने के लिए अपने आराम का त्याग करना चाहिए।

१२९. **बेण बेटी हाँती की धणी है, पाँती की धणी कोयने।**

बहन-बेटी श्राद्ध आदि में पितरों के निमित्त अर्पित भोजन या अन्य दान-दक्षिणा लेने का हक रखती है, उनकी सम्पत्ति से हिस्सा लेने का अधिकार

उनको नहीं होता। अब तो कानून में संशोधन कर पाँती दिलाना प्रारम्भ हो गया है।

१३०. बैल, बेरागी, बोकड़ो, चौथी विधवा नार।
एता तो भूखा भला, धाया करे बगाड़ ॥

बैल, वैरागी साधु, बकरा और विधवा स्त्री, ये तो थोड़े भूखे रहने पर ही अनुशासन और मर्यादा में रह सकते हैं अन्यथा अधिक खाने को मिलने पर उच्छृंखल और शैतान हो जाते हैं।

१३१. बोल्या ऽर् लादा।

मूर्ख आदमी चुप रहे तभी तक अच्छा दिखता है, बोलने पर वह पहचान में आ ही जाता है क्योंकि उसकी मूर्खता छिप नहीं सकती।

१३२. भतीजा ऽर् तीजा।

परिवार में भाई का स्थान दूसरे नम्बर पर है तो भतीजा तो तीसरे नम्बर पर ही होगा अर्थात् उसको कम महत्त्व दिया जायगा।

१३३. भूखाँ भाई अर् धाप्याँ धणी पर भार।

पहले स्त्रियाँ अच्छा दिन देख कर ही माथा (सिर) धोया करती थीं। शनिवार इसके लिए सर्वथा वर्जनीय माना जाता था। भूखे पेट माथा नहाने से भाई को व भरे पेट नहाने से स्वामी को नुकसान होगा, ऐसा माना जाता था।

१३४. भूनी माछळी दह में जा पड़े।

भुनी हुई मछली कूद कर वापस गहरे पानी नहीं पड़ सकती; परन्तु भाग्य विपरीत होने पर ऐसी अघटित घटना भी घट जाती है। यह भी प्रसिद्ध है कि राजा नल का हाथ लगने पर मरे हुए जानवर भी जीवित हो जाते थे। बेगूँ तहसील में नाल नामक गांव में दह है वहाँ नल का यह चमत्कार दिखाई दिया था।

१३५. भूल को टको भूल में।

भूल से ज्यादा या कम लिया-दिया हो तो बाद में उसकी जाँच में न उलझने और व्यर्थ ही समय बरबाद न करने की दृष्टि से ऐसा कहा जाता है।

१३६. भैंस्या में लाँटी अर् पगरखी में काँटी।

पहले पहल ब्याई हुई भैंस और जूती के अन्दर घुसी हुई काँटी (गोखरू का काँटा) दोनों ही दुखदायी होते हैं।

१३७. म्हानें इमरत लागे राबड़ी, जीं में दाँत लागे न जाबड़ी।

मक्का के आटे या दलिये को छाछ (मट्ठा) में पकाकर बनाई हुई राबड़ी (मेवाड़ी देहात का प्रसिद्ध नाश्ता) बहुत अच्छी लगती है, इसको चबाने तक की जरूरत नहीं होती।

१३८. मक्की केवे मारी लाँबी चोटी, म्हँने खावो तो बाँधो झोंटी।
गऊँ केवे मारो फाटो पेट, म्हँने खावे जाड़ो सेठ।
जो केवे म्हारे माथे सालू, म्हूँ सारी दुनिया ने पाळूँ ॥

प्रत्येक खाद्यान्न की अपनी २ विशेषताएँ होती हैं इस कहावत में उनके मुंह से ही इन विशेषताओं का वर्णन कराया गया है। मक्की के भुट्टे के लम्बी चोटी है, दूध, दही या छाछ से ही मक्की ठीक तरह खाई जा सकती है इसलिए इसे खाओ तो भैंस रखो। गेहूँ को सेठ या अच्छी हैसियत वाले ही खाते हैं। जौ के माथे पर तीखी सलाखें होती हैं इसको साधारण जनता खाती है।

१३९. मक्की पर मुलक्या करे कुलथां ऊपर राड़।
फूल्या पे फदक्याँ करे, धन माता मेवाड़॥

मेवाड़ की दरिद्रता के लिए कहा गया है कि यहाँ के लोग मक्की खाकर भी प्रसन्न रहते हैं और कुलथ जैसे निकृष्ट अनाज के लिए झगड़ते हैं तथा भुनी हुई मक्की के मिलने मात्र से यहाँ के बच्चे प्रसन्नता से कूदने लगते हैं।

१४०. मक्या की मूँछ, खाणो वे तो धणी से पूछ।

मक्की के भुट्टे के मुंह पर मूँछ होती है। खेत के मालिक के भी मूँछें होती हैं अर्थात् उसका रखवाला नामर्द नहीं है। उसको पूछे बिना कोई भुट्टा तोड़कर नहीं खा सकता।

१४१. मजबूरी को नाम महात्मा गाँधी।

संतोष गुण-रूप से तो विद्यमान नहीं है परन्तु मजबूरी होने पर संतोष रखना पड़ता है अर्थात् महात्मा गाँधी के गुण अख्तियार करने पड़ते हैं। यह कहावत "मजबूरी का नाम सब्र है" से बिगड़ कर बनी है॥

१४२. माई माई बहोत बिहाई।

माँ के बहुत से बेटे हैं। एक से लाभ नहीं मिलेगा तो दूसरे से मिलेगा।

१४३. मारचा माँदल्या फीकी गोठ।

माँदल्या (ताबीज) वालों को (बच्चों को) मारने से दावत का मजा बिगड़ जाता है।

१४४. माल मणांसाँ नीपजे तेज कणाँसाँ खाय।

माल बहुत पैदा होता है किन्तु जब वह महँगा होता है तो सैंकड़ों कणासों की खरीददारी होकर सब गायब हो जाता है। (१२ मन=१ माणी, १०० माणी=१ मणासा, १०० मणासा= १ कणासा)

१४५. माँ अर् माँ को जायो, देश ई परायो।

जब किसी अजनबी जगह पर और अनजान लोगों में पहुँच जाते हैं, जहाँ अपना-पराया कोई नहीं होता तब यह कहावत कही जाती है।

१४६. राज घोड़ाँ को अर् खेती बलदाँ कीं।

राई का ढेर घी के चम्मच के बोझ से भी बिखर जाता है, उसको न बिखरने देने की चतुराई का प्रयास व्यर्थ है। जो लोग व्यर्थ परिश्रम करने में भी अपनी होशियारी बताते हैं, उनके लिए ऐसा कहा जाता है।

१४७. राई पे टीपरचो ठेरावे।

राज-काज के जिस तरह घोड़ों का सैनिक महत्त्व होने से वे बहुत उपयोगी और आवश्यक समझे जाते हैं उसी तरह खेती के लिए बैलों का होना बहुत आवश्यक है।

१४८. राणा छोड़ी चाकसू मन आवे जो लाट।

जब कोई व्यक्ति किसी को त्याग देता है, तो फिर उसकी चिन्ता कभी नहीं करता, जैसे राणाजी ने चाकसू को चित्तौड़ से अलग करके त्याग दिया तब उनकी ओर से उस गाँव का लगान कोई भी वसूल करे, इससे उनको क्या लेना-देना।

१४९. रामजी का रमतण्याँ अर् परभूजी की डोर।

सब कुछ ईश्वर के अधीन है, यह विश्वास इस कहावत से प्रकट करते हैं कि हम सब कठपुतलियाँ हैं जिनकी डोर रामजी के हाथ में है जो अपनी इच्छानुसार सबको नचाते रहते हैं। "उमा दारु योषित की नांई। सबहिं नचावत राम गोसांई॥"

१५०. राम थारी माया, कठे धूप कठे छाया।

भगवान की लीला अद्भुत है, कहीं सुख है तो कहीं दुःख; कहीं धूप है तो कहीं छाया।

१५१. रोटचाँ साँटे रास।

रोटियां खिलाने वाले (या मजदूरी देने वाले) की आज्ञानुसार 'रास' (नृत्य) करना पड़ता है।

१५२. रोटली दे दो, ओटली मती दो।

कोइ लेने का हकदार होता है तो उसको (बहन बेटी आदि को या प्रिय मेहमान को) अच्छा भोजन भले ही करा दो, पूरा का पूरा घर मत सौंप दो अथवा ठहरने को जगह (अपरिचित व्यक्ति को) मत दो।

१५३. रो रो ऽर् पूछे अर् हँस हँस ऽर् बिखेरे।

स्त्रियाँ प्रायः झूठी सहानुभूति दिखाकर गोपनीय बातें दूसरी स्त्रियों से पूछ लेती हैं और फिर बाहर जाकर हँसती २ उनको प्रकट कर देती हैं इसलिए उनका विश्वास कर उनको गोपनीय बातें कभी नहीं कहना चाहिए।

१५४. रोवणों रींकणों परोत जी के घरे।

महाराणा के महल में राजपरिवार में से किसी की मृत्यु हो जाने पर

वहाँ रोनाधोना अशुभ मानकर पुरोहित जी के यहाँ रोना मचता था। जब किसी का किसी कार्य में होने वाले नुकसान से कोई वास्ता न रहे और वह किसी दूसरे को ही भुगतना पड़े तब ऐसे कहा जाता है।

१५५. रोवतो जावे तो मरचाँ की खबर लेने आवे।

मरदूद और निराशावादी आदमी कभी अच्छा काम नहीं कर सकता। उसको कहीं भेजते हैं तो रोता हुआ—सा बनकर जाता है और किसी खुश-खबर के बजाय किसी के मर जाने का समाचार ले कर लौटता है।

१५६. रंग राजा पोत परधान।

कपड़ा उसके रंग से फबता है और पोत भी यदि अच्छा हो तो क्या कहना है। (पोत कपड़े की बनावट—मोटा, बारीक घुटा हुआ आदि texture को कहते हैं)

१५७. लड़े सिपाई अर् नाम सरदार को।

सिपाही बहादुरी से लड़कर विजय प्रदान कराते हैं लेकिन कीर्ति फौज के सेनापति की हुआ करती है।

१५८. लाँक ललावे, फाबो चलावे, एड़ी छ्गन करावे।

पैरों के विभिन्न भागों पर चलने वाली खाज (खुजाल) को लेकर भी शकुन-विचार किया गया है कि जहाँ धोती की कोर छूती है (अर्थात् टखने के) वहाँ खाज लगने पर किसी यात्रा के लिए लालायित होने का मौका आता हैं, फाब में (अर्थात् पंजे के नीचे) खाज लगने पर चलने का काम पैदा होता है और एड़ी में खाज लगती है तो बड़ी लाभदायक यात्रा होती है।

१६९. बेठ्या बाड़ करज्ये, क बावजी कागलो थें बेठवा दो मती।

ठाकुर ने बेगारी से खेत की बाड़ (काँटों का घेरा) बनवाई। उस पर कौए का बैठना अशुभ समझा जाता है। कौए को न बैठने देने जितनी रखवाली करना कठिन है इसलिए बेगारी कहता है कि बाड़ तो मैं बना दूँगा पर उस पर कौए को आप मत बैठने देना।

१६०. शहर में डाँडा अर् गाँव में ढाँढा।

शहर में मकान होना एक तरह से संपत्ति है तो गाँवों में पशुधन होना ही धन है।

१६१. सगी बेण का नूँता झेल्यां, साल्याँ बेस पेराय।

माहेरा (बहन के यहाँ विवाह के अवसर पर वस्त्र आभूषण आदि का उपहार) करने के लिए बहन निमन्त्रण देने आई वह तो स्वीकार किया और बहन के बजाय सालियों को वेश (साड़ी लंहगा आदि) पहना रहा है। यह असंगत काम पत्नी के लिहाज से किया जा रहा है।

१६२. सदा दिवाली संत के बारों मास बसन्त।

संत (साधु फकीर) के लिए सदा ही सुखदायक ऋतु और सदा ही त्यौहार हुआ करते हैं क्योंकि वह हर हालत में खुश रहा है।

१६३. सारी रात चाल्या तोई टोड़ो तीन को तीन कोस।

सारी रात चलने पर भी टोड़ा (गाँव) तीन कोस दूर ही रहा, नजदीक नहीं आया। गलत रास्ते से चलने या काम करने पर असफलता ही मिलती है।

१६४. सींगड़े कोड़ी पाँती आवे।

गायों पर कोई हल्का टेक्स चराई आदि का लगावे तो दे देना चाहिए। एक २ सींग पर एक २ कोड़ी लगे तो क्या परवाह है।

१६५. सूता ने सौ मण, बैठा ने नौ मण।

अनुचित रीति से विभाजन करने पर अयोग्य (सोये हुए) को सौ मन और योग्य (बैठे हुए) को ९ ही मन वस्तु मिलती है।

१६६. सूती बैठी डोकरी घर में घाल्यो घोड़ो।
दूध कचोलां पीवती, जो धोब खोदवा बोड़ो॥

जानबूझकर ऐसा काम तो मूर्ख लोग ही करते हैं जिसमें लाभ के स्थान पर व्यर्थ ही कठिन परिश्रम करने को मजबूर होना पड़े। बुढ़िया यदि दुधारू मवेशी को बेचकर घोड़ा खरीदे और उसके लिए दूब खोद २ कर खिलाने की परेशानी उठाये तो यह वैसी ही बात होगी जैसे, 'बामणां बुध थोड़ी, बेचे भेंस अर् लावे घोड़ी।'

१६७. सेर की तो गई अर् पाव की ह्वे ऽर् आई।

जब परगाँव, परदेश (या सुसराल) जाने पर वह दुःख उठाना पड़े और दुर्बल होकर लौटे तब यह कहावत कही जाती है।

१६८. सोम खोले, मंगल न्हावे, धणी पेली धरयाणी जावे।

एक प्रकार का शकुन-विचार है कि कोई स्त्री अपने सर के गुँथे हुए बाल सोमवार को खोलकर खुले रहने देती है और मंगलवार को नहाती है तो उसकी मृत्यु उसके पति से पहले होती है, अर्थात् उसे वैधव्य दुःख नहीं भोगना पड़ता।

१७९. सौ आवे सतरा जावे।

आमदनी अधिक हो और खर्च कम हो तो परवाह नहीं करनी चाहिए।

१७०. सौ कटण को एक बटण।

सौ बिखरी हुई छोटी-छोटी वस्तुओं की सम्हाल करना कठिन होता है उनको बाँधकर इकट्ठी रखना चाहिए।

१७१. सौ खताँ की एक फारगती।

सौ खतों (इकरार नामे आदि) का निपटारा एक ही सम्मिलित भरपाई से हो जाता है। जहां एक ही कार्य से कई झगड़ों का फैसला हो जाता है वहाँ यह कहावत कही जाती है।

१७२. सौ न्याती अर् एक गोती।

जाति के सौ आदमियों की अपेक्षा एक सगोत्र अच्छा (उसको भाई-चारे की सहानुभूति होती है।)

१७३. सौ सुरंगा एक सपूत अर् सौ कुमेतां एक कपूत।

घोड़ों के लिए कहा गया है कि सुरंग रंग के घोड़ों में सौ में से कोई एक ही अच्छा और कुमेत घोड़ों में सौ में से कोई एक ही बुरा हुआ करता है।

१७४. हरी दिया तो हारे नहीं अर् उदारा रेवे नहीं।

भगवान की दी हुई अच्छी कमाई लगाने से तो जीत ही होगी। उधार लाई हुई रकम तो टिक नहीं सकती। सौदे में या सट्टे में चली ही जायगी।

१७५. हींगोरा (या आँवला) मीठा होता तो गुवाल्या ई काँ छोड़ता।

आँवले मीठे होते तो ग्वाले ही खा जाते। हींगोरे तो आँवले से भी अधिक नगण्य फल होते हैं। खराब वस्तु या व्यक्ति को महत्व-हीन बताने के लिए यह उपमा दी जाती है।

१७६. हींग साटे तरकारी बिगड़ जावे।

घी और मसाला अच्छी मात्रा में होते हुए भी कभी २ थोड़ी सी हींग के अभावमात्र से ही सब्जी बिगड़ जाया करती है। गलत किफायत करने के चक्कर में अधिक नुकसान उठाना पड़ता है।

१७७. हुक्को, चिलम अर् ने, तीं' नीं पोला।

हुक्का, चिलम और उसकी लम्बी नली (नेज) ये तीनों पोले होते हैं। जब सभी एक जैसे अविश्वसनीय होते हैं तब ऐसा कहा जाता है।

१७८. हुया हजार, फिरो बजार।

बहुत अधिक कर्जा हो जाने पर कभी २ आदमी निर्लज्ज हो जाता है फिर बाजार में फिरने से नहीं हिचकता।

१७९. हेटलां ने खेंचे अर् ऊपरलां ने ठामें।

नीचे की (सहारा देने वाली) वस्तु खिसकाने से उसके ऊपर रखी हुई वस्तु तो गिरेगी ही, उसको थामने का प्रयत्न मूर्ख ही करते हैं।

१८०. होळी की हाँताँ दिवाळी में।

होली पर किया जाने वाला काम दिवाली पर शोभा नहीं देता दोनों त्यौहारों पर किये जाने वाले कार्य भिन्न २ होते हैं।

(हाँताँ—श्राद्ध में निकाली हुई बलि)

——

हास्य व्यंग्य (८)

१. अड़चाँ आई अदूण पीसे ।

हठ पर उतर जाने की दशा में कोई स्त्री आधा मन अनाज एक साथ पीस लेती है । जिद्द के कारण थकान मालूम नहीं होती ।

२. अणदी ए अणदी, सासू न नणदी ।

नाम तो आनन्दी है पर घर में न तो (रक्षक) सास है और न (सहायक) ननद है, फिर क्या आनन्द है ।

३. अल्ला तेरी आस, अर् नजर चूल्हा पास ।

प्रगट तो ऐसा करते हैं, जैसे ईश्वर के अलावा और किसी से कोई आशा नहीं रखते और नजर चूल्हे पर सिकती हुई रोटी पर लगाये रहते हैं ।

४. अहलकार हाकिम जिला, सूर, सिकारी अर् साँड ।
अतरा सुखी मेवाड़ में, रामसनेही अर् राँड ।।

मेवाड़ के लिए प्रसिद्ध है कि अहलकार, जिलों के हाकिम, सूअर, शिकारी लोग, साँड, रामसनेही साधु, और विधवाएँ–ये सब यहाँ बड़े सुखी रहते हैं । प्रथम दो रिश्वत खाते, सूअरों (जंगली) व सांडों को कोई मार नहीं सकता था, शिकारियों को सुरक्षित जंगल मिल जाते थे, विधवाएं रंगबिरगे वस्त्र व जेवर पहन सकती थीं ।

५. आओ नकामा जी काम करो, माँचो उदेड़ न पाछो बणो ।

जिनको कुछ भी काम नहीं सूझता और जो फालतू बैठे रहते हैं उनको कहा गया है कि और कुछ नहीं तो खाट को उधेड़ कर वापस तैयार करो, (यही करो) । जैसे—'बेकार मबाश कुछ किया कर, कुछ नहीं तो पाजामा ही उधेड़कर सिया कर ।'

६. आओ, बैठो, गाओ गीत, नीं माँ के पतासाँ की रीत।

जो स्त्रियाँ पड़ौसी के यहाँ गीत गाने इसीलिए जाती हैं कि शक्कर के बतासे मिलेंगे, उनको सम्बोधन कर कहा गया है कि खूब गीत गाओ, बतासों का रिवाज तो हमारे यहाँ नहीं है।

७. आखी रात रोया तोई कोई नीं मरचो।

कई लोग इकट्ठे होकर सारी रात रोते रहें जिससे क्या कोई (यह सोच कर कि इनका रोना निरर्थक न हो) मरता थोड़े ही है।

८. आड़ तरे तो तरण दे, थूँ मत तरज्ये कग्ग।
नीची होसी नाड़की, ऊँचा होसी पग॥

कौए को सम्बोधन कर कहा गया है कि आड़ (पानी पर तैरने वाला एक पक्षी) की देखादेखी कहीं तू मत तैरने लग जाना। यदि तू तैरने लगा तो गर्दन नीची और पाँव ऊँचे हो जायेंगे अर्थात् मारा जायगा। इस व्यंग्य में देखादेखी हठधर्मी करने वालों को लक्ष्य किया गया है।

९. आती को नाम सजना और जाती को नाम मुकना।

आवे तो भी अच्छी और जावे तो भी अच्छी, कोई फर्क नहीं पड़ता है (अर्थात् रहने का कोई महत्व नहीं)।

१०. आप आपकी तान में गधा भी मस्तान।

अपने अपने मन की मौज में सब मस्त रहते हैं, यहाँ तक कि गधा भी।

११. आपको ज्यो बाप को अर् दूजा में आदूँ आद।

चालाक लोग अपने माल में तो किसी को हिस्सा नहीं देते और दूसरों के माल में से आधा भाग लेने को तत्पर रहते हैं।

१२. आया धोळा, बैठो अकोळा।

बूढे होने पर कोई महत्व नहीं देते, एकान्त में अकेले पड़े-पड़े रहकर दिन काटने पड़ते हैं।

१३. आया पछे, बेठा बचे।

धूर्त लोग विलम्ब से आते हैं फिर भी पंचायत में बीचों-बीच बैठकर मुखिया बन जाते हैं।

१४. आलीजाजी आज्योजी घराँ।
थाँकी राँडाँ रोवे अन्न बिनाँ॥

घर आओ मेरे आलीजाह, तुम्हारे घर की औरतें अन्न के अभाव में रो रही हैं, और तुम और जगह मौजें मार रहे हो।

१५. आलो चूल्हो सरदचा छाणा, गीलो कीदो आटा ने।
फूटे तुवे फुलका पोवे, रोवे रीत का खाटा ने॥

सामर्थ्य न रहते हुए भी रुतबे की परम्परा का निर्वाह करने की अकड़

रखने वालों की परेशानी पर अच्छा सा व्यंग्य है। चूल्हा और कण्डे गीले हैं, आटे में पानी बहुत दे दिया है, तवा भी फूटा हुआ है फिर भी पतली-पतली मुलायम चपातियाँ (फुलके) ही बनानी है क्योंकि हमारे घर में ऐसी ही चपातियां बनती आई हैं।

१६. आव ए मारी काणी, थूँ कठेई नीं खटाणी।

घूम फिर कर निराश होकर लौटने वाले के लिए हास्य है; आ, मेरी काणी, तू कहीं भी नहीं निभ सकी।

१७. आव रे बळद मनें मार, सींग सूँ नी तो पूँछ सूँ ई मार।

जो रास्ते चलते मुफ्त की आफत मोल लेने की आदत से लाचार होते हैं, उन पर व्यंग्य किया गया है। हे बैल, तू आकर मुझे मार, सींग से नहीं मार सके तो पूँछ से ही मार, लेकिन मुझे मार।

१८. आसाम्यां का नुगता वे जावे, पण बोहरा की बाटी भी न वे वे।

बोहरा (कर्जा देने वाला) उधार देता है जिससे उसके आसामियों (किसान आदि उधार लेने वालों) के यहाँ तो ठाठ से मृत्यु भोज सम्पन्न हो जाता है किन्तु बोहरा जब मरता है तो उसके निमित्त एक बाटी बनाना भी कठिन हो जाता है, क्योंकि उधार दे दे कर (ब्याज कमाने के लालच में) वह अपना सारा रुपया बिखेर देता है, पास में कुछ नहीं मिलता व बाद में कोई नहीं लौटाता।

१९. आँधा ने हिया फूटा मल्या रे' वे।

आँखों के अँधे को अकल के अन्धे मिले ही रहते हैं। मूर्खता का ठेका किसी एक का नहीं होता। भगवान मूर्खों के जोड़े मिलाता ही रहता है।

२०. आँधो बाँटे सीरणी, फर फर घरकाँ ने दे वे।
सूझताँ की फूटगी ज्यो माँग क्यूँ नीं ले वे।

अन्धा मिठाई बाँटता है तो वहीं का वहीं फिर-फिर कर घर वालों को ही देता रहता है, (इस पर हास्य का प्रत्युत्तर है कि) लेने वालों की आँखें तो नहीं फूट गई हैं, वे आगे आ कर माँग क्यों नहीं लेते।

२१. ईलाजी घोड़ाँ का पारखी।

ईलाजी एक भौंडा बनिया था, उसको अच्छे बुरे घोड़ों की पहचान कहाँ से आई ? मूर्ख आदमी जब परीक्षा या जाँच करने लगे तब यह व्यंग्य किया जाता है।

२२. ऊठो सासूजी साँस लो, मूँ कातूँ थें पीस लो।

सूत कातने की अपेक्षा धान पीसना कठिन काम है। थोड़े विश्राम का प्रलोभन देकर सूत कातती हुई सासू को चक्की पीसने का काम सौंपना बहू की चालाकी है। ऐसी चालाकी पर इस कहावत में व्यंग्य किया गया है।

२३. ऊतर पाँतर लाल कबूतर तुम घोड़ा हम असवार ।

किसी का देना-लेना साफ हो जाने या बैर-बदला निबट जाने पर यह कहा जाता है। जब तक देना नहीं उतरा था तब तक कर्जदार की घोड़ी बनाई जा सकती थी अब वह सवार बन गया व जिसका चुकारा किया गया वह जैसे घोड़ा हो गया ।

२४. ऊँटाँ का ब्याव में गदेड़ा गीत गावे ।

ऊँट के विवाह में गदहे गीत गाते हैं। एक दूसरे की आपस में झूठी प्रशंसा करने पर यह कहावत कही जाती है। "परस्परं प्रशंसन्ति, अहो रूपं अहो ध्वनिः" ।

२५ ऊँटाँ के गलवाणी ऊँ कई वे वे ।

गळवाणी (गुड़ के रस में पकाई हुई आटे की रबड़ी) से ऊँट का पेट नहीं भरता ।

२६. ऊँटाँ के जीरा का बगार ऊँ कई वे वे ।

विशालकाय जानवर या व्यक्ति की खुराक भी अधिक होती है उसको बहुत ही कम मात्रा में (नहीं के बराबर) खुराक दी जाती है तब यह उपमा देकर हँसी की जाती है ।

२७. एड़ी रगड़ी अर् बऊ बगड़ी ।

अधिक साफ सुथरा रहने और शृंगार प्रेमी स्त्री पर गाँवों में इस कहावत से प्रायः व्यंग्य किया जाता है ।

२८. ओई सासू ओढणो अर् ओई बू बिछावणो ।

गरीबी की मौज पर हास्य है कि घर में एक ही बिछौना है जिसको कभी सासू बिछा लेती है तो कभी बहू ओढ लेती है ।

२९. ओछी गर्दन कम पेशानी, दगाबाज की यही निशानी ।

कभी-२ चालाक स्वभाव वालों को चिढ़ाने के लिये यह कहा जाता है कि उनकी गर्दन और ललाट छोटे होते हैं यही निशानी है ।

३०. कदी भील के भैंस होई अर् कदी खाटी छाछ पी' वी ।

ऐसा भाग्य उदय तो हो कि भील भैंस रख सके और दूध दही नहीं तो कम से कम घरू छाछ ही पी सके चाहे वह खट्टी ही हो ।

३१. कपड़ा को आँक अर् लुगाई की बाँक घरधणी ई ज जाणे ।

बेचे जाने वाले कपड़े पर कीमत के जो अंक लिखे होते हैं उनका अर्थ बेचने वाला व्यौपारी ही समझता है और स्त्री की कुटिलता को उसका पति ही जानता है ।

३२. कवी कुराड़ा बामणां, जे मुख भोटा होय ।
गळियारां रुळिया फिरे, सार न पूछे कोय ।।

जिस तरह भोटा कुल्हाड़ा किसी काम का नहीं होता, इसी प्रकार कवि और ब्राह्मण भी वाक् पटु न होने की हालत में गलियों में मारे-मारे फिरते हैं, कोई भी इनकी परवाह नहीं करता।

३३. काकाजी पीदी, भतीजा ने ऊमे।

भाँग तो चाचा ने पी है और पागल भतीजा हो रहा है। जब गलती कोई करे और उससे प्रभावित कोई दूसरा ही हो तब इस प्रकार से व्यंग्य किया जाता है।

३४. काकीजी कियो तो चौके ई आण चढी।

जब किसी को थोडा सा सम्मान देने मात्र से ही वह हावी होने लगता है तब यह व्यंग्य किया जाता है।

३५. काजळ कणी पे घालूँ ओ मारी धोळी आँख्याँ का धणी।

सफेद बालों वाले वृद्ध पति की युवती स्त्री को आँखों में काजल लगाने व श्रृंगार करने का शौक नहीं हो सकता। पति के आग्रह पर स्त्री का यह दुःख भरा उत्तर है।

३६. काजळ घालवाऊँ कई वे, चोगवा का लक्खण वे जदी है।

यदि आँखे ही सुन्दर नहीं हैं और तिरछी लजीली निगाहों से देखने की योग्यता नहीं है तो केवल काजल लगाने से सुन्दरता नहीं आ सकती।

३७. काण्याँ, खोड़या, कूबड़ा, कूट कुचाली जाण।

प्राय: काने, खोड़े, और कुबड़े चालाक माने गये हैं। अतः इन पर यह व्यंग्य प्रचलित है। कैकेयी ने मंथरा को कुबड़ी होने से प्रारंभ में ये ही शब्द कहे थे।

३८. काण्यो, कजरो, कायरो, चपट मुखो, मुछ भूर।
ओछी गर्दन, दाँतलो, तासूँ रीज्ये दूर।।

काना, कजरी आँखों वाला, सफेद आँखों वाला, चपटे मुंह वाला, भूरी मूँछों वाला, ओछी गर्दन वाला और जिसके दाँत बाहर निकले हुए हों—इनसे सदा दूर ही रहना उचित है। ये चालाक न खतरनाक होने हैं।

३९. काणां काका राड़ काँकी, फूटा डिया की।

काने काका को लड़ने का कोई कारण नहीं फिर भी क्यों लड़ता है? कि आँख ही फूटी है जो लड़ाई का हेतु है।

४०. काणाँ ने के वे अर् बाडो लाजे।

काने को कुछ कहते हैं बाड़ा (टेढ़ा देखने वाला) पहले से ही अपनी एब का अहसास होने से लज्जित होने लगता है।

४१. काणी का ब्याव में हजार रोडा।

कानी लड़की के लिए प्रथम तो वर मिलना ही कठिन है, मिल भी जावे तो विवाह में अनेक विघ्न उठ खड़े होते हैं।

४२. काणी को तो काजल ई साल्यो।

भाग्यहीन का थोड़ा सा सुख भी लोगों को सहन नहीं होता। कानी स्त्री काजल लगाती है जो भी लोगों को चुभता है तो बेचारी और क्या शृंगार करे।

४३. कादाऊँ तो पंग भरया अर् केवे के मँने ई जाजम पर बेठवा दो।

अपनी हालत और हैसियत से अधिक महत्वाकाँक्षा करने वालों पर यह व्यंग्य किया जाता है।

४४. कान्यो मान्यो कुर्, सवा रुप्यो धर।

कोई मंत्र न देकर कान में फोकट बात कहदी और भेंट का सवा रुपया माँग लिया।

४५. काम की वेल्याँ लाकड़ी अर् खाबाने चावे छ ताकड़ी।

जो काम के नाम पर कुछ नहीं करता बल्कि लट्ठ उठाकर लड़ने पर उतारू होजाता है (या लकड़ी की तरह निश्चेष्ट पड़ा रहता है) और खाने के मौके पर पूरा ३० सेर खा जाता है उस पर यह व्यंग्य किया गया है।

४६. काम के दो कूँचो अर् नान्या ने लो ऊँचो।

काम को छोड़कर बच्चे को खेलाते फिरो, अधिक कामकाज वाले व्यस्त स्त्री पुरुष रोते हुए बच्चे पर खीझते हुए से (क्योंकि उसको बहलाने में लगने से काम से खलल पड़ती है) व्यंग्य रूप में ऐसा कहते-सुनते रहते हैं।

४७. काम को न करम को टील्यो आयो टब।

आदमी किसी काम का नहीं है लेकिन खाने पीने के मौके पर या कहीं घूमने जाने के समय टील्या (निकम्मा) तुरन्त आ पहुँचता है।

४८. काम जतरे काकीजी, दूज्यूँ आगा बळो दारीजी।

स्वार्थ की मनोवृत्ति पर व्यंग्य है कि गरज होती है तब तक तो खुशामद और बाद में तिरस्कार।

४९. काली कुत्ती कालो मूँत, थने भोंटे, थारो मूँत।

कुत्ते से सम्बन्ध रखने वाला उसका ही बेटा होता है। जब किसी से सम्पूर्ण सम्बन्ध विच्छेद करने की बात होती है तब ऐसा कह दिया जाता है।

५०. काँख में कुरान, आँख में हराम ।

लुच्चा आदमी पाखण्ड फैलाने के लिए धर्मात्मा होने का स्वांग रचता है तो उसके ऐसे कपटाचार पर यह व्यंग्य किया जाता है। जैसे, 'मुँह में राम, बगल में छुरी।'

५१. काँदा अर् खारड़ा दोई खादा ।

किसी अपराधी के सौ जूते मारने की सजा हाकिम ने तजवीज की। उसके यह सजा ज्यादा होने की व इस में कमी करने की प्रार्थना करने पर इस के बजाय सौ प्याज एक साथ खिलाने की सजा तजवीज की गई। इसे अपराधी ने स्वीकार कर लिया। परन्तु इतने प्याज खा न सका तब बाकी प्याजों की गिनती के बराबर जूते खाने पड़े। इस प्रकार रहम की भिक्षा, कोई काम नहीं आई।

५२. काँधा पे छोरो अर् गाम में ढिंढोरो ।

बालक को कंधे पर बिठाकर भूल गये और गाँव में खोजते रहे, ऐसी बेखबरी और असावधानी या भूल करने की आदत भी किस काम की।

५३. कुँवारा ने सगपण करवा भेजो तो पेली खुद को क' री कन दूजाँ को ।

जिसे व्यावहारिक यथार्थ का ज्ञान नहीं होता उसको समझाने के लिए यह कहावत कही जाती है कि अपनी गरज को पूरा करने के लिए अपने जैसे ही गरजी को नहीं भेजना चाहिए। वह उसका स्वयं का काम पहले बनायगा हमारा नहीं।

५४. कूकड़ो वे जठे ई ज दन ऊगे कँई ।

इसमें हरएक काम का श्रेय अपने ऊपर रखने वाले आत्मश्लाघी पर व्यंग्य है, क्या जहाँ मुर्गा होता है वहीं दिन उगता है? अर्थात् दिन तो सब जगह (जहाँ मुर्गा नहीं होता वहाँ भी) उगता है और मुर्गा तो दिन उगने पर बोलता ही है।

५५. कूँची मेड़े पड़ी अर् समाई में बोलूँ नहीं ।

जैनी लोग समाई (मौन रहकर भजन करने की साधना) भी करते हैं और स्वार्थवश बोलते भी जाते हैं। इस कहावत में समाई करने वाला कहता है कि चाबी (दूकान की) ताक में रखी है और मैं समाई में नहीं बोलता हूँ (और चाबी बताता जाता है)।

५६. के तो चाले कोड़ा अर् के चाले गोड़ा ।

या तो पैसों से काम होता है या खुद उठकर करने से होता है।

५७. के ये छोरी ठाकर, मूँ कई कूँ मारा दुनिया के वे जदी है।

अपनी नौकरानी से खुद को ठाकुर कहलाने से कोई ठाकुर नहीं हो सकता। गाँव के लोग (दुनिया) कहें जब है।

५८. कोठे परेंडे तो हाथ मत घालो, घर बार तुम्हारा।

एक चलती मजाक है। 'खाने पीने की वस्तु को तो छूने ही न दे और कहे घर आपका ही है'।

५९. खड़ कटाओ चावे गेले चलाओ।

मजदूर से चाहे घास कटा लो चाहे रास्ते पैदल चला लो, उसे तो काम के लिए निर्धारित समय पूरा करना है।

६०. खाओ बरा अर् जाओ परा।

बड़ी तीज (भाद्रपद कृष्णा ३) का आया महमान अधिक से अधिक द्वादशी तक रुकता है उस दिन तले हुए चने (बरा) बनाये जाते हैं।

६१. खाती आई राबड़ी गाती आई गीत।
या कई जाणें बापड़ी बड़ा घराँ की रीत।।

जो राबड़ी (मक्की के आटे से बना खाद्य पदार्थ) खाकर ही खुश होती और गीत गाती रही है वह गरीब घर की बेचारी लड़की बड़े घरों की (जहाँ उसे ब्याह दिया गया है वहाँ की) रीतियों को क्या जाने।

६२. खा पी ऽर् सू जाणो, मार कूट ऽर् भाग जाणो।

चालाकी की सीख है, खा पीकर सो जाना और मारपीट कर भाग जाना जिससे दोनों ही गल्तियों का आप पर कोई शक भी न करे।

६३. खारी के तो चोकी लागे साकर सूनी जाय।

नमक के तो पहरा दिया जाता है और शक्कर सूनी ही रहती है। मूर्खता पूर्ण प्रबन्ध के लिए व्यंग्य है। 'Penny wise, Pound foolish.'

६४. खाया पीया विया सुखी, ऊँठ माँजताँ बऊ दुखी।

महमान तो खा पीकर मस्त हो जाते हैं लेकिन बहू झूठे बर्तन माँज २ कर दुखी हो जाती है।

६५. खाँख में छाणो अर् उदेपर जाणो।

पास में तो पैसा है नहीं (केवल कण्डा है) और कहता है कि उदयपुर जाना है।

६६. खाँख में छुरी अर् चोर ने मूक्याँ की मार।

पास में छुरी होते हुए भी चोर को मुक्कों से मारने वालों के जैसी अक्ल पर व्यंग्य है ।

६७. खीराँ मेली खीचड़ी ऽर् टील्यो आयो टप्प ।

निकम्मे आदमी के लिए कहा है जो और तो किसी काम का नहीं होता पर ज्यों ही भोजन बनता है, तुरन्त ही आ पहुँचता है जैसे इसकी ताक में ही रहता हो ।

६८. खोज जा ऽर् खेजड़ा ऊ' गी ।

क्रोध और आवेश में दी जाने वाली दुराशीष है, वंश में कोई नहीं बचेगा, घर बार वीरान होकर कांटेदार झाड़ उगने लगेंगे ।

६९. खोड़ी बू बायदो करे अर् सात जणाँ टाँग जमावे ।

लंगड़ी बहू घर का कचरा गोबर आदि उठाती है तो सात सात व्यक्तियों को उसकी टाँग जमाने में सहायता करनी पड़ती है । अक्षम से काम लेने पर और भी मुसीबत पैदा होती है ।

७०. गऊँ छोड़ मक्की खाणो, मेवाड़ छोड़ केठे ई नीं जाणो ।

पुरुषार्थ में आलस्य करने वालों का यह एक अच्छा बहाना ही है कि उन्हें अपनी मातृ-भूमि (मेवाड़) से इतना प्रेम है कि गेहूँ की बजाय मक्की खालेंगे (अर्थात् कष्ट भोगेंगे) किन्तु अन्यत्र नहीं जायेंगे ।

७१. गतराड़ा ई कठे ई गाम लूटचा है !

हींजड़ों ने भी कहीं गाँव लूटे हैं ? ऐसे व्यक्तियों से कभी साहस और वीरता की आशा नहीं करनी चाहिए ।

७२. गदेड़ी ने गजगाव ।

किसी भौंडे व्यक्ति को सजाने सँवारने के कार्य पर कहा गया है कि गदही को घोड़े की तरह सुरेगाय के बालों के चँवर जैसे उपकरण पहना दिये हों, ऐसा लगता है।

७३. गदेड़ी ने गंगाजी क्यूँ ।

गदही को गंगास्नान दुर्लभ है (चाहे गंगा के तीर पर ही क्यों न हो वह तो राख में लौटेगी) । अच्छे अवसर का लाभ न उठाने वाले को लक्ष्य किया गया है ।

७४. गधा पेली गूँण उछळे ।

गदहे पर सामान लादने के पहले ही गूणती (सामान लादने की रस्सियों से बनी हुई पीठ पर दोनों तरफ लटकने वाली एक विशेष प्रकार की बड़ी थैली) उछल रही है । स्वामी से पहले उसके आश्रित कोई व्यक्ति जब बढ़ बढ़ कर बातें बनाने लग जाते हैं तब यह कहावत कही जाती है ।

७५. गम्यो ऊँट घड़ा में सोधे ।

यह एक प्रकार की मूर्खता का उदाहरण है । ऊँट जैसी विशालकाय वस्तु को घड़े जैसी छोटी वस्तु में खोजने जैसा काम किया जाता है।

७६. गरजो क्यूँ तो के साँड हाँ, भागो क्यूँ तो के गऊ का जाया हाँ ।

बैल गाय को (या कमजोर बैल को) देखकर तो गरजता है जैसे वह बलशाली साँड हो और अपने से अधिक बलवान को देखकर भाग खड़ा होता है जैसे वह बहुत गरीब और दया का पात्र हो । कोई मनुष्य जब अपने से कमजोर व्यक्तियों पर रौब जमाता है और अधिक बलशाली व्यक्ति के सामने भोलाभाला बनता है तब यह कहावत कही जाती है ।

७७. गरीब की जोरू जगत की भाभी ।

गरीब की स्त्री से सभी भाभी की तरह विनोद किया करते हैं, अर्थात् गरीब व्यक्ति पर हर कोई हावी होने की कोशिश करता है ।

७८. गाजर की पूंगी बाजी जतरे बजाई, नीं बाजी तो तोड़ खाई ।

एक वस्तु से दो प्रयोजन सिद्ध हो सकने की स्थिति में यदि एक न भी हो पाये तो दूसरा उपयोग लेने से भी लाभ ही होगा, अर्थात् उससे कोई नुकसान तो होगा ही नहीं । गाजर की पूंगी बनाई, नहीं बजी तो चलो खाने के काम में ही ले ली, नुकसान क्या हुआ ?

७९. गाडर पे ऊन कुण छोड़े ।

भेड़ पालते ही इसलिए हैं कि उससे ऊन प्राप्त हो अतः वह चाहे किसी के भी पास रहे, ऊन तो काटी ही जायेगी । अर्थात् उपयोगी वस्तु का उपयोग तो लिया ही जायगा । कोई नहीं छोड़ेगा ।

८०. गाड़ी के पाछे धूळो उड़े ।

गाड़ी के चले जाने पर पीछे धूल उड़ती हुई रह जाती है जब किसी काम की समाप्ति पर फालतू खर्चे का बोझ (या बरबादी) अनुभव होता है तब ऐसा कह दिया जाता है ।

८१ गाड़ी को पाचरो अर् लुगाई को चाचरो कूटचो ई अरथ को ।

गाड़ी के पहियों आदि की मजबूत कसावट के लिए जो पच्चर (फाड़ी) लगाया जाता है, उसको और औरत के सिर को ठोकने पीटने से ही ठीक काम देते हैं ।

८२. गाड़ी, घोड़ा, डोकरी, तीन ई एका साथ ।

गाड़ी और घोड़े के सवार और पैदल चलने वाली बुढिया बहुधा अपने गंतव्य पर एक साथ ही पहुँचते हैं जबकि प्रथम दो को जल्दी पहुँचना चाहिए किन्तु वे अपनी तीव्रगति के घमण्ड में बीच में विश्राम अधिक करने से पीछे रह जाते

हैं और बुढ़िया निरन्तर चलती रहती है। इसमें निरन्तर श्रम का महत्त्व दर्शाया है।

८३. गाड़ी, पाड़ी अर् लाड़ी, दूजा के घरे ईज आछी लागे।

गाड़ी की टूटफूट सुधारते रहने पर, नववधू को प्रसन्न एवं वस्त्रालंकार सुसज्जित रखने पर और नई भैंस को खूब खिलाने-पिलाने पर बहुत खर्चा हो जाता है अतः कहा है कि ये औरों के घरों पर ही शोभा देती हैं।

८४. गाबा फाट गरीबी आई।

एक तो कपड़े फट जावें और ऊपर से गरीबी और आ जाय, तब बहुत दुर्दशा हो जाती है।

८५. गाय सूँ गाय न फळे।

समलिङ्गियों से प्रजनन सम्भव नहीं होता अर्थात् एक जैसे निर्धन या निर्बल एक दूसरे के लिए भी काम नहीं आ सकते।

८६. गारा का नगारा, घर का बजावा वाला।

नगाड़े मिट्टी के हों पर बजाने वाले कोई दूसरे नहीं, घर के लोग ही हों तो उनके टूटने का भय नहीं रहता। (क्योंकि टूट भी जायेंगे तो घर के ही लोगों से टूटेंगे जिससे कोई लड़ने तो नहीं आयेगा)

८७. गांगली ग्याबण वी ज्यों गांव पे डन्ड।

बेवकूफ (या अर्द्ध पागल) औरत के गर्भवती होने से उसके प्रसव के खर्चे का भार क्या कोई दण्ड है जो गांव वालों को भुगताना पड़ेगा।

८८. गुड़ खाऊँ न कान बिंदाऊँ।

मुझे न गुड़ खाना है और न कान छिदवाने हैं। जब प्रलोभन के बहाने कोई कष्ट या बोझ दिया जाता है तब यह कहावत कही जाती है।

८९. गुरु तो गुड़ रेग्या अर् चेला शक्कर वेग्या।

गुरु तो गुड़ ही रह गये और उनके शिष्य शक्कर हो गये अर्थात् शिष्य गुरु से भी बढ़कर हो गये।

९०. गेली अर् गाँव पेली।

बेवकूफ, पागल स्त्री गाँव से भी आगे आगे रहती है हर बात में पहल कर गाँव की शोभा बिगाड़ती है।

९१. गोयली का जाया सारा ई खुरदरा।

गोयली (एक बड़ी छिपकली जैसी जानवर) के बच्चे (सभी) खुरदरी चमड़ी वाले होते हैं। जब एक माँ की सभी संतानें किसी विशेष प्रकार की ऐब वाली होती हैं तब यह व्यंग्य किया जाता है।

९२. गोरी में ई गुण व्है तो ढोलाजी ई क्यूँ रूसे।

स्त्री गुणवती हो तो पति को उससे अप्रसन्न होने की आवश्यकता ही क्यों अनुभव होने लगी।

९३. गंगाजी साँपड़्या अर् साँकुल्या लाया ।

गंगाजी जैसे महत्वपूर्ण तीर्थ का स्नान करके वहाँ से क्या लाये, साँकुल्या अर्थात् तुच्छ कोटि के शंख ।

९४. गंज्या नै नख दीदा तो कुचर २ मरे ।

खुदा गंजे को नाखून नहीं देता है, दे दे तो सर को खुजाल २ कर लोहू-लुहान कर दे ।

९५. गंडक गंडकायाँ कीदाँ बिना माने कईं ।

नीच व्यक्ति नीचता किये बिना नहीं रह सकता ।

९६. गंडकड़ा की पूँछ को बळ बारा बरस भूंगली में राख्याऊँ ई न निकळे ।

कुत्ते की पूँछ को १२ वर्ष तक भूंगली (नली) में रखने पर भी बाहर निकालते ही टेढी हो जाती है । 'रस्सी जल गई किन्तु बल नहीं गया,' की तरह किसी की बुरी प्रकृति विपत्ति पड़ने पर भी नहीं बदलती ।

९७. गंडकड़ी काँधे लेणी पण हटवाड़ो साधणो ।

कुत्ती को सिर पर लादना लेकिन हाट में जाना अर्थात् कठिनाई को स्वीकार करके भी शौक को पूरा करना । हटवाड़े में कुत्ती को कौन खरीदेगा ।

९८ गंडकां ने खीर नीं पचे ।

गडकाँ ने घी न झरे ।

अयोग्य या कुपात्र को अच्छी वस्तु देने से वह व्यर्थ जाती है कुत्ते को घी मुफीद नहीं होता और न खीर ही पचती है ।

९९. गंडकाँ सूँ पानो पड़े जदी परवानो कीं ने बतावे ।

कुत्तों से काम पड़ा तो अपने हक का परवाना किसको बताया जावे । किसी ने सियारों को परवाना देकर कहा कि अब तुम शहर में जा सकते हो तुम्हें कुत्ते कष्ट नहीं पहुँचायेंगे । किन्तु कुत्ते क्या परवाने को मानने लगे, उन्होंने सियारों को फिर से मार भगाया । दुष्ट व्यक्ति किसी प्रकार के प्रमाण पत्र या नीति को नहीं माना करते ।

१००. घट्टी को हातो अर् माटी को माथो तो कूटचोई अरथ को ।

हाथ की चक्की के लकड़ी का हत्था ढीला हो जाता है तो उसे ठोकपीट कर ठीक करना पड़ता है, वैसे ही कर्कशा स्त्री के पति के सिर की दशा होती है ।

१०१. घर का परूसबा वाला अर् अंधारी रात ।

अंधेरी रात में घर के परोसने वाले होते हैं तो खूब खाने में किसी का डर नहीं होता । जैसे, 'नाना को घर अर् माँ परूसबा वाळी ।'

१०२. घर २ टुकड़ा माँगती ऊँठ्यो लेती झेल ।
सीरो भी गरमी करे देख दई का खेल ।।

भाग्य का चमत्कार देखो कि जो भिखारिन घर-घर टुकड़े मांगती और पेट भरने के लिए झूठा तक ग्रहण कर लेतीं थी, उसका भाग्योदय हो जाने से इतने नखरे बढ़ गये हैं कि हलवा खाने को दिया जाता है तो उससे गर्मी लगने की शिकायत होती है ।

१०३. घर भाड़े, हाट भाड़े, साहजी बसे पेले पाड़े ।

दुकान और घर सब किराये के हैं लेकिन सेठजी बने फिरते हैं अर्थात् असलियत में खोखलापन है और दिखाने को मालदारी हैसियत जाहिर करते हैं ।

१०४. घरे कँई भैंस्या कुँवाड़ तोड़ री है ।

जब कोई किसी काम के न होने पर भी घर जाने की जल्दी मचाता है जैसे भैंसे पाल रखी हों जिन्हें जाकर नहीं सम्हालेगा तो वे किवाड़ तोड़ेंगी, तब यह कहावत कही जाती है।

१०५. घाघरी की गावता, पागड़ी की कूँण गावे ओ भाई ।

स्त्री-पक्ष की रिश्तेदारी कायम रखने में लोगों की दिलचस्पी अधिक हुआ करती है इसलिए यदि झगड़ा होता है तो लोग स्त्री का ही पक्ष लेते हैं पुरुष का नहीं ।

१०६. घीरत सुधारे सारणा अर् नानी बू को नाम ।

साग तो घृत अधिक डालने से वैसे ही अच्छी बनती है पर यश साग बनाने वाली छोटी बहू को मिलता है अर्थात् माल तो ससुर का लगता है और नाम बहू का होता है ।

१०७. घी ने बाटी, खाओ मारा माटी ।

निकम्मे पति को भोजन परोसते समय यह बात एक जलती भुनती स्त्री कहती है ।

१०८. घोड़ा पराग्या पर बगां रेगी ।

घोड़े तो पायगों से चले गये लेकिन उनकी बगें (बड़ी मक्खियों जैसी काटने वाली व उछल कर बैठने वाली) रह गईं अर्थात् अवगुणों का आधार तो न रहा पर अवगुणों का प्रभाव रह गया ।

१०९. घोड़ो घास ऊँ यारी करे तो भूखाँ मरे ।

घोड़ा घास से मित्रता करे तो क्या खावे, जैसे वकील या डाक्टर अपने मुवक्किल या मरीज से फीस न लें तो कैसे काम चले ।

११०. चढ़ती जवानी अर् माँझा ढीला ।

युवावस्था आरम्भ होने के साथर ही जिनका शरीर दुर्बल (वृद्ध जैसा) हो जाता है उनके लिए यह व्यंग्य किया जाता है। मांझा खाट की डोरी को कहते हैं।

१११. चत चंगेड़ी, मन मालवे, हियो हाड़ोती जाय।

चित चंगेड़ी (मेवाड़ का एक गांव), मन मालवे और हृदय हाड़ौती जावे अर्थात् मन एकाग्र नहीं हो तो यह व्यंग्य किया जाता है।

११२. चतुर के घर चीपड़ी, मूरख के घर नार।

भगवान अच्छा जोड़ा नहीं मिलाता। मूर्ख के यहाँ स्त्री सुन्दर और चतुर के यहाँ चिपचिपी आँखों वाली स्त्री पाई जाती है।

११३. चलतो चूल्हो देख के झुक पड़ रे बेइमान।
पाँच मिनट की सरमासरमी, आठ पहर आराम।।

जो शर्म छोड़कर (थोड़ा निर्लज्ज होकर भी) भोजन पर आ बैठते हैं उनके लिए यह हास्य प्रचलित है। वे पांच मिनट के लिए बेशर्म तो हो जाते हैं लेकिन दिनभर आराम से रहते हैं।

११४. चीरी आँगळी पे नीं मूते।

जब कोई किसी मुसीबत में थोड़ा सा भी मददगार नहीं होता है और केवल स्वार्थी बना रहता है तब यह कहावत कही जाती है। ग्रामीण लोग, चाकू आदि से चमड़ी छिल जाने पर उस पर पेशाब करने से वह अच्छा हो जाता है, यह समझते हैं और मूत्र छोड़ देते हैं। इतनी सी सहायता करने में कौन सी हानि होती है पर स्वार्थी लोग इतना भी नहीं करते।

११५. चील का मूत ऊँ काम पड़्यो जो आकाश में जा उड़ी।

बेकार और स्वार्थी आदमी से उसको कोई नुकसान न हो ऐसा भी कोई काम पड़ जाता है तो वह काम तो नहीं आता सो नहीं आता बल्कि गायब ही हो जाता है।

११६. चूल्हो परेंडो ई न बतायो।

किसी मतलबी के घर चले जाने पर यही हाल होता है कि खिलाने-पिलाने की औपचारिकता भी नहीं निभाई जाती है।

११७. चेत को मियो अर् चमार की छाछ।

चैत्र मास में (जब फसल काटी जाती है) बरसात का कोई उपयोग नहीं होता वैसे ही चमार की छाछ भी किसी के काम नहीं आती।

११८. चोर के कस्या सींग-पूँछ।

चोर के कौन से सींग या पूँछ होते हैं अर्थात् उसकी कोई विशेष शारीरिक पहचान नहीं होती। जिसकी नीयत बिगड़ जाय, वही चोर हो जाता है।

११९. चौधरी जी बेठा हो कँई, थँने अबको लागतो वू ँतो गुड़ा जा।

ऐबी आदमी से व्यावहारिकता के तौर पर बात करने पर भी वह उल्टा माथे पड़ता है। चौधरी जी को कहा कि बैठे हो क्या, तो वे उल्टे उखड़ कर कहने लगे कि तुझे नहीं भाता हूँ तो गुड़ा जा।

१२०. छाछ घालतां छाती फाटे, दूध घालतां दोरो।
रोटी देता रोज आवे, झूँठ बोलबो सोरो॥

छाछ, दूध या रोटी देने से कृपण व्यक्ति को बड़ा कष्ट होता है, इस कारण उसे झूठ बोलना पड़ता है जो उसके लिए बहुत ही सरल है।

१२१. छाने बुलाया अर् ऊँट पे चढ़ आया।

चुपके आने के लिए कहा तो और भी (पैदल ही नहीं बल्कि) ऊँट पर सवार होकर चले आये। यह ऐबी आदमियों पर व्यंग्य है।

१२२. छापर छाणा बींणती, मचक उठाती हेल।
कलश्या सूँ बोझ्याँ मरे, देख दई का खेल॥

जंगल से कण्डे चुनने के लिए रोती फिरती थी और गोबर से भरी टोकरी जोर लगाकर अकेली स्वयं को उठानी पड़ती थीं, ऐसी दशा थी किन्तु भाग्योदय हो गया तो इतना परिवर्तन हो गया कि वही स्त्री अब पानी से भरी लुटिया उठाने में भी बोझ महसूस करती है।

१२३. चोटा घणा खोटा।

प्राय: नाटे कद के व्यक्तियों के लिए यह व्यंग्योक्ति प्रचलित है।

१२४. जणी ने ब्याई नें अर् सुवारोग कठाऊँ लाई।

बच्छा तो पैदा ही नहीं किया और प्रसूति-रोग कैसे हो गया। कारण के अभाव में कोई शिकायत होने पर यह कहावत कही जाकर हँसी की जाती है।

१२५. जाट के वे जाटणी ने, जणी गाँव में रे णो।
ऊँट बिलाई ले गई तो हाँजी-हाँजी केणो॥

जाट अपनी स्त्री को शिक्षा देता है कि जिस गांव में रहना है उसके मालिक की हर बात पर हाँ में हाँ (चापलूसी) करना चाहिए। वह कहे कि बिल्ली ऊँट को उठा ले गई 'हाँ' कहना चाहिए।

१२६ जाड़ो देख डरणों नीं, पतलो देख लड़णों नीं।

मोटे आदमी की अपेक्षा पतले आदमी में अधिक ताकत होती है अत: मोटे से नहीं डरना चाहिए तो पतले से नहीं लड़ना चाहिए।

१२७. जाणतेर जगत को सालो। आवे चढ्यो अर् जावे पाळो।

झाड़-फूँक (मंत्र) करने वाला व्यक्ति जगत का जैसे साला होता है। लोगों को उससे काम पड़ता है तब तो सवारी लेकर लेने आते हैं लेकिन जाते समय उसकी कोई परवाह नहीं करता और उसको पैदल ही जाना पड़ता है।

१२८. जाणे जो गणे, दूजो हेला सुणे।

जो जानता है वही सुनी हुई आवाज का अर्थ लगा सकता है। दूसरे के लिए तो वह केवल शोरगुल या आवाज मात्र है।

१२९. जाणे टके पग, माँयाँ में आया ए थारा लाडला।

बहुत धीरे २ चलने वाले पर व्यंग्य है मानों वह शादी के समय अग्नि परिक्रमा में व मण्डप में चल रहा हो।

१३०. जात की तो बलाण अर् मूँई थारो भींट्यो नीं खाऊँ।

जाति की तो बलाइन है और कहती है कि मैं तेरा स्पर्श किया हुआ भोजन नहीं करती। अयोग्य व्यक्ति योग्य होने का अभिमान करे तब ऐसा कहा जाता है।

१३१. जाये काट्यो जाटड़ो अर् नार काट्यो नागड़ो।

जाट को तो उसका बेटा भी मार सकता है पर निर्लज्ज व्यक्ति को शेर मारे तभी है अर्थात् निर्लज्ज से सभी डरते हैं।

१३२. जीवता जोगी, मरयां पछे महादेव।

नाथ संप्रदाय के साधू जीवित रहते हैं तब तक तो योगी कहलाते हैं और मरने पर उनकी समाधि पर शिवलिंग की स्थापना कर दी जाती है (मानो वे महादेव हो जाते हैं), इस प्रकार दोनों ही दशाओं में उन्हें लाभ ही होता है।

१३३. जींको जूतो जींको ई माथो।

'मियाँ की जूती मियाँ का सिर!' ऐसी घटना उनके साथ हो जाती है जो कमजोर होते हैं और किसी बलवान पर जूता उठाकर मारने दौड़ते हैं।

१३४. जैसा कूँ तैसा मिला, मिली खीर में खाँड।
थूँ जात की वैश्या तो मूँ जात को भाँड।।

किसी वैश्या ने श्राद्ध पक्ष में ब्राह्मण को भोजन कराना चाहा परन्तु उसके यहाँ भोजन करने के लिए कोई ब्राह्मण तैयार न हुआ। यह बात जानकर एक भाँड ब्राह्मण का भेष धारण कर उसके यहाँ पहुँच गया और उसने उसको भोजन करा दिया। अन्त में वह अपने पुण्य कार्य पर बड़ी प्रसन्न हुई। जाते २ उपर्युक्त बात कहकर भाँड ने अपनी असलियत प्रगट कर दी। जब एक जैसे व्यक्ति एक दूसरे का लाभ उठाना चाहते हैं तब यह कहावत कही जाती है।

१३५. जोड़ी मिली रे जनावराँ परालबध का फेर।

मूर्खों की जोड़ी खूब मिली। भाग्य की बात है।

१३६. जोरचाऊँ ई झालर वे रियो है, छाजळा में आवे न चारणी में मावे।

किसी तरह अपने अवगुण दूर कराने के लिए तैयार नहीं होता, जिद्द करके इतना फूल रहा है कि छाजला (सूप) और चारणी (छलनी) में भी नहीं समाता और जबरदस्ती ही झालर बजती हो, ऐसा शोर मचा रहा है।

१३७. टका का माताजी, तीन पिया की सिन्दूर।

एक पैसे की देवी के तीन पैसे का सिन्दूर चढ़ाना हास्यास्पद काम है। महत्वहीन को फोगट में ही बढ़ावा देने पर यह व्यंग्य किया जाता है।

१३८. टका की घोड़ी, पाँच रुप्या भराई का।

कम कीमत की घोड़ी को उसकी कीमत से भी अधिक खर्चा (उसे गर्भवती कराने के लिए) करना हास्यास्पद है। कम मूल्य के माल पर उसकी कीमत से भी अधिक खर्चा कर देना मूर्खता है, जैसे—'टके की बुढ़िया और मोहर का लहंगा,' और 'सिअनि सुहाव न टाट पटोरे।'

१३९. टका की हाँडी गी पण गंडक की जात पिछाणी।

दो पैसे की हाँडी का नुकसान होने से कम से कम कुत्ते की पहचान तो हो गई। ऐसे ही तनिक नुकसान झेलकर भी दुष्ट व्यक्ति की पहचान हो जाने की अवस्था में यह कहावत कही जाती है।

१४०. टका को तीतर अर् रुप्या को भड़ाको।

दो पैसे के तीतर के शिकार के लिए एक रुपये का भड़ाका खर्च करना, यह भी वैसी ही बात है जो उपर्युक्त कहावत 'टका की घोड़ी अर् पाँच रुप्या भराई का' में है।

१४१. टको दे जींके डाबी आवे।

बिना पैसे के डिबिया जैसी छोटी वस्तु भी नहीं मिल सकती।

१४२. टाटचा की टपरी में टप२ चूवे।
काँख में गोदड़ा, कठे २ सूवे॥

गंजे आदमी के फूस की छतवाली झोंपड़ी हो तो सिर पर तड़ातड़ पानी की बूँदें पड़ती हैं। बगल में बिछौना दबाकर बेचारा इधर-उधर नहीं टपकने वाली जगह ढूँढता रहता है।

१४३. टाट जीं के ठाठ।

ऐसी हास्यमय मान्यता है कि गंजे आदमी बहुधा धनवान होते हैं। 'क्वचित् खल्वाट निर्धनः' ऐसे ही जिसके दाँत आगे निकले हों वह कोई एक ही मूर्ख होता है, 'क्वचिद्दन्तालुको मूर्खः' और 'क्वचित् काणो भवेत् साधुः' क्वचिद्गानवती सती,' भी है।

१४४. टोटा में टोटो, खा राँड गऊँ को रोटो।

खाने पीने और शौक पूरा करने की आदत वाली स्त्री को कहा जा रहा है कि नुकसान में और नुकसान या कर्जे में थोड़ा कर्जा और होना होगा तो

होगा तू तो मौज कर। अधिक कर्जा या टोटा होने पर बेपरवाही की आदत हो जाती है जिस पर व्यंग्य है।

१४५. ठग ठगाँ के पामणा अर् मूसल बाँध पगाँ।
जँवाई जी ने लेग्या ऊँदरा, बाइजी ने खारी बगाँ॥

किसी पुरुष के एक बहुत सुन्दर लड़की थी। ठगों ने उसको ठगना चाहा वे उसके दामाद के मित्र बनकर गये। वहाँ लड़की के पिता ने पूछा कि दामादजी कहाँ हैं तो ठगों ने कहा कि उन्हें चूहे ले गये। पिता ने सोचकर कहा कि बाईजी को भी अस्तबल की बगें (पशुओं को काटने वाला एक मक्खी जैसा जानवर) खा गई इस प्रकार ठगों जैसा ही उत्तर देने के लिए यह कहावत प्रचलित है।

१४६. ठाकर आवे डोढ्याँ, ठुकराणी फेंके लोढ्याँ।

ठकुराइन (पत्नी) नाराज हो जाती है तो ठाकुर (पति) को जनानी ड्यौढी में ही नहीं घुसने देती है, लोढियाँ (गोल २ पत्थर) मार कर भगा देती है।

१४७. डाकण बेटा लेवे के देवे।

डायन का बेटा कुछ लेगा ही, देगा नहीं। शक्तिशाली व्यक्ति दूसरों को डरा धमका कर कुछ ले ही लेते हैं, कभी घाटे में नहीं रहते।

१४८. डील बचे डाँग भारी।

छोटा सा कमजोर आदमी डाँग (बाँस आदि का बड़ा लट्ठ) जैसा कोई बड़ा शास्त्र उठावे तो उसे ठीक तरह से चला नहीं सकता। यह व्यंग्यात्मक अन्योक्ति है।

१४९. डूमाँ आड़ो डोकरी, बळदाँ आड़ी भैंस।

बैलों को अधिक खिलाने पिलाने में भैंस बीच में आती है, उसके कारण बैलों को हानि हो जाती है और ढोली को कुछ देते समय बुढिया मना कर देती है। जब किसी को कुछ प्राप्ति के अवसर पर कोई बीच में ही बाधा देता है तब यह व्यंग्य किया जाता है।

१५०. डेरा तो ऊठग्या अर् गदेड़ा रेग्या।

घोड़े व सवारों के चले जाने पर बचा खुचा घास खाने के लिए 'केम्प' में गदहे फिरते हैं। योग्य व्यक्ति के उठ जाने पर शेष रहने वाले अयोग्यों पर यह व्यंग्य किया जाता है।

१५१. डोकरी मरगी जींको सोच नीं, पण जमराज घर को गेलो जाणग्यो।

बुढिया की मृत्यु हो जाने का गम नहीं (क्योंकि वह तो होने जैसी बात

थी) लेकिन दुःख तो इस बात का है कि यमराज घर का रास्ता जान गया है। अर्थात् कोई छोटी हानि तो सहन हो सकती है लेकिन एक बार सिलसिला जारी होने से बहुत बड़ी हानि की संभावना चिन्ता का विषय है।

१५२. **डोकरी मरी अर् छोकरी त्यार, मनख तीन का तीन।**

घटा-बढी के क्रम से जब स्थिति पूर्ववत रहती है तब यह कहावत कही जाती है। बुढिया मर गई तो लड़की पैदा हो गई इस प्रकार पति पत्नी और डाकरी (जिसके स्थान पर पैदा होने वाली छोकरी) तीन के तीन बने रहे।

१५३. **ढाँढा का भाग को खड़ छोड़्यो।**

नितान्त मूर्ख को पशुतुल्य मान कर व्यंग्य किया गया है कि वह पशु का अहोभाग्य है कि उसने कम से कम घास खाना तो छोड़ रखा है। जैसे संस्कृत की प्रसिद्ध उक्ति है :—

साहित्यसंगीतकलाविहीनः, साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः, तद्भागधेयं परमं पशुनाम्॥

१५४. **ढक पर्दा रख बाजी, गुरु गोरखनाथ सब से राजी।**

कोई बात पर्दे में (गुप्त) रखकर ही (मदारी की करतूत की तरह) बाजी मारी जा सकती है।

१५५. **तळे बागा, उपरे नागा।**

शरीर के निचले भाग पर तो अच्छे कपड़े और ऊपर का बदन नंगा, ऐसी वेशभूषा हास्य का विषय बन जाती है।

१५६ **तवा ऊपरली थारी, खीरा परली मारी।**

जो रोटी सिकने को है वह तो तेरी और सिक गई है वह मेरी अर्थात् जब स्वार्थी व्यक्ति बने बनाये माल को हथियाना चाहते हैं तब यह व्यंग्य किया जाता है।

१५७. **तीन काणाँ ज्याँके ओखद न पाणाँ।**

जहाँ तीन काने इकट्ठे हो जायें वहाँ इतना अपशकुन हो जाता है कि उसका कोई इलाज नहीं होता।

१५८. **तीन पाव चून अर् चित्तौड़ ताँई चोको।**

साधन-सामर्थ्य तो कुछ न हो और लम्बी २ डींग हाँकता हो, ऐसे मिथ्याभिमानी के लिए यह कहावत कही जाती है। तीन पाव आटे को सेकने के लिए लम्बे चौके का स्वाँग रचना (जैसे चित्तौड़ तक), ऐसी ही बात है।

१५९. **तीन पाव काँगणी अर् चित्तौड़ में वास।**

इसका अभिप्राय भी ऊपरवाली कहावत की तरह ही है। तीन पाव कांगणी (छोटे दाने वाला अपौष्टिक धान) पैदा करने वाला चित्तौड़ गढ

जैसे नगर में कैसे रह सकता है। वहाँ तो बड़ी आमदनी होने पर ही निर्वाह हो सकता है।

१६० तूँबो तरे, तूँबो तारे, तूँबो कदी न भूखाँ मारे।

तूँबे के गुण बहुत हैं। पानी पर तैरता है तो नदी पार करा देता हैं, भिक्षावृत्ति में भी काम देता है। खप्पर बनाने के अलावा तम्बूरे (सितार) पर गाकर पेट पाला जा सकता है।

१६१. तेत वाणी, सादाँ का पातरा में अन्न न पाणी।

जैसे साधुओं के व्याख्यान का समर्थन तो तेत वाणी (तत्व वाणी) कह कर किया जाता है, किन्तु जब वे भिक्षा लेने के लिए आते हैं तो उसके पात्र खाली ही रहते हैं। पूरी भिक्षा नहीं दी जाती।

१६२. तेल न तई, राँड बेर गुलगुलाँ ने आई।

साथ मे न तो तेल लाई है और न तई (कढाई) वगैरह। कैसी निकम्मी औरत है जो सीधे गुलगुले लेने चली आई।

१६३ तेली ने माटी कीदो फेर पाणी ऊँ पग धोवे कँई।

तेली को पति बनाया और पानी से पाँव धोना पड़े तो सार ही क्या निकला। फिर तो तेल से ही पाँव क्यों नहीं धोएगी।

१६४. थारा बोल्या अर् पाणी का ओल्या।

तुम्हारी बात पानी के ओल्ये (चाँवल आदि को मट्ठे में मसाले के साथ मिलाया गया खाद्य पदार्थ) जैसी है अर्थात् उसमें कोई तथ्य नहीं है।

१६५. थारा बींछ्या बाजणा अर् मारो ओर सभाव।

तुम्हारे बींछिए (पाँवों में पहनने का घुँघरू वाला जेवर) बजे बिना नहीं रहते इधर मेरा स्वभाव कुछ और ही है अर्थात् जल्दी ही लुभा जाने वाला है। कुछ वैसी ही बात है जैसी—'गाँव का छोरा मसकरा अर् मूँ मनवार की काची,' में है। यह शृंगारिक हास्य है।

१६६ थूँ ई राणी, मूँई राणी, कुँण भरे परेंडे पाणी।

तू भी रानी, मैं भी रानी तो पानी भरने का काम कौन करे? जब घर में सभी अपने बड़प्पन की शेखी मारने लगते हैं और काम से जी चुराते हैं तब यह कहावत कही जाती है।

१६७. थूँई ठाकर, मूँई ठाकर, कूँण पकड़े मशाल।

जहाँ सब अपने २ महत्व के अभिमानी होते हैं और काम बिगड़ता है वहाँ यह व्यंग्य किया जाता है।

१६८. थूँक सूँ कई कान चपेके।

थूँक से कोई वस्तु अधिक समय तक कैसे चिपकी रह सकती है। जहाँ कामचलाऊ कमजोर काम होता है वहाँ यह कहावत कही जाती है।

१६९. थूँ काँ रोवे नाई का, करम फूटा बाई का।

हे नाई के लड़के तू क्यों रोता है, यह तो बाई (लड़की) का ही भाग्य फूटा है जो उसको अच्छा वर नहीं मिला।

१७०. थूँ गधी कुमार की थारे रामऊँ कई काम।

कुम्हार की गधी को बोझ ढोने से मतलब है वह राम का नाम क्या समझे। नीचे दर्जे का काम करने वाले की बुद्धि भी नीचे दर्जे की ही हो जाती है।

१७१. थोड़ो कर ए बऊ नखरो, सुई के लारे डोरो।

बहू को कहा गया है कि तेरी फेशन तो सुई के साथ धागे की तरह है, तुम्हें अपने पति की दशा के अनुसार ही शौक साधना चाहिए।

१७२. दखण गिया तोई लखण वो का वोई।

देशाटन कर आये (देश-विदेश घूम आये) तो क्या हुआ, आदतें तो वैसी को वैसी ही रहीं। उनमें कोई सुधार नहीं हुआ।

१७३. दाजी की खाट के सताईस सांदा।

बुड्ढे आदमी (दादाजी) पुरानी चीज की मरम्मत कराते और उससे अपना काम निकालते रहते हैं।

२७४. दान डायजा बहग्या छाती कूट र् रहग्या।

लड़के के विवाह में मिला माल रास्ते की नदी में बह गया और छाती पीटकर रह जाना पड़ा।

१७५. दाँतला माटी के रोबा की खबर पड़े न हँसबा की।

रोनी सूरत के व्यक्ति के यदि दाँत बाहर निकल रहे हों तो उसके रोने हँसने का पता ही नहीं चलता।

१७६. दाँत वेग्या खोळा जा बैठो अकोळा।

अब कोई पूछ नहीं है, एक तरफ जाकर बैठ जाओ क्योंकि दाँत हिलने लग गये हैं, अर्थात् बुड्ढे हो गये हो।

१७७. दिल्ली में कँई दिवाळ्या कोयने।

दिल्ली में सभी धनवान नहीं होते, अर्थात् निर्धन व्यक्ति सब जगह होते हैं।

१७७. दिल्ली में बारा बरस रिया अर् भाड़ भूँकी।

दिल्ली में बारह वर्ष रहकर भी भाड़ ही झोंकी अर्थात् समृद्धि या बुद्धि नहीं आई।

१७९. दीखत का तो हाथी दीखे, भड़क पाळे भैंस्याँ की।
रोटी खावे मक्की की, अर् बड़ाई करे काँसा की॥

देखने में तो हाथी लगते हैं किन्तु होते भैंसों जैसे भी नहीं, और रोटी तो मक्की की खाते हैं किन्तु अपनी तारीफ लम्बी चौड़ी करते हैं। गरीब होने पर भी जो व्यक्ति शान जमाता है उसके लिए यह कहावत कही जाती है।

१८०. **दीदो ताळो ने कीदो काळो।**

घर पर आकर परेशान करने वालों (मेहमानों) से छुटकारा पाने का सीधा उपाय है कि ताला लगाकर चले जाओ तो कोई झगड़ा बाकी नहीं रहेगा।

१८१. **दूखे तो पेट ऽर् कूटे छाती।**

कसर तो किसी बात की हो और बहाना कुछ और ही बनाए तब यह कहा जाता है।

१८२. **दूबलो जेठ देवराँ बरोबर।**

जेठ होने पर भी जब वह निर्धन या निर्बल होता है तो बहू उसकी तनिक भी शर्म नहीं कर ऐसा बर्ताव करती है जैसे वह जेठ न होकर देवर हो।

१८३ **देवता का हल वे वे क छळ।**

देवता लोग कोई हल नहीं चलाते, उनके चाल चलने से ही दूसरों को हानि पहुँच सकती है (अत: उनको हमेशा राजी रखना चाहिए)।

१८४. **देश की गदेड़ी अर् पूरब की चाल।**

अपने देश का रिवाज छोड़ दूसरे देश का रिवाज अपनाने से हँसी होती है।

१८५. **दो पियाँ की छोरी अर् तेरा पियां को नखरो।**

निकम्मी लड़की (दो पैसे की) नाज और नखरे दिखाती है तब उसका इस प्रकार मूल्यांकन किया जाता है।

१८६. **धरती परे सरकजा, ये छैला पाँव धरेला।**

छैलों पर व्यंग्य है। छैलों के लिए धरती बड़ी कठोर है और उनके पाँव तो बहुत कोमल हैं इसलिए हे धरती तू दूर सरकजा, ये छैले पाँव रखेंगे तो तेरी कठोरता से तकलीफ पायेंगे।

१८७. **धरम में आयो अर् धाड़ा में गयो।**

दान (या मुफ्त) में मिला माल यदि लूट में चला गया तो कोई अफसोस करने जैसी बात नहीं है।

१८८. **धान खावे माटी को अर् गीत गावे बीरा को।**

सुसराल में पलकर पीहर के गुण गाने अर्थात् जिसका खायें उसकी तो नहीं और दूसरे की तारीफ करने की मनोवृति पर व्यंग्य है।

१८९. **धोबी धोबण ऊँ नीं जीते तो गदेड़ाँ का कान आँवले।**

धोबी धोबिन से नहीं जीत सकता है तो गदहे पर अपना गुस्सा निकालता है और उसके कान ऐंठता है। यह अन्योक्ति रूप में व्यंग्य है। जो अपने से अधिक मजबूत व्यक्ति से नहीं जीत सकता है वह निर्बल को अपनी नाराजगी का शिकार बनाता है।

१९०. धोळा गाबा पेर सकराणो खाऊँ अर् धोलो रुपयो नीं लागे तो जाने में जाऊँ।

शौकीन आदमी के पास पैसा नहीं होता है तो उसकी हँसी होती है। ऐसे व्यक्ति पर यह कहावत व्यंग्य रूप में प्रचलित है। सफेद वस्त्र धारण करने और व्यंजन का भोजन करने का शौक तो है लेकिन पास में पैसा नहीं है तो ये शोक कैसे पूरे हों, अगर बरात में शरीक हो सकें तो अच्छा रहे।

१९१. धोया सूँ नीं ऊतरे, घी तेल को कीटो।
ज्याँ को पड़ जावे सभाव, वाँने जरबा सूँ ई पीटो॥

जिस प्रकार घी और तेल के (कपड़े पर) दाग धोने से दूर नहीं होते वैसे ही किसी की कोई आदत जम जाने पर जूतों से पीटने पर भी नहीं सुधरती।

१९२. नकटा देव नसरड़ा पुजारी।

जैसा देवता होता है उसको वैसा ही पुजारी मिलता है अर्थात् एबी और दुर्गुणी का भक्त भी वैसा ही एबी और दुर्गुणी होता है तब यह व्यंग्य किया जाता है।

१९३. नकटी को माँटी जोगी।

नकटी स्त्री के कुरूप होने से उसको वही चाह सकता है जिसको कोई स्त्री नहीं मिलती, ऐसा व्यक्ति भ्रष्ट साधु ही हुआ करता है।

१९४. नकटी सोबड़ा बिना ई रे' ई।

नकटी स्त्री ज्यादा अकड़ दिखायगी तो नाक तो पहले ही गायब है अब चेहरा भी गायब हो जायगा अर्थात् तोड़ दिया जायगा। प्राय: दोषी व्यक्ति जब उल्टा अकड़ते हैं तब यह कहावत कही जाती है।

१९५. नकटो जेठ नसरड़ी बहू आओ जेठजी काणी कऊँ।

जेठ तो नकटा और बहू निर्लज्ज, दोनों के बीच कोई शर्म-संकोच नहीं। तब यह कहावत कही जाती है कि बहू मानो जेठजी को कहानी किस्से कहने (मनोरंजन करने) के लिए बुलावा दे रही है।

१९६. नखे ह्वे नकदुल्या तो नाचो बेटा अब्दुल्या।

पास में पैसे नकद हों (अर्थात् कोई अभाव न हो) तो बेटा अब्दुल्ला खूब नाचो अन्यथा ऐसी मूर्खता मत करो।

१९७. नचीत हुई ए नानकी, नराताळ की चोट।
माटी थारो मरगियो, चारू खूँणा लोट॥

पति की अवज्ञा करते रहने वाली स्त्री पर पति के मर जाने पर एक तीखा व्यंग्य प्रहार इस कहावत में किया गया है—कि अब तो तू निश्चिंत हो गई, कोई तुझे कुछ भी नहीं कहेगा, कहने वाला तो मर ही गया, अब तो चारों कोनों में खूब लोटा कर अर्थात् पूरी आजादी से मनमानी किया कर।

१९८. नाई-नाई, केश कतरा, होइ जो सामे आण प'ड़ी।

जिनकी गिनती और अनुमान नहीं लगाये जा सकते उसकी जानकारी करने की इच्छा हास्यास्पद होती है। नाई ने (यह पूछे जाने पर कि माथे पर बाल कितने हैं) ठीक ही उत्तर दिया कि जो होंगे वे सामने आ गिरेंगे।

१९९. नाक कटा ऽर् अजेपाळ धोके।

गरज पड़ने पर आदमी अपनी इज्जत का खयाल तक छोड़कर विरोधी के समक्ष नम्र बन जाता है।

२००. नागी कई तो न्हावे अर् कई निचोवे।

'कहा निचोवे नग्न जन न्हान सरोवर कीन।' अभाव ग्रस्त व्यक्ति भी जब सम्पन्न व्यक्तियों जैसा दिखावा करने लगता है तब यह व्यंग्य किया जाता है।

२०१. नाचवाने बाँदरी अर् खावा ने फकीर।

मदारी बँदरी को नचाकर उसे तो रूखा-सूखा टुकड़ा खिलाता है और खुद माल उड़ाता है। जब अपने पोषण के लिए दूसरों का शोषण किया जाता है तब इस प्रकार कहा जाता है।

२०२. नाचे जींने नौ टका अर् पादे जींने सौ टका।

अधिक परिश्रम करने वाले को कम मेहनताना देना और कुछ नहीं करने वाले को अधिक पैसा देना उचित नहीं होता।

२०३. नातो अर् गोतो।

नाता (किसी की विवाहिता को पत्नी बनाने की प्रथा) करना पानी में गोता लगाने के समान है। बाद में झगड़ा निपटाने में तो बरबादी होती ही है लेकिन उस स्त्री के टिके रहने की भी कोई 'गारन्टी' नहीं होती।

२०४. नाम लछमी अर् छाणा बींरो।

नाम के विपरीत गुण-दशा होने पर इस कहावत से हँसी की जाती है।

२०५. निकासी में तो घोड़ी चावे अर् फिरताई पाछा आज्यो।

विवाह के मुहूर्त पर सवारी के लिए घोड़ी चाहिए और उस का मालिक कहे कि थोड़ी देर बाद आना, यह कहावत उस परिस्थिति के लिए कही जाती है जब किसी कार्य में क्षणभर का विलम्ब भी अवांछनीय होता है और जिससे काम होता है वह टालाटूली करता है।

२०६. नींची कीदी नाड़, सौ कोस को उजाड़।

निर्लज्ज व्यक्ति दूसरों की नजर से बचने के लिए अपनी निगाह नीची कर लेने (इधर उधर न देखने) का तरीका अपना कर निश्चित हो जाया करते हैं, जैसे आगे पीछे सौ कोस तक वीरान वातावरण हो अर्थात् उन्हें कोई नहीं देख रहा हो। बहुधा गाँव के बाहर ही शौच के लिए खुले में बैठने वालों पर यह कहावत व्यंग्य से कही जाती है।

२०७. नींठ सेठाणी ब्याव कीदो अर् मेल माँडो एक कीदो।

सेठानी ने बड़ी मुश्किल से तो बेटी का ब्याह रचा और उसमें भी ऐसी कंजूसी की कि 'मेल' (विवाह की तिथि के पूर्व का दिन) के दिन का कोई भोजन कर माँडा (खास लग्न) के दिन ही सब विवाह कार्य निपटा दिया।

२०८. नीमड़ा का मूठ्या अर् काँचली का छाल्या।
सींत को चन्दण घस ले रे लाल्या।
थूँई लगा ले अर् थारा घर काँ ने ई बलाल्या।।

चन्दन की जगह नीम की लकड़ी का टुकड़ा और बर्तन के नाम पर नारियल की कांचली या नारेली, हे लाल्या खूब घिस २ कर लगा, तेरे ही नहीं तेरे घर वालों को भी बुलाकर उनके भी लगा। अभिप्राय है कि 'माल मुफ्त और दिल बेरहम।' पहली पंक्ति इस अर्थ में प्रयोग में नहीं ली जाती। उससे तो अर्थ ही बदल जाता है कि सौदा सस्ता है चाहे कोई ऐसा तिलक लगावे।

२०९. नूतो नूत्याराँ के, नूतो चुगलीखोराँ के।

इस कहावत में चुगलखोरों पर व्यंग्य है। जिन्हें न्यौता देना है उनको तो देना ही पर जो चुगलखोर हैं उनको न्यौता देना मत भूल जाना।

२१०. पइसा तो भगतण्याँ के ई व्है जावे।

प्रतिष्ठा पैसे से अधिक महत्वपूर्ण है। पैसा तो वैश्याओं के पास भी हो जाता है।

२११. पकड़ज्ये रे खाँड्या को, नीं पकड़ूँ रे बाण्ड्या को।

जब कोई व्यक्ति हितकारी सीख को न मानकर उल्टा ही चलता है तब यह कहावत कही जाती है। जिस बैल (खण्डित सींग वाले) को पकड़ने के लिए कहा जाता है उसे न पकड़ दुमकट बैल को पकड़ना।

२१२. पगाँ बलती नीं दीखे, डूँगर बलती दीखे।

पहाड़ पर जलती हुई आग (दूसरों की बुराइयाँ) तो नजर आती हैं किन्तु पाँवों के पास जलती हुई आग (खुद की खराबियाँ) नजर नहीं आती।

२१३. पड़ ए बीजळी पे ले पाड़े।

स्वार्थियों की 'फिलॉसॉफी' है, दुख दर्द (बिजली गिरना) पड़ौसी या दूसरे मोहल्ले वालों के यहाँ पैदा होते रहें।

२१४ **पढ ले बेटा फारसी, तले पड़े ज्यो हारसी।**

बेटा फारसी पढ़ ले (शिक्षा ग्रहण कर ले कि) जो नीचे गिरेगा वही हारेगा (अतः कभी नीचे मत गिरना, चाहे भाग भले ही जाना)।

२१५. **परण्या नीं वे वाँ तोई जान में तो गिया वे वाँ।**

शादी भले ही नहीं की है तो भी बरात में गये ही हैं (अर्थात् शादी देखी तो है ही)। अर्थात् देखने से भी अनुभव तो होता ही हैं। जब किसी को निरा अनुभव शून्य बताया जाता है तो ऐसा बताने वाले पर यह व्यंग्य किया जाता है।

२१६. **परण्यो वे तो धोक दे।**

विवाह ही नहीं किया तो आशीर्वाद लेने के लिए प्रणाम क्यों करेगा। विशेषः—यह कहावत छोटे बच्चों के द्वारा विनोद में भी कही जाती है। बालक गिरगिट को देखकर ऐसा कहते हैं और वह बार २ सिर झुकाता है, जैसा कि उसका स्वभाव होता है, तो बालकों को बड़ा मजा आता है।

२१७. **परनाला का कीड़ा अर अंतर की बास।**

'गटर' के कीड़े को इत्र की सुगन्धि नहीं सुहाती। दुष्टों के स्वभाव पर करारा व्यंग्य है।

२१८ **पाबूजी ने पुजारी मले जो थोरी ई थोरी मले।**

पाबूजी को पुजारी चमार ही मिलते हैं अर्थात् जैसे को तैसा ही मिलता है।

२१९. **पांगली डाकण घर कां ने खावे।**

अपंग डायन और तो कहीं जाने से रही, घर के लोगों को ही कष्ट देती है, कष्ट तो देगी ही क्योंकि यह तो उसका स्वभाव है। जब कोई कमजोर किन्तु क्लेशी और दुष्ट व्यक्ति घर ही घर में उत्पात करता है तब ऐसा कहा जाता है।

२२०. **पांगलो (बोदो) भूत बाकळा ऊँ राजी।**

कमजोर भूत (प्रेत) तो बाकलों (उबले हुए चने और मक्की) से ही राजी हो जाता है। जो निर्बल होता है उसे थोड़े से ही संतोष करना पड़ता है।

२२१. **पाँच कोस को आवण जावण, दस कोस की घी घलावण,**
बीस कोस माथा को मोड़, घर जँवाइ गण्डक को ठौड़।

दामाद को सुसराल में दिये जाने वाले मान-सम्मान में विभिन्न दशाओं में जो अन्तर पड़ता है उसके लिए बताया गया है कि वह पाँच कोस दूर होता है तो उसका आना जाना बना ही रहता है इससे अधिक सत्कार नहीं होता, दस कोस दूर है तो कभी-कभी आने से घी दूध से उसका सत्कार होता है,

बीस कोस दूर रहने पर तो वह बहुत ही कम आता है अतः उसे 'माथे का मोड़' समझा जाता है, वह बहुत आदर का पात्र होता है लेकिन इन सब के विपरीत यदि वह घर जवाँई हो गया है (अर्थात् गोद रह गया है) तो उसकी कुत्ते की तरह अवज्ञा होने लगती है।

२२२. **पाँचा में तो गावे नीं, घट्टी आगे मावे नीं।**

औरों के सामने गीत गाने में तो झिझकती है और चक्की पीसते समय जब अकेली होती है तो बहुत गीत गाती है, दिल खोलकर गाती है।

२२३. **पाँवणों ने नाते देवे।**

मेहमान के रूप में आई हुई औरत को किसी के साथ ब्याह देना अर्थात् अनाधिकार कार्य करना, ऐसी स्थिति में यह व्यंग्य किया जाता है।

२२४. **पिसाई ले'ओ कन पीसणों ई राख ले'ओ।**

चक्की वाला पिसाई के पैसे ले सकता है, पीसने के लिए डाला हुआ अनाज नहीं। मजदूरी मजदूरी लेगा या माल पर ही अपना अधिकार जमाने लगेगा ?

२२५. **पेली आई मूँछ तो डाडी करगी कूँच।**
पेली आई डाढ़ी तो मूँछयाँ की जड़ बाढ़ी ।।

मूँछों के बाल एकदम घने और बड़े हो जाते हैं तो डाढ़ी देर से उगती है। परन्तु यदि मूँछों से पहले डाढ़ी बढ़ने लगती है तो मूँछें सदा के लिए छोटी रह जाती हैं।

२२६. **पेली ई बाँदरो, फेर पीदी भाँग।**

बंदर पहले ही स्वभाव से अधिक चंचल होता है और ऊपर से उसको भाँग पिला दी जावे तो उसकी उछल कूद का कोई ठिकाना ही नहीं रहता। यह कहावत ऐसे लोगों के लिए कही जाती है जिनमें पहले निहित खराबी होती है और उसको बढ़ावा देने की परिस्थिति और मिल जाती है। जैसे—'करेला कड़ा, नीम चढ़ा।'

२२७. **पेली पेट पूजा, पछे देव दूजा।**

पहले अपना काम सिद्ध करो (अपना पेट भरो) फिर दूसरों की चिन्ता करो।

२२८. **पेट में आँत नीं अर् मूँडा में दाँत नीं।**

अतिवृद्ध के लिए कहा जाता है कि पेट में आँत नहीं है और मुँह में दाँत नहीं है।

२२९. **पोचो हाथी घर की फौज ने मारे।**

डरपोक और कमजोर हाथी युद्ध में पीछे भागकर अपनी ही फौज को कुचलता है वैसे ही कमजोर व्यक्ति बाहर तो कुछ पराक्रम दिखा नहीं सकता, वह घर के लोगों को ही कष्ट देता है।

२३०. पोठचो गमायाँ पछे पेरो देवे ।

बैल खो जाने के बाद पहरा देना, उन लोगों पर चरितार्थ होने वाली बात है जो पहले से सतर्क रहने का कष्ट तो नहीं उठाते और नुकसान हो जाने के बाद जरूरत से अधिक सावधानी बरतते हैं। जैसे 'When the steed is stolen, it is too late to look the stable.'

२३१. पोर मरी डोकरी, एँस आया आँसू ।

जो किसी काम को यथा-समय न कर बाद में बेमौके करने लगते हैं उन पर व्यंग्य किया गया है कि बुढिया तो गत वर्ष मरी थी और घरवालों को रोना-धोना (एक वर्ष बाद) इस वर्ष सूझा ।

२३२. पोल बारणे निकल्या अर् थें माँके कँई लागो ।

अतिथि या सम्बन्धी घर में है तब तक उसकी आवभगत होती है दरवाजे से बाहर निकला कि उसे एकदम अपरिचित जैसा समझा जाता है ।

२३३. फकीर मरचा अर् तकिया खाली ।

किसी का कोई उत्तराधिकारी उपलब्ध नहीं होता है, तो यह कहावत कही जाती है ।

२३४. फाटी पाग करवरी काढे, टाँडो काढे कोट को ।
बैठ हतायाँ मुजरो झेले, घर में टोटो रोटाँ को ।।

फटी हुई पाग है तो भी उसे अच्छे पट्टीदार तरीके से बाँधकर पहने और हताइयों (गाँवाई चौपाल या चबूतरे) पर बैठकर बड़ी शान शौकत से लोगों के मुजरे सलाम स्वीकार करे अर्थात् रौब रुतबा तो ऐसा बनाये रखे और घर में रोटियों के भी लाले पड़ें तो ऐसी शान-शौकत (पर लोग हँसेगे ही और) यह व्यंग्य करेंगे ही ।

२३५. फाटी पागड़ी लीरक लीरा, खेंचन बाँधे ढाटा ने ।
खोल धोवती तले बिछावे, रोवे रीत का खाटा ने ।।

हालत तो इतनी गरीबी की है कि पगड़ी फटी (लीरे-लीरे हो रही) है जिसको खींचा खींची करके जैसे तैसे बाँध रखा है, बिछौने की जगह पहनने की धोती काम में लेनी पड़ रही है, फिर भी रीति-रिवाज की अकड़ वैसी ही बनाए हुए है जैसी किसी खुशहाली के समय में ठीक लगती थी । ऐसी स्थिति पर व्यंग्य किया गया है ।

२३६. फाटी साड़ी, टाट उघाड़ी, रूँद लियो सब घाटा ने ।
काँणी आँख नजारा मारे, रोवे रीत का खाटा ने ।।

गरीबी और बदसूरती के बावजूद अमीरी हालत वाली के जैसे नाज-नखरे दिखाने की आदत पर व्यंग्य किया गया है । साड़ी इतनी फटी हुई है कि सिर भी ढंक रहा है, सारे घाट को नहाने-धोने के लिए कब्जे में ले रखा

है, आँख भी कानी है तो भी नजारे मार रही है—ऐसे दिखावे पर लोग और भी हँसते हैं।

२३७. फूँफाजी का लाड़ तो भुवाजी ऊँई गया।

भुवा के मर जाने पर उसके पति (अर्थात् फूँफा) का लाड़-प्यार (आदर-सत्कार) उसके सुसराल में कोई नहीं करता।

२३८. फूटा करम फकीर का भरी चिलम ढुल जाय।

भाग्य विपरीत होता है और बनता काम बिगड़ जाता, ऐसी दशा के लिए यह कहावत कही जाती है कि फकीर ने तमाकू पीने के लिए चिलम भरी किन्तु उसकी तकदीर फूटी थी जो लुढक कर बिखर गई।

२३९. बऊ आई थारे, पगाँ लागी मारे।

बहू तो तुम्हारे आई और मेरे पाँव लगी जिसके लिए (रस्म के अनुसार) मुझे खर्चा करना पड़ा। जब लाभ किसी को हो और व्यर्थ ही खर्चा किसी का हो तो यह कहावत कही जाती है।

२४०. बकरा का मूँडा में मतीरो कुँण राखे।

बकरे के मुँह में मतीरा (एक तरबूज जैसा फल) नहीं रखा जा सकता सामर्थ्य की सीमा से अधिक का खटाव नहीं हो सकता। जैसे गोपियों ने योग के सम्बन्ध में उद्धव से कहा—'योग अलि कुष्माण्ड जैसो अजा मुख न समान।'

२४१. बकरा की माँ कतरा थावर टाळे।

बकरे की माँ आखिर कितने शनिवार टाल देगी। अन्त में कभी न कभी तो बकरे को बलिदान में मरना ही होगा। जो विपत्ति प्रायः निश्चित है उससे कोई कब तक बच सकता है। बचने की व्यर्थ चेष्टा करके बहानेबाजी करने वालों पर यह व्यंग्य किया जाता है।

२४२. बड़ो ऊँट आगे हुयो, पाछे हुई कतार।
सबही डूब्या बापड़ा, बड़ा ऊँट की लार॥

जब किसी अगुआ के गुनाहों की सजा उसका अन्धानुसरण करने वाले लोगों को भी भुगतनी पड़ जाती है तब उनकी ऐसा अनुसरण करने की नादानी पर यह व्यंग्य किया जाता है कि बड़े ऊँट के पीछे चलने वाले अन्य ऊँटों को भी उसके साथ ही डूबना पड़ा।

२५३. बल्यो मूँडो वेशवारी दाल।

जिसका मुँह जला हुआ हो उसे बढ़िया मिर्च मसालेदार दाल के स्वाद से वंचित ही रहना पड़ेगा। जब कोई अपनी अपात्रता के उपरान्त भी किसी ऊँची वस्तु या सम्मान की अपेक्षा करता है तब व्यंग्य किया जाता है।

२४४. बहू करे सो करवा दो, बेटा को घर मंडवा दो।

सास को चाहिए कि वह बहू को स्वतन्त्रतापूर्वक रहने दे और उससे कोई न लड़े-झगड़े अन्यथा वह कहीं चली जायगी तो बेटे का घर उजड़ जायगा।

२४५. बाइजी का ब्याव में बळीता को ईज सुकाल है।

जहाँ आवश्यक और महत्वपूर्ण वस्तुओं की तो कमी और उनके मुकाबले अनावश्यक और महत्वहीन वस्तुओं की बहुतायत हो वहाँ हास्य के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है कि बाइजी के विवाह में केवल ईंधन ही की बहुतायत है।

२४६. बाइजी चाल्या राते, करम चाल्या साथे।

अपनी दीनहीन दशा को छुपाने की नीयत से रात में जल्दी उठकर चलने पर भी फूटी तक़दीर से पिण्ड नहीं छूटता, वह तो साथ-साथ ही चलती है।

२४७. बाई का बोर बीस सेर का।

अनिच्छित वस्तु की कोई कीमत नहीं हुआ करती, यह जताने के लिए इस कहावत का व्यंग्य रूप में प्रयोग किया जाता है कि बाई जो बेर लेकर आई है वे बीस सेर के भाव से बिकेंगे।

२४८. बाज बायरा बाटी दूँ, नीं बाजे तो लोड़ी की दूँ।

एक प्रचलित हास्योक्ति है जब हवा बन्द होती है और खूब गर्मी लगती है तब ऐसा कहा करते हैं कि हवा, तू चलेगी तो बाटी खाने को दूँगा नहीं चलेगी तो पत्थर मारूंगा। परन्तु हवा तो भय या लोभ देने से नहीं चलती।

२४९. बाण्यां का बाइजी मांस को सवाद कई जाणे।

'बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद' की तरह व्यंग्य में कहा जाता है कि बनिये की बेटी तो सर्वथा शाकाहारी होती है वह मांस का स्वाद क्या जाने।

२५०. बाप अन्याई, बेटो घसकी, अठीकी कसर अठीने धसगी।

बाप में व्यभिचारी होने का दोष है अन्य कोई दोष नहीं है तो बेटा गप्पी है। एक के अवगुणों में जो कसर थी उसकी पूर्ति दूसरे के दुर्गुणों से हो रही है।

२५१. बाप दादा तो घणां ई घोड़ाँ का असवार हा, पण आज है जो राज है।

माना कि आपके पुरखे बड़े ही सामर्थ्यवान् थे, घोड़ों की सवारी करते और हकूमत करते थे लेकिन अब उसको याद करने से क्या फायदा, अब तो आज जो हकूमत है उसी को मानना पड़ेगा।

२५२. बाप न मारी मींडकी, बेटा तीरंदाज।

जो काम अपने बाप दादों से भी नहीं हो सका हो उसके लिए अपनी सामर्थ्य की डींग हाँकना मूर्खता है, ऐसे लोगों के लिए इस कहावत में व्यंग्य किया गया है।

२५३. बाप बताओ के सराध करो।

दो कठिनाइयों में से एक को स्वीकार करने की विवशता होने पर यह कहावत कही जाती है।

२५४. बाप लंकेसरी अर् माँ कतवावण।

झूंठी शेखी की पोल खोलने के लिए कहावत कही जाती है कि तुम्हारा बाप लंकेश्वर के समान प्रतापी बताते हो लेकिन माँ तो सूत कात कर पेट पालती है।

२५५. बाबाजी ऊँ बाथ्याँ पड़े तो राखोड़ाऊँ डील भरे।

बाबाजी से लड़ने पर लाभ कुछ नहीं होता, उलटा राख से बदन भर जाता है। ओछे या निर्धन व्यक्ति से लड़ाई करने में लाभ कुछ भी नहीं है बल्कि हमें ही हानि होगी।

२५६. बाबाजी कोपीन बासे, तो के बेटा रेवे ई असी जगां।

बाबाजी ने अच्छा उत्तर दिया। लंगोट में दुर्गन्ध होना स्वाभाविक ही है क्योंकि वह ऐसी ही जगह तो रहती है। स्थान और संगति का असर सभी पर पड़ता है।

२५७. बाबाजी को बाबाजी अर् पोठ्यो को पोठ्यो।

बाबाजी (साधु) यदि चमत्कारी न हो तो उससे अवसर पड़ने पर बोझा ढोने का काम तो लिया ही जा सकता है। जैसे जरूरत पड़ने पर रसोइये की गिनती ब्राह्मण में भी हो जाती है और बावरची में भी।

२५८. बाबाजी तापो के बेटा जीव जाणे।

दिखने में अच्छे लगने वाले काम के वास्तविक कष्ट को भुगतने वाला ही जानता है और ऐसे कष्ट को अपने निजी व्यक्ति के सिवाय अन्य किसी के सामने प्रगट भी नहीं किया जा सकता। इस तथ्य के लिए अपने चारों ओर दुपहर में कण्डों की आग सुलगा कर पंचाग्नि तपस्या का दिखावा करने वाले साधु का इस कहावत में उल्लेख किया गया है।

२५९. बामण बाटी, गदेड़ी को माँटी।

और

२६०. बामण बामण देवता, सड़ी गदेड़ी सेवता।

दोनों कहावतों में कर्महीन ब्राह्मणों पर एक ही जैसा व्यंग्य है। वह स्वयं तो बड़ी सफाई से रहता है और भू देव (पृथ्वी पर देवता) माना जाता है पर उसकी स्त्री बिलकुल गदही (गधी) जैसी होती है।

२६१. बावा वाला बावळा, आम्बा वेग्या रावळा।

मूर्ख व्यक्ति ने आम ऐसी जगह बोया कि उसका पेड़ सरकारी हो गया। अपनी असावधानी से अपनी वस्तु दूसरों के कब्जे में चली जाये तो यह कहावत चरितार्थ होती है।

२६२. बाँगड़ ने बाँटा को कई स्वाद ।

बाँझ भैंस या गाय दूध नहीं देती है अतः उसे जौ आदि का दलिया व बिनौले आदि (बाँटा) कोई नहीं खिलाता तो उनका स्वाद वह क्या जाने, जैसे—'बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद ।'

२६३. बाँगरो बळद फले न फलवा दे ।

नपुंसक बैल न तो गाय को स्वयं गर्भवती कब सकता है और न दूसरों को करने देता है उनको मार कर भगा देता है । अयोग्य व्यक्तियों पर इस उपमा से व्यंग्य किया जाता है ।

२६४. बाँदरा ने बींछू कटावणो ।

बंदर बिच्छू का डंक लगने से अधिक उछल कूद करने लग जाता है । पहले से ही उच्छृंखल स्वभाव वाले व्यक्ति को उत्पाती बनाने का कारण पैदा करने पर यह कहावत कही जाती है ।

२६५. बाँदरा ने भांग पावणी ।

पहले ही पागल जैसे व्यक्ति को और भी पागल करने वाली परिस्थिति पैदा करने पर यह कहावत कही जाती है ।

२६६. बाँदरो बूढो वे जावे तोई कुलाम डाली खेलणों नीं भूले ।

बंदर बूढ़ा हो जाने पर भी गुलाँच खाकर सिर के बल उल्टा कूदना नहीं भूलता । इससे उन पर व्यंग्य किया जाता है जो बड़ी उम्र कर लेने पर भी अपने पहले के हथकंडों को नहीं छोड़ते ।

२६७. बिगड़्या ब्याव में नायण फरे ज्यूँ फरे ।

विवाह बिगड़ जाता है तब नाइन व्यर्थ ही इधर उधर दौड़ती फिरती है । वैसी ही दशा बेकार आदमी की हुआ करती है ।

२६८. बिल्ली बजाराँ साबली पण गंडकां आगे थाग नीं ।

बिल्ली बाजार में घूमने के लिए लालायित होती है किन्तु कुत्तों के मारे उसकी दाल नहीं गलती । अपने सुखोपभोग की इच्छाओं को पूरी करने में दुष्टों से सभी को डरना पड़ता है ।

२६९. बींद मरो चावे बींदणी, तोरण को टको त्यार ।

चाहे दूल्हा या दुल्हिन मर जाये, पुरोहित को तो उसकी दक्षिणा (फीस) मिली ही रहेगी । अर्थात् महनताने का हकदार घाटे में नहीं रहा करता ।

२७०. बीरो आयो घर के ओले, आगे बेन खाटो घोळे ।

भाई अपने आने की खबर न पड़े ऐसे तरीके से चुपचाप एकदम बहन के यहाँ आ पहुँचा । आगे देखा तो बहन कढी बनाने के लिए बेसन घोल रही थी ।

२७१. बीरो आयो बीर बसी, मेलग्यो दाँतळी, लेग्यो कसी ।

भाई अच्छा आया । कुछ दे जाने की बजाय उलटा नुकसान पहुँचा गया ।

घास काटने की दाँतली (हसिया) तो रख गया और कसी, खेत खोदने का औजार जो दाँतली से ज्यादा वजनी होता है, उठा ले गया ।

२७२. बोहरा बींदणी लेग्या, फेरा खादा ज्योई नफा में ।

नई शादी करके लाई हुई बहू को दूल्हे से या उसके पिता से कर्जे के एवज में बोहरा (कर्ज देने वाला) ले चला गया । इस पर दूल्हे ने हास्यपूर्ण उत्तर दिया कि स्त्री रहे या न रहे, कम से कम मेरे विवाह करने (फेरे खाने) का नाम तो हो गया, चलो यही लाभ हुआ ।

२७३. बंदर नाचे फकीर पेट भरे ।

अपने स्वार्थ और भरण-पोषण के लिए दूसरों से काम कराने वालों को यह उपमा दी जाती है ।

२७४. भगत घणां, मंडी साँकड़ी ।

व्यक्तियों की संख्या के अनुरूप गुंजाइश न होने पर यह कहावत कहा जाती है ।

२७५. भली राँड भरोसे राख्यो, आखी रात गल्याँ में ताक्यो ।

चोरी चुपके करने जैसे किसी काम में सहयोग करने का आश्वासन देकर जो उसको नहीं निभाते और दूसरों को तकलीफ में डालने हैं, ऐसे लोगों पर व्यंग्य करने के लिए उदाहरण पेश किया गया है एक स्त्री का जो अपने प्रेमी को चुपके से घर में घुस आने का मौका देने के लिए किवाड़ खुले रखने का विश्वास दिलाकर, खुले नहीं रखती और उसको सारी रात गली में ताकते रहना पड़ता है ।

२७६ भाई तो गिया चाकरी, घरे भोजायाँ आकरी ।

भाई नौकरी पर घर से बाहर (दूर गाँव) चला जाता है तब काम भोजाई से पड़ता है जिसका कि स्वभाव तेज है । अत: कमाने वाले (भाई) की अपेक्षा देने वाले (भोजाई) के रुख का ध्यान रखकर उसे अप्रसन्न नहीं करने की सलाह अप्रत्यक्ष व्यंग्य रूप में दी गई है ।

२७७. भाग्यो जावे अर् बगारचो भावे ।

जल्दबाजी और (छोंकी की हुई शाक भाजी) खाने का शौक दोनों नहीं निभ सकते । जल्दबाजी भी करे और लाभ भी पूरा उठाना चाहे, ऐसे मिजाज वाले पर व्यंग्य किया गया है ।

२७८. भागता की भैंस ब्याई अर् खोड़ला राँड ब्याई ।

दोनों ही प्रकार के आदमियों के काम दुखदायी हो जाते हैं । भैंस ब्याहने पर उसकी सम्हाल करने में भगा फिरने वाला जल्दबाज आदमी और स्त्री के बच्चा होता है जिसके लिए पूरा खर्चा न करने वाला व्यक्ति ऐसे सुअवसर के योग्य नहीं होते ।

२७९. भागता चोर की लंगोटी हाथ आई ज्योई कुंण देखी ।

जहाँ कुछ हाथ लगने की आशा नहीं हो वहाँ (भागते हुए चोर की) लंगोटी जैसी तुच्छ वस्तु ही हाथ लग जाये तो क्या बुरा है ।

२८०. भाग भुवा भतीजी आई, बीरा की आँख भुंवारा धाई ।

भतीजी पैदा होने पर भाई की आँखें (उसके विवाह का नया भावी खर्चा माथे आ पड़ने से) ऊँची चढ़ जाती हैं, ऐसी हालत में वह बहन (भुवा) के प्रति रस्म-रिवाज निभाने के लिए खर्चा नहीं कर सकता अतः उसकी अवहेलना करने लगता है ।

२८१. भागवान का पूत ने दीया की लौ सूंई लू लाग जावे ।

अमीरों की नजाकत पर व्यंग्य है कि उनके पुत्र इतने सुकुमार होने का ढोंग करते हैं मानो दीपक की लौ से ही उनको लू लग जाती है ।

२८२. भाजी सुधरे हींगा सूं, लुगाई सुधरे डींगां सूं ।

शाक हींग से और स्त्री डंडे के बल से सुधरती है । जैसे—'ढोल, गँवार, शूद्र, पशु नारी । ये सब ताड़न के अधिकारी ।'

२८३. भाणजा रे भाणजा, मन की मन में जाण जा ।

बिना कुछ कहे ही जब किसी की परिस्थिति से उसके विचार साफ प्रकट हो जाते हैं तब यह कहावत कही जाती है ।

२८४. भायजी तो कुंवारा ई मरग्या अर् बेटो केवे के सूं दो परणूं ।

बाबा तो विवाह कर ही नहीं सके और मरतेदम तक कुँवारे ही रहे किन्तु बेटा कहता है कि मैं दो-दो शादियाँ करूँ । सामर्थ्य से परे मिथ्या महत्वाकांक्षा रखने पर यह व्यंग्य किया जाता है ।

२८५. भालाऊँ बाटचाँ से के ।

खुद को कोई आँच न आने दे और किसी तरह अपना काम बना लेने की सोचे, ऐसे व्यक्तियों की मनोवृत्ति पर यह व्यंग्य किया जाता है ।

२८६. भाँग माँगे भूंगड़ा, गाँजो माँगे घी ।
दारू माँगे जूतियाँ, मन आवे ज्यो पी ।।

भाँग, गाँजा और शराब के नशे के भिन्न-भिन्न प्रभाव को दर्शा कर सचेत किया गया है जिसे सोच समझलो और फिर भी इच्छा हो तो उसे भुगतने के लिए तैयार रहो और तब नशा करो । शराब के नशे में अहँकार इतना बढ़ जाता है कि दूसरे का तिरस्कार कर उसके जूते खाने पड़ते हैं ।

२८७. भाँडा की भैंस सोटाऊँ ईज पावसे ।

भाँड की भैंस पीटने पर ही दूध देती है । दुष्ट सीधी तरह नहीं मानते ।

२८८. भींज्यो पामणो भंगी बरोबर ।

भीगा हुआ महमान अछूत के समान समझा जाता है क्योंकि भीगे हुए कपड़ों के कारण उसे दूर ही खड़ा रहना पड़ता है ।

२८९. भींत को ओलो, जेठ सूँ बोलो ।

जब दीवार की आड़ लेकर स्त्री इतना जोर से बोल लेती है कि जेठ भी उसकी बात सुन ले और लाज बनाये रखना भी मान लिया जाय तब यह व्यंग्य किया जाता है ।

२९०. भुवा तो भर्राटा करे अर् भतीजी माँगे वेष ।

भुवा के स्वयँ के कपड़े फटे चीथड़े हो गये हैं तो वह अपनी भतीजी को कैसे वेष दे सकती है । देने वाला ही जब लेने की ताक में है तो वह दूसरों को कैसे कुछ दे सकता है । जैसे—'चले मियांजी माँगने, बाहर खड़े दरवेश ।'

२९१. भूख में तो भाटा ई भा जावे ।

भूखा व्यक्ति रूखी सूखी और ठंडी बासी का विचार नहीं किया करता, ऐसी स्थिति में यह कहा जाता है ।

२९२. भूख राँड भूँडी, आँख बैठे ऊँडी ।

भूखे आदमी की दशा एकदम बिगड़ती है उसकी आँखें नीचे जाती हैं ।

२९३. भूख राँड भूंडी, राजा सम्हाले कूंड़ी ।

भूख जोरों की लगे और कोई परोसने वाला न हो तो राजा भी रसोई के बर्तन सम्हालने लगता है अर्थात् भूख का प्रभाव अदम्य होता है ।

२९४. भूखाँ ने बोर, तपस्याँ ने काकड़ी ।
थाक्याँ को बिसराम तमाकू बापड़ी ।।

भूखे आदभी को बेर भी मिल जावे और प्यासे को तर ककड़ी (खीरा) मिल जावे तो तसल्ली होती है परन्तु थके हुए श्रमिक या किसान को बेचारी तमाकू ही विश्राम दिलाती है ।

२९५. भूखो भांडाई करे ।

भूखा व्यक्ति भूखों मारने वाले की निन्दा करता है ।

२९६. भोपां की गत भोपो जाणे थूँ कई जाणे भोपी ।

भोपे की चालाकियाँ भोपा ही जान सकता है, वे उसकी स्त्री को भी मालुम नहीं हो सकतीं । चालबाजों की करतूतों को चाल बाज लोग ही भाँप सकते हैं ।

२९७. भोपाजी खीर खावे, देवजी भलो माने ।

स्वामी को राजी करने के लिए सेवक को खुश करने की विधि पर व्यंग्य किया गया है । भोपाजी को खीर खिलाते हैं तो देवरे के देवता प्रसन्न होते हैं ।

२९८. म्हाने घड़ गिया ऽर् बाड़ में बड़ गिया ।

हम लोगों को मारपीट कर भग गए और गन्ने के खेत में छिप गए । गन्ने के खेत में तलाश करना कठिन होता है । "खा पी कर सो जाना और मार-पीट कर भागजाना ।"

२९९. मटक बेवड़ो मदरी चाल, सासू के मारी बू छन्याळ ।

बहू पानी लेने जाती है तो छोटी मटकी ले जाती है और धीरे धीरे चलती हुई आती है । इन लक्षणों के आधार पर सासू उसको छिनाल कहती है क्योंकि देहाती बहुएँ साधारणतया बड़ी मटकी भर कर भी फुर्ती से चलती हैं ।

३००. मन का लाडू फीका काँ ।

'मन मोदक नहिं भूख बुझाई,' तब उनके लिए फीके होने की कल्पना ही क्यों की जाय । कल्पना ही करें और उसमें भी कसर रखें तो ऐसी कल्पना किस काम की ।

३०१. मन का लाडू फोड़्याँ ई जावो ।

मन के (अर्थात् काल्पनिक) लड्डू कभी समाप्त नहीं होंगे तो खूब फोड़ो और खूब खाओ । जहाँ कोरी कल्पना ही कल्पना करके इच्छा पूरी करने का मिथ्याचार होता है वहाँ यह व्यंग्य किया जाता है ।

३०२. मनखी के किये छींको न टूटे ।

बिल्ली के चाहने से छींका टूट जाता हो तो किसी का दूध-दही सुरक्षित नहीं रह सकता । इच्छा मात्र करने से कोई काम नहीं बन जाया करता । 'If wishes were horses, beggars would ride.'

३०३. मनखी को गू लीपबा को न पोतबा को ।

बिल्ली की विष्ठा लीपने-पोतने आदि किसी काम में नहीं आती है, निकम्मे व्यक्ति के लिए यह कहावत कही जाती है ।

३०४. मनखी के घूघरा कतराक दन का ।

बिल्ली के पाँवों में घूघरे अधिक दिन नहीं टिक सकते हैं, क्योंकि उसका तो काम ही ऊपर नीचे जोर से कूदने का है । अयोग्य व्यक्ति को उपयोग के लिए अच्छी वस्तु देने पर ऐसा कहा जाता है ।

३०५. मनखी (डाकण) खावे तोई कालो मूँडो अर् नीं खावे तोई कालो मूँडो ।

बिल्ली (या डायन) चाहे खावे या नहीं खावे उसका काला मुँह (बदनाम) तो होगा ही क्योंकि उसके लक्षण ही ऐसे होते हैं । यह कहावत दुष्ट व्यक्तियों के लिए अन्योक्ति रूप में व्यंग्य है ।

३०६ मनखी ने सपना में भी ऊँदरा ईज दीखे ।

बिल्ली को सपने में भी चूहे ही नजर आते हैं जब पापी और कुकर्मी हर

समय बुरी धुन में ही रहता है तब यह कहावत कही जाती है। "बिल्ली को ख्वाब में भी छिछड़े ही नजर आते हैं"

३०७. मनखी बूढी हो जावे जदी ऊँदरा ई काणक्या मारे।

बिल्ली जब बूढ़ी और अशक्त हो जाती है तब चूहे भी उसकी ओर आँख मारते हैं। बलवान और समर्थ की अशक्तता के समय निर्बल और अयोग्य व्यक्तियों को उसकी अवहेलना करने और उछल कूद मचाने का अच्छा अवसर मिल जाया करता है। "पंगु भए मृगराज आज नखरद के टूटे"

३०८. मनखी लाय में नीं बले।

बिल्ली आग लगने पर भाग जाती है और उसमें कभी नहीं जलती। स्वार्थी और चालाक व्यक्ति कष्टदायी परिस्थिति से बचे रहते हैं तब यह व्यंग्य किया जाता है।

३०९. मन मल्यो दो जणां, झक मारो सौ जणां।

'मियाँ बीबी राजी तो क्या करेगा काजी' की तरह यह कहावत भी उनके लिए प्रचलित है जिनमें घनिष्टता हो जाने पर चाहे कोई कितने ही जला भुना करें और उनमें विच्छेद कराने में लगे रहें लेकिन उन्हें कोई सफलता नहीं मिलती।

३१०. मन मातो गाँव गधो।

मूर्ख और अहंकारी व्यक्ति अपने सिवाय सबको, पूरे के पूरे गाँव को गदहा (मूर्ख) समझता है, तब उसके लिए यह व्यंग्य किया जाता है।

३११. मन में भावे, मूँड हलावे।

मन में पूरी इच्छा होने पर भी कोई किसी वस्तु के लिए बाहरी तौर से (चाहे संकोच वश या और किसी कारण से) इन्कारी करता है तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

३१२. मरदाँ का दिवाळा मरचा पछे ईज निकळे।

जब कोई बहुत अधिक कर्जा कर लेने पर भी नहीं घबराता और अपनी शान शौकत को बनाये रखता है तब उसके लिए यह व्यंग्य किया जाता है कि जो मर्द होते हैं उनके टोटे की खबर तो उनके मरने पर ही लग सकती है।

३१३. मरचा माटी ने केवे के जीवो मारा बाप।

मृत पति को कोई स्त्री बाप कहकर सम्मानित करे तो भी वह जीवित नहीं हो सकता। जब किसी की बहुत ही गरज करने पर भी उनमें वे बातें नहीं आतीं जिनकी अपेक्षा की जाती है तब यह कहावत कह कर ऐसे नाकाम व्यक्ति पर व्यंग्य किया जाता है।

३१४. मरी सास को करूँ बखाण, जो जीवती तो वे ती राँड।

सास मर गयी सो अच्छा हुआ। यदि जीवित रहती तो विधवा होती

अर्थात् उसके संताप से बेचारे ससुर को जीवन से हाथ धोना पड़ता। बहुधा क्लेशप्रिय व्यक्ति को इस व्यंग्य से लक्ष्य किया जाता है।

३१५. मरे तोई मालवा सामो मूँडो।

मरते हुए भी अपना मुँह मालवे की तरफ ही रखता है अर्थात् भारी नुकसान उठाने पर भी जो अपनी हठ को नहीं छोड़ता है उसके लिए यह कहावत कही जाती है। "मालवा" की जगह "मारवाड़" भी कहा जाता है और ऊँट का स्वाभाविक स्थान रेगिस्तान होने से उस पर भी कहावत लागू की जाती है।

३१६. मस रे मस अर् आँख में पड़ग्यो तुस।

झूँठा बहाना बनाने वालों के लिए यह व्यंग्य प्रचलित है। ऐसा करने वाले और कुछ नहीं तो यही कहकर कि मेरी आँख में कचरा पड़ गया, किसी कार्य से टल जाते हैं।

३१७. मसाणां में ग्या थका लाकड़ा पाछा नीं आवे।

बहुधा किसी निमित्त त्यागी हुई किसी वस्तु का कोई पुनः लालच करने लगता है तो यह कहावत उसे समझाने के लिए प्रयोग में लाई जाती है। श्मशान में मुर्दे को जलाने के निमित्त गई हुई लकड़ियाँ यदि बच भी जाती हैं तो वापस नहीं लाई जातीं।

३१८. माटी की मारी अर् गाम ऊँ रूसणो।

घर की लड़ाई का गुस्सा दूसरों पर उतारने वालों को यह कहावत सुनाई जाती है। स्त्री को पीटा तो है उसके पति ने और वह सारे गाँव से नाराज हो रही है।

३१९. माटी बेर एक, बचे पेड़ जो छेक।

दो अभिन्न व्यक्ति (जैसे पति-पत्नी) आपस में लड़ते हैं तो भी एक होते हैं अर्थात् उनकी लड़ाई क्षणिक होती है जिनके बीच में किसी को नहीं पड़ना चाहिए, क्योंकि वे तो पुनः एक हो जाते हैं और बीच में पड़ने वाला व्यर्थ ही दुश्मनी मोल लेता है।

३२०. माथा पे तो बोर ई कोयने अर् केवे के मारो ई नाम सणगारी।

नाम के लायक गुण न होने पर यह व्यंग्य किया जाता है। नाम तो सिणगारी (अर्थात् शृंगारित) और हालत यह, कि माथे पर सधवा होने का न्यूनतम चिह्न, बोर (रकड़ी) भी नहीं है।

३२१. माथा पे तो मोळी अर् केवे के मने ई तम्बू में धँसबा दो।

पूर्व कहावत में नाम और गुण के बेमेल होने पर व्यंग्य था तो इसमें दशा और आकांक्षा सम्बन्धी अनमेल को लक्ष्य किया है। सिर पर तो लकड़ियों

का गट्ठर है और तम्बू में घुसने का सम्मान चाहती है, इसी तरह कहा जाता है कि 'पग तो कादाऊँ भरया अर् केवे के मनेई जाजम पे बेठवा दो ।'

३२२. मारी पड़ोसन लूकी खाय, मारा बती रियो नीं जाय ।

सहानुभूति के दिखावे के लिए जबानी जमाखर्च करने वालों पर व्यंग्य है । मेरी पड़ौसिन लूकी खाती है और मेरे से नहीं रहा जाता (यह नहीं देखा जा सकता) ।

३२३. मारी मनखी मारा ऊँ ई म्याँऊ ।

मेरी पाली हुई बिल्ली मुझ पर ही गुर्राती है । जब अपना कृपा-पात्र ही सर उठाने और मुँहजोरी करने की कोशिश करता है तब यह उपमा दी जाती है ।

३२४. मारे तो कोयने पर मारा साळा के तीन बेटा है ।

अपने कोई औलाद नहीं होने के तथ्य को टालने की कोशिश करने वालों पर व्यंग्य है जो शीघ्र ही अपने साले के पुत्रों का हवाला देते हैं । लेकिन वे उसके वारिस थोड़े ही हो सकते हैं ।

३२५. मारे बोहरो लिहाज को, एक माँडे रोकड़ो अर् दूजो ब्याज को ।
मूँ चेलो उस्ताद को जो मूल दूँ न ब्याज को ।।

बोहरा कर्जदार की हालत का अनुचित लाभ उठाकर और अपनी जान पहचान वाला समझ मूल व ब्याज दोनों अधिक लेता है किन्तु कर्ज लेने वाला ऐसा चालाक होता है कि मूल और ब्याज दोनों ही खा जाता है । अधिक लोभ और अनीति करने वाले को इस कहावत में लक्ष्य किया गया है ।

३२६. माल खाबाने माँजी अर् केरड़ा चराबा ने दाजी ।

परिश्रमी को कष्ट उठाना पड़े और निठल्ला मौज करे, यह कैसे ठीक कहा जा सकता है । माल तो माँजी उड़ावे और बछड़े बछड़ी बाबाजी चराते फिरें ।

३२७. मालिक मेहरबान तो गधा पहलवान ।

मालिक जोरदार हो और उसकी अनुकम्पा पूरी तरह हो तो गदहा (मूर्ख सेवक) भी पहलवान की तरह इतराये फिरता है ।

३२८. माँग्या मिले माल, ज्याँके कई कमी रे लाल ।

जिनको भीख से ही जरूरत की सभी अच्छी वस्तुएँ उपलब्ध हो जाया करती हैं उसको क्या अभाव हो सकता है ?

३२९. माँग खावे जींके मुलक पटे, आदा घाले आदा नटे ।
सगलाई घाले तो मेलेई कठे, सगलाई नटे तो जावेई कठे ।।

माँग खाने का पेशा करने वाले के लिए सारा मुल्क ही जैसे पट्टे में लिखा होता है (अर्थात् यह सब ओर आने जाने को स्वतन्त्र होता है) । कोई उसे भिक्षा दे देते हैं तो कोई २ इन्कार भी कर देते हैं । ठीक भी है, सभी

देने लगें तो वह रक्खे ही कहाँ और सभी मना करने लगे तो बेचारा जावे ही कहाँ।

३३०. माँग ने खाणो ह्वे तो तमाकू पी ने देख लो।

माँग कर खाने का पेशा कैसा होता है यह अनुभव करना हो तो तमाकू पीने की आदत अपना कर देख लो। माचीस बीड़ी आदि नि:संकोच माँगने की आदत हो जायगी।

३३१. माँस बिना सब घास रसोई।

माँसाहारी अपने शौक को पूरा करने पक्ष में ऐसा कहा करते हैं।

३३२. मियाँ जी की कमाई हाँडी में गमाई।

मियाँजी अपने खाने पीने के शौक पर अधिक खर्चा करने के कारण बहुधा निर्धनता के शिकार रहा करते हैं अत: यह व्यंग्य किया जाता है।

३३३. मियाँ जी बाँधी झूँपड़ी अर् मियाँजी मुहल्लादार।

अकड़ रखने वाला जब अकेला अलग ही जाकर बसता है तब उसके लिए ऐसा कहा जाता है।

३३४. मियाँजी २ दूबळा, काँ, के टरड़ घणी।

कोई मारे अकड़ के ही खीझता और दुखी होता है तब यह व्यंग्य किया जाता है।

३३५. मीराँ बाई मेड़ते अर् खाजाजी अजमेर।
लाओ भाई ढाई सेर धान॥

जब लोग स्वार्थ पूर्ति के लिए कहीं का सम्बन्ध कहीं जोड़ देते हैं तब यह कहावत उनको लक्ष्य कर कही जाती है। यह कथन भीख मांगने वालों के लिए प्रचलित है जो मीराँ और ख्वाजा साहब को गीतों की तुक में (दोनों-मजहब वालों को राजी करने के लिए) साथ २ जोड़ लेते हैं और अनाज माँगते हैं।

३३६. मींडकी ने ई जुकाम।

जो जिस परिस्थिति का अभ्यस्त होता है उससे उसको कोई नुकसान नहीं होता। भला मेंढक को भी कहीं जुकाम हुआ करता है ?

३३७. मुलायजा की माँ गोड़ा रगड़े।

अधिक लिहाज करने वाला व्यक्ति अन्त में कष्ट पाता है।

३३८. मे'ली कापड़ो, खा जाई टापरो।

पीहर वाले जब बहन-बेटी के यहाँ किसी विवाह आदि अवसर पर अपनी ओर से तो मामूली उपहार व खर्चा करें किन्तु बहन से अपने परिवार के निमित्त बहुत अधिक खर्चा कराते रहें तो यह व्यंग्य किया जाता है।

३३९. रगड़ रगड़ पग धोवती ऊँचा लेती गाबा।
अस्या घराँ के पाने पड़ी जो लूण मरच का राबा।।

पहले घर की बेटी को साफ सुथरी रहने की फुरसत भी थी और उसकी हैसियत भी थी। पानी या गन्दगी से गुजरते समय कपड़ों को बिलकुल स्वच्छ रखने का ध्यान रख कर साड़ी ऊँची ले लिया करती थी इतनी स्वच्छता बरतती थी। अब ऐसे घर में ब्याह दी गई है जहाँ नमक मिरच का भी टोटा है तब वैसी शौकीनी क्या निभाये।

३४०. रपट पड़्या की हर गंगा।

गंगाजी के किनारे पैर फिसल कर उसमें भीग जाये तो यह मान ले (कि 'हर गंगे' अर्थात्) जैसे श्रद्धा पूर्वक गंगा स्नान किया हो। यह व्यंग्य उन लोगों पर लागू होता है जो अनिच्छा होते हुए भी परिस्थितिवश कोई अच्छा कार्य संपादित कर जाते हैं और तब श्रेय के भागी बनने लगते हैं।

३४१. राज में जाबो अर् गधा पे चढबो बराबर।

सरकारी कचहरी में हाजिर होना उतना ही अपमान सूचक है जितना गदहे पर बैठना।

३४२. रात की राड़ ने परबात का बादल नीं ठेरे।

रात को पति-पत्नी के बीच होने वाला झगड़ा सुबह तक और सुबह को उठने वाला बादल दोपहर तक भी नहीं टिका करते। दोनों स्थायी नहीं होते।

३४३. रात राणी अर् बऊ काणी।

रात को श्रृङ्गार करने पर बहू रानी जैसी लगती है परन्तु उजेले में उसका कानापन स्पष्ट हो जाता है।

३४४. राम ओ राम, राबड़ी पीवाऊँ काम।

अपने काम से मतलब रखना और व्यर्थ के प्रपञ्च में नहीं पड़ना, ऐसा विचार रखने वालों के लिए यह कहावत है।

३४५. रामजी की माया, बने बलाया आया।

इत्तफाक से मौके पर कोई प्रिय व्यक्ति आ पहुँचता है तो उसे भगवान की कृपा ही मानी जाती है।

३४६. रामजी लाख रांड्यो वे'ई तोई सीतला माताऊँ नीं पड़े।

रामजी कितना ही नामर्द होने पर भी सीतला माता से तो बढ़कर ही होगा। बलवान थोड़ा कमजोर होने पर भी कमजोरों की गिनती में नहीं आ सकता।

३४७. रामद्वारा में काँगसी को कई काम।

जहाँ किसी वस्तु की आवश्यकता ही नहीं होती वहाँ वह उपलब्ध ही क्यों होने लगी। रामस्नेही साधु बाल मुँडाये रहते हैं तो रामद्वारे में कंघी

क्यों कर मिलेगी जैसे — 'नग्नक्षपणके देशे रजक: किं करिष्यति ।'

३४८ राम मिलाई जोड़ी, कोई आँधा ने कोई कोड़ी ।

योग्यतानुसार जैसे को तैसा साथी मिलने पर यह व्यंग्य किया जाता है ।

३४९. राम राम जपणां, पराया माल अपणां ।

स्वार्थी लोग संसार को धोखे में डालने के लिए माला धारण करते हैं और लोगों को ठगते फिरते हैं, ऐसे लोगों को इस कहावत में लक्ष्य किया गया है ।

३५०. राबड़ी के ई दाँत आग्या ।

जब कोई अपनी औकात से अधिक इतराता है तब उसको इस व्यंग्य का शिकार बनाया जाता है । राबड़ी छांछ (मट्ठा) में मक्के के दलिये को उबाल कर बनाया गया पेय है जो बहुत सस्ता तो होता है लेकिन इतना हल्का भी होता है कि बिना चबाये ही पच जाता है। उसके दाँत नहीं उग सकते। कमजोर व्यक्ति बल दर्शाता है तब यह कहावत कहते हैं ।

३५१. राबड़ी केवे के मँने ई दाँताऊँ खावो ।

नगण्य और महत्वहीन व्यक्तियों को राबड़ी की उपमा देकर व्यंग्य का लक्ष्य बनाया गया है जब वे हैसियत से अधिक महत्वाकांक्षी और अहंकारी होने लगते हैं ।

३५२. रावळी आई ने देवळी नाटी ।

राजगत के सामते दैवगत की भी नहीं चलती ।

३५३. राँड्या के राखी बाँधी तो काँचली बना ई रा'खी ।

का पुरुष और नपुंसक जैसे व्यक्ति तो भाई बनाने लायक भी नहीं होते । और तो और, उनसे चोली के कपड़े की प्राप्ति की अपेक्षा करना भी व्यर्थ होता है ।

३५४. राँडाँ की राड़ में माट्याँ को घाण ।

औरतों की मुखजबानी बकवास में उनके पति जब पक्षधर होकर लड़ने लगते हैं तो आपस में मारपीट कर बैठते हैं, इस प्रकार औरतों की तो लड़ाई में लड़ाई नहीं होती लेकिन बेचारे पति शारीरिक नुकसान के भागी हो जाते हैं ।

३५५. राँडा तो रंडापो काट ले पण रंडवा काटवा दे जदी है ।

विधवा स्त्रियाँ तो अपना वैधव्य मर्यादा पूर्वक निभा सकती हैं किन्तु क्या करे विधुर लोग जो उनके पीछे लगे रहते हैं । वे उन्हें हर प्रकार से भ्रष्ट करने पर तुले रहते हैं । ऐसी उपमा तब दी जाती है जब दुष्ट प्रकृति के लोग किन्हीं सज्जनों पर हावी रहा करते हैं ।

**३५६. रांड बेर सूत काते, सूत बेंच हटवाड़ो साधे ।
गेला में मलग्यो भाई को सालो, जँई देख ले दाल में
कालो ।।**

विधवा स्त्री ने सूत काता, उसको बेच कर पैसे प्राप्त किये और हाट बाजार में खरीददारी वगैरह पूरी करके जब लौटने लगी तो मार्ग में उसके भाई का साला जब उससे मिला तब ही यह मालुम हुआ कि इतना कष्ट उसने इसी व्यक्ति से मिलने के लिए तो उठाया है ।

३५७. रूपली ए रूपली थूँ मारा माथा ऊपली ।

हे रूपली तू तो मुझ (चाला की में मेरे जैसे धुरंधर व्यक्ति) से भी बहुत बढ़कर है ।

३५८. रूपा थारी रात कोई नर जनम्यो नहीं ।

हे रुपये, तेरी बराबरी कोई नहीं कर सकता । तेने जिस रात्रि में जन्म लिया उसमें किसी और ने नहीं लिया । सब पदार्थ (रुपये की तुलना में गौण होने से) बाद में पैदा हुए ऐसा माना गया है ।

३५९. रूपाली ने रोया तो चीपड़ी ने ई खोया ।

अच्छी वस्तु के लालच में कभी २ जो सामान्य वस्तु उपलब्ध होने वाली होती है उससे भी वंचित हो जाना पड़ता है । सुन्दर स्त्री के लोभ में मिच-मिची आँखों वाली को भी खो देने जैसी स्थिति हो जाती है ।

३६०. रोवती बू पीहर जाई जो कई कोथळा भर ला'ई ।

रोनी (क्लेशिनी) बहू पीहर में भी निरादर ही पाती है । वहाँ से कोई उसे बहुत माल देकर नहीं भेजेगा, वरन् खाली हाथ ही लौटना होगा । अप्रिय प्रकृति वालों को कहीं भी स्नेह सम्मान नहीं मिला करता ।

३६१. लखारा की लोड़ी डूँगर जाय पोडी ।

लखारे की स्त्री को ऊँचे स्थान पर जाकर सोना शोभा नहीं देता । जब कोई अपनी हैसियत और दशा के प्रतिकूल आचरण करता है और बड़ी महत्वाकांक्षा रखने लगता है तब यह कहावत कही जाती है ।

३६२. लड़ाई में कई लाडू बंटे, थूँ दारी, थूँ मालजादी ।

लड़ाई में परस्पर मधुर सम्भाषण की आशा नहीं की जाती है । दो स्त्रियाँ जब आपस में लड़ती हैं तब एक न एक पर्यायवाची शब्द का प्रयोग कर एक दूसरी को छिनाल होने की गाली देती हैं ।

३६३. लागी ई नीं अर् कीड़ाई पड़ग्या ।

चोट लगने के बाद घाव पकने और उसमें कीड़े पड़ने में काफी समय लगता है । यह कहावत किसी बात का असर तुरन्त देखने की आशा रखने वाले व्यक्ति को कही जाती है ।

३६४. लाटचाँ ई नीं धाप्या तो चाँटचा कई धा'पी ।

आधी पाँती लेकर भी तुम्हारा पेट नहीं भरा तो बचे खुचे को चाटने से क्या भरेगा ?

३६५. लाडा के मूँडे लार (लाळ) ई कोयने तो जान्या कई करे ।

दूल्हे में ही जब कोई उमंग नहीं हो तो बराती भला उसका साथ कैसे दें ।

३६६. लाडा के मूँडे लार पड़े तो जान्या कई करे ।

दूल्हे के मुँह से बूढ़े आदमी की तरह लार टपकती है तो उसकी अयोग्यता को बराती कैसे छिपा सकते हैं ।

३६७. लाडी जी माँगे कड़ी तोड़ा, घर में पड़े धान का फोड़ा ।

बहू कड़ी और तोड़े (पाँवों में पहनने के गहने) माँगती है किन्तु घर में तो अनाज भी नहीं है । भारी दरिद्रता के बावजूद शृंगार का शौक होने पर यह व्यंग्य किया जाता है ।

३६८. लाडी जी माँगे खर दावणों, दो राँड के दाँवणों ।

बहू खर दाँवणा (हाथ की अंगुलियों में पहनने का एक गहना) माँगती है, उसको तो दामना (उजाड़ और उछलकूद करने वाले मवेशी की दो टाँगों को आपस में बाँधना) दे दो । बिना सोचे समझे बेमौके अपने शौक की माँग करने पर ऐसा कहा जाता है ।

३६९. लाडी जी माँगे बींदी टोटी, घर में नीं धान की रोटी ।

बहू बिन्दी और टोटियाँ (मस्तक पर लगाने और कानों में पहनने के गहने) माँगती है किन्तु घर में तो धान की रोटी भी उपलब्ध नहीं है । नितान्त दारिद्रय की दशा में भी किसी को सजने-सँवारने का शौक चर्राता है तब यह व्यंग्य किया जाता है ।

३७०. लाद दे, लदावण दे, लादवा वालो लारां दे ।

भेंट या उपहार की वस्तु का लाभ लेते हुए भी जब कोई व्यक्ति उसे लादने-लेजाने की मजदूरी जैसे तुच्छ भार या जिम्मेदारी से बचने का लालच करता है अर्थात् मुफ्त की वस्तु के साथ उससे सम्बन्धित सभी सहूलियत भी मुफ्त में पाना चाहता है, थोड़ा सा भी कष्ट नहीं उठाता, तब यह व्यंग्य किया जाता है ।

३७१. लादो रे तोड़ो, अब कँई चावे, जीण, पागड़ा, अर् घोड़ो ।

रस्सी का टुकड़ा मिल गया (जो कुछ नहीं के बराबर है), अब तो घोड़े की सवारी के लिए क्या चाहिए, सिर्फ एक घोड़ा, उस पर लगाने की काठी और पागड़े आदि । यह मजेदार व्यंग्य तब किया जाता है जब किसी प्रयोजन की पूर्ति के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण साधन-सामग्री तो जुटा ही नहीं पाते

और तुच्छ सी वस्तु के उपलब्ध होने से ही अपना काम बन जाना मान लेने की मूर्खता करते हैं।

३७२. **लाय में घी बळे जो देवतां थाँके अपरण।**

मकान में आग लग जाने पर उसमें रखा हुआ घी जल गया जो है भगवान, आपको समर्पित है। इस तरह विवश होकर भुगते हुए नुकसान को पुण्य या त्याग की गिनती में नहीं लिया जा सकता।

३७३. **लाय लागी ऽर् लूगड़ा मल्या।**

आग लग जाने का लाभ बदमाशी करने वाले उठा लेते हैं। घर वाले अपने सामान को बचाने के लिए बाहर डालते हैं तो ये लोग उसमें से कपड़े वगैरह ले भागते हैं। इस कहावत में दूसरों के नुकसान से अपना लाभ उठाने की ताक में रहने की मनोवृत्ति को लक्ष्य किया गया है।

३७४. **लाल्या को होळी में कई बळे।**

होली के जलने से उसको (लाल्या को) क्या नुकसान होगा, जिसके पास उसमें डालने के लिए कुछ भी नहीं हैं।

३७५. **लाल पराया पामणाँ, लाला के दो चार।**

खुद की स्थिति ठीक न होने से दूसरे के घर भोजन करता है ऐसे आदमी के अपने यहाँ दो चार मेहमान आ धमकते हैं तो उनको वह कैसे खिलापिला सकता है।

३७६. **लाली जाण लूगड़ो कीदो, घोड़ी दे'र पूगतो कीदो।**

बेटी समझ कर किसी को साड़ी वगैरह कपडे दिये तो उसकी सजा यह हुई कि उसको पहुँचाने के लिए सवारी का प्रबन्ध और माथे आ पड़ा।

३७७. **लाली को धन लाली लेखे अर् लाल्यो ऊबो २ देखे।**

लड़की का पैसा लेकर उसी के विवाह में खर्च कर दिया जाता है और उसका दूल्हा अपने ही पैसे को इस तरह उड़ाये जाने का तमाशा खड़ा २ देखता ही रह जाता है। जब अपने ही धन से उसको अपने ही निमित्त खर्च करने के बहाने दूसरे लोग मौज उड़ाते हैं तब इस तरह व्यंग्य किया जाता है।

३७८. **लावणां सूँ टक न टळे।**

किसी खुशी के अवसर पर तकसीम की जाने वाली जो थोड़ी सी मिठाई आती है उससे एक समय के भोजन की गरज पूरी नहीं होती। थोड़ी सी और अनिश्चित आय के आधार पर जीवनयापन संभव नहीं होता।

३७९. **लाँबो टीको मधुरी वाणी, दगाबाज की या ई निशाणी।**

पापी लोग अपने पापों को छिपाने के लिए धर्म का ढोंग किया करते हैं और मीठी बात करते हैं। ऐसे आचरण के लिए यह कहावत प्रचलित है।

३८० लाँबो टीलो लसड़क धार, जीवे जतरे गद्दा चार ।

मोटी धारियों वाला तिलक निकाल कर लोग आजीवन अधर्म करते हैं। धर्म के ढोंग से पापियों के दुष्कर्म आजीवन ढँके रहते हैं ।

३८१. लाँबो हेलो ओछी भीख ।

फकीर भीख के लिए जितनी जोरों से आवाज लगाते हैं, उतनी अधिक मात्रा में उनको भीख नहीं मिला करती ।

३८२. लुगाई की अक्कल खुड़ी में रियाँ करे ।

बहुधा स्त्रियों की बुद्धि तब उपजती है जब काम बिगड़ जाता है ।

३८३. लुवार के खँदावे अर् पींजरा के जावे ।

गलत काम करने वाले की मूर्खता का उदाहरण है ।

३८४. लूँगड़ी बोले अर् स्याल सींग जी हूँकारो भरे ।

लोमड़ी कहानी कहे और सियार उसको तत्परता से सुने । जब कहने और सुनने वाले दोनों ही एक जैसे मूर्ख होते हैं तब यह कहावत कही जाती है । जैसे, 'ऊँटों के विवाह में गधे गीत गावें ।'

३८५. ले ये मोडी काँगसी ।

बिना बालों वाली स्त्री को कंघी देना उसकी हँसी करना ही है ।

३८६. लो कापड़ो, छोड़ो टापरो ।

झगड़ालू बहन-बेटी को विदा करने के लिए यह व्यंग्य प्रचलित है ।

३८७. लोभी का गाम में बगड़चो भूखाँ न मरे ।

जिस गाँव का मालिक लोभी होता है वहाँ का कोई निवासी भ्रष्ट होते हुए भी दुखी नहीं रहता क्योंकि वह कुकर्म करने पर भी लोभी मालिक को धन देकर बच जाता है और मौज उड़ाता है ।

३८८. लंका में महाजन न वेवा ऊँ रावण को राज जातो रियो ।

बनिया अपने स्वार्थ की पूर्ति को प्राथमिकता देता है न कि मानसम्मान के प्रश्न को । लंका में बनिया होता तो रावण को भी वैसी ही (अकड़ त्याग देने की) सीख मिलती और उसका राज्य कायम रह जाता ।

३८९. वऊ उगाड़ी फरे तो के सुसरा जी की कँई फूटी है ।

बहू को पहनने के लिए कपड़े नहीं है, तो श्वसुर की क्या आँखें फूट गई है । श्वसुर को चाहिए कि वह उसका प्रबन्ध करे ।

३९०. ह्वेतो ई मर जातो तो सवा हाथ को ई ज छावतो ।

इसमें निकम्मे और मूर्ख व्यक्ति को कोसा गया है । ऐसा व्यक्ति तो पैदा होते ही मर जाता तो अच्छा था जिससे कुछ नहीं तो कफ़न के कपड़े में ही बचत रहती ।

३९१. वेंडा लागे चाळे ने तेल गाँठ को बाळे ।

मूर्ख लोगों का विनोद लाभदायक नहीं होता । वे उल्टा अपनी गाँठ का तेल जलाते हैं अर्थात् दूसरों के लिए सब कुछ अपना ही खर्च करते हैं ।

३९२. सगां में साढ़ू, भात में लाडू ।

जिस प्रकार भोजन में लड्डू स्वादिष्ट माने जाते हैं उसी प्रकार सम्बन्धियों में साढ़ू (साली का पति) प्यारा लगता है ।

३९३. सरदारां की जान, गतराड़ाँ लूटी जाण ।

राजपूतों की बरात में इतनी शराब पी गई कि चाहे उनको हींजड़े ही लूट लें और उनसे कुछ भी न हो ।

३९४. सहजाँई चूड़ो फूटग्यो, हळका होग्या हाथ ।

पति को न चाहने वाली स्त्री पर व्यंग्य है । आसानी से ही चूड़ा (सुहाग चिह्न स्वरूप पहनी जाने वाली चूड़ियाँ) फूट गया और हाथों का बोझ हलका हो गया अर्थात् बिना ही किसी प्रयत्न के पति मर गया और उसके मनभाती बात हो गई ।

३९५. साई अर् खाई ।

सौदा तय होने के प्रमाण स्वरूप जो पेशगी रकम (साई) ली जाती है उसका यह कायदा है कि खरीददार यदि माल न ले तो वह हजम कर ली जाती है अर्थात् वापस नहीं लौटाई जाती ।

३९६. साठा अर् बुध नाटा ।

वयोवृद्ध व्यक्ति जब किसी प्रकार की नासमझी करते हैं तब यह व्यंग्य किया जाता है कि साठ वर्ष की आयु होने पर बुद्धि साथ नहीं देती ।

३९७. साढू, सगपण, गंडक धन रोटचाँ ऊपर कैर ।
वे ढाबे वे गुड़ पड़े, ये तो अन्त बेर का बेर ।।

साढू (साली का पति) की रिश्तेदारी, कुत्ते और रोटियों पर रखे हुए कैर टिकाऊ नहीं होते । इधर से थामने पर उधर लुढक जाते हैं ।

३९८. सात बीस ऊँदरा खाय ने मन्यु बाई पाट बैठा ।

अनेक चूहे खाकर बिल्ली धर्म सिंहासन पर बैठी है, बहुत अधर्म करने के बाद धर्म का ढोंग करने पर यह कहावत कही जाती है, जैसे—
'नौ सौ चूहे खाय के बिलारी चली हज को ।'

३९९. सादाँ की राड़ में तूँबा को खाटो ।

बाबाजी आपस में लड़ेंगे तो उनके पास कोई शस्त्र तो होता ही नहीं है, तूँबे लेकर लड़ेंगे और तूँबे ही फूटेंगे ।

४००. सादाँ के कई सवाद, अणबिल्योयाँई आवा दो।

बाबाजी छाछ माँगने गये, मालकिन ने कहा कि छाछ नहीं बिलोई है। बाबाजी चालाक थे, बोले—'भाई साधुओं का क्या स्वाद, बिना बिलोये (अर्थात् दही) ही आने दो।'

४०१. साधे तो साध नींतर गदेड़ा को पाद।

साधन (तपस्या आदि) न करने वाला साधु साधु नहीं होता, निकम्मा होता है, ऐसे साधु के लिए करारा व्यंग्य किया गया है।

४०२. साबला बाबा ने बाट की लादी ज्यो पाणी पी-पी ने पेट फोड़चो।

रुपये पैसे या किसी वस्तु के मोहताज व्यक्ति को तनिक सी आशायस मिलती है तो वह उसका दुरुपयोग कर अपना ही नुकसान कर बैठता है। बर्तन के मोहताज बाबाजी को कटोरी मिल गई तो बार-बार पानी पी-पी करके पेट ही फोड़ लिया।

४०३. साळा बिना कई सासरो।

साला न हो तो सुसराल में कोई पूछ नहीं होती और आनन्द नहीं मिलता।

४०४. सासरा को आसरो ने घर की छोड़ी कमाई।
चोपड़ी रोटचाँ में चेतो दी दो सो जोगी वेग्या कमाई॥

दामाद ने घर का काम धंधा छोड़कर सुसराल की घी से चुपड़ी रोटियों में चित्त दिया तो नतीजा यह हुआ कि बाबाजी (योगी) अर्थात् भिखारी हो गया। जब मुफ्त में आराम मिलने लगता है तो अवनति होती है, इसे लक्ष्य कर व्यंग्य किया गया है।

४०५. सासू के तो सारे नीं, माटी मंने मारे नीं।

बहू को सास की परवाह नहीं खाना-पीना काम-काज स्वयं कर लेती है पति उसके साथ मार-पीट नहीं करता। ऐसी हालत में सुसराल में मौज से रहती है।

४०६. सासू जसी बू अर माँ जसी बेटी।

सास के लक्षण बहू में और माता के लक्षण बेटी में आते ही हैं। जब बहू या बेटी में किसी प्रकार के कुलक्षण देखे जाते हैं तब यह कहा जाता है।

४०७. सासू जावे माँटचाँ के, बहू ने देवे सीख।

सास जब स्वयं दुश्चरित्र होते हुए भी बहू के सच्चरित्रता की नसीहत देती है तब यह व्यंग्य किया जाता है। इसे अन्योक्ति रूप में भी बहुधा कहा जाता है।

४०८. सासू जी की कोथली में सीपड़ी नै साँकुल्या ।

सास चालाक थी ! बहू से अपनी सेवा कराने के लिए अपने पास धन होने का आडम्बर करके एक थैली में सीप और साँकुल्ये (शंखनुमा सीपियाँ) भरकर ऐसे हिफाजत से रखती थी जैसे बहुमूल्य ज़ेवर हो। उसके मरने के बाद यह पोल खुली। यह व्यंग्य अन्योक्ति रूप में भी कहा जाता है।

४०९. सासू जी को जींकारो अर् बऊ जी को मरण ।

सासू बहू पर जब कभी नाराज होती है तो उल्टा बड़ा ही आदर सूचक संबोधन करती है, बहू का तो ऐसा करने से जैसे मरण ही हो जाता है। ऐसा अनपेक्षित आदर व्यंग्य रूप से अनादर का द्योतक हो जाता है।

४१०. सासू दारी ने बहू बिचारी ।

सासू चाहे उसकी बहू को तकलीफ दे या न दे लोग उसको बदनाम ही करते हैं कि वह बड़ी क्रूर है और बहू चाहे कैसी ही हो स्वभाव से गरीब ही समझी जाती है।

४११. सासू नणद अऊँळी ई लड़े अर् सू ँली ई लड़े ।

बहू से सासू और ननद की लड़ाई सीधी-उल्टी- हर तरह से हुआ ही करती है।

४१२. साहजी चाल्या रात-रात, करम ललाड़ी साथ-साथ ।

बहुत सावधानी रखने और मेहनत करने पर भी जब भाग्य विपरीत होता है और सफलता नहीं मिलती तब यह कहावत कही जाती है। सेठजी कमाई-धंधे के लिए बहुत जल्दी निकले लेकिन उनकी अस्त हुई तकदीर भी तो साथ ही रही।

४१३. साहजी बहिड़ा रावळे लेग्या,
काम तो मारे गियाँ ईज चा'ली ।

बनिया इतना अस्पष्ट लेखन करता है कि उसको अपनी बहिएं सरकार में जप्त होने का कोई डर नहीं, क्योंकि उसके सिवाय दूसरा उनको नहीं पढ़ सकता।

४१४. साहजी राकोड़ा में काँ लोटे, गरज आपणी ।

बनिया अपने मतलब से राख में भी लोटने लग जाता है। जब कोई अपनी स्वार्थ-पूर्ति के लिए हास्यास्पद और घृणित कार्य भी निःसंकोच करने लगता है तब यह व्यंग्य किया जाता है।

४१५. साँपाँ की राड़ में जीभाँ की लाफा लोल ।

साँपों की आपसी लड़ाई में जीभें निकाल-निकालकर हिलाने से अधिक कुछ भी नुकसान नहीं होता। जब एक जैसे निर्बल व्यक्ति लड़ते हैं और आपस में बकवास करने से अधिक कुछ नहीं करते तब ऐसी लड़ाई को लक्ष्य करके यह व्यंग्य किया जाता है।

४१६ सियाला का गू ऊँ काम पड़े तो मगरे जाई ने हुँगे ।

निकम्मे आदमी किसी के काम आने से बचे रहने की मनोवृत्ति पर यह व्यंग्य किया जाता है ।

४१७. सियाल्या की मौत आवे तो गाम सामो मूँडा करे ।

जब कोई जानबूझ कर खतरा मोल लेता है तब यह कहावत कही जाती है । सियार गाँव के नजदीक चला जाता है तो कुत्ते इकट्ठे होकर उसे मार डालते हैं ।

४१८. सीधी सनेती में सूबा ने त्यार ।

खुद को कुछ नहीं करना पड़े और लाभ मिल जाये, ऐसी मनोवृत्ति वालों के लिए कहा गया है कि चाहे अर्थी (मुर्दे को लिटाने के लिए बनाई हुई खपची) ही हो, बनी बनाई मिल जाये तो ऐसे लोग उस पर सोने के लिए भी तैयार हो जाते हैं ।

४१९. सी ने सट अने लीरी वी ने वट ।

किसी वस्तु को छिन्न-भिन्न कर बेकार कर देने या काम को सर्वथा बिगाड़ देने पर यह कहावत कही जाती है ।

४२०. सीरो खाताँई दाँत घसे तो घसवा दो ।

किसी को लाभ पहुँचाने पर भी यदि वह कष्ट अनुभव करता है तो ऐसे व्यक्ति के लिए यही कहा जाता है कि हलवा खिलाने से भी कोई समझता है कि मेरे दाँत घिसते हैं तो (घिसने दो) उसकी परवाह मत करो ।

४२१. सीळी रोटी बासी दाल, गेली राँड गावे गाळ ।

जँवाई या समधी को भोजन में तो ठंडी रोटी और बासी दाल परोसती है और उसके स्वागत में गीत गाती है, ऐसी बेवकूफ औरत की तरह आचरण करने वाले पर यह व्यंग्य किया जाता है ।

४२२. सीळो वे ने सपूतो वी जे, थूँई मारा जसी वी जे ।

इस कहावत में 'सीळो' का अर्थ ठंडी अर्थात् अचेतन या मृत लगाने से 'राँडी राँड (विधवा) के पगाँ लागे तो के वे के थूँ ई मारा जसी वी जे,' कहावत जैसा अभिप्राय प्रगट होता है । इस प्रकार आशीष के नाम पर दुराशीष जैसी भावना होने पर व्यंग्य किया जाता है ।

४२३. सुवे सवेलां, उठे अबेलां, दो पेरां दळ राँदे ।

आलसी और कर्महीन औरतें जल्दी सोती हैं, देर से उठती हैं और दोपहर हो जाने पर अनाज को अच्छी तरह से पीसने के बजाय जैसे-तैसे दलकर ही पकाने लगती हैं ।

४२४. सेर की लूमड़ी अर् सवा सेर की पूँछ ।

थोड़े धन या बल पर अधिक आडम्बर करने पर ऐसा कहा जाता है । लौमड़ी तो एक सेर वजन की है और उसकी पूँछ सवा सेर की ।

४२५. सोगन अर् सीरणी तो खाबा का ई ज है ।

झूँठे सोगन खाने वाले यह दलील करते हैं कि मिठाई की तरह सौगन्ध खाने की ही चीज है ।

४२६. सोटे लंगोटे सावधान, घर में नीं है पाव धान ।

निर्लज्ज व्यक्ति लाठी लेकर और लंगोट कसकर लड़ने को सदा तैयार रहते हैं किन्तु उनके घर में पाव भर धान भी खाने के लिए नहीं होता ।

४२७. सोढीजी करे सणगार, सवा मण तेल देवे बाळ ।

सोढा क्षत्रियों की बेटियाँ इतनी शृंगार प्रिय होती हैं कि उनके लिए रोशनी करने को दीपक में सवा मन तेल जलकर पूरा हो जाता है तब तक भी उनका शृंगार पूरा नहीं होता ।

३२८. सोळा धोबाँ को पाव है ।

गणित के ज्ञान से सर्वथा अनभिज्ञ व्यक्तियों के लिए सोलह अंजलि भरने पर पाव भर वजन ही होता है । जो सर्वथा मूर्ख और अज्ञानी की तरह हिसाब लगाते हैं उनके लिए ऐसा कहा जाता है ।

४२९. सौ कंज, में सहस में काणा; वाँ सू बढकर एँचाताणाँ ।
एँचाताणे करी पुकार, मैं मानी लँगडा सूँ हार ।।

सौ बदमाशों में कंजी (कजरी) आँख वाला सर्वोपरि और हजारों लोगों में काणा सर्वोपरि बदमाश होता है किन्तु तिरछा देखने वाला उससे भी बढ़-है । बाडा देखने वाले ने यह पुकार की कि मैंने तो लंगड़े से हार मान ली है । अर्थात् लंगड़ा इन सब से बढ़कर शैतान होता है ।

४३०. सौ में सूर, सहस में काणो । सबसूँ खोटो एँचाताणो ।
एँचाताणे करी पुकार, मंजर सूँ रहियो हुँशियार । मंजर-
कंजर कियो मतो, भाई टाटचा सूँ तो बोलोई मतो ।

सौ में अन्धा और हजारों में काणा बदमाश होता है तथा टेढ़ा देखने वाला उससे भी बढ़कर बुरा होता है । उससे मंजरी आँखों वाला और भी अधिक बुरा होता है और मंजरी तथा कंजी आँख वालों से भी गंजे सिर वाला अधिक बुरा होता है ।

४३१. सौ साइपरचा, एक राइपरचो ।

रायपुर के लोग इतने चालाक होते हैं कि शाहपुरा के सौ व्यक्ति मिलकर भी उसकी बराबरी नहीं कर सकते हैं ।

४३२. संत बड़ा स्वारथी, ठंडा टुकड़ा खाय ।
शामो करे स्वार को रात गंडक ले जाय ।।

स्वार्थी संत भोजन को बचाकर कल के लिए छोड़ते हैं किंतु रात उसे कुत्ते खा जाते हैं, उनकी संग्रह वृत्ति पर व्यंग्य किया गया है ।

४३३. हजूरचा बार पाड़ के रावळ्े कई मूँडो कोयने।

ठाकुर साहब के घर में मौत हो जावे तब उनके दरोगे तो चिल्ला-चिल्ला कर जोरों से रोवें और ठाकुर साहब अकड़ के मारे न रोवें तब यह व्यंग्य किया जाता है।

४३४. हड़ूमान जी के तो तेल संदूर ई ज चढे।

पात्रता के अनुसार ही भेंट उपहार दिए जाते हैं। विष्णु भगवान के लिए तो वस्त्र अलंकार आदि चाहिए।

४३५. हताई को बेठणो अर् डूँगां को डूखणो।

परस्पर विरोधी बातें साथ-साथ नहीं निभ सकतीं। हताई गाँव के बीच में बने चबूतरे या चौपाल को कहते हैं। वहाँ बैठने वाला यदि चबूतरे के चुभने की शिकायत करे तो कैसे काम चल सकता है जहाँ कोई गद्दी तकिये तो लाकर बिछाने से रहा।

४३६. हथेळचाँ का ग्रास, बेकुण्ठा का वास।

हथेली में आवे जितना ही सही लेकिन लालच छोड़कर किसी वस्तु को बाँट चूँट कर काम में लेने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

४३७. हळ हाँके खेती करे, बाटा खाय बड़ंग।
माँ राँड बेटा जण्या, जाड़ा जोड़ जड़ंग।।

तू ने कैसे पुत्र पैदा किये जो हल चलाते, खेती करते और बड़ी-बड़ी बाटियें खाते हैं। वे मोटे और बलवान हैं किन्तु साथ ही बड़े अनाड़ी हैं। कुछ किसानों के शरीर के स्थूल और बुद्धि में जड़ होने की हँसी के लिए यह कहावत कही जाती है।

४३८. हाथ्याँ का तोल में गदेड़ा धड़ा में जावे।

बड़े बड़े हैसियतदार आदमियों में छोटे निर्धन या निर्बल या कम बुद्धि-वालों की कोई पूछ नहीं हुआ करती। हाथियों का मोल-तोल होता है तो गदहे तो धड़े में ही रह जाते हैं। तकड़ी के दोनों पलड़े बराबर करने के लिए हलके पलड़े में थोड़ा सा वजन रखने को धड़ा करना कहते हैं।

४३९. हाड़ जरड़, मूँछ मरड़ ज्याँका सोदा सरड़-परड़।

मनुष्य अकड़ता रहे हड्डियों को झुका कर काम न करे (परिश्रम कुछ न करे) तो उससे सारे ही काम नष्ट भ्रष्ट ही हो जाया करते हैं।

४४०. हाथ पोला ने मनख गोला।

खुले हाथ इनाम इकरार देने पर उसके लालच में मनुष्य गुलाम की तरह काम करते हैं।

४४१. हाथां पगां नागी ने वींछ्यां के रग लागी ।

हाथों और पाँवों में तो कुछ भी गहने हैं ही नहीं बींछिया पहनने को उतावली हो रही है। गहनों मे सुहाग चिह्न-चूड़ियाँ आदि की पहले आवश्यकता समझी जाती है।

४४२. हारचो गंडक छियाँ दे ।

हारा हुआ कुत्ता चिल्लाने लगता है। बलवान से हार जाने पर ऐसी कुढन होती है कि मनुष्य अपशब्द बकने लग जाता है।

४४३. हींग न हळद, खारे मारा बळद ।

खिलाने को तो कुछ है ही नहीं और झूँठी मनुहार की जाये तब यह व्यंग्य किया जाता है।

४४४. हींग लगे न फटकड़ी, रंग चोको आ जाय ।

बिना खर्चे या श्रम के अच्छी शोभा हो जाय ऐसी इच्छा रखने पर यह व्यंग्य किया जाता है।

४४५. हींजड़ा की कमाई ने मूँछ मुँडाई में गमाई ।

फैशन का शौक पूरा करने की धुन में ही अपनी सारी कमाई खर्च कर डालने की मूर्खता करने वालों के लिए यह उपमा दी जाती है।

४४६. हूँस कर ने घर की दो, बात रेगी काची ।
ये ले थारा चूँदड़ फेंटचा, मूँ तो जास्यूँ पाछी ।

बड़ी उमंग से नया पति किया लेकिन पसन्द नहीं आया, बात अधूरी ही रह गई और उसके दिये हुए गहने कपड़े फेंक कर वह स्त्री उसको छोड़ गई। जब उमंग के विपरीत कोई सौदा नहीं पटता तब ऐसे कहा जाता है।

४४७. हूँस की नगटी अर् शोभा की तायत ।
शोभा की शोभा अर् घमोड़ा का घमोड़ा ।

गहने पहनने की शौकीन स्त्री को यदि भारी भुजबन्ध पहनाया जाय तो चक्की पीसते समय उसकी छाती में भुजबन्ध की चोटें भी लग जाती हैं अर्थात् मूर्खतावश भारी गहने पहनने के शौकीनों को उसका कष्ट भी झेलना पड़ता है।

४४८. हेलां नाकता २ तो टाट का रूँगच्या घसग्या अर् पूछे के रोड़ी को गेलो कस्यो ।

जिस काम को वर्षों से करते रहे उसके लिए जानबूझ कर अनजान बनने वालों पर यह व्यंग्य किया जाता है। कचरे की टोकरियाँ उठा-उठाकर रोड़ी (कचरे का एकत्र ढेर) में डालते हुए तो सर के बाल ही उड़ गये और पूछती है कि रोड़ी का रास्ता किधर है।

४४९. होम करतां ई हाथ बळे ।

पुण्य कार्य करते हुए भी जब तकलीफ महसूस की जाती है तब यह कहावत कही जाती है ।

४५०. होवे रोकड़ा तो परणे डोकरा ।

रुपये-पैसों से सभी काम आसान हो जाया करते हैं । बुड्ढे भी नई शादी कर सकते हैं ।

४५१. हंग रे छोरा पेट फोड़ूँ ।

जब किसी को उसकी इच्छा या सामर्थ्य के विरुद्ध किसी काम को करने के लिए जलील किया जाता है तब यह कहावत कही जाती है । लड़के को कहा गया है कि तू शौच कर नहीं तो तेरा पेट फोड़ते हैं ।

४५२. हँसणी राँड अर् मुलकण्यो माँटी कदें न भलां कुवावे ।

अधिक हँसने वाली स्त्री और अधिक मुस्कराने वाला पति दोनों ही एक-से अयोग्य और अविश्वसनीय माने जाते हैं । इनकी कोई प्रशंसा नहीं होती ।

——

परिशिष्ट

अलूणी सिला कुण चाटे ।

बिना स्वार्थ के कोई भी व्यक्ति किसी काम को नहीं करता । जानवर भी नमक (सैन्धव) की शिला को ही चाटते हैं स्वादहीन पत्थर को नहीं । "प्रयोजनमनुद्दिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्तते" ।

अलख भरोसे ऊकळे पूरेलो जगदीश ।

अदृश्य (भगवान) के भरोसे जोश में आने वाले की बात भगवान ही रखता है । (ऊकलना=गरम होना)

अधेली न पावली चालो बेटा मावली ।

पास में पैसा न होते हुए यात्रा पर निकलना मूर्खता है चाहे वह यात्रा छोटी ही हो । मावली गाँव उदयपुर से ३० मील ही है ।

आक में आंबो नीपजे ।

कपूत पिता के अथवा अयोग्य परिवार में, योग्य पुत्र उत्पन्न हो जाना विस्मयकारक है जैसे आक के पेड़ में आम लगना ।

आक रो कीड़ो आक सूं राजी ।

आक का पौधा जहरीला होता है परन्तु उसका कीड़ा उसी पौधे में रहना पसन्द करता है । अपना होने के नाते खराब गाँव भी मनुष्य को अच्छा लगता है ।

आधी रोटी घर की भली ।

अधिक कमाई के लिए विदेश जाने की अपेक्षा कम कमाई घर बैठे मिल जावे तो श्रेयस्कर मानी जाती है । जब तक मजबूरी न हो तब तक परदेश में रहना कोई पसन्द नहीं करता ।

आप नी जावे सासरे ने ओरां ने सीख देवे ।

जो स्त्री स्वयं तो ससुराल नहीं जाती और दूसरी लड़की को ससुराल जाने की शिक्षा देती है उसकी बात कौन मानेगा । "भटजी भट्टा खावे औरां ने ज्ञान बतावे ।"

आयो ओसर नी चूकणो ।

आया हुआ मौका नहीं चूकना चाहिए नहीं तो बाद में पछताना पड़ेगा । Strike the iron while it is red hat.

आन्धी नी देखे पूताँरां मूँडा।

अन्धी स्त्री के भाग्य में पुत्र का मुख देखने का सुख कहाँ। भाग्यहीन व्यक्ति अपनी पहुँच के बाहर जो सुख है उसके लिए अपनी निराशा व्यक्त करता है।

आम फळे नीचो लुळे, एरण्ड ऊँचो जाय।

सत्पुरुष समृद्धि में नम्र होता है। नीच मनुष्य थोड़ी समृद्धि (एरण्ड के फल जैसी नगण्य) प्राप्त कर लेने पर भी अभिमान के मारे सिर ऊँचा किये रहता है।

आडे दिन चंगा, तुँवार बार नंगा।

साधारण दिनों में अच्छे वस्त्र और अलंकार पहने और त्यौहार के दिन उसका परित्याग कर नंगा भूखा जैसा प्रतीत होवे तो उसे मूर्ख माना जाता है। अवसर के अनुकूल ही वस्त्राभरण पहनना चाहिए।

आँधाँ का तम्बूरा रामजी बजावे।

अन्धे व्यक्ति अधिकतर वाद्य बजाने में कुशल होते हैं। भगवान एक इन्द्रिय बेकार होने पर दूसरी की शक्ति असाधारण अच्छी कर देता है। "निर्बल के बल राम"।

आगे ई तो बाबाजी गोरा घणां फेर भभूति लगाई है।

काले रंग का साधु भस्मी चुपड़ लेने से और भी अधिक काला और भयानक सा लगने लगता है। शरीर की बनावट के अनुकूल ही उसकी सजावट की जानी चाहिए।

उतरचा ज्यांका बादशा, रोता फिरे वजीर।

जब राजा ही राज्यच्युत हो जाता है तो उसके मंत्री मारे मारे फिरते हैं। जिस व्यक्ति के सहारे दूसरे का महत्व चलता है उस व्यक्ति का पतन होने पर आश्रितों की दुर्दशा होने पर यह कहावत प्रयोग की जाती है।

ऊधो को लेणो न माधो को देणों।

जो व्यक्ति न उधार लेता है न किसी को कर्ज देता है वह सुख की नींद सोता है।

ऊँचा चढ़ चढ़ देखो, घर घर यो ही लेखो।

यदि तटस्थता के साथ ध्यानपूर्वक देखा जाय तो सभी गृहस्थियों के घरों में एकसी ही कठिनाइयाँ और खराबियाँ मिलेंगी।

ऊँटरे ऊँट थारी कूण सी कळ सूधी।

ऊँट की सभी हड्डियां बाँकी टेढ़ी होती हैं। ऊँचे दिखने वाले व्यक्तियों के चरित्र की जाँच की जाय तो उनमें काफी खराबियाँ दिखाई पड़ेंगी।

ऊँटा रे कुणी छपरा छाया।

ऊँट इतना बड़ा और मौसम की कठिनाइयों को सहन करने वाला जानवर है कि उसके रहने के लिए कोई छायादार जगह तैयार नहीं कराता। वह हर मौसम में खुले आकाश के नीचे ही रहता है। इसी प्रकार विशालकाय गरीबों के लायक मकान बनाने के लिए कोई परवाह नहीं करता।

एक बीमार के दो बेद, मरे जीं में हार न फेर।

बीमार का उपचार करने के लिए एक से अधिक वैद्य इकट्ठे हो जायें तो बीमार की मुसीबत ही है। उनकी राय नहीं मिल सकती जिससे हानि बेचारे बीमार की ही होती है।

कपड़ो केवे मारी इज्जत राख, मूं थारी राखूं।

वस्त्र को सम्हालकर रखने से वह प्रतिष्ठित आदमी के पहनने लायक रहता है। यदि वस्त्र को बेपरवाही से रखा जावेगा तो उसे पहनने वाले की शान बिगाड़ेगा।

करो बेटा फाटका, बेंचो घर का वाटका।

यदि जुआ खेलोगे तो हार कर धन का नाश करोगे और घर के बर्तन (वाटका-प्याले) भी बिक जावेंगे।

कांदा का छूंतरा उतारबो ठीक नी है।

प्याज तो सारा ही छिलकों का ही बना हुआ होता है जो एक दूसरे पर ढके (चिपके) ही रहते हैं। यदि प्याज का छिलका उतारना शुरू किया जाय तो थोड़ी देर में ही वह समाप्त हो जायगा और हाथ कुछ नहीं आयेगा। इसी तरह अधिकतर व्यक्ति किसी न किसी दोष के पुतले होते हैं इसलिए किसी को पूरा उघाड़ने का प्रयत्न करना मूर्खता है।

कांजर की कुत्ती कठे जावती ब्यावे।

कंजरों के डेरे उठते ही रहते हैं। इसलिए उनकी कुत्ती किस मुकाम पर बच्चे देगी यह कोई नहीं कह सकता। इसी प्रकार एक जगह पर न टिकने वाले व्यक्ति का कोई भरोसा नहीं कर सकता।

काम तो गण्डकाऊँ पड्यो पट्टो कीने बतावां।

सियारों को जंगल में ही रहना पड़ता है। वे गाँव में आकर रहने लगें तो उल्टे मुसीबत में पड़ जावें। कोई राजा सियारों को गांव में रहने के हकदार बना कर परवाना लिख देवे तो भी उस गाँव के कुत्ते उस परवाने की परवाह न कर सियारों को मार भगावेंगे। इसी प्रकार गाँव के दुष्ट लोग सज्जन पुरुष को गाँव में टिकने नहीं देंगे।

कागलो घणों हुशियार वे तो ई अण्टा पर बैठे।

पक्षियों में कौआ सबसे चालाक होता है फिर भी वह अपने स्वभाव के अनुसार मैला भी खा लेता है।

कांठा में भाटो अर् गीला में गोबर छोड़्यो है।

जो व्यक्ति सर्वभक्षी या रिश्वतखोर होता है उसकी बुराई करने वाला कहता है कि वह सख्त चीजों में पत्थर व गीली वस्तुओं में गोबर ही नहीं खाता है बाकी सब खा जाता है।

काँटाऊँ काँटो निकले।

पैर में कांटा गड़कर अन्दर टूट जाता है तो बंबूल का बड़ा व सख्त काँटा प्रयोग कर उसे निकाला जाता है। "कण्टकेनेव कण्टकम्" Set a thief to catch a thief. एक दुष्ट से निपटने के लिए दूसरे दुष्ट की मदद आवश्यक होती है; परन्तु काम निकलने के बाद उस दुष्ट को भी छोड़ देना चाहिए।

कूड़ा की छायाँ कूड़ा में रेवे।

कुए की दीवारों की छाया कुए में ही पड़ती है। कोई व्यक्ति उस छाया का लाभ नहीं उठा सकता। नीची श्रेणी का व्यक्ति दूसरे को कोई लाभ नहीं पहुँचा सकता।

खाई बड़ी कन माई।

जिसकी खावेंगे उसकी बजावेंगे। माता भी खाने को न देवे तो उसे छोड़कर बच्चे दूसरे व्यक्ति के पास रहना पसन्द करते हैं जो उनको खिलाता रहता है।

खाँदे लीधी कामली अर् ऊठ चल्या भरतार।

पति के पास साथ ले जाने के लिए कोई धन माल तो है नहीं। अप्रसन्न होने पर अपनी कम्बल कन्धे पर रख कर चल देता है। साधनहीन व्यक्ति से नाता जोड़ना खतरनाक होता है। वह उसको अनायास ही तोड़ सकता है।

खोटो रुपयो गमे नी।

खोटा रुपया चोर और जेबकतरे भी नहीं ले जाते। इसी तरह कपूत बेटे या खराब स्त्री के कहीं चले जाने का डर नहीं। उनको कौन रखेगा।

गदेड़ा के कस्या सींगड़ा होवे।

गधे (मूर्ख) की पहचान उसके वचन या कर्म से हो जाती है प्रकृति ने मूर्ख की आकृति में कोई भेद नहीं बनाया है।

गदेड़ा ने मारचां सूं घोड़ो नी बणे।

प्रकृति से ही जो गुण किसी व्यक्ति को प्राप्त नहीं हुए हैं वे उसे ठोक-पीटकर उसमें नहीं भरे जा सकते। जैसे गधे को पीट पीटकर घोड़े के गुण नहीं सिखाये जा सकते।

गहणां धायां रा सिणगार ने भूखां रा आधार।

सोने चाँदी के गहने (ज़ेवर) धनवानों के लिए श्रृङ्गार का काम देते हैं और जब निर्धनता आती है तब उनका मालिक जेवर को बेच कर अथवा

गिरवी रखकर अपना काम चलाता है। सारांश यह है कि जब जेवर बनाने की स्थिति हो तो बनवा लेना चाहिए।

गधेड़ा गेहूँ खारिया।

गधा गेहूँ खावे यह अयोग्य बात है। उसके लिए तो भूसा या मोटे अनाज का दाना ही उपयुक्त है। अयोग्य व्यक्ति को उसकी योग्यता से अधिक लाभ मिलने पर यह कहावत प्रयोग की जाती है।

"सजन पराया बाग में, दाख तोड़ि खर खाय
अपनो कछु बिगरत नहीं, असही सही न जाय"।

गरज सरी न वैद बेरी।

बीमार को वैद्य की गरज बीमारी की उग्रता समाप्त होने पर मिट जाती है। "ध्वस्तातंकचयश्चिकित्सकमपि द्वेष्टि प्रदेयार्थिनम्"।

गया बदरी काया सुदरी।

बद्रीनाथ की यात्रा करने से मनुष्य-शरीर धारण करना सफल हो जाता है। यह यात्रा पहले अत्यन्त कठिन थी। दो महिने पैदल चलना पड़ता था। इसलिए चारों धाम की यात्रा में इसका अधिक महत्व था।

गया दक्खण ने है ज्योही लक्खण।

दक्षिण जाकर आये तो भी लक्खण (खराब आदतें) तो ज्यौं की त्यौं हैं। स्वभाव कठिनाई से ही सुधरता हैं। "स्वभावो दुरतिक्रम:"।

गटका खातो भटका कुण खावे।

मीठा भोजन खाने को मिल रहा है तो अन्यत्र भटकने की क्या आवश्यकता है। (गटका=मिठाई) "मोदका यदि लम्पन्ते न दूरं योजनत्रयम्"।

गद्धो गूण पछाणे।

"गूण" गधे को लादने के दोनों तरफ लटकते हुए बडे थैले को कहते हैं। हमेशा जिस गूण को गधे पर रखकर भरी जाती है उसे ऊपर रखते ही गधा चलने लगता है। गलत गूण रखी जाने पर या तो उसे हिलाकर गिराने की कोशीश करता है या खड़ा रह जाता है। जैसे अन्धेरे में अपना जूता पैर पहचान लेता है।

गाम करे ज्यूं गेली करे।

गाँव वाले जो काम करते हैं उसी को गेहली (मूर्ख स्त्री) बिना सोचे समझे करने लग जाती है। काम अपनी बुद्धि से करना चाहिए न कि नकल करके।

गुरू बिना कस्यो ज्ञान।

बिना गुरु के ज्ञान नहीं हो सकता। "गुरु बिन ज्ञान न होय, ज्ञान बिन हिरदो सूनो"।

गोद को छोरो, नाता की लुगाई और रंदा का घर रो कई भरोसो।

गोद (दत्तक) लिए हुए पुत्र का, नाते लाई हुई स्त्री का एवं मिट्टी के ढेलों को जोड़ कर बनाये हुए घर का भरोसा नहीं करना चाहिए। गोद का पुत्र अच्छा निकले या बुरा यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। नाता पुनर्विवाह को कहते हैं जिन जातियों में विधवा के पुनर्विवाह का रिवाज है उनमें स्त्री कभी कभी जीवित पति को छोड़कर भी दूसरे के घर में जा बैठती है। ऐसी स्त्री का और कच्चे घर का बने रहना निश्चित नहीं माना जाता।

घड़ा सरीखी ठीकरी ने मां सरीखी डीकरी।

जैसा मिट्टी का घड़ा होता है वैसा उसका टूटा हुआ टुकड़ा होता है। जैसी माँ होती है वैसी ही उसकी बेटी (डीकरी) होती है। "Chips of the same block."

घर घर ढोलकी ने घर घर तान, वणी रो नाम हिन्दुस्तान।

भारत में फूट बहुत पड़ती है। "अपनी अपनी ढापुली अपनो अपनो राग, अलापैं जोर से"। "शंखात् दध्मुः पृथक् पृथक्"।

घणां मियां कण हाण, घणां पूतां कुल हाण।

अधिक वृष्टि से अनाज कम पैदा होता है (मियां=मेहाँ) अधिक सन्तान होने से कुल को क्षति होती है। जायदाद के भी कई टुकड़े हो जाते हैं और कई लड़कों में से कुछ तो कपूत निकलते ही हैं जो सर्वनाश कर देते हैं।

घाव बैरी रो ही सरावणो।

शत्रु भी शस्त्र अच्छी तरह चलाकर हमें घायल कर देता है तो उसकी वीरता और रण कौशल की तारीफ करना चाहिए। जैसे बादशाह अकबर को महाराणा प्रताप की मृत्यु पर बहुत शोक हुआ था। "शत्रोरपि गुणा वाच्याः दोषा वाच्याः गुरोरपि"।

चाकर ने तो ठाकर कहे चोर ने कहे शाह।
जगतण ने तो भगतण कहे दुनियां की उल्टी राह॥

दुनियां की उल्टी रीति है जो जागीरदार राजा की चाकरी करता है उसे तो ठाकुर कहा जाता है और जो बनिया ग्राहकों को तोल और मोल में ठग लेता है उसे "शाहजी" कहा जाता है इसी तरह वेश्या को "भगतण" कहा जाता है जबकि उसे भक्ति से कोई सरोकार नहीं।

चोर ने केवे घुस, कुत्ता ने केवे भुस।

जो व्यक्ति दो विरोधी पार्टियों से मिला रहता है उसकी करतूत पर व्यंग्य है। चोर को चोरी करने के लिए प्रोत्साहित कर कुत्ते को भौंकने के लिए संकेत करता है।

छारणी (छलनी) सुई ने हंसे।

स्वयं में बहुत अवगुण होते हुए भी मनुष्यों में कम अवगुण वालों की बुराई करने की आदत होती है उस पर व्यंग्य है।

छुरी छुड़ी छतरी ने छल्लो सदा राखिये पास।

ये चारों "छ" से प्रारम्भ होने वाले पदार्थ बहुत काम के होते हैं इनको हमेशा पास ही रखना चाहिए। छुरी बड़ा चाकू होता है जो शस्त्र का भी काम दे सकता है। छड़ी अर्थात् डंडे में कई गुण है "साँप छछेकरण जल थगरण बैरी पाड़ण दन्त"। छतरी धूप और बरसात से बचाती है और छोटी छड़ी का काम भी दे देती है। छल्ला (अंगूठी) पास में पैसा न रहे तो काम देता है और वैसे भी आभूषण है।

छैल छबीला बागां में खल का टुकड़ा पागां में।

छैले बनकर बगीचे में घूम रहे हैं परन्तु खाने को कोई अच्छी वस्तु नहीं मिलती है पगड़ी में खल (मवेशी को खिलाने लायक) छिपा कर ले जा रहे हैं निर्धन व्यक्ति को कोई धन्धा कमा खाने का करना चाहिए न कि व्यर्थ ही अन्य साथियों के साथ घूमते फिरना।

छैला छाना नी रहे मैला कपड़ाँ माँय।

शौकीन आदमी के कपड़े मैले हो जावें तो भी उनको पहनने के ढंग से व अपने हाव-भाव से शौकीन होना प्रगट कर ही देता है। "घूँघट ओट करोर करो पर चंचल नैन छिपें न छिपाए।"

छोडा पाड़ण कूँट उखाड़ण, थप थपिया और नाई।
याने चेला मत करो गुरु जी, ये चारों ही दुःखदाई॥

खाती, घास खोदने वाले, कुम्हार और नाई को चेला नहीं बनाना चाहिये। ये गुरु के लिये भी अन्त में दुःखदाई सिद्ध होते हैं।

जस्या भुवाजी उस्या ही फूफाजी।

भुवा (पिता की बहन) से प्रेम और सहानुभूति नहीं मिले तो उसके पति (फूफा) से मिलने की आशा नहीं करना चाहिये। पति और पत्नी की आदतें बहुधा एक सी हो जाती हैं। पति कंजूस हो तो पत्नी को भी खर्चा नहीं करने देगा और धीरे धीरे वह भी वैसी ही हो जायगी।

जात रो कारण नी रात रो कारण है।

मनुष्य के गुण इस बात पर निर्भर नहीं होते कि वह किस जाति में जन्म लिया हुआ है बल्कि किन ग्रह नक्षत्रों में जन्मा हुआ है। जाति ठीक नहीं होने पर भी मनुष्य का भाग्य और स्वभाव आदि अच्छे हो सकते हैं।

जीं के घरे काली वाँके सदा दिवाली।

जिसके घर में भैंस (काली) दूध देती है उसके सदा ही दिवाली अर्थात् सुख समृद्धि रहती है। अच्छी भैंस पालने के लिये यह कहावत उपदेशप्रद है।

जौं की खावे भाकरी वाँका गावे गीत ।

जिसकी दी हुई रोटी मनुष्य खायगा उसी की बड़ाई बखानता रहेगा । इसके विपरीत करने से हँसी का पात्र बनेगा । जैसे "धान खावे माँटी को अर गीत गावे बीरा का ।"

टूटी के बूटी नी लागे ।

ऊपर से टूटी अर्थात् आयु समाप्त होने का योग होने पर कोई दवा (बूटी) असर नहीं करती ।

ठण्डो धान, तुरत को घी, मीठा बोली नार दरवाजे रमे बाल ।

सौभाग्यशाली व्यक्ति को ही ये चारों उपलब्ध होते हैं गत वर्षों का रखा हुआ अन्न (विशेष कर चावल) ताजा घी, मृदुभाषिणी पत्नी और छोटे छोटे बालक (जो घर के अन्दर या दरवाजे के बाहर ही रमते अर्थात् खेलते हैं) ।

ठाकर रो नशो चाकर ने आवे ।

ठाकुर तो अपने बड़प्पन को पचा लेता है और अभिमानपूर्ण व्यवहार नहीं करता परन्तु उसका चाकर (स्थायी पुश्तैनी नौकर) बड़प्पन का नशा रखता है । "खूँटे के बल बछड़ा नाचे ।"

डाल को चूक्यो बाँदरो अर् असाढी को चूक्यो करसो कठा कोई न रे वे ।

बन्दर एक डाली से कूद कर पेड़ की दूसरी डाली को पकड़ने में चूक जाता है तो नीचे गिर जाता है और हड्डियें टूट जाती है । इसी तरह अषाढ़ महीने में समय पर खेती बोने में यदि किसान चूक जाता है तो नाश को प्राप्त होता है । .

तमाकू लारे गोळ बळे ।

खराब संगति करने से मनुष्य का नाश होता है जैसे हुक्के में रख कर पीने की तमाखू के साथ जो गुड़ कूट कर मिलाया जाता है वह भी तमाखू के साथ जला दिया जाता है ।

दाँताकची सूं लछमी जावे, संप सोभागऊँ लछमी आवे ।

आपस में लड़ते रहने (दाँताकच्ची करने) से लक्ष्मी का नाश होता है और एकता (संप) से सौभाग्य प्राप्त होकर लक्ष्मी मिलती है ।

देखे न भुसे ।

जहाँ लड़ाई की सम्भावना हो वहाँ नहीं रहना चाहिये ताके लड़ने वाले के नजर न आने से उसके क्रुद्ध होने का अवसर ही न आवे । कुत्ते एक दूसरे को देखते ही भौंकते हैं । "श्वान अपर को देखिके करहिं परस्पर क्रोध ।"

नकटा बूँच्या सब सूं ऊँचा ।

बेशर्म आदमी (जिसके नाक कान बदमाश होने से काट लिये गये हैं) वह सबसे ऊँचा होने की कोशीश करता है। "निर्लज्जः को न पण्डितः"।

न बोल्यां में नो गुण।

चुप रहने में अनेक गुण है। बोलने में एक गुण हो तो न बोलने में नौ गुण हैं। "मौनं सर्वार्थसाधकम्"।

नागा की डोढ पाँती।

निर्लज्ज आदमी अपने वाजिब हिस्से से ड्यौढ़ा माल लेता है क्योंकि उसे लड़ने में और झूठ बोलने में कोई शर्म नहीं आती इसलिये भले आदमी अपना हक भी उसके लिये छोड़ देते हैं।

नानी बाई लाड को कूँचो, गोडा सूं घाघरो ऊँचो।

लड़की को अधिक प्यार से रखने से वह साधारण लज्जा की भी परवाह नहीं करती। ऊँचा घाघरा पहनती है जिससे उसके अंग ठीक तरह नहीं ढक सकते। (कूँचा=पुंज)

पढ़्या पूत कुम्हार का सोला दूणा आठ।

कुम्हार पढ़ने में बहुत कमजोर होते हैं, विशेषकर गणित में। यदि उनको सोलह के दुगुने कितने होते हैं यह पूछा जाय तो आठ बतावेंगे।

पटेल जी, गाड़ी दो, के गाड़ी के तो पाड़ी बँधी है।

जाट से उसकी गाड़ी किसी ने माँगी परन्तु वह देना नहीं चाहता था इसलिए उसने यह कहकर इन्कार कर दिया कि गाड़ी के तो पाड़ी (भैंस की बछिया) बँधी है अर्थात् गाड़ी इस प्रकार मेरे ही काम आ रही है। यद्यपि पाड़ी को गाड़ी से खोलकर और किसी जगह बाँधी जा सकती थी। अंग्रेजी में ऐसे उत्तर को lame excuse कहते हैं।

पटेल जी, घोड़ी तू गी, तो बियाबो ही सीखी।

जाट से कहा गया कि तुम्हारी घोड़ी के गर्भपात हो गया है तो उसने कहा कोई हानि नहीं है आयन्दा पूरे दिन निकाल कर बच्चा देगी उसके लिए अभी कुछ अभ्यास ही हो गया। To make the best of a bad bargain.

पूछता नर सदा पण्डित।

जो व्यक्ति अपने ज्ञान का झूठा अभिमान न रखकर दूसरों से आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए पूछता रहता है वह बहुत योग्य हो जाता है।

पैसो तो रुपया न खावे, चोर ने खावे खाँसी।
आलस नींद करसा ने खावे, तिरिया ने खावे हाँसी॥

पैसा पैसा खर्च करते हुए रुपया जल्दी ही खतम हो जाता है। इसलिए पैसे खर्च करने में बचत करना चाहिए Take care of pence and pounds will take care of themselves.) चोरी करते समय चोर को खाँसी आ

जावे तो वह आसानी से पकड़ लिया जाता है। किसान काम के दिनों में आलस्य करे या सो जाय तो उसका नाश हो जाता है। स्त्रियाँ ज्यादा हँसने की आदत से बिगड़ती हैं।

फेटो कमावे जस्यो बेटो नीं कमावे।

खेत पर आने जाने की सुविधा हो तो निगरानी अच्छी तरह हो जाती है और इतनी आय हो जाती है कि खेत पर बेटे को काम करने के लिए भेजने से भी उतना लाभ नहीं होता।

बतवारी का बिगड़े और कतवारी का सुधरे।

ज्यादा बातूनी स्त्री का काम बिगड़ जाता है और जो अपने काम से काम करती है जैसे चर्खा कातती रहती है तो उसका काम सुधर जाता है।

बहु बेटियाँ बहु बाणियाँ, दो नारी भरतार।
इनको कहा मारिये, याने मार लिया करतार।।

अधिक बेटियों के पिता को, बहुत बनियों से मित्रता रखने वाले को (या बहुत बोलने वाले को) और दो स्त्रियों के पति को मारने की जरूरत नहीं है इनको तो भगवान ने ही मार रखा है। बहुत बेटियाँ होने से उनके विवाह और बुलाने भेजने में बहुत खर्चा करना पड़ता है। बनिया कभी किसी का मित्र नहीं हो सकता बहुत से बनियों से सम्पर्क रखने वाले को तो मारने की आवश्यकता ही नहीं रहती। इसी प्रकार दो स्त्रियों के पति की दशा भी वैसी ही होती है जैसी दो बिल्लियों के बीच में एक चूहे की होती है।

नायण जीते छाणाऊँ, बाण्यो जीते काँणाऊँ।

नवविवाहित दम्पति को गाँव के देवताओं की पूजा करने के लिए ले जाये जाते हैं तब नायण (नाई की स्त्री) साथ रहती है वह कंडे जलाकर आग साथ में रखती है और उस पर धूप लगवा कर भेंट चढवाती है जिससे उसको काफी आय हो जाती है। बनिया अपनी तकड़ी की "काण" नहीं निकालता जिससे मोल के अलावा तोल में भी अपने ग्राहकों को लूटता रहता है।

बामण की और गारा की तो बैठक पाके।

ब्राह्मण यजमान के लिए बैठा बैठा जप आदि कर कमाई कर लेता है और बर्तन बनाने की मिट्टी काफी समय पहले भिगोकर रखी जाती है तब उसमें अच्छी "लोच" आती है दोनों ही पैसे वाले अधिक बैठ कर लाभ कमाने वाले व्यक्तियों में से है।

भण्यो पण गुण्यो कोयने।

विद्या पढ़ ली परन्तु उसका उपयोग करना नहीं सीखा। गुण प्राप्ति तो दुनियादार लोगों के अनुभव का लाभ उठाते रहने से ही होती है।

भाँड की पीड़ मसखरी में जावे ।

बेचारे भाँड के भले ही शारीरिक पीड़ा हो उसे तो अपना एक्टिंग जारी रखना पड़ता है और ऐसे समय में अपने शरीर की पीड़ा को दबाकर रखना होता है । यदि वह एक्टिंग करता हुआ अपने दर्द को जता भी देवे तो भी दर्शकगण उसे एक्टिंग मानते हैं ।

भेड़ पर ऊन कुण छोड़े ।

धनवान को कोई नहीं छोड़ता । भेड़ तो जिसके अधिकार में जायेगी वही उसके बढ़े हुए बालों को काट कर बेच देगा । "यथा ह्यामिषमाकाशे पक्षिभिः श्वापदै र्भुवि । भक्ष्यते सलिले नक्रैस्तथा सर्वत्र वित्तवान् ॥

भैंस अर् बर्याणी कसर पड़्याँ खोटी ।

भैंस को खिलापिला कर मस्त रखने से अच्छा दूध देती है । और बनिये की स्त्री का मन प्रसन्न कर ब्राह्मण लोग उससे ठीक कमाई करते रहते हैं । ये दोनों हर प्रकार से प्रसन्न रखे जाने पर ही ठीक लाभ पहुँचाते हैं ।

भोपा भरड़ा धूधूकाराँ, सीजारो न दीजै खाती, नाई लुहार कुम्हाराँ।

अपने खेत को पाँती पर काश्त करने के लिए देना चाहो तो इन चालाक और आलसी लोगों को छोड़कर अन्य काश्तकारों से काम लेना चाहिए:— भोपे (देवरा पूजने और भाव लाने वाले) बड़े चालाक व बातूनी होते हैं । "भरड़ा" भी भोपे का ही वाचक है दोनों शब्द इकट्ठे ही प्रयोग किये जाते हैं । धूधू पर कुम्हार "आव" पकाने वाले, खाती (सुथार) नाई व लुहार ये सब चालाक होते हैं ।

माँगे जीं के मुळक पटे कोई मेले कोई नटे ।
सारा ही मेले तो मेले कटे सारा ही नटे तो जावे कठे ॥

भीख माँगने वाले के तो सारा देश ही जागीर में है (पट्टे में लिखकर दिया होवे जैसा है) कोई व्यक्ति भीख दे देता है तो कोई इन्कार भी हो जाता है । यदि सब लोग भीख देवें तो भिखारी के पास रखने को जगह नहीं मिलेगी और यदि सब इन्कार हो जावें तो बेचारा भिखारी कहाँ जावे ।

मालपा खाबाने माँ जी, गद्धा चराबाने दाजी ।

मालपुए जैसा घर में अच्छा माल बने तो बच्चों की माता खा लेती है जो कठिन काम नहीं करती । और धूप में जंगल में गधों को चराने के लिये ले जाने का कठिन कार्य दाजी अर्थात् दादा जी को सौंपा जाता है । यह अनुचित व्यवहार है ।

मूण्डे मीठो, पेट कसायलो ।

जो व्यक्ति मीठा बोलता है पर पेट में पाप रखता है उसके लिये ऐसा कहा जाता है। कसायला=कडुआ

राम राजी झालर बाजी।

घर में पुत्र या पौत्र का जन्म होता है तब झालर बजाई जाती है। यह शुभ अवसर राम (भगवान) के प्रसन्न होने पर ही प्राप्त होता है।

रोई तो रूई वाळो, पूणी वाळा के कँई है।

रूई का भाव घट जावे तो रूई के बडे व्यापारी को ही रोना पड़ता है। कताई के लिये पूनिएँ तो थोड़ी थोड़ी रूई की बनाई जाती है। इसलिये पूनी वाले पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता।

लाडाँ लाड़े, चूला में पग गाडे।

बच्चे का ज्यादा प्यार करने से वह कहना नहीं मानता और चूल्हे में पैर डालता है। जिससे या तो उसका पैर जल जाता है या भोजन सामग्री को खराब करता है।

लातां खाई थापां खाई, जूत्यां भी मैं खा आया।
पागड़ी पगां में रुळगी तोई मरदां जीम्यायां॥

बिना निमन्त्रण भोज में सम्मिलित होने वाले को निकालने के लिये लातों और जूतों से पीटा गया और उसकी पगड़ी भी गिर गई फिर भी बेशरमी के साथ जीमता (खाता रहा और पूरा खाकर ही आया।

सबसूं भली चुप्प।

बातें करने से लड़ाई झगड़ा बढ़ता है या चित्त का विक्षेप होता है इसलिये सबसे बढ़िया काम चुप रहना है।

सत की बाँधी लच्छमी फेर मिलेगी आय।

यदि सत्य पर दृढ़ रहोगे तो एक बार भले ही घाटा हो जाय आइन्दा काफी लाभ मिल जायगा। खोई हुई लक्ष्मी सत्य के बन्धन में बन्ध कर फिर आ मिलेगी।

सहज मिल्या सो दूध बराबर माँग लिया सो पानी।
खेंच लिया सो रक्त बराबर गोरख कह गया वाणी॥

जो भिक्षा बिना माँगे मिल जाय वह दूध के समान और जो माँगने पर मिले वह पानी के समान है परन्तु जो किसी को दबा कर या दुःख देकर प्राप्त की जाय वह भिक्षा नहीं है उसका रक्त पीने के समान है ऐसा गुरु गोरखनाथ कह गए हैं।

साँपां में काळो अर् बाण्यां में अगरवाळो।

सब साँपों में जैसे काला साँप अधिक जहरीला होता है वैसे ही बनियों में अग्रवाल सबसे अधिक भयंकर होता है।

सियाळी सेवी न ऊनाळी ऊँडी ।

बरसात के प्रारम्भ में बोई जाने वाली फसल सर्दी की मौसम लगने पर घर आती है इसलिये उसे सियाली (स्याला=शीतकाल) कहते हैं उस फसल का बीज कम गहरा बोना चाहिये (सेवा=कम गहरा) और शीतकाल में बोई जाने वाली फसल जो गर्मी प्रारम्भ होने पर घर आती है उसका बीज गहरा बोना चाहिये। (ऊनाला=गर्मी)

सूर्य ग्रहण दिन को लगे, चन्द्रग्रहण होय रात ।
मर्द ग्रहण तब ही लगे, जब होय जनानो साथ ।।

सूर्य ग्रहण दिन में लगता है और चन्द्र ग्रहण रात्रि में ही होता है परन्तु जब स्त्री साथ में होती है तो उसके पति को सदा ही ग्रहण लगा रहता है। बाहर जाने पर स्त्री की सेवा करने में और उसको प्रसन्न रखने में बेचारा पति ग्रहण से ग्रस्त हो गया हो ऐसी हालत में रहता है। हर बात में स्त्री की ही आज्ञा चलती है।

अनुक्रमणिका

[अकारादि क्रम से]
